ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -

शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ 04 01 1990 ब्रह्मवर्चोसी

जीते रहो! देखो मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस अनन्तमयी महामना प्रभु का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे महान हैं, पुरोहित हैं, वे पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित कहा करते हैं। पुरोहिताम् भूयश्चतम्। हे पुरोहित !तू महान .हमें पराविद्या को प्रदान कर .क्योंकि पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है। नाना प्रकार की पराविद्या को देने वाला वे परमानन्द, मानो वही पुरोहित माना गया है। और पुरोहित उसे कहते हैं जो प्रत्येक मानव के हृदय में प्रेरणा देने वाला हो और उसी से प्रेरित हो करके मानव प्रेरणादायक बन जाता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें क्योंकि वह हमारा देव है, पुरोहित है और मृत्यु से पार ऊल्हांग ग्रस्तम् मानो वो मृत्यु से पार कर देता है।

वेद-मन्त्र प्रेरणा के स्रोत

मेरे प्यारे !देखो विचार आता रहता है। हमारा प्रत्येक वेद-मन्त्रः हमें एक ऐसे मार्ग के लिए प्रेरित करता है जिस मार्ग में चलने के पश्चात्, मानव के हृदय में एक आनन्द की अनुभूति होने लगती हैं। तो हमें उस परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोतों को अपने में ग्रहण करना चाहिए। क्योंकि वे अमम् ब्रव्हा अम्बरीवृत कहलाते हैं। इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करता रहा है क्योंकि वे पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं। यज्ञोमयी स्वरूप हैं। वे इस संसार के नियन्ता .निर्माण करने वाले हैं और इस ब्रह्माण्ड में मानो इसको रचाते हैं। निर्माणम् ब्रहे कृतम् दिव्यम् ब्रहाः। मानो इसका निर्माण

करते हुए इससे दूरी रहते हैं। आओ मेरे प्यारे !आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती का जहाँ गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेद-मन्त्रः हमें प्रेरित करता रहता है और प्रेरणा देता रहता है। उसी की प्रेरणा से प्रत्येक मानव प्रेरित होकर के नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है। आओ मेरे पुत्रों ! आज का वेद-मन्त्र हमें ऐसा उद्गीत गा रहा है, ऐसी विचारधारा में ले जा रहा है, जहाँ मानव देखो, अन्धकार से पार होने के लिए सदैव तत्पर रहता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का ये जो अनूठा जगत है, इसमें प्रत्येक मानव ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहता है और ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ने वाला ही नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की आभा में परणित हो जाता है।

वसुन्धरा की विवेचना

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। क्योंकि हमारा एक वेद-मन्त्र आ रहा था-वसुन्धरम् ब्रह्मणाः वसुन्धरो देवत्वाहम्। हमारे वैदिक साहित्य में एक वसुन्धरा शब्द आता है। और भी नाना प्रकार के मन्त्र हैं इस प्रकार के, परन्तु वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि जिसके गर्भस्थल में हम सब वशीभूत रहते हैं अथवा उसमें बसते हैं, उसका नाम वसुन्धरा है। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वेद-मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। तो वह परमपिता परमात्मा एक अनन्तमयी आभा में सदैव रत्त रहता है जिससे मानव अपने में मानवीयता को अपने में धारण करता रहा है। तो मेरे पुत्रों !देखो प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, माता का निर्णय देने वाला पुत्र कहलाता है अथवा बाल्य कहलाता है। तो विचार, आता है कि वह ममम् ब्रव्हा देवत्वाम् ब्रह्मणेः कर्ताः। मेरे प्यारे !वे माता भी वसुन्धरा है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची आते रहते हैं। जैसे वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है। वसुन्धरा नाम पृथ्वी को कहते हैं और वसुन्धरा नाम उस चैतन्यदेव का नाम भी वसुन्धरा है। तो मेरे पुत्रों !देखो, वसुन्धरा के गर्भ में क्या

है। हे वसुन्धरम् !ब्रह्मा हे वसुन्धरम् ममत्वाहम्। हे वसुन्धरा !पृथ्याम् देवत्वाम् वसुन्धरा। मेरे प्यारे !ये वेद की आख्यायिका कहती है, क्या वे परमपिता परमात्मा जैसे वसुन्धरा है, ऐसे ही माता है। और माता जैसे माता इसी प्रकार पृथ्वी भी मानो वसुन्धरा के रूप में वर्णित है। तो विचार आता रहता है बेटा !माता के गर्भस्थल में मानो देखो हम बस रहे हैं और हम बस करके मानो उसी में रत्त हो रहे हैं। मेरे प्यारे !वे अपने में हमें बसाने वाली है। अपने में धारणा कर रही है, तो इसीलिए उसका नाम वसुन्धरा कहा जाता है।

हे माता वसुन्धरा !तेरे गर्भस्थल में जब एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है और जैसे ही शिशु माता के गर्भस्थल में प्रवेश होता है, बेटा !उसी समय सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और देखो ये अग्नि उष्णा बनाने लगती है। पृथ्वी गुरुत्व देती है और मुनिवरों !देखो आपो ये अपृतों में रत्त रहता है। मेरे प्यारे ! देखो इसे वायु प्राण देता है और देखो अन्तरिक्ष अवकाश देता है। मेरे प्यारे ! कैसा अनुपम ये प्रभु का विज्ञानमयी है। वे एक शिशु की रक्षा करने के लिए सर्वत्र देवता बेटा !अपने-अपने गुणों को लेकर के उसके उसकी रक्षा करते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, जब सूर्य प्रकाश देता है तो उसके प्रकाश में वो रत्त रहता है और प्रकाश में ही मग्न हो करके मुनिवरों !देखो प्रकाशित होता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे !देखो, विचार ये क्या कह रहा है। विचार कहता है कि ममत्वाम् ब्रह्मः। हे माता !तू अपने में हमें बसाने वाली है। हमें अपने में धारणा कर रही है। तू मानो देखो धारयामी कहलाती है।

मेरे पुत्रों !जब माता के गर्भस्थल से वही शिशु मानो देखो, अपने स्वरूप को धारणा करके, इस संसार में मानो गमन करता है, इस संसार में आता है, तो पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। वह पृथ्वी माता है जो अपने में बसा रही है, अपने में बसा लेती है। हे पृथ्वी माता !तू महान् है, तुझे वेद ने वसुन्धरा कहा है। तेरे गर्भस्थल में जब मानो हम सब प्राणी मात्र, तेरे गर्भ में वशीभूत हो जाते

हैं, तू अपने में हमारा पालन करती रहती है। मेरे प्यारे !नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है। उस खाद्य और खनिज पदार्थों में मेरे प्यारे !उसी से मानव का जन-जीवन ऊँचा बनता है, उसी से महान् बनता है। तो मुनिवरों !विचार आता रहता है क्या ममम् ध्यानम् ब्रह्मे पृथाः। इस पृथ्वी के गर्भ में मुनिवरों !देखो क्या नहीं है। हे माता वसुन्धरा तेरे गर्भस्थल में कहीं मानो जल तपायमान हो रहा है वह ऐसा उग्रता को धारण करता है क्या वह वाहनों में क्रियाकलाप उत्पन्न कर देता है। मानो कहीं स्वर्ण के परमाणुओं का आदान-प्रदान हो रहा है, कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। कहीं वैज्ञानिकजन बेटा ! इसके गर्भ में प्रवेश हो करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं। वाह रे मेरे प्रभु !तू कैसा विज्ञानवेत्ता है। हे माता !तू कैसी वसुन्धरा है जो तेरे गर्भस्थल में मानो देखो, सर्वत्र ये वशीभूत हो रहा है।

आओ मेरे प्यारे !मैं विशेष विचार तुम्हें प्रगट नहीं करूँगा। केवल विचार ये देना है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानने के लिए सदैव तत्पर हो जाएँ और उसी की महती में हम सदैव रत्त हो जाएँ। तो मेरे प्यारे !देखो वह माता वसुन्धरा है और जब माता वसुन्धरा के गर्भ से ही ये मानव, मानो देखो गमन करता है तो ये परमपिता परमात्मा जो जगत नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। जो वसुन्धरा के रूप में वर्णित रहता है, उस परमपिता परमात्मा का नाम वसुन्धरा है। मेरे पुत्रों !उसी वसुन्धरा के गर्भस्थल में हम सब प्राणी वास करते हैं। उसी में मानो उसी के गर्भ में प्रवेश हो जाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों !देखो, ममन्तवाम् ब्रह्मणे अवृताम् देवाः अनन्तवासुतम् ब्रह्मा। मेरे पुत्रों !देखो वह अनन्तवान् है और वे परमपिता परमात्मा के गर्भ में, बेटा ! सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में निहित हो रहा है, अपने में गतिवान हो रहा है। वही तो मुनिवरों !देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड का सूत्र कहलाता है। जिस सूत्र के ऊपर बेटा ! देखो, महात्मा दधीचि ने बहुत अपनी आत्मवृत्तियों को वर्णित किया है और यह कहा है कि वही तो सूत्र है, जो ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है। हम

जैसे प्राणीमात्र को धारणा कर रहा है। तो मुनिवरों !देखो, वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव मानव परम्परागतों से बेटा !विचार-विनिमय करता रहा है। आओ मेरे प्यारे !मैं तुम्हे, विशेष चर्चा नहीं, केवल ये, क्या देखो ये नाना वसुन्धरा का शब्द है। वेद का मन्त्र वसुन्धरा की विवेचना कर रहा है। आओ मेरे पुत्रों !देखो, आज मैं तुम्हे, वसुन्धरा के सम्बन्ध में तो विशेष चर्चा नहीं, केवल तुम्हें ये निर्णय करा रहा हूँ क्या देखो ब्रह्मणे !कृतम्। वे अपने में जो वशीभूत हो जाता है, अपने में जो दूसरों को वशीभूत कर लेता है, उसी का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। हे वसुन्धरम् ब्रह्मा, हे वसुन्धरम् ! ममत्वाम्, हे वसुन्धरम् !भूतप्रवाहा लोकाम् पृथ्वयम् ब्रव्हे कृता। मानो देखो ये सब वसुन्धरा के पर्यायवाची शब्दों में आते रहते हैं।

महात्मा दधीचि

आओ मेरे प्यारे !आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जिस क्षेत्र में बेटा !मानव परम्परागतों से विचार विनिमय करता रहा है। हम भी करते रहे हैं। महात्मा दधीचि की चर्चाएँ बड़ी विचित्र आती रहती हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, बेटा !देखो दधीचि नाम भी पर्यायवाची शब्दों का माना गया है। मेरे प्यारे !देखो, दधीचि उसे कहते हैं जो दधि यन्धनम् ब्रव्हे कर्ताः। मेरे पुत्रों !देखो, पर्वतों का नाम भी दधीचि कहा जाता है और दधीचि नाम के ऋषि भी हुए हैं और दधीचि नाम मन को भी कहा गया है। मेरे पुत्रों !देखो, दधीचि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। दधरम् जनम् ब्रव्हे दधरस्वतम् ब्रह्मा दधरम् वृथम् ब्रह्मेः कृतम् देवत्वाम् अश्वनाः। मेरे पुत्रों !जब ये वेद-मन्त्र स्मरण आते हैं तो विचार आता है कि दधीचि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं।

महात्मा दधीचि द्वारा अश्विनी कुमारों को ब्रह्मविद्या की शिक्षा

मेरे प्यारे !देखो, हम प्रसङ्ग ले रहे थे ब्रह्मज्ञान का। और ब्रह्मज्ञान में ब्रह्मज्ञानी देखो, अपने शिष्य को बेटा !ब्रह्मवाद का प्रसार कर रहा है और ब्रह्म

की विवेचना कर रहा है और ब्रह्मसूत्र का वर्णन कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, वह महात्मा दधीचि हैं। वे महर्षि दधीचि बेटा !देखो, अपने में, अपनेपन को धारण करते हुए और वे अश्वनी कुमारों को ब्रह्मविद्या प्रदान करते। बेटा !उनका ब्रह्मवाद समाप्त हो गया। उन्होंने जितना उपदेश देना था, वह उपदेश संक्षिप्त में दिया। क्योंकि उपदेश से व्याख्या नहीं होती है। उपदेशों का तो एक चरण होता है और वह एक चरणों में एक शब्द होता है उसको गीत रूप में गाया जाता है। उसकी विवेचना ये मनस्तत्त्व विचार में करता रहता है। ये प्राण के सहयोग से और मन की प्रतिभा से और विचार की धारा ले करके बेटा !इसका प्रायः वो निर्णय देता रहता है। विचारता रहता है। तो आओ मेरे पुत्रों !देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। विचार केवल ये प्रगट हो रहा है क्या महात्मा दधीचि ने जब देखो अश्वनी कमारों को ब्रह्म का उपदेश दे दिया और उपदेश पान करते हुए वे आश्रम में विद्यमान रहे। क्योंकि वे नाना प्रकार की विचारधारा में सदैव रत्त रहे। तो मुनिवरों !देखो, महाराजा इन्द्र को ये प्रतीत हो गया था क्या अश्वनी कुमारों को ब्रह्मविद्या का उपदेश महात्मा दधीचि ने दिया है। और उनके कण्ठ के ऊपर वाले भाग को भी यन्त्रों ने दूरी किया। परन्तु वो पुनः ज्यों का त्यों औषधियों के बल से, वनस्पतियों के बल से वो ज्यों का त्यों स्थित कर दिया है।

महाराजा इन्द्र का महर्षि आश्रम में आगमन

मेरे प्यारे !देखो, महाराजा इन्द्र ने कहा, चलो मैं महात्मा दधीचि के द्वार पर गमन करता हूँ। मेरे पुत्रों !देखो, महाराजा इन्द्र अपने आसन को त्याग करके और वो मुनिवरों !देखो, महात्मा दधीचि के, महर्षि दधीचि के आश्रम में उनका आगमन हुआ। महात्मा दधीचि ने अपने स्थान को त्यागा और .राजा का स्वागत किया। आइए भगवन् !इन्द्र देव, आइए !वह इन्द्र देव बेटा !देखो विराजमान हो गए।

महर्षि दधीचि और महाराजा इन्द्र का सम्वाद

विचार में विचाराम् भूतम !कहिए भगवन् !कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा प्रभु, मैं इसीलिए आया हूँ ऋषिवर, क्या तुमने अश्वनी कुमारों को ब्रह्म का उपदेश दिया है, ये मेरे विचार में नहीं आया है। उन्होंने कहा, तुम्हारे विचार में क्यों नहीं आया? उन्होंने कहा कि ब्रह्म का उपदेश आपको देना नहीं चाहिए था। उन्होंने कहा जो मेरे द्वारा, जिस विद्या का मैंने मन्थन किया है, अध्ययन किया है, गम्भीर मुद्रा में अपने को ले गया हूँ। मानो देखो, मैं परमपिता परमात्मा की जो मेरे अन्तर्हृदय में जो ब्रह्मज्ञान की धरोहर है अथवा उस धरोहर को मैं ज्यों का त्यों अपने में ही धारण करता हूँ। क्या मुझे किसी को अधिकार नहीं है देने का?

राजा ने कहा कि यह तो यथार्थ है। परन्तु तुमने देखो इन ब्रह्मवाहा देखो ऐसे महान् तपस्वियों को तुमने ब्रह्मविद्या देई है, जिससे मेरे हृदय में ये आशंका है क्या देखो ये इन्द्रपुरी को अपने में विजय न कर लें। क्योंकि इन्द्रियोम् ब्रह्मा ! देखो ये मेरी इन्द्रपुरी को जब विजय कर लेंगे तो मेरा क्या बनेगा? मेरे प्यारे ! देखो, उस समय महात्मा दधीचि ने कहा, क्या ये, हे राजन् !जो राजा होते हैं वो मान-अपमान मे नहीं जाते हैं। जो राजा तपस्वी होते हैं उन्हें भी तप करना चाहिए और तप में परणित रहना चाहिए। तुम ये तुच्छ वार्ता विचार रहे हो क्या देखो, अश्वनी कुमार, तुम्हारी देखो राजस्थली को न स्वीकार कर ले अथवा इन्द्रपुरी को न विजय कर लें। अरे !देखो जो अपने अन्तर्हृदय की जो अपनी इन्द्रपुरी को विजय कर लेता है, वह संसार की देखो, इन्द्रपुरी पर नहीं जाता है। तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए राजन् !क्या राजा, और देखो जो महान् तपस्वी होते हैं, जो परमात्मा की शरण में जाना चाहते हैं और आनन्द की आभा को प्राप्त करने लगते हैं, मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। वे तुम्हारी इन्द्रपुरी से उन्हें कोई सरोकार, देखो अपने में कोई तपाः अधवनम् ब्रहे। तुम्हारे से कोई तात्पर्य नहीं उनका हुआ करता है। वे सदैव अपने में मग्न रहते हैं और प्रभु का सदैव चिन्तन करते हैं।

मेरे पुत्रों !देखो, महाराजा इन्द्र ने कहा, क्या हे भगवन् !तुम्हें यह प्रतीत है क्या मुझे राज्य सभा से, मानो मैं अपने में देवताओं का न्याय करता हूँ। उन्होंने कहा देवता, देवताओं का न्याय कोई नहीं कर पाता। देवताओं का न्याय तो ब्रह्म विद्या से किया जाता है राजन्। मानो तुम इस आशंका मे लग गए, क्या मैं मान-अपमान में चला जाऊँ। क्या राजा जो मान अपमानी होता है वो राजा, देखो अभिमानी बन कर के अपने को नष्ट कर देता है और जो राजा नम्र होता है, राजा सेवक की भाँति सेवा करता है, वह मानव देखो, वह महान् कहलाता है।

ब्रह्मवेत्ता की पराकाष्ठा

मेरे प्यारे !देखो, इन्द्र अपने में यह जान गया कि दधीचि तो ब्रह्म विद्या में तल्लीन हैं और ये ब्रह्मवेत्ता हैं। तू जितना भी प्रश्न करेगा, उतनी ज्ञान की अग्नि प्रचण्ड हो जाएगी। और तू मानो देखो, तेरी मृत्यु हो जाएगी। मेरे प्यारे !देखो, यह महाराजा इन्द्र ने अपने में स्वीकार कर लिया। इन्द्राम् भूतम् ब्रह्मे।

महाराजा इन्द्र की कामना

विचारधारा पुनः से प्रगट होने लगी। क्या हे भगवन् !मैं अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे !देखो, महात्मा दधीचि ने कहा, क्या जब इन्द्र राजा बन करके मान-अपमान में राष्ट्र में देखो तपस्वियों को जीवनदान नहीं दे सकता, जीवन दे नहीं सकता तो वो कोई राजा मानो देखो राष्ट्रीयता में परणित योग्य नहीं है।

महाराजा इन्द्र का पश्चाताप्

मेरे पुत्रों !देखो, जब ये वाक्य उन्होंने श्रवण किया तो वे मौन हो गए। तो विचार आता रहता है उनका दोनों का परस्पर विचार-विनिमय होता रहा। और विचारधारा में ये अन्तिम चरण रहा उनका, क्या भगवन् !देखो मैंने ये अपने में बड़ी अव्यवस्था, बड़ी तुच्छता अपने में धारण की है जो, मैंने आप जैसे ब्रह्मवत्ताओं को ब्रह्मविद्या से मैं तुम्हें वंचित करना चाहता हूँ, देने से ये मानो मेरी

देखो धृष्टता है। मेरे पुत्रों !देखो, महाराजा इन्द्र अपने आसन को चले गए। गमन करते रहे।

आयुर्वेद की उड़ान

देखो, महात्मा दधीचि ने, दधीचि वह कहलाते थे !बेटा !एक ही गुरु के शिष्य थे। वे मुनिवरों !देखो जहाँ ब्रह्मविद्या में पारायण थे वहाँ आयुर्वेद में भी वो बड़े महान् कहलाते थे। क्योंकि राजा रावण के राष्ट्र सुधन्वा, देखो सुकेन वैद्यम् ब्रवहा, जो वैद्यराज थे। मानो वे दोनों आयुर्वेद के ऊपर अध्ययन करते रहते थे और उनकी अध्ययन की प्रतिक्रिया यह बन गयी, क्या उनका आयुर्वेद इतना ऊर्जा में था क्या मानव के हृदय को मानो छः-छ :माह तक वे औषधियों में नियुक्त करते थे। और छः माह के पश्चात् मुनिवरों !देखो औषधियों से देखो हृदय अमृताम् हृदय को ज्यों का त्यों निहित करते हुए उसमें गति आ जाती थी। वह गतिवान होता रहा है। आयुर्वेद अपने में बड़ा शाश्वत माना गया है।

मानव को प्रकाश में रहना चाहिए

बेटा !मैं तुम्हे, आयुर्वेद की चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है। बेटा !वेद-मन्त्र कहता है, हे मानव !इस नाना प्रकार की विद्याओं को जानकर के तू मानो देखो अपने मानवत्त्व को तू ऊँचा बना और तेरी विचारधारा पवित्रता में परिणित रहे और तू परमपिता परमात्मा की महती को जानता हुआ, मानो ज्ञान और विज्ञान में रत्त होकर के तू अपने से अन्धकार को दूरी कर। क्योंकि मुनिवरों !प्रभु का जो राष्ट्र है, ये राष्ट्र बेटा !अन्धकार से रहित है। ज्यों-ज्यों तुम संसार को जानते हुए, परमपिता परमात्मा के निकटतम पहुँचने का प्रयास करोंगे, उतना ही तुम्हारा अज्ञान समाप्त होता रहेगा। उतना ही तुम्हारा जीवन प्रकाश में परिणित हो जाएगा और प्रकाश में रत्त रहना ही अन्धकार को त्यागना है। मेरे प्यारे !प्रकाशाम् भूतम्, क्योंकि प्रभु का जो राष्ट्र है, वह ऐसा राष्ट्र है, जहाँ मुनिवरों !देखो अन्धकार नहीं

होता। और जब राष्ट्र में अन्धकार नहीं होता। तो वहाँ आलस और प्रमाद भी नहीं होता। और जहाँ आलस प्रमाद नहीं होता, वहाँ मेरे प्यारे !देखो अन्धकारसस्वतम् रात्रि नहीं होती। रात्रि नहीं होती तो अन्धकार नहीं होता। अन्धकार नहीं होता तो आलस्य नहीं रहता और देखो जब आलस्य नहीं रहता तो बेटा !वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती। वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। और प्रकाश के लिए मानव को सदैव याचनिक रहना चाहिए। याचक बन कर के ही मुनिवरों !प्रभु का ध्यानावस्थित अपने में धारयामी बना रहे। आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह है कि संसार को जानना चाहिए। जब तक संसार को नहीं जानोगे, तब तक मुनिवरों !देखो, अन्धकार तुमसे दूर ही नहीं होगा। मान-अपमान भी दूर नहीं होगा। मेरे पुत्रों !मुझे स्मरण आता रहता है। मैं जब मानो, देखो, याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना में विवेचनित होता रहता हूँ। आज हमारे वेद के पठन-पाठन में जहाँ प्रकाश का वर्णन है, जहाँ मुनिवरों !देखो नाना प्रकार की वृत्तियों का वर्णन है वहाँ मुनिवरों !देखो, याग का भी प्रकरण भी आता रहता है। यजनम् यजनम् ब्रव्हा, वृतम् देवत्वाम् देवाः। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रत्येक वेद-मन्त्र को उद्गीत रूप में अपने में श्रवण करता रहता है और श्रवण करता, उसको स्वाहा कह करके उसे द्यौ में ले जाना चाहता है। .

याग कैसे किया जाए

मेरे पुत्रों !देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में बड़े श्रोत्रिय मानो ब्रह्मवेत्ता थे और वे ब्रह्मवेत्ता मेरे प्यारे !महान् कहलाते हैं। एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके बेटा !ब्रह्मचारियों के समक्ष, ब्रह्मचारियों के मध्य में, मुनिवरों !देखो, वह उपदेश दे रहे थे। याग सम्पन्न हो गया था प्रातःकाल का। तो मुनिवरों !देखो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी, यज्ञदत्ता, सुकेन और मुनिवरों !देखो वेतकेतु

ये तीनो ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। मेरे प्यारे !देखो, वह यज्ञदत्त ने कहा प्रभु !ये जो यजमान उपस्थित हुआ है, ये यज्ञ करना चाहता है इसमें मानो देखो ये याग कैसे किया जाए? हम याग की प्रक्रिया को नहीं जानते।

याग का क्रम

उन्होंने कहा याग में साकल्य होना चाहिए, घृत होना चाहिए और समिधा के द्वारा, और मानो देखो यज्ञशाला का विधिवत् निर्माण होना चाहिए। उसमें पार्थिवता मानो विशेष होनी चाहिए। जैसे नाभि में होती है मानो देखो नाभि के आकार पर यज्ञशाला का निर्माण होता है। जैसे माता के गर्भस्थल में जब मानो देखो, बालकाण्डम् ब्रहे माता के गर्भस्थल में होता है तो माता की नाभि जो होती है उस नाभि से बाल्य की नाभि का समन्वय होता है और वह जो एक नाभि है, वही मानो देखो माता के शरीर का केन्द्र कहलाता है। मानव के शरीर का भी वही केन्द्र कहलाता है क्योंकि जब संसार में हम असहाय होते हैं, परमपिता परमात्मा ही सहायक बनता है। मेरे प्यारे !देखो कैसा निर्माण है प्रभु का। मेरे पुत्रों !देखो, माता के रसना के यदि अमृत को पान करना है, माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। चन्द्रमा से वो अमृत लेती है और मानो वही चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत्व नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। और लोरियों से पञ्चम् नाड़ी बन कर के चलती है। माता की नाभि का और देखो, नाभि से उन नाड़ियों का समन्वय है और बालक की नाभि का समन्वय हो जाता है, तो बेटा !वो अमृत को पान कर रहा है। चन्द्रमा अमृत दे रहा है। नस नाड़ियों के द्वारा व उसका भरण किया जा रहा है। वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। कितना वो विज्ञानमयी कहलाता है।

आज मैं बेटा !उसके विज्ञान की चर्चा प्रगट करना नही, केवल विचार-विनिमय यह उन्होंने कहा इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वह नाभि ही यज्ञशाला है। ऐसे ही मानो देखो यज्ञशाला का निर्माण अच्छी प्रकार किया जाए,

स्तम्भों वाली होनी चाहिए। जैसे परमपिता परमात्मा की ये ब्रह्माण्ड, ये संसार रूपी यज्ञशाला है इसमें भी मानो देखो चौबीस खम्बे कहलाते हैं। माता के गर्भस्थल में जब मानव शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण हुआ, ये भी चौबीस खम्बो वाली है। मेरे पुत्रों !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ब्रह्मचारियों के समक्ष इस प्रकार की विवेचना की तो देखो यज्ञदत्त ने कहा हे प्रभु !मैं यह जानना चाहता हूँ जब मानो देखो ये नाभाम् ब्व्हे हे प्रभु !यदि अमृताम् दिव्य ब्रहे क्रतम् देवत्वाहम् ।

समिधा के द्वारा याग

हे भगवन् !जब ये सुविधा न हो, जहाँ ये सुविधा न हो, अग्नि तो है, परन्तु देखो इस प्रकार की यज्ञशाला न हो और निर्माण, देखो साकल्य न हो और वह अमृताम् व घृता वृत भी न हो तो प्रभु याग कैसे करे? उन्होंने कहा याग, देखो समिधा और अग्नि अग्न्याधान करके समिधा के द्वारा बेटा !याग करना चाहिए। प्राणाय स्वाहाः अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, नाना प्रकार की देखो इस प्रकार की आख्यायिका, वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते याग करना चाहिए। अग्न्याधान और देखो समिधा के द्वारा।

जल के द्वारा याग

उन्होंने कहा प्रभु !कहीं मानो देखो ये समिधा न हो तो उस समय हम कैसे याग करें? उन्होंने कहा जब यह समिधा और अग्नि भी न हो तो तुम मानो देखो जल से, जल से तुम याग कर सकते हो। देखो वह याग, देखो अमृतम् जल को ले करके प्रोक्षण करते हुए यज्ञशाला में, मानो देखो जल के द्वारा याग करो, अपने प्रोक्षण के द्वारा। मेरे प्यारे !देखो, वही यगम् ब्रव्हा वेद-मन्त्रों का उद्गीत होना चाहिए।

रज के द्वारा याग

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि से ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु !यदि ये भी सुविधा न

हो, जल भी न हो। उन्होंने कहा जल देखो, पृथ्वी की रज के द्वारा हम देखो याग कर सकते हैं। देखो, रज पवित्रस्थली में अमृताहम, मेरे प्यारे !देखो, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, अबम् ब्रह्मे ऋतम स्वाहा। नाना प्रकार के वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए याग करो। .

वेद-मन्त्रों के उद्गीत द्वारा याग

उन्होंने कहा प्रभु कहीं पर्वतों में जाना हो जाए वहाँ रज भी न प्राप्त हो तो याग कैसे किया जाए? मेरे प्यारे !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि बोले, क्या मन से तुम वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाओ, उसी प्रकार देखो हृदय रूपी यज्ञशाला में तुम याग करो। मानो देखो, अग्नये स्वाहा, प्राणाय स्वाहा, पाँचों प्राणों की आहुति, मानो देखो वह वेद-मन्त्रों से सुगठितता होनी चाहिए।

याग से लाभ

मेरे पुत्रों! देखो, जब ये वाक्य ऋषि ने कहा तो ब्रह्मचारी ने कहा, प्रभु हम यह जानना चाहते हैं, भगवन् !इससे लाभप्रद क्या है? उन्होंने कहा, क्या जितना भी वेद मन्त्र है जो विशुद्ध रूप से हृदय से गान गाने वाला गायक मानो देखो गान गाता है। जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ और अनुदात्त में वेद-मन्त्रों का जो उद्गीत गाता है मेरे प्यारे !उससे वायुमण्डल पवित्र होने लगता है। यहाँ संसार में याग का अभिप्राय है जितना भी वायुमण्डल पवित्र होगा वह मानव के हृदय से होगा, मानव की वाणी पवित्र होने से होगा। और जब भी ये संसार का दूषित वायुमण्डल हो जाएगा उसी काल में वाणी से ही दूषित मण्डल होगा और वाणी तो मानो देखो शान्त हो जाती है। परन्तु उस पे नाना प्रकार के आक्रमण होने प्रारम्भ हो जाते हैं। मेरे प्यारे !मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में कहा था, एक स्थली है। एक स्थली में तो वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा है। प्राणायाम कर रहा है साधक, साधना कर रहा है। और एक स्थली में मेरे प्यारे !देखो मानो वह कलह, कलह का स्थल बना हुआ है। कलह हो रहा है। एक दूसरा, एक दूसरे

की वाणी को स्वीकार नहीं कर रहा है। उसमें मधुरता नहीं रही है। उसमें कठोरता आ गयी है। उसमें मानो देखो कलह का वास हो गया है। अरे !वही तो मुनिवरों !देखो, नरक का वास बन करके वही तो दूषित वायुमण्डल बन जाता है। मेरे प्यारे !वह जब ऋषि ने इस प्रकार कहा कि गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला इस प्रकार से पूजन करता है। और पूजन करता हुआ, अग्नि को अपने में धारण करता हुआ वे तेजोमयी बन जाता है। और वह वाणी के द्वारा उस उद्गीत को गाना प्रारम्भ कर देता है। मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारीजन मौन हो गए और ब्रह्मचारियों ने कहा धन्य है प्रभु ! आपने हमारे हृदय की ग्रन्थि को स्पष्टीकरण किया है। क्योंकि हम प्रायः अन्धकार में रत्त रहते हैं।

मेरे प्यारे !देखो, विचार आता रहता है हम अपने में अपनेपन को ही धारण करते चले जायें और वैदिक साहित्य में जो ज्ञान और विज्ञान है उसके ऊपर हम मुनिवरों !देखो विचार विनिमय करते चले जायें जिससे हमारी मानवीय प्रवृत्ति एक महानता में गमन करती रहे और महानता की ज्योति में ज्योतिवान हो करके अपने में ही अपनेपन की प्रतिभा को अपने में धारण करते रहें। मेरे प्यारे !ये आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे !आज मैंने तुम्हें बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित किया है। कहीं दधीचि के आश्रम में चले गए। कहीं मानो देखो हम अपनी आभा में सदैव वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। कहीं मानो देखो यज्ञशाला में चले गए। यज्ञम् भूतप् प्रमाणम् ब्रहे। यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में मेरे प्यारे !देखो आत्मा यजमान है और पञ्च होता देखो होता बन कर के इस संसार रूपी यज्ञशाला को मानो गति दे रहे हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, वह उद्गीत गा रहा है, वह सूत्र बना हुआ है और उस सूत्र में बेटा !सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। यह है बेटा !आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा

अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें। मेरे प्यारे !ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते रहें। मानव देखो जब मन को इस प्रकार का विचार देता है, इस प्रकार की विचारधारा में मनस्तत्त्व चला जाता है प्राण की पुट लगाता हुआ वह मानव बेटा ! संसार में विकृत नहीं होता, वह सदैव ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। और वह ब्रह्मवर्चोसी बन करके ब्रह्मसूत्र में अपने को पिरो लेता है। ये है बेटा !आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायाहाम्। ओ३म् ऋषि वाचन्नम गायन्तवाः आपाहाम्। ओ३म् यौ सर्वम् भद्रा माम् रेवाहाम्। महर्षि महानन्द मुनि जी-अच्छा भगवन् । पूज्यपाद-गुरुदेव-आनन्द रहो। दिनाँक :4 जनवरी, 1990 समय :दोपहर 2 बजे स्थान :श्री शिवकुमार त्यागी ग्राम धनौरा, हापुड़।

२ 06 01 1990 परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला

जीते रहो!

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप हैं। क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। तो मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने मन्थन करते हुए यह कहा है, क्या ये जो संसार है, यह परमपिता परमात्मा का अमूल्य जगत है और यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परणित किया गया है। क्योंकि याग अपने में एक अद्वितीय क्रियाकलाप है, जिस क्रियाकलाप के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा! प्रयास किया है अथवा अनुसन्धान किया है। क्योंकि अनुसन्धान करना ही हमारा कर्त्तव्य माना गया है। तो परमपिता परमात्मा, मानो ब्रह्माण्ड और पिण्ड की, दोनों की आभा में सदैव विद्यमान रहते हैं। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा को हमारे यहाँ यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। क्योंकि जितना भी ये ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है।

संसार एक यज्ञशाला

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से मानो ब्रह्मवेत्ताओं ने क्या ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया, हे ऋषिवर! प्रातःकाल का समय है और प्रातःकालीन आप विद्यालय को याग से सजातीय करते हैं। क्योंकि विद्यालय में जब प्रातःकालीन याग होता है, उसके पश्चात् आप और क्रियाकलापों में परणित होते हैं। हम ये जानना चाहते हैं, क्या ये जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला कैसे है? क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है यजनम् ब्रह्मणाः यजनम् ब्रव्हे कृतमः देवाः। तो मुनिवरों! देखो, जब ब्रह्मचारियों ने ये प्रश्न किया, उन्होंने कहा कि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। ये जो ब्रह्माण्ड है, ये अपने में ही अपने में गतिवान् हो रहा है और उस अपने में गतिवान् होने से ही मानो एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में ये परणित किया गया है। जिस यज्ञशाला में हम सब प्राणी विद्यमान रहते हैं। मानो जिस यज्ञशाला का नाभि मानो यज्ञ ही नाभ्याम् कहलाता है। तो वेद का आचार्य ये प्रश्नों का, जिज्ञासाओं, जिज्ञासुओं को उत्तर देते हुए बोले, हे ब्रह्मचारियों! ये तुम जान गए होंगे कि यहाँ प्रत्येक स्वरूप में ब्रह्म ही दृष्टिपात आता है। मानो जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया और इस यज्ञशाला में देखो, आत्मा यजमान है, और परमपिता परमात्मा ब्रह्मत्त्व कहलाए गए हैं। वे ब्रह्मा हैं और देखो, ये जो पञ्चहोताओं के द्वारा जो ये याग हो रहा है यह अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक अणु-परमाणु अपने में गतिवान् हो रहा है, एक दूसरे को प्रेरित कर रहा है तो वही एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में हमें दृष्टिपात आता रहता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यहाँ प्रत्येक स्वरूप में याग हो रहा है। मानो देखो, इसमें ब्रह्मणा! देखो, वह ब्रह्मणम् ब्रव्हे आत्मा! वह जो आत्मा अपना कल्याण चाहता है और आत्मा के आश्रित हो करके मुनिवरों! देखो, एक याग हो रहा है। जिस याग में हम सब विद्यमान रहते हैं। जिस याग की आभा में मानो देखो, हम सब याज्ञिक बने हुए हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! हमारा वेद का मन्त्र ये कहता है यागाम भवितम् यागाम् रुद्रो भव प्रमाणाम् बव्हे, यागस्वतम् ब्रव्हे वृताः। ये मानो देखो, एक याग है, इसमें बेटा! पञ्चमहाभूता, पञ्चमहाभूत, एक होता बन करके आहुति दे रहे हैं। बेटा! अग्नि गुरुवकृते, अग्नि तेज को दे रहा है, मानो उष्णा बना रहा है और जल मुनिवरों! देखो, आपोमयी ज्योति बना हुआ है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में जब बेटा! हमारे यहाँ शिशु विद्यमान होता है तो मुनिवरों! देखो, जल ही उसका आसन है, जल ही उसका बिछौना है, जल ही उसके पासे बने हुए हैं। इसीलिए यज्ञशाला में, यजमान जब अपने आसन पर विद्यमान होता है तो वह तीन आचमन करता है। तो तीन आचमनों का अभिप्राय यही है कि देखो, वह उसका ओढन, उसका बिछौना. उसके पासे मानो देखो, आपोमयी कहलाते हैं और उसी में वो शिशु रत्त रहता

है। मेरे प्यारे! वहीं निर्माण होता रहता है। तो कैसा भव्य विज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो, अपने में ही अपनी आभा में वो रत्त होने जा रहा है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है सम्भवम् समलोकाम् समवृतिवृताः! हे ममत्व! को धारण करने वालों मानो यदि तुम इस यज्ञशाला की प्रतिक्रिया को जान लो तो एक आनन्दम् ब्रहे और जब मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत में यजमान प्रवेश होता है तो वह बेटा! देखो, पूर्व दिशा से प्रकाश आता है। वह जल का प्रोक्षण करता रहता है और देखो, अन्न का स्वामी जो है वह वरुण कहलाता है। बेटा! वो पश्चिम ब्रहा रूप में गत रहता है। सोमपान करने वाला, मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान का उपार्जन करने वाला वो मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वा में गमन करता रहता है।

उत्तरायण

मुझे स्मरण आता रहता है, त्रेता के काल, मानो द्वापर के काल की चर्चाएँ स्मरण आती रहती हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह जब ब्रहे पितामह भीष्म मृत्यु शय्या पर विद्यमान थे। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने ये कहा था, क्या मैं जब तक अपने शरीर को नहीं त्यागूंगा, जब तक सूर्य उत्तरायण नहीं हो जाएगा। मुझे उत्तरायण होना चाहिए। तो बेटा! उत्तरायण के दो स्वरूप माने गए हैं। एक उत्तरायण मानो सूर्य कहलाता है जो मुनिवरों! देखो, एक वर्ष में मानो छः अपृतम, छः माह का देखो, उत्तरायण होता है और छः माह का दक्षिणायन होता है। मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् एक तो ये इसका रूप बना। परन्तु द्वितीय रूप में ये माना गया क्या ज्ञान का नाम उत्तरायण होता है और अज्ञान का नाम दक्षिणायन कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह भीष्म ने, पितामह भीष्म ने ये विचारा क्या मैं उत्तरायण बन जाऊँगा। जब तक मेरा हृदय, मस्तिष्कः, मनः, प्राणः, विचार जब तक मुनिवरों! देखो, उत्तरायण नहीं होंगे, तब तक मैं शरीर को नहीं त्यागूंगा। बेटा! उत्तरायण का अभिप्राय ये है ज्ञान, उत्तरायण का अभिप्राय ये विज्ञान में, ज्ञान में रत्त होना, उपराम (उपरान्त) परमपिता परमात्मा की महती को जानना, मेरे प्यारे! देखो, उसे हमारे यहाँ उत्तरायण कहा जाता है। उत्तरायण का अभिप्राय ये, उत्तरो भवितम् ब्रह्मे उत्तराणाम् ब्रव्हे कृतम्। तो उत्तरायण बेटा! देखो, ज्ञान को कहते हैं। इसी प्रकार याज्ञिक जो पुरुष होते हैं वे उत्तरायण को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, याग करने वाला, जब इस आध्यात्मिक याग को जान लेता है क्या परमात्मा मेरे अन्तर्हृदय रूपी यज्ञशाला में विद्यमान है और मानो देखो, वही वृत्तम है। देखो, जहाँ इस प्रकार की प्रतिभा विद्यमान रहती है, बेटा! वही उत्तरायण कहलाता है और आत्मा यजमान बन करके वह भी उत्तरायण में है और होताजनों से जब देखो, पृथ्वी आपोः अग्निः और मुनिवरों! देखो, गति और अन्तरिक्ष मुनिवरों! पञ्चमाभूत हैं जिनके द्वारा याग हो रहा है। जो याग में परणित हो रहे हैं। तो मेरे पुत्रों! वह जो याग है वो उत्तरायण कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा। विचार विनिमय ये कि जितने महापुरुष हैं वह अपने में चिन्तन करते हैं और मनन करते हैं। जब तक अपने जीवन को उत्तरायण में नहीं ले जाते, तब तक मुनिवरों! देखो,! उनका अपने में, अपने में ही वृत्तियों को नहीं प्राप्त हो पाते, वे तब तक अपने शरीर को नहीं त्याग पाते। शरीर को त्यागना ही बेटा! ज्ञान है, उसको जान करके त्यागने का नाम ज्ञान है। अन्यथा शरीराणाम् भोक्तम् ब्रव्हे, शरीर तो त्यागा ही जाएगा, जो निर्माण हुआ है। परन्तु उत्तरायण हो जाए तो देखो, वह आनन्द का गामी बन जाता है।

याग के नाना स्वरूप

विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत में प्रवेश होते हुए, बेटा! अपने को जानने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! वह परमपिता परमात्मा की ये यज्ञशाला है और मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला ही संसार की नाभि कहलाती है। और वह जो नाभि है उसी से बेटा! केन्द्र चलता है। जितना भी संसार का शुभ क्रियाकलाप है, सुकर्म है, सुवृत्तियाँ हैं, वह सर्वत्र मेरे प्यारे! देखो, याग माना गया है ।

मेरे प्यारी माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु पनप रहे हैं। परन्तु देखो, अपने बाल्य को शिक्षा दे रही है। ओजस्वी बना रही है। परमाणुवाद में रत्त हो करके आत्मा से चर्चा करती है। बेटा! वह बाल्य का पालन करते हुए पुत्रयाग कर रही है। हे माता! तुझे वेद ने सुनीता कहा है, तू सुमति के देने वाली है! इसीलिए वेद सुनीता कहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता

रहता है हम अपने याग में परणित हो जाएँ। मेरे पुत्रों! देखो, याग के सम्बन्ध में आचार्यों ने बेटा! बड़ी विचित्र-विचित्र उड़ाने उड़ी हैं। बड़ा विचित्र अपना मन्तव्य प्रगट किया है। उन्होंने कहा याग ही राष्ट्र है। मेरे प्यारे! देखो, जो राजा प्रातःकाल में याग करता है, अपनी क्रियाओं से निवृत होता है जिसके हम ऋणी हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह राजा अपने राष्ट्र को उन्नत करता रहता है। और जो माता-पिता प्रातकालीन ब्रह्म का चिन्तन करते रहते हैं उनके गृह में रहने वाले जो बाल्य बालिका हैं वे पवित्रतम् बन जाते हैं। वे गृहपत्य अग्नि की पूजा करते रहते हैं।

आओ मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है। यजनम् यजन्नम ब्रह्मा कृतम्, देवत्वाम् योगम् ब्रह्मा लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो, एक योगेश्वर अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, वह प्राणों का याग कर रहा है। प्राणों से हुत कर रहा है। मुनिवरों! देखो, हुत करता हुआ वह प्राणों के द्वारा अपने मन को महान् बना लेता है। और वह क्रियात्मक, अपने क्रियाओं में रत्त हो करके अपनी आभा में परणित हो जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल उच्चारण करना ही हमारा ये कि हम, परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत है जिसमें बेटा! देखो, भाँति-भाँति के लोक-लोकान्तर अपने में एक माला के सदृश परणित रहते हैं। जैसे मेरे प्यारे! देखो, ये पृथ्वी हम सबकी माला बनाए रहती है, अपने में धारण कर रही है और जब पृथ्वी की माला बनती है, तो मेरे प्यारे! देखो, उस माला को धारण करने वाला सूर्यवत् कहलाता है। सूर्य इस पृथ्वी को अपने में धारण कर रहा है और धारण करता हुआ, ये नाना प्रकार के व्यंजनों वाली कहलाती है। तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती का हम सदैव, गुणगान गाते हुए अपने में महान् याग की कल्पना करते हुए हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। यागाम् ब्रह्मणे वृत्तम्, देवस्सतम् ब्रह्मा वायु सम्भवाः ।

मेरे प्यारे! देखो, हम यज्ञम् ब्रहे, हे यजमान! तू यज्ञशाला में विद्यमान हो करके जब हुत करता है, अग्नि को देवताओं का मुख बना करके और उसमें हुत करता रहता है तो वो तेरी महानता की प्रवृत्ति है। मानो देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने तो इसके ऊपर बेटा! बड़ा अनुसन्धान किया। याज्ञवेत्ताओं ने, निर्णय करने वालों ने ये कहा है, क्या ये जो याग है, यही तो अमृत है। यही तो सोम कहलाता है और यही मुनिवरों! देखो, देवताओं की धुरी कहलाता है। जो अग्नि जिनको विभाजन कर देती है और विभक्त करके उसे अग्नि अपने में धारण करती रहती है।

आओ मेरे प्यारे! मैं आज विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूंगा क्योंकि हमारा मानव शरीर भी एक प्रकार की मानो आन्तरिक यज्ञशाला है। इसमें प्रत्येक इन्द्रियों का साकल्य बना करके योगीजन याग करता है। तो याज्ञिक बनकर के ही राष्ट्र को उन्नत बनाया जाता है। आज बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, उसकी महती का गुणगान गाते रहें। उसकी महिमा, उसका जो ज्ञान है, उसका बखान करते रहें। मुनिवरों! देखो, वही तो हमारे लिए मानो सतोमयी रमण करता है, हमारी पालना कर रहा है। अब मैं विशेष चर्चा नहीं, केवल महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाः यजन्नम! प्रव्हाः वर्णाश्चमम्! ब्रह्मणाः वायु रथम् अग्नम् दिव्याः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्रऋषि समाज, भद्र पुरुषों। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परमपिता परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड को वे एक याग की संज्ञा दे रहे थे। क्योंकि ये संसार को एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में वर्णित कर रहे थे। मानो देखो, आज का हमारा ये जो वाक्य है, हमारी जो आकाशवाणी है, वह मृतमण्डल में प्रवेश हो रही है। और जिस स्थली पर हमारी ये वाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा था क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत गम्भीर मुद्रा में ले जाते हैं। मानो वह तो परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड पर ले जाते हैं और वहाँ जा करके नृत्य करने लगते हैं यौगिकता का। तो याग के ऊपर इनका विचार बड़ा अनुपम रहा है। क्योंकि मुझे बहुत सा काल इनका स्मरण आता रहता है। मुझे स्मरण है, यहाँ देखो, नाना राजाओं के यहाँ याग जैसे राष्ट्रम् ब्रहे, जैसे पुत्रेष्टि याग हुआ था राजा दशरथ के यहाँ। उस पत्रेष्टि याग में मानो देखो, उस अयोध्या को उन्नत बनाने के लिए राम जैसे महापुरुषों का जन्म हुआ। तो मेरा जो अन्तरात्मा है वो यजमान के साथ रहता है। मैं मानो परम्परागतों से उदगीत गाता रहता हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में, क्या इनके विचार

बड़े गम्भीर और मार्मिक होते रहते हैं और यौगिकता में हमें ले जाते हैं। तो मानो देखो, आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मानो गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। इस ब्रह्माण्ड को, याग को ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड को याग में परिणित कर रहे थे। आध्यात्मिक याग और भौतिक विज्ञान दोनों का एक समन्वय कर रहे थे। परन्तु मुझे इन विचारों में नहीं जाना। यजमान को शुभकामनाएँ मेरा तो एक ही उद्देश्य रहता है, क्या मेरा जो अन्तरात्मा वो यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो मेरी ये सदैव कामना रहती है क्या यजमान जो अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करता है और वो देवताओं को अपनी हुत करता रहता है, देवता उससे प्रसन्न होते हैं। और अग्नि के मुखारबिन्दु में जो परमाणु जाता है, जो साकल्य जाता है उसका विभाजन हो जाता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! हे वृन्नम् ब्रव्हा कृतम, मानो देखो, मैं अपने यजमान के लिए अपनी शुभकामना प्रगट करने चला आता हूँ।

द्रव्य एक ममता

ये जो काल चल रहा है ये मैंने बहुत पुरातन काल में आपको निर्णय कराया ये सुरा, सुन्दरी और द्रव्य का काल चल रहा है। इस काल को मैं वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। मैं यह कहता रहता हूँ, हे यजमान! तेरे जीवन की आभा सदैव बनी रहे। क्योंकि ये जो काल है, ये वाममार्ग का काल है। जहाँ देखो, द्रव्य को, द्रव्य का दुरुपयोग किया जा रहा है। सुरा और सुन्दरी में मानव मग्न रहता है। तो इसीलिए मैं ये कहता हूँ कि राष्ट्रम्, ये मैं जो आधुनिक राष्ट्र की प्रतिक्रियाएँ चल रही हैं, इसको भी मैं वाममार्ग की काल कहता रहता हूँ। क्योंकि वाममार्ग इसीलिए कहता हूँ क्योंकि राष्ट्र, सुरा और सुन्दरी के अभोवृतियों में लगा हुआ है। द्रव्य में एकत्रित क्योंकि देखो, कर्तव्य का पालन नहीं हो रहा है। द्रव्य एकत्रित करना कोई पाप नहीं है परन्तु यदि वो सत्कामना से एकत्रित हो तो, बहुत प्रिय है। और जब वो मानो देखो, द्रव्य अनावृतियों में आता है उसका विनाश होता रहता है। उसका दुरूपयोग होता रहता है। तो दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। यदि द्रव्य का सदुपयोग हुआ, ये द्रव्य ममता है, ये द्रव्य मानव को धर्म के मूल पर ले जाती है।

एक समय ऋषि से एक ने ये प्रश्न किया क्या देखो, धर्म का मूल क्या है? उन्होंने कहा कि धर्म का मूल्य देखो, द्रव्य है। और द्रव्य का मूल्य क्या है? वो मानो देखो, अपनी क्रिया शक्ति है और क्रिया का मूल क्या है? जो मानव को देखो, मोक्ष की पगडण्डी पर लगा देता है। विचार आता है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में प्रगट कराया। परन्तु आज तो मैं उस आभा में नहीं, केवल ये कि द्रव्य एक ममता है, द्रव्य माया एक ममता है। यदि ममता के मानो ममता का, इस माया का, माता का दुरूपयोग करता है, तो एक समय वो आता है कि माता उसे त्याग देती है। मानो देखो, त्याग करके वह, वह धूर्त बन जाता है। मानो वो धूर्त की प्रवृति में हो जाता है, पामर कहलाता है। जब देखो, माँ, माँ ही जिसको त्याग देती है वो पुत्र नहीं रहता।

राष्ट्रवाद

इसीलिए हे पूज्यपाद! देखो, मैं यह कहता रहता हूँ क्या इसके लिए राष्ट्रवाद ऊँचा होना चाहिए। जब राजा के राष्ट्र में देखो, अनर्थ होने लगता है, उस समय राजा के, राजा को ये ममता द्रव्य, द्रव्य त्याग देता है। राज्य त्याग देता है और वह मानो देखो, उसी आभा में परणित हो जाता है। हे मेरे पूज्यवाद गुरुदेव! आधुनिक काल में मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ये जो समाज है, मानो ये जो राष्ट्रवाद है इस राष्ट्रवाद में परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तियाँ क्रियाएँ होती रहती हैं और ये राष्ट्रवाद अग्नि के मुखारबिन्दु में मुझे प्रतीत हो ही रहा है। क्योंकि हे पूज्यपाद गुरुदेव! आप भी ये कहा करते हैं, जब समाज में विज्ञान का दुरूपयोग होने लगता है, और देखो, नरसंहार होने लगता है, वो कोई राष्ट्र नहीं होता है। वो कोई राज्यसभा नहीं होती है। परन्तु देखो, राज्यसभा वह होती है, जहाँ विचार होते हैं। और जहाँ दुरिता होती है, वाणी का भी दुरूपयोग होता हो, वो भी राज्यसभा नहीं होती। राज्यसभाएँ वह होती हैं जहाँ एक दूसरा मानव विचार-विनिमय करने के लिए तत्पर होता है और वो विचार करता है। और उसी विचार को वो मानवता से मानो निर्धारित करने लगता है। तो इसीलिए विचार आता है क्या, राष्ट्रवाद की प्रतिक्रिया ऊर्ध्वा में गमन होनी चाहिए। भगवान् राम का तप के लिए गमन एक समय देखो, भगवान् राम की चर्चाएँ मुझे स्मरण आती रहती हैं। भगवान् राम ने, एक समय देखो, सब, देखो, वृति देखो, महापुरुषों को एकत्रित करते

हुए, उन्होंने कहा, हे महापुरुषों! देखो, राष्ट्र के लिए तुम उद्गीत गाओ। राष्ट्र कैसे उन्नत होता है? तो उस समय महात्मा वशिष्ठ ने कहा-वे पूज्यपाद थे, राष्ट्र पुरोहित भी थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र जब उन्नत बनता है जब राजा तपस्वी होता है। मुनिवरों! देखो, जब ये मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी वर्णन कराया था। राम कैसे सखा थे राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए। देखो, जब लङ्का को विजय करके, वे देखो, अयोध्या में आए, तो उस समय महाराजा भरत ने कहा कि आओ भगवन्, आप अपनी स्थली को, राजस्थली पर विराजमान हो जाओ। उन्होंने कहा, मैं नहीं, अभी नहीं, मैं जब तक ऋषि मुनियों की आज्ञा, विचारकों की आज्ञा नहीं ले पाऊँगा जब तक मैं इस स्थली पर विद्यमान नहीं हो सकूँगा। क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि मैं राजस्थली पर विद्यमान हो जाऊँ। जब देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, मुझे कई काल में वर्णन कराया इस सम्बन्ध में। क्या राम ने वशिष्ठ, विश्वामित्र और भी नाना देखो, ऋषि, महर्षियों को एकत्रित किया और उन्होंने कहा, ब्रह्मे, हे प्रभु! मैं क्या करूँ? उन्होने देखो, अमृतम् वशिष्ठ ने कहा था, तपश्चम् ब्रह्मा, जाओ तुम तपस्वी बनो। जब देखो, ऐसा कहा तो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या, राम बारह वर्ष के लिए भयङ्कर वन में चले गए और सीता अपने आसन पर तपस्या में तल्लीन हो गयीं। देखो, उन्होने ये कहा था, जब तपस्या के लिए जाने लगे तो महर्षि विश्वामित्र ने कहा तुम तपस्या के लिए क्यों जा रहे हो? उन्होंने कहा, मैं अभी लङ्का को विजय करके आया हूँ और लङ्का में जो मैंने, मानो जो संग्राम किया है, कहीं मेरे विचार रजोगुणी रहे हैं, कहीं तमोगुणी बने हैं और कहीं प्राणी को, देखो, नष्ट करने में लगे रहे हैं, एक दूसरे के। तो मेरा देखो, जब तक उपसंहार नहीं होगा या मैं उनसे प्रायश्चित नहीं करूँगा, तब तक मैं राज्यस्थली पर विद्यमान नहीं होऊँगा। क्योंकि राज्यस्थली पर जब विद्यमान होता है तो वो परमपिता परमात्मा तुल्य आसन होता है और उसमें देखो, न्यायकर्ता की सात्विक प्रवृत्ति होती है। और मेरी यदि सात्विक प्रवृत्ति नहीं है तो मैं राजस्थली का भी अधिकारी नहीं हूँ। देखो, जब राम ने यह कहा तो राम के उन विचारों को श्रवण किया और आधुनिक काल का जो राजा है वो कैसा है प्रभु! वह ऐसा है, क्या वह रजोगुणी विचार हैं, तमोगुणी विचार हैं, सुन्दरियों में संलग्न है, सुरा का पान कर रहा है परन्तु मुझे राज्यस्थली प्राप्त हो जाए। मझे और संसार में कछ नहीं चाहिए। मैं राजा बन जाऊँ। राज्य के योग्य है अथवा नहीं ये देखो, वो नहीं जानता है। परन्तु देखो, राम, ऐसे वो राम थे, जो भयङ्कर वनों में बारह वर्ष के लिए, तप के लिए चले गए। और भरत, देखो, राष्ट्र को नहीं भोग रहा है। वो नीचे गुफा में रहता है। क्या मेरे विधाता का आसन पृथ्वी पर है तो मैं गुफा में चला जाऊँ? ये हमारी मात्र, मानो देखो, भातृ भक्ति होती है जिसके ऊपर मानव विचारता रहता है। परन्तु आधुनिक काल में जैसे भ्राता नष्ट हो जाए और मुझे राज्यस्थली प्राप्त हो जाए। आधुनिक काल में, वर्तमान में कितना अन्तर्द्वन्द्व माना गया है। यजमान को प्रेरणा विचारा जाता है जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों की चर्चा करते हैं तो हमारा अन्तरात्मा ये स्वीकार कर लेता है कि हम जैसे स्वर्ग में, आनन्द में विद्यमान हैं। आनन्द को प्राप्त कर रहे हों और ब्रह्मज्ञान में परणित हों।

तो इस प्रकार देखो, मैं विशेषता तो देने नहीं आया हूँ। मैं तो ये उच्चारण करने के लिए आया हूँ हे यजमान! तेरे हृदय में मानो देखो, द्रव्य के सदुपयोग की कामना बनी रहे और द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। और वह अग्न्याधान करते हुए देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु को वह उसमें साकल्य प्रदान करता रहे जिससे गृह उत्तम बन जाए, महान् बन जाए और पवित्रता की वेदी पर रत्त हो जाए। मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ, हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरा जीवन तपस्या में परणित होना चाहिए। देखो, नाना प्रकार के अपने विचारों को और आहारों को पवित्र बनाना चाहिए। जब तक मानो आहार पवित्र नहीं होगा के तो व्यवहार पवित्र नहीं होगा और व्यवहार पवित्र नहीं होगा तो मन पवित्र नहीं होगा। और मन पवित्र नहीं होगा तो देखो, तुम्हारा विचार पवित्र नहीं होगा। और जब विचार पवित्र नहीं होगा तो इन्द्रियाँ भी पवित्र नहीं बन पाएँगी। तो ऐसा मानो देखो, मेरा सदैव एक मन्तव्य रहता है, विचार रहता है कि आहार-व्यवहार दोनों पवित्रता में रत्त रहने चाहिए। हे यजमान! मेरे देखो, मेरा तो एक ही उद्देश्य रहता है क्या तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। महानता में परणित होते चले जाओ ऐसी मेरी कामना रहती है। और द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए।

भगवान् राम का तप

अब मैं, वर्णम् ब्रव्हे, देखो, मैं राम की गाथा उच्चारण कर रहा था। बारह वर्षों तक वो इन्द्रियों के ऊपर संयम करते रहे और गायत्राणी छन्दों में। और वो आहार क्या करते थे, ये विचार का विषय है। देखो, राम को देखो, एक देखो, एक दिवस देखो,

वायु का आहार करते थे शीतली प्राणायाम के द्वारा। और एक दिवस देखो, वो अन्नाद को पान करते थे। इसी प्रकार बारह वर्षों का तप करके जब मन पवित्र हो गया, इन्द्रियाँ पवित्र हो गयीं, सतोगुणी विचार बन गए तो इसके पश्चात् उन्होंने अयोध्या की राज्यस्थली को अपनाया। देखो, उसके पालन करने के लिए तत्पर हो गए। क्योंकि राष्ट्र कोई आवश्यक नहीं है। जब तक मानव के हृदय में मानव का अन्तरात्मा पवित्र न हो, जब तक मानव की इन्द्रियाँ संयमी न हों और देखो, यदि हम ये उच्चारण करने लगें कि महाराजा अश्व केतक-देखो, राम भी स्वयँ कला-कौशल, राम भी स्वयँ देखो, अपने में कृषि उद्गम करते थे और वह उसको पान करते थे। मानो देखो, उस अन्नाद को पान करके हृदय को ऊँचा बनाया जाता है। द्रव्य का सदुपयोग करें आज का राष्ट्र ये विचार रहा है क्या प्रजा के वैभव को संग्रह करता हुआ मैं राष्ट्र को उन्नत बना लूँ, ये असम्भव है। देखो, राष्ट्र जब ऊँचा होता है, जब राजा स्वयँ अपने में कृषि उद्गम करके अन्न को पान करता है और वह राजा देखो, प्रजा के वैभव को अपने में संग्रह नहीं करता है। वह देखो, वह अपने में महान् बन करके अपनी अन्तरात्मा को उज्ज्वल बनाता है। बहुत राजाओं का जीवन मुझे स्मरण आता रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा क्योंकि विशेषता में मैं नहीं जाऊँगा। विचार केवल ये कि देखो, हमारा वाक्य ये कह रहा है, हे यज्ञम् भूतम् प्रमाणाम् ब्रव्हे, यज्ञम् ब्रहे। प्रत्येक मानव को अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करना चाहिए। द्रव्य को देखो, सुरा, सुरा में नहीं ज्ञातम् ब्रव्हे नष्ट करना चाहिए। देखो, वह सुरा को अपने में, अपने द्रव्य को एकत्रित करके उसका सदुपयोग करे. यही उसकी महानता है। हे यजमान! तेरे जीवन की प्रतिभा ऊर्जा में गमन करती रहे। ये मेरा देखो, आज का उपदेश, सम्बाहा, ये आज का हमारा वाक्य है। समय मिलेगा तो पूज्यपाद गुरुदेव समय देते रहते हैं। आज के विचार को अब हम विराम दे रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवःमेरे प्यारे ऋषिवर !अभी-अभी मेरे प्यारे !महानन्द जी ने अपना बड़ा भव्य विचार दिया। और तपस्या के सम्बन्ध में जो इनका विचार रहा है, वह बड़ा अनुपम रहा है। मानो देखो, आज का हमारा विचार क्या हम परमपिता परमात्मा के, मानो उस यज्ञशाला का वर्णन कर रहे थे, जिस यज्ञशाला में हम सब विद्यमान हैं सुकर्म करने के लिए, विचारवान बनने के लिए, वेद का पठन-पाठन करने के लिए। और देखो, वह जो परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी विद्यमान है, यह ब्रह्माण्ड यज्ञशाला है, इसके ऊपर विचार करना चाहिए। हम उस परमपिता परमात्मा की महत्ती का गुणगान गाते रहें जो आनन्दमयी स्रोत है। ये है बेटा !आज का वाक्। समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मा वाचन्न आपाः। ओ३म् दधि ब्रह्मणाश्चम् आपाः। पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन् । पूज्यपाद गुरुदेवः आनन्दित रहो। दिनाँक :6 जनवरी, 1990 समय :दोपहर 11.30 बजे स्थान :श्री शिवकुमार त्यागी ,ग्राम धनौरा, हापुड़।

३ 07 01 1990 महर्षि भारद्वाज का विज्ञान

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है ,सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि यह संसार दो प्रकार का माना गया है ,एक जड़वत है ,तो द्वितीय चैतन्य है ,परन्तु वे परमपिता परमात्मा दोनों प्रकार के जगत में निहित रहते हैं। चेतना के मूल में ज्ञान और प्रयत्न है। और जितना भी यह जगत पिण्ड रूप में चाहे गतिवान भी हो परन्तु यदि ज्ञान और प्रयत्न नही है ,तो वह चेतना के रहित है ,वह संसार जड़वत माना गया है। इसीलिए हमारे यहां उस परमपिता परमात्मा की जो महती है ,वह अनन्तमयी है ,इसीलिए प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है ,जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। क्योंकि जब प्रत्येक वेदमन्त्र के हम गर्भ में प्रवेश करते हैं ,तो प्रायः प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाता रहता है। अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता है ,मुनिवरों !इसीलिए हमारे यहां वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में हैं ,वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी में वशीभूत रहता है ,जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में मानो यह शिशु पनपता रहता है ,और माता उसे अपने में धारण कर रही है ,अथवा उसे बसा रही है ,इसीलिए उसको वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। मानो यह मेरी प्यारी माता अपने में बसा रही है। कैसा उस प्रभु का विज्ञान है। इसीलिए हमारे यहां

परमपिता परमात्मा को विज्ञानवेत्ता कहते हैं। मेरे प्यारे !वह महिमावादी है ,मेरे पुत्रों !देखो, जब हम जैसे पुत्र माता के गर्भस्थल में निहित होते हैं। तो मानो जैसे यह बिन्दु बिन्दु में एक शिशु है ,और शिशु जब माता के गर्भस्थल में प्रवेश हो जाता है। तो मानो सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, देवां भूतं ब्रह्मणं देवाः वह जो देवताजन है ,वह माता के गर्भस्थल में शिशु की रक्षा कर रहे हैं। मानो देखो, वह जो चन्द्रमा वह हमें अमृत दे रहा है ,सूर्य प्रकाश दे रहा है ,और अग्नि उष्णा बना रही है और मुनिवरों !वह जो आपो है वह उस स्थली में ब्रह्मणा कृते ब्रव्हे कृतं वही माता के गर्भस्थल में मेरे पुत्रों !आपो ही ओढ़न है ,आपो ही आसन बना हुआ है ,और आपो ही उसके मानो पांशे हैं। वह जलों में निहित रहने वाला शिशु है जो आपो में बेटा !आपो वर्णात बन रहा है। परन्तु इसी प्रकार आपां देवत्वां लोकां हिरण्यं रथा मुनिवरों ! देखो, वह देवता है और वह अग्नि मुनिवरों !देखो, जब उष्णा बनाती रहती है , और देखो, वायु गति दे रहा है। वह प्राण दे रहा है। और मुनिवरों !देखो, वह अमृतं गुरूतव देने वाली पृथ्वी है और यह अन्तरिक्ष उसे अवकाश दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब मैं तेरे विज्ञान की विवेचना करना प्रारम्भ हम करते हैं। तो मानो एक एक वाक् तेरा विज्ञान में ही निहित रहता है , मेरी भोली माता को यह ज्ञान नही है ,कौन निर्माण कर रहा है ?कौन निर्माणवेत्ता है ?मेरे पुत्रों !देखो, सर्वत्र देवता उस शिशु की रक्षा कर रहे हैं। मानो वह देवतव पनप रहा है ,इसीलिए हमारे यहां वह जो देवतव है ,उसी अमृतं ब्रह्मा वह अमृत को प्रदान कर रहा है ,माता अपने में बसा रही है ,वह वसुन्धरा है , और जब माता के गर्भ से वही शिशु मेरे प्यारे !देखो, इस संसार सागर में आता है। माता के गर्भ से पृथक हो जाता है। माता के गर्भस्थल में बेटा !पूर्णतव रचना हो जाती है। बहतर करोड़, बहतर लाख, दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण करता है। मेरी भोली माता को ज्ञान नही है ,कौन निर्माण कर रहा है ? कौन निर्माणवेत्ता है ?मेरे प्यारे !देखो, कहीं हृदय का निर्माण हो रहा है ,कहीं

मानो देखो, बुद्धि का निर्माण हो रहा है ,बुद्धि एक नही होती अनन्य है ,जैसे हमारे यहां बुद्धि है ,वह साधारणतव कहलाती है। जो संसार को दृष्टिपात करती रहती है। परन्तु देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, और प्रज्ञा कहलाती है। यह चार प्रकार की यह मन की वृत्तियां मानी गई हैं ,जिसे बुद्धि के रूप में वर्णन किया गया है ,आचार्य ने बेटा !देखो, बुद्धि को कहीं सुनीता कहा है ,कहीं बुद्धि को मेरे प्यारे !रेणुका कहा है ,जिसको नाना प्रकार के भेदन माने गएं हैं। और यह नाना प्रकार के भेदनों वाली ये जो बुद्धियां हैं। इसी के ऊपर मानव बेटा !परम्परागतों से ही, अन्वेषण करता रहा है ,अथवा अनुसन्धान करता रहा है।

तो आओ मुनिवरों !देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नही आया हूँ ,केवल परिचय देना हमारा कर्तव्य है ,मुनिवरों !देखो, यही जब माता के गर्भ से पृथक हो कर संसार में आता है। तो यह पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के मानो व्यंजनों को देने वाली है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है। मेरे प्यारे ! देखो, कृषक इसे दूहने लगता है ,और वैज्ञानिक जब इसके गर्भ में प्रवेश करता है ,तो विज्ञानवेत्ता बेटा !देखो, कहीं मानो स्वर्ण की धातु को जानने के लिए तत्पर हो जाता है। कहीं मेरे प्यारे !देखो, इस माता के गर्भस्थल में स्वर्ण के परमाणुओं का आदान प्रदान हो रहा है ,कहीं मेरे पुत्रों !इस पृथ्वी के गर्भ में जल शक्तिशाली बनाया जा रहा है। सूर्य की किरणों का उसमें व्यवधान हो जाता है ,तो मेरे प्यारे !वही जल है ,जो वाहनों में शुद्धिकरण हो करके वही मुनिवरों ! देखो, वाहन उनमें क्रिया देने वाला है। हे मेरी माता वसुन्धरा तुझे वेद वसुन्धरा कहता है ,हे पृथ्वी !तू वसुन्धरा है। तू हमे अपने में बसा रही है ,हमे मानो जीवन प्रदान कर रही है ,यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज देने से ही तेरे गर्भ से उत्पन्न हो रहा है ,मेरे पुत्रों !देखो, जब वैज्ञानिक जन इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं। पृथ्वी माता के गर्भ में प्रवेश करते हैं ,तो नाना प्रकार का धातु पिपाद मानव के समीप आता है। और वह नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहते हैं। मेरे

प्यारे !देखो, अग्नि को जानते रहते हैं। अग्नं ब्रह्मणा व्रतं ,मेरे प्यारे !वही अग्नि है। जो नाना प्रकार की धातुओं को ,पृथ्वी के गर्भ में तपायमान करती है। वही तो तपती रहती है। तो मुनिवरों !देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने जब इस संसार को जानने के लिए तत्पर रहें ,तो मुनिवरों !देखो, उसके विज्ञान को जानने लगे ,मेरे प्यारे !मुझे वह काल स्मरण आता रहता है ,जब मुनिवरों !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां ,नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे ,और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को जानते रहते थे।

मेरे पुत्रों !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज मेरे पुत्रों !देखो, अपने आसन पर अपने विद्यालय में विद्यमान थे ,तो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां ,नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे ,और वह ब्रह्मचारियों को यह अध्ययन कराते रहते थे ,क्या इस संसार को जानना चाहिए , और इस संसार में कितना विज्ञान है ,मानो प्रभु की कैसी अनुपमता है उसको जानने का प्रयास करो। मेरे प्यारे !देखो, नाना ब्रह्मचारी ,जैसे ब्रह्मचारी सुकेता , ब्रह्मचारी कवन्धि ,और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता ,ब्रह्मचारी रोहिणी कृतिका, महर्षि पणपेतु ,ब्रह्मचारिणी शबरी और भी नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे ,मेरे पुत्रों !देखो, उस अध्ययनशाला में ,वह विज्ञान के नाना प्रकार के तथ्यों में रमण कर जाते ,भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा !सबसे प्रथम ,अपने आश्रम में एक यज्ञशाला का निर्माण किया था ,जिस यज्ञशाला को ,मेरे प्यारे !देखो, वैज्ञानिक जन उस पर अनुसन्धान भी करते रहे ,मुझे स्मरण आता रहता है मेरे प्यारे ! देखो, जब भी उनके यहां कोई अतिथि आता उसी काल में मुनिवरों !देखो, अतिथि के द्वारा आश्रम में याग होता ,यज्ञशाला में और उसके ऊपर अनुसन्धान होता रहता। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने उस यज्ञशाला को मानो ऐसा निर्माणित किया था बेटा !ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया ,जो मुनिवरों !देखो, यज्ञशाला में याग कर रहे थे। उन यज्ञशालाओं में देखो, होता अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा इत्यादि यज्ञमान ,होतागण और यज्ञशाला का जितना आकार बना हुआ

था उतने आकार वाला एक रथ मानो देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा और उन यन्त्रों को मानो देखो, अमृतं ब्रह्मा वह चित्र उसमें दृष्टिपात आते रहते थे यन्त्रों में। मेरे पुत्रों !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है ,गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और भी नाना ऋषिवर मेरे पुत्रों !देखो, एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पंहुचे ,और भारद्वाज मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया क्योंकि हमारे यहां यह जो नाना प्रकार के यागों का वर्णन है। यह परम्परागतों से ही, बड़ा विचित्र माना गया है ,देखो, पञ्च यागों को हमारे यहां महायाग के रूप में वर्णन किया गया है , जैसे बेटा !देखो, हमारे यहां सबसे प्रथम ब्रह्मयाग का वर्णन है ,ब्रह्म का चिन्तन करना ,ब्रह्म की आभा में निहित रहना ,मेरे प्यारे !देखो, देव याग करना , देवताओं की पूजा करना है। मैं आज उस पूजा के सम्बन्ध में कुछ विचार नही दूंगा ,केवल इतना ही संकेत हमे देना है ,क्या पूजा का अभिप्रायः है प्रत्येक देवता के द्वारा जो गुण हैं। चाहे वह जड़ है ,चाहे वह चैतन्य है ,उन गुणों को अपने में धारण करने का नाम ही उनकी पूजा मानी गई है। मेरे पुत्रों !यह विवेचना मैंने कई काल में वर्णन की है ,आज मैं इस सम्बन्ध में शेष चर्चा नही केवल देखो, देवता का अर्थ है क्या उनके गुणों को अपने में धारण करना और सुगन्ध करना ,याग करना, वेदमन्त्रों के उद्घोष के द्वारा मेरे पुत्रों !वह देवयाग कहलाता है। उसके पश्चात अतिथि याग है। वह कोई भी अतिथि हमारे आश्रम में मानो गृह में किसी भी काल में गृह में प्रवेश करे ,तो उसको तृप्त करना चाहिए। मेरे प्यारे !देखो, द्वितीय बलि वैश्व यागों का वर्णन है ,तो मानो यह पञ्च महायागों का वर्णन हमारे यहां घोष यागों के सहित पञ्च यागों का वर्णन बेटा !जिसको महायाग कहा गया है ,याग का अभिप्रायः यह है कि जितने भी शुभकर्म हैं ,वह सर्वत्र वास्तव में याग माने गएं हैं। आज मैं याग की विस्तृत विवेचना नही कर पाऊंगा।

मेरे प्यारे !मुझे याग के सम्बन्ध में एक वार्त्ता स्मरण आ रही है ,जब माता मल्दाल्सा के गर्भस्थल में मानो देखो, अन्तर्हृदय में मानो गर्भ में शिशु का प्रवेश

होता था ,तो माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रही। मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें बड़ी विचित्र वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ ,जो वेद का मन्त्र भी इस सम्बन्ध में कुछ कह रहा है ,मेरे प्यारे !देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान हों ,और माता यह चाहती है ,कि मेरा गर्भाशय संसार में उज्ज्वल बन जाएं ,पवित्र बन जाएं ,तो बेटा !जैसे माता के गर्भस्थल में आत्मा का प्रवेश शिशु का प्रवेश हो जाता है। उस समय गर्भ की आत्मा से वह वार्त्ता प्रगट करती थी , और वह कैसे करती बेटा !देखो, प्राण और अपान को मानो दोनों को एक सूत्र में ला करके और मुनिवरों !देखो, उदान से उसका समन्वय करती हुई ,तो मेरे प्यारे !देखो, आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती हुई ,वह मेरी प्यारी माताएं और माता ने कहा सम्भूति ब्रह्मा, सम्ब्रव्हे देवत्वां हे चित्रं ब्रव्हा व्रतं बेटा !वेद का वाक् यह क्या कह रहा है माता कहती है कि हे बाल्य !तू मेरे गर्भस्थल में शिशु जो वास कर रहा है ,तुझे मेरे गर्भस्थल में भी आया है तो तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है ,और ब्रह्मनिष्ठ बन करके मानो देखो, इस संसार के मान अपमान में तुझे परणित नही होना है। तुझे परमपिता परमात्मा के अन्तर्हृदय में ही प्रवेश करना है। तो माता यह उपदेश देती रहती और विवेचना गर्भस्थल में करती रहती उसके संस्कारों को परिपक्व है वह बेटा !माता एक याग कर रही है वह याग है बेटा !आज मैं याग की विवेचना तुम्हें विस्तृत नही केवल यह क्या जितना भी सुकर्म है ,इन पञ्चयागों में बेटा !जितने भी सुकर्म है ,वे सब इनके गर्भस्थल में प्रवेश हो जाते हैं। मेरे प्यारे !जो इनको जान लेता है ,वह वास्तव में प्रियतम को प्राप्त हो जाता है। तो आओ मेरे प्यारे !मैं दूरी न चला जाऊं ,विचार केवल यह कि महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां ,बेटा !यज्ञशाला का निर्माण हुआ ,वह चौबीस कोणों की यज्ञशाला थी ,उस चौबीस कोणों की यज्ञशाला में ,जो याग करता है ,वह बेटा !धन्यता को प्राप्त होता रहा है। मेरे प्यारे !देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और देखो, उनके नाना ऋषिवर जैसे महर्षि वैशम्पायन ,ब्रह्मचारी श्वेतकेतु ,मेरे प्यारे ! देवाश्वंधनं देखो, गाड़ीव्रताः और मुनिवरों !देखो, जैसे महर्षि प्रवाहण, महर्षि

शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु और महर्षि विभाण्डक और महर्षि व्रता वाहक ऋषि महाराज मेरे प्यारे !देखो, नाना ऋषिवर ,वह गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के आश्रम में विद्यमान थे। उनसे उन्होंने कोई प्रश्न किया ,उन्होंने कहा कि चलो ,आज तो महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला को दृष्टिपात करके आएंगें मेरे प्यारे !उन्होंने वहां से गमन किया ,और भ्रमण करते हुए मुनिवरों !वह गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला समाज ,भारद्वाज मुनि आश्रम में उन्होंने प्रवेश किया। भारद्वाज मुनि ने बेटा !उनका अतिथि किया ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि से कहा कि ऋषियों का स्वागत करो तो बेटा !जैसा उनका योग्यता थी उसके अनुसार उन्होंने आसन दिया अपने अपने आसन पर विद्यमान हो गएं उन्होंने बेटा !उनका अतिथि किया ,और अतिथि करने के पश्चात उन्होंने नतमस्तिष्क हो करके कहा कहो भगवन !मेरे सुयोग्य कोई क्रिया अमृतं उद्गीत गाईए। उन्होंने कहा कि हे भगवन !हमारी कोई ऐसी जिज्ञासा या प्रश्नावृत्ति नही है। हम तो केवल कुछ जानने के लिए आए हैं ,उन्होंने कहा प्रभु !क्या जानना चाहते हो ?उन्होंने कहा हे ऋषिवर !हम इस जिज्ञासा में लगे हुए है ,वेदमन्त्रों में यह आता है ,क्या मानव के शब्दों का मानो देखो, नृत्त होता रहता है। और वह द्यौ लोक में प्रवेश होते रहते हैं। मानो यह हमे जिज्ञासा बनी यह हम चर्चा ही कर रहे थे मानो हम आपसे प्रश्न तो नही करना चाहते हैं ,क्योंकि हम तो जिज्ञासु हैं और जिज्ञासा ले करके आए हैं ,उन्होंने कहा प्रभु !जो उच्चारण करो ,वह यथार्थ है। जो सुयोग्यता है ,उसे प्रहा ब्रहे मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने कहा सम्भव ब्रहे महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि महाराज !मेरे आश्रम का एक नियम बना हुआ है कि कुछ समय से मैंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया है ,और जो आता है अतिथि ,मेरे यहां सबसे प्रथम याग करता है ,और वह याग में परणित हो करके मानो उसके पश्चात मानो देखो, उनकी जिज्ञासाओं का निवारण होता रहता है , जितना जानते हैं ,मानो विशेष नही जितना भी जानते हैं ,उतना निवारण कर पाते हैं, मेरे प्यारे !देखो, वह बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने देखो, ऋषि मुनियो में कोई

उनमें से ब्रह्मा बना कोई उद्गाता बना कोई अध्वर्यु बना कोई यज्ञमान बना और होताजन बन करके और पुरोहित बन करके बेटा !उस यज्ञशाला में याग का प्रारम्भ हुआ जब वह याग प्रारम्भ करने लगे तो ब्रह्मचारी सुकेता ने और कवन्धि ने बेटा !उसमें यन्त्रों का निर्धारित कर दिया जब मेरे प्यारे !देखो, यन्त्र अस्तम उसमें विद्यमान हो गएं जैसे ही वह उद्गाता ,अध्वर्यु मानो उद्गीत गाने लगे और साकल्य और अग्निहोत्र करने लगे ,तो साकल्य जैसे उसमें प्रदान किया नाना प्रकार का देखो, हूत करने लगे तो मेरे पुत्रों !देखो, जैसे स्वाहाः उच्चारण करते थे उनके चित्र शब्द और शब्दों के चित्र भी बेटा !देखो, यन्त्रशाला में दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा है भारद्वाज मुनि बोले कि हे ऋषिवर !यह तुम्हारे चित्र बन करके मानो द्यौ लोक को प्रवेश कर रहे हैं। द्यौ लोक को गमन कर रहे हैं ,मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने कहा द्यौं भूतं ब्रह्मा द्यौ लोक को यह प्राप्त हो रहे हैं। यह दृष्टिपात करो। मेरे प्यारे !देखो, तीन प्रकार के शब्दों की श्रेणी होती हैं **,एक मानो देखो, भू और भुवः ,स्वः मेरे पुत्रों !देखो, जो स्वः वाला शब्द है, वह महान और पवित्र होता है ,और वह शब्द जितना भी शुद्ध और पवित्र होगा और निरभिमानी होगा और मानो जितना वह सात्विक वातावरण से भी उपरामता को प्राप्त होगा वह द्यौ लोक में प्रवेश हो जाएगा** और द्यौ की आभा में रत्त हो जाएगा परन्तु एक शब्द है जो रजोगुण से सना हुआ शब्द है ,वह मेरे प्यारे !भुवः लोक में ओत प्रोत हो जाता है। और जो मुनिवरों !देखो, तमोगुण, रजोगुण से मिश्रित होता है , वह मुनिवरों !देखो, भु लोक में गमन करता है ,मेरे प्यारे !देखो, आज मैं इसके ऊपर कोई विज्ञान विशेषता तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ। विचार केवल यह क्या मुनिवरों !देखो, जो सात्विक शब्द होते हैं ,वह द्यौ लोक में जाते हैं , इसीलिए मानव के लिए यह कहा है कि जो हृदय को ऊर्ध्वा बना करके शब्दों के ऊपर उद्गीत गा ,अन्यथा यही शब्द है जो अग्नि प्रदीप्त कर देता है ,यही शब्द है जो द्यौ लोक में मानो द्यौ में प्रवेश हो जाता है ,मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने इस प्रकार जब वर्णन कराया ,उन्होंने कहा तुम याग करते रहो और तुम अपने शब्दों

के साथ चित्रों को दृष्टिपात करते रहो ,वह द्यौ लोक में जा रहे हैं ,द्यौं भूतं ब्रह्मा कृतं यह द्यौ में ही मानो देखो, चित्र भी रहता है ,इसी में शब्द रहता है ,और वह मुनिवरों !देखो, उसी में क्रियाकलाप रहता है ,वह उसमें विद्यमान हो जाता है।

तो आओ मेरे पुत्रों !जब ऋषियों ने इस प्रकार विज्ञानशाला में यन्त्रों को दृष्टिपात किया ,तो वह बड़े प्रसन्न हुए और वह बोले कि धन्य है प्रभु विज्ञानां प्राणां भूतं ब्रव्हे तुम्हें धन्य है भगवन !मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने याग के माध्यम से अपने प्रश्नों को अपनी जिज्ञासा को उन्होंने पूर्ण किया और उन्होंने कहा प्रभु !मेरी जिज्ञसा पूर्ण हो गई है। तो मुनिवरों !देखो, महर्षि भारद्वाज इत्यादि ब्रह्मणे वह बड़े प्रसन्नता में परणित हो गएं ,गाड़ीवान रेवक ने कहा धन्य है प्रभु !मेरे पुत्रों ! देखो, भारद्वाज की विज्ञानशाला में ,एक यन्त्र का और निर्माण हुआ था ,बेटा ! एक वेदमन्त्र वो गान रूप में गाते रहते ,और वेद का मन्त्र यह कहता ,यशस्सुतं ब्रह्मे चित्रो रथं ब्रव्हा कृतं देवत्वां मनं ब्रव्हे वरणां सुताः वेद का मन्त्र ये कहता रहता था ,कि माता के गर्भस्थल में ,एक बिन्दु है ,बिन्दु में शिशु रहता है ,और मानो शिशु वह रूप में रह करके उसी से बाल्य का निर्माण होता है ,प्रभु ! निर्माण करता रहता है। मानो देखो, हम ,ऐसा अपने में कि हम भी उन यन्त्र उस मानो देखो, उसका आकर रक्तं भूतं ब्रव्हे मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था ,उस समय बहुत पुरातन काल की वार्त्ता बेटा !तुम्हें प्रगट करा रहा हूँ भारद्वाज मुनि के यहां एक यन्त्र का निर्माण हुआ था मेरे प्यारे !देखो, एक रक्त का बिन्दु ,उस यन्त्र में प्रवेश कर दिया जाएं ,तो मुनिवरों !देखो, जिस मानव का रक्त का बिन्दु है उसी का चित्र दृष्टिपात आता रहता है। मेरे प्यारे !देखो, विज्ञान अपनी प्रतिभा में बड़ा विचित्र बन करके रहा है मुझे बहुत सा काल बेटा ! हमे स्मरण आता रहता है मुनिवरों !ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में ,बेटा !प्रज्ञावी में कितना महान ,कितनी महानता विद्यमान रही है विचार आता रहता है ,मेरे प्यारे !क्या उनके यहां एक यन्त्र चित्रावली का निर्माण हुआ था ,बेटा !मेरे प्यारे ! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज जब चित्रावली में ले गएं ,तो उन यन्त्र में ये

विशेषता थी ,कि एक रक्त का बिन्दु हैं उस रक्त के बिन्दु से जिस मानव का रक्त का बिन्दु है ,उसी का चित्र यन्त्र में दृष्टिपात आ जाता था। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि सोमकेतु दद्दड़ीय गोत्रीय एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे ,भारद्वाज मुनि ने यह वर्णन करा रहे हैं ,ऋषियों से ,क्या जब सोमकेतु हमारे आश्रम में विराजे ,तो उन्होंने कहा कि प्रभु !मैं यह चाहता हूँ कि मैं अपने पूर्वजों का दर्शन करना चाहता हूँ ,उन्होंने कहा भारद्वाज बोले क्या कहीं तुम्हें रक्त का बिन्दु ,कहीं तुम्हें प्राप्त हो जाएं ,अपने पूर्वजों का ,तो मैं तुम्हें दर्शन करा सकता हूँ। मेरे प्यारे !देखो, जब वह अपने आश्रम में पंहुचे ,तो उनके पिता महापिता मानो यन्त्रों में उनके छठे महापिता मानो देखो, उनके संग्राहलय , संग्राहलय में पंहुचे ,अपने पूर्वजों के संग्राहलय में उनके एक वस्त्र पर ,एक मानो छठे महापिता का एक बिन्दु था ,एक रक्त का बिन्दु ,उस वस्त्र पर था ,मेरे पुत्रों ! देखो, उसे ला करके उन्होंने भारद्वाज मुनि से कहा प्रभु !ये मुझे प्राप्त हुआ है , जिनको बेटा !एक सौ पिचासी वर्ष जिनके शरीर को पूर्ण हो गया था। निधन हो गया था मेरे पुत्रों !देखो, उस समय ब्रह्मणे यन्त्रों में ,उसी रक्त के बिन्दु से ,उसी छठे महापिता का बेटा !उनको दर्शन हो गया। तो मेरे प्यारे !देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा ,क्या हे भगवन !मैं तुम्हें ये दृष्टिपात कराऊंगा तुम अपना एक रक्त का बिन्दु दो ,और बिन्दु से तुम्हारा ही दर्शन यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगेगा। मेरे प्यारे !देखो, विज्ञान अपनी आभा में ,परम्परागतों से बेटा !नृत्त करता रहा है , और ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में ये विज्ञान मानो नृतिका बन करके रहा है। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ ,केवल तुम्हें यह परिचय देना चाहता हूँ ,कि केवल तुम्हारे यहां सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और मुनिवरों ! देखो, यह क्रियाकलाप एक अन्वेषण का चलता रहता ,प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन होता रहा है। और उस अध्ययन में मानो जो विज्ञान है ,वह अपने में बड़ा सार्थक बन करके रहा है ,तो मेरे पुत्रों !देखो, भारद्वाज और गाड़ीवान रेवक आदि ऋषिवर सब विद्यमान हो गएं। उन्होंने कहा हे भारद्वाज !तुम्हारा यह जो

विज्ञान है यह बड़ा अनुपम दृष्टिपात आया हमारा आत्मा तो बड़ा प्रसन्न हो गया है ,हम तो कई वेदमन्त्रों में इनका अध्ययन करते रहे थे। और शब्द की कितनी गति है ,और देखो, गमन करता है ,परन्तु देखो, आज हम दृष्टिपात कर रहे हैं , हमारा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है। उन्होंने कहा धन्यं ब्रव्हे उन्होंने एक वाक् कहा कि क्या भगवन !हम यह एक वाक् जानना चाहते हैं ,ऋषिवर क्या तुम्हारा जो गोत्र है ,वह भारद्वाज है ,और भारद्वाज गोत्रों में बड़े वंशलज हुए हैं ,मानो तुम्हारे गोत्र में मानो देखो, नाना वंशावली चली आ रही है। तुम्हारे गोत्रों का निकास मानो नाना ऋषियों से हुआ है ,भारद्वाज गोत्रों का जो निकास हुआ है , वह दद्दड़ीय गोत्रों से हुआ है ,और मानो देखो, अमृतं ब्रव्हे कृतं देवत्वां तुम्हारे जो गोत्रों का जो निर्माण हुआ है ,भारद्वाज का वह मानो देखो, हरितत गोत्रों से तुम्हारा निकास हुआ है ,और हरितत गोत्रों का निकास वायु गोत्र से हुआ है , और वायु गोत्रों मानो देखो, लाखों वंश चले गएं ,और इसी प्रकार हरितत गोत्र में भी लाखों वंशलज चले गएं ,और तुम्हारे मानो देखो, वासु गोत्रों का जो निकास हुआ ,वह ब्रह्मा के पुत्र सोमवृत्तिका से तुम्हारा यह वंश चला है। और जितने यह वंशलज हुए हैं ,इनमें सब मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता होते चले आए है। और कोई ब्रह्मवेत्तां ब्रह्मे ब्रह्म का चिन्तन करते हुए उनके ऊपर अन्वेषण करते हैं। परन्तु यह जो विज्ञान की प्रतिभा जन्म हुआ है ,यह जो तुम्हारे अन्तर्हृदय में इस प्रकार की जो भावना जो जागरूक हुई है कि मैं विज्ञानवेत्ता बनूं। मैं वैज्ञानिक बन करके मैं मानो अपनी आभा में परणित हो जाऊं। मेरे प्यारे !देखो, यह प्रेरणा तुम्हें कहां से प्राप्त हुई। तो मुनिवरों !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले क्या इतने शब्द प्रथम तो मानो देखो, सहायक मेरी माता है ,माता ने मुझे यह प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कैसे ?हमे वर्णन कराईए ,भगवन !मेरे प्यारे !भारद्वाज मुनि बोले जब मैं मेरी अवस्था तीन वर्ष चार दिवस की आयु थी एक समय माता पिता प्रातःकालीन ब्रह्मयाग कर रहे थे और ब्रह्म का चिन्तन करते हुए क्योंकि गृह जब भी स्वर्ग बनते हैं ,भारद्वाज कहते हैं जब भी स्वर्ग बनते हैं ,तो माता पिता को

प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करना चाहिए ,और ब्रह्म का चिन्तन जितना किया जाएगा ,उतना गृह का परमाणुवाद पवित्र बनेगा ,और उसके गृह में मानो वास करने वाले ,बाल्य बालिका वह सदैव मानो देखो, उन गुणों को अपनाने वाले बनेंगें ,गृह स्वर्ग बन जाएगा ,इसीलिए अमृतं ब्रह्मा ये ब्रह्म का चिन्तन होना चाहिए ,पति पत्नी अपने आसन पर विद्यमान हैं ,दोनों चर्चा कर रहे हैं ,और उद्गीत गा रहे हैं ,कि हमे ब्रह्म कैसा है, इस संसार का नियन्ता है निर्माण करने वाला है ,हमारे शरीर को कैसा निर्माणित किया है ,मानो देखो, जिस प्रकार के विज्ञान की चर्चा माता पिता करते हैं ज्ञान की और ब्रह्म प्रतिभा की तो बाल्य बालिका उस गृह में बेटा !पवित्र बन जाते हैं। मेरे प्यारे !मैं आज तुम्हें विशेषता में नही ले जाऊंगा ,केवल विचार विनिमय यह है ,कि आज मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों !देखो, भारद्वाज मुनि बोले ,क्या मेरे पिता का नाम रेंगणी भारद्वाज ,रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज ब्रह्म का चिन्तन करने के पश्चात ,यह निश्चय हुआ कि आज चलो ,देखो, देव याग करेंगें और देवयाग के पश्चात उन्होंने निश्चय किया कि आज पितर याग करेंगें उन्होंने अपने पिता महापिता प्रमाणं ब्रह्मे पितर याग के लिए वह बेटा !परणित हो गएं। पितर याग में बेटा !देखो, पिता महापिता, पड़पिता जो भी संसार में थे आचार्यजन उन्हें सबको निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करने के पश्चात मानो देखो, ब्रहे कृतं दिव्य प्रव्हा विद्यमान हो गएं वह सब निमन्त्रण के पश्चात ,उन्हें भोज कराया। नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराया ,और उन्होंने बारी बारी सब ऋषि मुनियों ने ,मेरे पितर को शुभ आशीर्वाद के रूप में ,दो दो शब्दों की विवेचना करना ,क्योंकि वह तपस्वी थे, और तपस्या के दो दो शब्द जो होते है। वह बड़े महान होते हैं ,वह कहते थे पितर आज मैंने तुम्हें भोज कराया है ,मैं आपका मानो देखो, पितर याग कें परणित हो गया हूँ , हे पितर !मुझे कोई न कोई उपदेश दीजिए ,जिससे मेरा कल्याण हो जाएं। तो मेरे प्यारे !देखो, पितर जनों का यह सदैव एक कृत रहा है। परम्परागतों में एक नृत होता रहा है ,क्या अपने मुखारबिन्दु से कुछ न कुछ उद्गीत गाना ,वह कहते

थे कि तुम्हारे जीवन में सदैव यौगिकता बनी रहे ,और वह यौगिकता और महान बने मानो तुम यागों में परणित होते रहो। इस प्रकार देखो, उनके महापितर ने यह वाक् कहा और उन्होंने कहा कि तुम अतिथियों का पूजन ,पितरों का याग करते रहो ,क्योंकि पितरों का याग करने से ,तुम्हारे हृदय में नम्रता आती है ,और जितनी भी नम्रता होती है उतना ही मानव का कल्याण होता है। जितना मानव में अभिमान होता है ,अभिमान उस काल में होता है ,जब वह अज्ञान में परणित हो जाता है। उस परमपिता परमात्मा को अपने से दूरी कर देता है। पितरों को दूरी कर देता है उसमें अज्ञान अभिमान आता है और देखो, अभिमानं ब्रव्हे अोर अभिमान में अज्ञान आ जाता है ,और अज्ञान के पश्चात अन्धकार आ जाता है , अन्धकार के पश्चात देखो, उसकी मृत्यु हो जाती है। तो मेरे पुत्रों !देखो, पितर ने शिक्षा दे करके वहां से उन्होंने प्रस्थान किया ,मानो देखो, इतने में भी मेरा बाल्यकाल था ,क्रीड़ा करता हुआ ,अपने पितर के आंगन में प्रवेश कर गया। उन्होंने कहा देवी से मेरी प्यारी माता से कहा ,हे दिव्या !तुमने बाल्य को भोज कराया अथवा नही। तो सबसे प्रथम जब मेरे से यह प्रश्न किया ,तो मेरे ने एक वाक् मिथ्या उच्चारण कर दिया ,क्या मैंने भोज नही किया। उन्होंने मेरी प्यारी माता शकुंतका से कहा ,कि हे शकुंतका !तुमने बाल्य को भोज नही कराया है ? उस समय माता ने कहा प्रभु !मैंने तो भोज करा दिया है ,यह मिथ्या उच्चारण कर रहा है। तो मेरे प्यारे !देखो, उस समय पितर क्या कहते है ?पितर ने कहा हे बाल्य !हमारे वंशलज में कोई मिथ्यावादी अब तक नही हुआ ,तुम कैसे मिथ्यावादी बन गएं। हे बाल्य !हमारा गृह जिस गृह में बाल्य देखो, मिथ्यावादी होते है। वह गृह अशुद्ध हो जाता है। उस गृह का परमाणुवाद देखो, अपवित्र हो जाता है। मेरे प्यारे !देखो, उस समय मैं शान्त रह गया ,और वह माता पिता से वह सब मेरे अन्तर्हृदय पर अंकित होने लगे ,माता ने ये कहा कि हे बाल्य !तूने मेरे गर्भस्थल से जन्म लिया है यह मेरा गर्भाशय दूषित हो गया है। तो मेरे पुत्रों ! देखो, भारद्वाज कहते है। क्या ,मैने उसी प्रेरणा को ले करके तो मानो देखो, मेरे

पितर ने ,जब मुझे तत्त्व मुनि के यहां विद्यालय में प्रवेश किया ,तो मेरा अध्ययन करने का परमाणु विद्या को जानने के लिए तत्पर हो गया। और मैंने उस विद्या का अध्ययन किया ,जिस अध्ययन के लिए परणित रहा अपने में परमाणुवाद को जानने में तत्पर हो गया।

परिणाम यह हुआ कि मैं उसी आभा में मानो देखो, माता ने जब मुझे अमृताम् मुझे उपदेश दिया मेरा उपनयन आचार्य के कुल में हुआ मैं परमाणु विद्या को अध्ययन करने लगा। मानो देखो, मेरे पितर थे आचार्य जन एक समय आचार्यजन ने मुझे परमाणु विद्या में दृष्टिपात कराया मानो देखो, ब्रह्मचारियों की जब मैं परीक्षा आता परीक्षफल में मानो कहीं किसी से प्रथम आता कहीं किसी से द्वितीय आता ,मैं अपनी विद्या में पारायण बन गया मानो मैं मेरे पितर के यहां एक विज्ञानशाला थी ,उस विज्ञानशाला में सबसे प्रथम उस काल में महर्षि तत्व मुनि के यहां एक यन्त्र का निर्माण किया गया था ,जिस यन्त्र में देखो, अन्तरिक्ष की यात्रा करते थे ,मानो देखो, एक समय मुझे अमृतां ब्रह्मणे भारद्वाज कहते हैं ,क्या देखो, मैं और यह सुनीता ब्रह्मचारी थे ,महर्षि तत्त्वेतर ऋषि महाराज के पुत्र मानो दोंनो देखो, यन्त्र में विद्यमान हो करके ,और अन्तरिक्ष के आचार्य ने हमें उड़ाने में ,हमें बड़ा कृत कर दिया ,विचार आया भारद्वाज कहते हैं ,क्या मैं देखो, वो यन्त्र यहां से आचार्य के कुल से जब यन्त्र गमन करता है ,तो यन्त्र मानो देखो, उड़ान उड़ते सबसे प्रथम यन्त्र चन्द्रमा में पंहुचा ,और चन्द्रमा से उड़ाने उड़ी ,तो वह बुध में चला गया ,और बुध से जब उड़ाने उड़ी तो शुक्र में चला गया ,शुक्र से उड़ाने उड़ी तो वह मंगल में चला गया मंगल से उड़ाने उड़ी तो वह मृचिका मण्डल में चला गया ,मृचिका मण्डल से उड़ाने उड़ी ,तो वह वशिष्ठ मण्डल में चला गया , वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी ,तो अरूणधती में चला गया ,और अरूणधती से उड़ान उड़ी ,तो रोहिणीकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया ,रोहिणीकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी ,तो कृतिका मण्डल में प्रवेश कर गया ,कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी ,तो विश्वेतकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया ,वह विश्वतकेतु मण्डल से उड़ाने उड़ी तो वह वसांग गति मण्डल में प्रवेश कर गया वगा गति मण्डल से उड़ान उड़ाने उड़ाने उड़ता हुआ वह मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया और मृचिका से उड़ाने उड़ी तो वह स्वाति में चला गया ,और स्वाति से उड़ाने उड़ी तो मुनिवरों !देखो, वह पुष्प नक्षत्र में प्रवेश कर गया। हे प्रभु !मुझे स्मरण है वह बहतर लोकों का भ्रमण करके और वह यान तत्त्व मुनि के आश्रम में प्रवेश कर गया। तो मेरे प्यारे !देखो, भारद्वाज ने कहा प्रभु !यह जो मुझे प्रेरणा प्राप्त हो गई है ये मेरी माता की प्रेरणा है ,पितर का आदेश है ,पिता की प्रेरणा है ,आचार्यों की प्रेरणा से मानो देखो, मैं अमृतां भूतं ब्रह्मे अब मुझे तत्त्व मुनि महाराज की प्रेरणा से मैंने मानो देखो, उस परमाणु विद्या के ऊपर अध्ययन प्रारम्भ किया हैं, मैं इस प्रकृति के स्वरूप में प्रवेश कर गया हूँ ,मैंने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा ,प्रभु !मैं इन्हीं में मानो संलग्न रहता हूँ ,मुझे ये प्रेरणा मुझे माता ने दी है , क्योंकि माता संसार में सबसे महान प्रेरक होती है। वह प्रेरणा देने वाली होती है ,इसीलिए जो माता ने मुझे प्रेरणा दी हैं , उसी प्रेरणा के आधार पर मैं अपने क्रियाकलाप में परणित हूँ ,फिर तो आचार्य मुझे प्राप्त हो जाते हैं ,मनतव के आधार पर , तो मेरे प्यारे !देखो, विचार विनिमय क्या हमारे इन वाक्यों को मैं दूरी न ले जाऊं ,विचार तो मेरे प्यारे !आते ही रहते हैं , परन्तु विचार विनिमय ये है कि हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है ,वेदमन्त्र कहता है वसुन्धरं ब्रह्मणा कृतं देवत्वां ब्रव्हे हे माता वसन्धरा !तू हमारा कल्याण करने वाली है ,हे माता !तुझे वेद ने सुनीता कहा है। कहीं रेणुका कहां है मानो देखो, धेनु कहा है ,नाना प्रकार के रूपों में तेरा वर्णन आता रहा है। तू प्राण और अपान को एकाग्र करती हुई ,तू गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रहती है। ये चर्चाएं तो बेटा !हम सदैव गान गाते रहते हैं वेदमन्त्रों में इस प्रकार की विद्याओं का वर्णन आता

रहता है ,आज का विचार क्या मेरे प्यारे !देखो, भारद्वाज मुनि आश्रम में प्रायः देखो, व्रतं होता रहा ,और यह चित्रावलियां बनती रही हैं ,विज्ञान अपनी सीमा पर बड़ा विचित्र बन करके रहा है ,ये है बेटा !आज का वाक् ,आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत है ,मानो उस परमपिता परमात्मा दोनों प्रकार के जगत में विद्यमान है। उसी से निहित है ,वही मेरे प्यारे !देखो, वसुन्धरा बन करके ,इस ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए हुए रहता है ,प्रत्येक परमाणु अपनी अपनी आभा में गतिवान रहा है ,यह है बेटा !आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा ,मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर पाऊंगा ,आज का विचार अब समाप्त ,अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आपा रथं मानं गायन्त्वा रथं आपाः। ओ३म् जनिता रेधि रथाः आपा रेवं आभाः३म्। दिनांक 1990 01 07।

४ 08 01 1990 आत्मा का प्रकाश

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां , परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस प्रहे मंगलं श्वञ्जनं जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं , और वह यज्ञोमयी स्वरूप हैं ,और वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और विज्ञानमयी हैं ,सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए ,परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं। और वह सीमा में आने वाले नही हैं ,वह अनन्तमयी मानो उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर जब ऋषि मुनि बेटा !अन्वेषण करते रहे मानो उसकी अनन्तता में और उसकी महानता का जब अपने में धारयामि बने , तो उसमें अनन्तता ही दृष्टिपात आती रही है। अन्तिम बेटा !चरण यह होता है कि मानव की वाणी और इन्द्रियां सब मौन हो जाती है। उसका बखान करते करते बहुत दूरी चली जाती है ,परन्तु अन्त में मौन हो जाते हैं और अनन्तमयी कह करके बेटा !वह शान्त मुद्रा में मुद्रित हो जाते हैं।

तो आओ मुनिवरों !आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का हम गुणगान गाते चले जाएं ,क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सृष्टि का रचयिता है ,और उग्रवाद है ,मानो परमपिता परमात्मा ने उग्रवाद को उत्पन्न करते हुए और उग्रवाद को उससे मानो समर्पित कर दिया है। और ये संसार मानो उग्र रूप में ही अपने जीवन को सम्पन्न और सम्वृत्तियों में रत्त करता रहा है। तो आओ ,मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में नही ले जाऊंगा ,क्योंकि वेदमन्त्र तो इस प्रकार की उड़ाने उड़ता ही रहता है। क्योंकि संसार में जितना भी उत्पति का मूल है ,उस मूल में उग्रवाद

है ,और सृष्टि के रचने में भी उग्रवाद प्रतीत होता है। मेरे पुत्रों !उग्रवाद में उग्रवाद को ही समर्पित करते हुए और उसी में मुनिवरों !देखो, निर्माण की प्रतिभा निहित रहती है। तो आओ मुनिवरों !देखो, उस वेदमन्त्र में हम क्या उद्गीत गाना चाहते हैं ,वेदमन्त्र यह कहता है कि परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं। और उसकी अनन्तता एक एक वेदमन्त्र में बेटा !दृष्टिपात आती रहती है।

तो आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना नही देना चाहता हूँ विचार यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है ,हमे नाना प्रकार की प्रेरणा दे करके प्रेरित कर रहा है ,और प्रेरणा को पा पा करके हम अपने को अपनेपन का भान करते रहते हैं। आओ मेरे प्यारे !आज मैं तुम्हें ऐसी स्थली पर ले जाना चाहता हूँ ,जहां मुनिवरों !देखो, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में याग करता रहा है , और वह अपने आचार्यों के प्रश्न और अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करता रहा है। मैंने यह वाक् तुम्हें कई काल में प्रगट कराते हुए भी कहा था आज भी मुनिवरों !देखो, मुझे स्मरण आ रहा है नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट करते रहते हैं ,विज्ञान अपनी आभा में गमन करता रहता है ,और मानव भी अपनी दार्शनिक आभा में रमण करता रहता है ,और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को वह दृष्टिपात करता रहता है ,आओ मेरे प्यारे !आज मैं तुम्हें एक ऐसे आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहां मुनिवरों !देखो, बड़ी ऊर्ध्वा में अपनी उड़ाने उड़ी जाती हैं। मेरे पुत्रों !देखो, एक समय महर्षि अर्द्धभाग राजा जनक के यहां पंहुचे और उनकी पत्नी रम्भेश्वरी अपने आसन पर विद्यमान थे सांयकाल का समय था महर्षि अर्द्धभाग और रम्भेश्वरी दोनों अपने में परस्पर न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन करने लगे परन्तु अध्ययन करते करते देवी निद्रित हो गई और महर्षि अर्द्धभाग मानो स्वरों में गान गाता ही रहा मेरे पुत्रों !वह निन्दित हो करके वह निन्द्रा की गोद में चली गई। महात्मा अर्द्धभाग भी बेटा !अपने आश्रम चले गएं ,परन्तु देखो, जब मध्य रात्रि हुई तो मध्य रात्रि में बेटा !वेदमन्त्र पुनः वह स्मरण आए और महारानी रम्भेश्वरी बेटा !वह अपने न्यौदा में मन्त्र उद्गीत गाने लगी ,और वेदमन्त्र यह कह

रहा था प्रकाशां भवितं ब्रह्मणा व्रतं देवाः वेद की आख्यिका उन्हें स्मरण आई और वेदमन्त्र यह कह रहा था कि प्रकाशं भवे हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं ,कौन प्रकाश का द्यौतक है ?कौन प्रकाश दे रहा है ?तो मेरे प्यारे !देखो, यह विचार जब उन्हें स्मरण आया तो विचार कर रही है परन्तु अपने में निमटारा नही हो रहा है वह रात्रि के अन्तिम चरण में राजा जनक के कक्ष में पंहुची ,मेरे प्यारे !उन्होंने राजा जनक को जागरूक किया राजा जनक बोले कि देवी !तुम रात्रि के अन्तिम चरण में मेरे कक्ष में आने का कारण क्या है ?रम्भेश्वरी बोली कि कुछ वेदमन्त्र स्मरण आ रहे हैं ,और उस मानो वेदमन्त्रों में मानो निमटारा नही कर रही हूँ ,राजा जनक ने कहा देवी !कौन से वेदमन्त्र हैं ?उन्होंने कहा न्यौदा में मन्त्रों का मैं अध्ययन कर रही थी। और मन्त्र में आ रहा था प्रकाशां भवितं ब्रह्मे वर्णासुतं ब्रव्हा मानो देखो, कौन प्रकाश के देने वाला है ?कौन प्रकाश दे रहा है ? और प्रकाश का वास्तविक द्यौतक कौन है ?मेरे प्यारे !देखो, दोनों इस विचार विनिमय मानो अपनी निन्द्रा को त्याग करके ,विचार विनिमय ब्रहा कृत करने लगे मेरे पुत्रों !देखो, रात्रि का अन्तिम चरण समाप्त हो गया ,परन्तु दोनों अपने में निमटारा नही कर सके ,जब निमटारा नही कर सके कि कौन प्रकाश का द्यौतक है। मेरे प्यारे !देखो, अपनी क्रिया अपने आसनों को त्याग दिया और अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके क्योंकि राजा जनक के यहां जहां बेटा !यह ब्रह्मयाग होता रहता था। वहां मैं ब्रह्म की चर्चा कर रहा था दोनों दिव्या और राजा दोनों अपने में आत्म चर्चा करते हुए अपने में निमटारा नही हुआ ,तो क्रियाओं से निवृत्त हो करके वह मेरे प्यारे !उनके यहां यज्ञशाला का निर्माण हुआ ,उस यज्ञशाला में पंहुचे ,जहां नाना ऋषिवर विद्यमान थे। मेरे प्यारे !कुछ ब्रह्मवर्चोसि कुछ ब्रह्मचारी कुछ ब्रह्मवेत्ता और कुछ ब्रह्मनिष्ठ मेरे पुत्रों !देखो, अपने अपने आसन पर विद्यमान थे राजा जनक ने बेटा !देखो, सम्ब्रव्हे सबसे ऊर्ध्वा आसन पर महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान थे। मेरे पुत्रों !देखो, दोनों ने अपनी न्यौदा में मन्त्रों को स्मरण करते हुए और राजा जनक और रम्भेश्वरी ने बेटा !

यज्ञशाला में अग्निहोत्र किया और अग्नि होत्र करने के पश्चात मेरे प्यारे !अग्नि प्रदीप्त समिधा ब्रहे नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा उन्होंने याग किया याग करने के पश्चात राजा ने उनकी पत्नी ने यह निश्चय किया कि हम आचार्य से कोई प्रश्न नही करेंगें। मेरे प्यारे !देखो, जब उनका याग सम्पन्न हो गया तो पुरोहित यज्ञशाला में अश्वल भी विद्यमान थे महात्मा अर्द्धभाग थे महात्मा दिग्ध और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे मेरे प्यारे !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि राजन ! यज्ञमान मेरे से कोई प्रश्न कर सकता है। मेरे प्यारे !दोनों बड़े प्रसन्न हुए राजा जनक और उनकी पत्नी ने नतमस्तिष्क हो करके आचार्य से कहा हे प्रभु !हम प्रश्न करने तो सुयोग्य नही हैं आपसे ,परन्तु हमारी एक जिज्ञासा जागरूक हो रही है। हमारी जिज्ञासा को पूर्ण कीजिए उन्होंने कहा उद्गीत गाईए ,राजन ! उन्होंने कहा क्या हे प्रभु !हम रात्रि समय न्यौदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे और यह विचार में आया कि प्रकाशं भविते ब्रह्मणा व्रतं प्रकाशां भविते हे प्रभु !वेदमन्त्र यह कह रहा है कि हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह प्रकाश का द्यौतक कौन है ,मेरे पुत्रों !देखो, अमृतं ब्रह्मा जब ऋषि से यह कहा गया तो ऋषि ने कहा राजन !विराजो देवी !और राजा दोनों विद्यमान हो गएं। उन्होंने कहा हे राजन !हमारे जो नेत्र हैं ,सूर्यों भवेतं ब्रह्मा सूर्या प्रकाशां भविते व्रताः हे प्रभु !वेदमन्त्र तो ये कहता है कि हमारे जो नेत्र हैं वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। सूर्य हमारे प्रकाश का द्यौतक है और ये सूर्य मानो देखो, अपने में प्रकाश देता है ,नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है ,प्रकाश में हम प्रकाशित हो जाते हैं ,और उसी प्रकाश को पान करते हुए ,हम स्वतः अपने में मानो देखो, प्रकाश को प्राप्त कर लेते हैं ,प्रातःकाल होता है। मेरी प्यारी माता अपने पुत्रों !को जागरूक कर देती है ,हे पुत्र !जागरूक हो जाओ। देखो, ये सूर्य उदय हो गया है ,भानु आ गया है ,अदिति आ गया है ,तुम जागरूक हो जाओ अपने क्रियाकलाप में परणित हो जाओ। मेरे पुत्रों !यही तो प्रकाश है ,जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपायमान करता रहता है ,यही प्रकाश है ,जो सूर्य का

प्रकाश ,जो मानो पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान हो करके ,नाना प्रकार के खाद्य और खनिज को तपायमान कर देता है। नाना प्रकार की धातु को वह तपाता रहता है , वह सूर्य अदिति कहलाता है ,यही हमारे नेत्रों का प्रकाश है ,और उसी के प्रकाश में ,प्रकाश को ही दिवस कहते हैं और वह दिवस होते ही ,मुनिवरों !देखो, प्रकाशमान होने वाला ,जो प्रकाश देता रहता है ,मानो उसी के प्रकाश में हम प्रकाशमान रहते हैं ,तो सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है ,मानो देखो, यह अमृत के देने वाला है ,जैसे गो नाम का पशु है ,गो नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में एक मानो स्वर्णकेतु नाम की नाड़ी होती है। जैसे सूर्य उदय हुआ ,उसी समय देखो, उस नाड़ी का देखो, ऊर्ध्वा मुख हो जाता है ,और ऊर्ध्वा मुख होते ही , देखो, उस परमाणुओं को अपने में सिंचन करने लगता है ,जिन परमाणम्ब्रहे परमाणुओं को जिनमें स्वर्णं ब्रहा मेरे प्यारे !देखो, गऊ के यन्त्रालयों में वह परमाणु प्रवेश हो जाते हैं। और स्वर्णमयी इसीलिए मानो देखो, गो के घृत और दुग्ध में पीत वर्ण होता है ,क्योंकि इसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष मानी गई ,तो अव्रते ब्रह्म ऋषि ने कहा हे राजन !ये सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है ,इसको अदिति कहते हैं ,इसको मानो उदयन कहते हैं ,इसी को भास्कर कहते हैं ,इसी को विष्णु कहते हैं ,इसी को मानो मम् ब्रव्हे मेरे प्यारे !देखो, सूर्या स्वस्त् कहते हैं ये नाना प्रकार से इसका वर्णन किया जाता है ,यह मानो द्यौ से प्रकाश लेता है ,और मुनिवरों !देखो, ये ऊर्ज्वा दे करके ,सबको ऊर्जित बनाने लगता है , मानव इससे ऊर्ज्वा पाता हुआ ,और विज्ञानवेत्ता इसी की ऊर्ज्वा में नाना प्रकार के विज्ञान को ,विज्ञान को जानने वाला है विज्ञानवेत्ता बन जाता है। मुनिवरों ! देखो, ऋषि ने कहा याज्ञवल्क्य ने क्या ये प्रकाश के देने वाला है ,यह प्रकाश का द्योतक है। मुनिवरों !देखो, राजा जनक और उनकी पत्नी दोनों ने उपस्थित हो करके कहा ,हे प्रभु !जब हम आचार्य कुल में बाल्यकाल में अध्ययन करते थे ,ये विचार तो आचार्य हमे प्रगट करते रहते थे। हे प्रभु !हम ये जानना चाहते हैं जब ये सूर्य नही होता तो कौन प्रकाश के देने वाला है ?कौन प्रकाश का द्योतक है ?

उन्होंने कहा हे राजन !जब यह सूर्य नही होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाश लेना प्रारम्भ कर देते हैं ,यह चन्द्रमा प्रकाश का द्यौतक है। मानो ये प्रकाश देता रहता है ,यह अमृत देता रहता है ,हे ऋषिवर !हे राजन !मानं ब्रव्हे कृतं मानो देखो, ये जो चन्द्रमा है ,ये प्रकाश का द्यौतक है और यही तक प्रकाश नही देता है। माता के रसना के निचले भाग में एक चन्द्रकेतुम नाम की नाड़ी होती है , उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है ,और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय मुनिवरों !देखो, माता की लोरियों से होता है। लोरियों से पश्चम नाड़ी बन करके चलती है ,तो उसका माता की नाभि से समन्वय होता है। और बालक की नाड़ी का और माता की नाड़ी का दोनों का समन्वय होता है। तो बेटा !नस नाड़ियों के द्वारा वह चन्द्रमा उसे अमृत प्रदान कर रहा है। वाह रे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है ,मुनिवरों !वह विज्ञानमयी जगत को उसने रचा है , और वह नस नाड़ियों के द्वारा ही अमृत को पान कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, कृषक की भूमि उपज हो गई है ,और वह चन्द्रमा जब रस उसमें प्रदान कर देता है ,तो कृषक बड़ा प्रसन्न होता है। मेरे प्यारे !देखो, रस का समन्वय देखो, समुद्रों से होता है ,जब यह अपनी षोडश कलाओं से युक्त हो जाता है। चन्द्रमा तो यह मुनिवरों !देखो, अमृतां षोडश कलाओं वाला चन्द्रमा समुद्र में व्रत करता है ,और समुद्रों से अमृत को लेता है। यह जल को अपने में सिंचन कर लेता है। उसको अमृत बना करके बेटा !उसकी वृष्टि कर देता है ,मेरे प्यारे !प्रभु का कहां कहां यह तारतम्य बेटा !विज्ञानमयी है ,इसके ऊपर हमारे यहां परम्परागतों से बेटा ! अन्वेषण और अनुसन्धान होता रहा है। तो आओ मुनिवरों !देखो, विचार क्या वेद के ऋषि ने कहा आचार्य ने कहा है ,हे राजन !मानो देखो, जब यह चन्द्रमा जब यह सूर्य नही होता है। तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा अमृतां देवाः इसके प्रश्नं ब्रहे जिज्ञासा में आते हुए देवी ने राजा ने कहा यज्ञमान ने क्या हे भगवन !हम जानना चाहते हैं ,जब यह चन्द्रमा नही होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं ?उन्होंने कहा हे

राजन्नम ब्रहे मानो देखो, जब यह चन्द्रमा नही होता तो हम तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह तारामण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आता है , हम अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं ,और प्रकाश में रत्त हो जाते हैं, मानो देखो, धीमे धीमे प्रकाश से मेरे प्यारे !जब ऋषियों को अमृतां देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे राजन !जब मैं विज्ञान के गर्भ में प्रवेश करता हूँ। तो मुझे यह जगत अनन्तता में दृष्टिपात आता है ,हे राजन !हे यज्ञमान !मैं यह उद्गीत गाना चाहता हूँ कि मैं तुम्हें माला को समर्पित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे ! देखो, ऋषि ने कहा कि तुम्हें यह प्रतीत है क्या यह तारामण्डलों की जो एक माला बनी हुई है ,और ऐसी विचित्र माला है जिसको धारण करते हुए ,मानव अपने में बड़ा आश्चर्य में परिणतं ब्रहे मेरे प्यारे !देखो, ये माला कैसे ?जिस भी काल में बेटा !वैज्ञानिकजन अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके ,और विज्ञान के ऊपर जब उन्होंने अपना अन्वेषण किया है ,अपना विचार किया है ,तो उसी समय यह पृथ्वी के गुरूतव ,परमाणु के ऊपर अन्वेषण होता रहा है। ये पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हुआ ,मेरे पुत्रों !मुझे स्मरण आता रहता है , शिकामकेतु उद्दालक मुनि का विद्यालय ,जिस विद्यालय में मुनिवरों !देखो, तीस लाख पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण हुआ ,तीस लाख पृथ्वियों की माला बनाई गई , और तीस लाख पृथ्वियों को बेटा !शिकामकेतु उद्दालक के यहां ,विज्ञानशाला में इसको जानने का प्रयास किया गया। मेरे प्यारे !देखो, अमृतां ब्रह्मे ऋषि शान्त नही रहा करते हैं ऋषि मानो कहीं समाधि के द्वारा कहीं मानो अणु परमाणु के द्वारा वह मुनिवरों !देखो, प्रकृतिवाद और प्राण के वाद में रमण करते हैं। मुनिवरों! देखो, वह शान्ति को प्राप्त नही हुए ,उन्होंने विचारा ,क्या ये तो तीस लाख पृथ्वियां हमने जानी है ये माला कौन बना रहा है ?

तो मुनिवरों !देखो, विचार मेरे पुत्रों !देखो, तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी ,वह माला सूर्य ने अपने में धारण कर ली ,यह सूर्य इतना विशाल मण्डल है ,जिसमें तीस लाख पृथ्वियां बेटा !समाहित हो जाती हैं। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि

शान्त न रहा ,ऋषि ने कहा क्या एक सहस्त्र सूर्यों की माला बनी मेरे पुत्रों ! जिसको बृहस्पति अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र बृहस्पतियों की माला बनी जिसको मुनिवरों !देखो, आरुणि मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र आरुणि मण्डलों की माला बनी ,मेरे पुत्रों !जिसको ध्रुव मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी मेरे पुत्रों !देखो, जिसको स्वाति नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी ,जिसको पुष्प नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनी ,मेरे पुत्रों !देखो, उसको मूल नक्षत्र अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र देखो, जब मूल नक्षत्रों की माला बनी उसको मुनिवरों !देखो, अचंग मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र अचंग मण्डलों की माला बनी ,जिसको मुनिवरों !देखो, रेणाकृतिका मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र रेणाकृतिका मण्डलों की माला बनी जिसको बेटा !देखो, सौमभुक मण्डल अपने में धारण कर लेता है। एक सहस्त्र सौमभुक माला बनी ,जिसको मेरे पुत्रों !देखो, यह गन्धर्व मण्डल अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रों !देखो, यह प्रभु कैसा प्रभु का कैसा अनुपम जगत है ,कैसी रचना है ,मुनिवरों !देखो, इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन जाता है। इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बना ,मेरे पुत्रों !देखो, सौरं ब्रहे विचार आता रहता है ऋषियों ने अनुसन्धान किया और समाधि प्राण को द्वारा उसको अन्वेषण में लाए मुनिवरों ! देखो, इतने सौर मण्डलों का एक सौर मण्डल बना और मुनिवरों !देखो, एक अरब छयानवें करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवें हजार पांच सौ इक्कसठ ऐसे कुछ सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनी ,मेरे पुत्रों !देखो, जब एक आकाश गंगा जब बन गई। तो ऋषि मुनि विचारने लगे प्रभु की कितनी विचित्रता बेटा !उसमें दृष्टिपात आने लगी। मेरे पुत्रों !देखो, एकं ब्रह्मा एक अरब पैंसठ करोड़ उन्नतर लाख उन्नचसवें हजार पांच सौ इक्यावन के लगभग मुनिवरों !देखो, इतनी आकाश गंगा की एक निहारिका बनी। मेरे पुत्रों !देखो, पौने दो अरब के लगभग

मुनिवरों !देखो, निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन गई। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि यहां आ करके मौन हो गया ,और उसने कहा यह जो प्रभु का यह सौर मण्डल है ,यह बड़ा अनन्तमयी है ,मानो देखो, यहां आ करके ऋषि अपने में मौन हो जाते हैं। प्राण को अपने में समेट करके अपने में मुनिवरों !देखो, विचार विनिमय प्रारम्भ करने लगते हैं। तो मेरे प्यारे !देखो, मैंने तुम्हें मालाओं को धारण कराया है ,यह प्रभु का कैसा अनुपम सौर मण्डल है ,बेटा !यह सौर मण्डल के ऊपर ऋषि मुनि बड़ा अन्वेषण करते हैं। आज मैं तुम्हें परिचय दे रहा हूँ ,व्याख्या देने नही आया हूँ ,व्याख्याता नही हूँ ,केवल परिचय देने है ,जो आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा है ,मेरे प्यारे !देखो, यह वाक् मैंने कई काल में पुरातन काल में भी प्रगट किए हैं। आज भी स्मरण आ रहे हैं ,तो मेरे प्यारे !देखो, ऋषि अमृतं वह जब मौन हो गएं ,तो मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार की विवेचना की तो माता रम्भेश्वरी और राजा जनक ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु ! आप तो बड़े प्रखर है ,मेधावी है ,हे प्रभु !परन्तु मेधावी बाल्यकाल में आचार्य मेधावी के द्वारा अध्ययन कर रहे थे। उस समय उन्होंने यह वर्णन कराया था ,प्रभु हम यह जानना चाहते हैं ,जब यह सौरमण्डल नही होता तो कौन प्रकाश का द्योतक बना रहता है ,कौन प्रकाश के देने वाला है ,राजा जनक के वाक्यों को पान करके ऋषि ने कहा हे राजन !जब यह सौर मण्डल नही होता ,जब यह मानो देखो, यह तारामण्डल नही होते तो उस समय अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह अग्नि हमें प्रकाश का द्योतक है ,यह अग्नि हमें प्रकाश के देने वाली है ,अन्धकार छाया हुआ है ,परन्तु उस अन्धकार में देखो, मेरी प्यारी माता ब्रहे प्रकाश करके अपने गृह को प्रकाशित कर लेती है। अग्नि के द्वारा प्रकाशित कर लेती है। अपने क्रियाकलापों को उसमें प्रारम्भ करके क्रियाकलाप उसके सम्पन्न हो जाते हैं। तो विचार आता है कि यह अग्नं ब्रव्हा अग्नि एक नही बेटा !भिन्न प्रकार की अग्नियों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। मुनिवरों !देखो, अग्नि हमारे यहां मैं व्याख्या नही करने आया हूँ। जब मैं तुम्हें

अग्नि की विवेचना देने लगता हूँ। तो एक एक माह में बेटा !अग्नि की विवेचना लग जाते हैं ,आज तो मैं तुम्हें परिचय देने आया हूँ। मुनिवरों !देखो, अग्नं ब्रह्मा हमारे आचार्यों ने बेटा !जहां चार प्रकार की अग्नि बेटा !आध्यात्मिक वेत्ताओं ने स्वीकार की हैं ,परन्तु जब यही अग्नि आयुर्वेदाचार्यों के गृह में पंहुची ,उन्होंने बेटा !पिच्चासी प्रकार की अग्नि का चयन किया ,जब यही अग्नि वैज्ञानिको के गृह में प्रवेश हुई। तो बेटा !अरबों खरबों प्रकार की अग्नियों का चयन हुआ ,मेरे प्यारे !देखो, यह अग्नि अणु और परमाणु के रूप में परणित हो जाती है। यही अग्नि है बेटा !जो देखो, माता के गर्भस्थल में अग्नि बन करके रहती है ,यही अग्नि है बेटा !देखो, जो द्यौ में रहती है। यही अग्नि है जो शब्द को ले करके मुनिवरों !देखो, द्यौ में प्रवेश करा देती है। मेरे प्यारे !देखो, अग्नं ब्रह्मे अणु और परमाणु बन करके रहती है। एक एक श्वास के रूप में बेटा !देखो, अग्नि का चयन होता रहता है ,अणु और परमाणु के रूप में मेरे प्यारे !रूप में प्रवेश होता रहता है।

तो विचार आता रहता है बेटा !अग्नि अपने में बड़ी विचित्र है ,मैं विचार देने आया हूँ ,परिचय देने के लिए आया हूँ ,परिचय यह देने जा रहा हूँ बेटा !परिचय है यह अग्नि का परिचय क्या कहीं ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। जिससे ब्रह्मवेत्ता उस अग्नि के माध्यम से अग्न्याधान करता रहता है ,मेरे प्यारे !यही अग्नि विज्ञानवेत्ताओं के यहां यन्त्रों का निर्माण होता रहता है ,और यह यन्त्र मुनिवरों !सूर्य की किरणों के साथ मानो देखो, भ्रमण करता रहता है। तो यन्त्र सूर्य की परिक्रमा करता है ,और वही यन्त्र ध्रुव की परिक्रमा करता है ,और परिक्रमा करता है बेटा !देखो, वह लोक लोकान्तरों हमें भ्रमण करा देता है ,तो विचार आता रहता है ,मेरे पुत्रों !यह बड़ा विचित्रं अग्नं ब्रह्मा यह अग्नि है मेरे प्यारे !देखो, अग्नि हमें तपायमान करती है। अग्नि ही उष्णा दे करके शब्द बन करके बेटा !द्यौ में प्रवेश करता है। मेरे पुत्रों !देखो, यह अग्नि देखो, गृह में गृहपथ्य अग्नि को प्रदीप्त करता रहता है ,यही अग्नि है ,जो ब्रह्मचर्य को आग्नेय रूप दे

करके बेटा !ब्रह्मवर्चोसि बेटा !ब्रह्मवेत्ता बना देता है। तो मेरे प्यारे !देखो, अग्नि के बड़े विशुद्ध रूप हैं ,और विचित्रता में मुनिवरों !देखो, अग्नि का बखान करे हुए ऋषि ने कहा हे अग्नं ब्रह्मणा हे राजन !हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। परन्तु देखो, ऋषि के यज्ञमान से न रहा गया ,मेरे पुत्रों !देखो, राजा जनक ने कहा देवी !अमृतं दोनों उपस्थित हो करके बोले हे प्रभु !अग्नि की विवेचना तो हमारे आचार्य विद्यालयों में प्रायः करते रहे हैं। मैं यह जानना चाहते हैं जब यह अग्नि नही होती ,तो कौन प्रकाश का द्यौतक है ,कौन प्रकाश के देने वाला है। उस समय मुनिवरों !देखो, ऋषि ने कहा हे राजन !जब यह अग्नि नही होती ,तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ध्वनि पर ध्वनियां हो रही है। रात्रि छाई हुई है ,अन्धकार में मानव जा रहा है और वह ध्वनियों में ध्वनि आ रही है। मेरे पुत्रों !देखो, वह ध्वनि कैसी विचित्र है ,मैं रात्रि अन्धकार में क्योंकि ध्वनि परमाणु परस्पर संघर्ष करतें रहते हैं ,उसकी धीमी धीमी ध्वनि आ रही है ,मेरे पुत्रों !वह प्रकाश में रत्त कराने वाला है। एक मानव देखो, मानव मार्ग में गति कर रहा है ,और वह गमन करता हुआ मुनिवरों !देखो, मार्ग से कुमार्ग में चला जाता है। और कुमार्ग में अन्धकार में भयंकर वन में कहता है। अरे, है कोई मार्ग चेताने वाला उस समय जो मानव मार्ग में स्थिर है ,वह कह रहा है आ जाओ मैं मार्ग में स्थिर हूँ ,मुनिवरों !देखो, वह मानव जो अन्धकार में था वह उसी शब्द के प्रकाश से मुनिवरों !देखो, वह मार्ग का सुपथिक बन जाता है। शब्द को ग्रहण कर लेता है ,तो मेरे प्यारे !देखो, यह शब्द का प्रकाश है ,शब्द मुनिवरों !देखो, एक अज्ञानी को प्रकाश में ला देता है ,वह अन्धकार में अज्ञान है ,अज्ञान से प्रकाश में लाता है। मेरे प्यारे !देखो, ध्वनि आ रही है ,रात्रि में परमाणु संघर्ष कर रहे हैं ,ध्यानावस्थित होने वाला मुनिवरों !देखो, उन ध्वनियां में ध्वनित हो रहा है , मेरे प्यारे !देखो, पाण्डितव जब इस विद्या का अध्ययन कर लेता है। वह अन्धकार से प्रकाश में चला जाता है ,वह पाण्डितव बन जाता है। मेरे पुत्रों ! देखो, ध्वनि पर ध्वनि आ रही हैं ,यह शब्द है शब्दं ब्रह्मा बेटा !इसी ध्वनि को

अपने में मुनिवरों !देखो, उद्गीत गाता रहता है। और उद्गीत गाता हुआ मुनिवरों ! देखो, ध्वनि और ध्वनित होता है ,तो मुनिवरों !देखो, मानो देखो, मस्तिष्क में जो स्वर ध्वनियां हो रही हैं। उसे ग्रहण करता है। उसका जब बाह्य रूप होता है ,मेरे प्यारे !देखो, उन सूत्रों को ग्रहण कर लेता है ,मेरे पुत्रों !उन सूत्रों को व्याकरण के रूप में परणित कर देते हैं विचार आता रहता है अरे, ध्वनि पर ध्वनि आ रही हैं ,उसी के प्रकाश में मानव प्रकाशित हो रहा है ,प्रकाश को प्राप्त कर रहा है , मेरे पुत्रों !देखो, विचार आता रहता है हे मानव !तू ध्वनि को अपने में ध्वनित होता चल ,और उस ध्वनि को तू बाह्य जगत की ध्वनि को देखो, अनहाद मस्तिष्क में उसे ग्रहण करने लगो उस ध्वनि को अपने में श्रवण करने लगो ,मेरे प्यारे !देखो, वह ध्वनि पर ध्वनि आती है ,जो मुनिवरों !देखो, ब्रह्मरन्ध्र में एक मानव देखो, ध्वनियां हो रही हैं ,उस ध्वनि को अनहद कहते हैं ,उस अनहद की ध्वनि को जो ग्रहण करता है ,वह ध्वनि बेटा !व्याकरण बन करके और उसी को व्याकरण की धारा को अपने में लाना प्रारम्भ कर देता है। आज मैं बेटा !बहुत दूरी नही जाना चाहता हूँ। यह तो विचारों का वन है ,आज मैं तुम्हें केवल परिचय ही देने आया हूँ ,व्याख्या देने नही आया हूँ ,विचार क्या जब ऋषि ने इस प्रकार बेटा !अपने विचार दिए तो दोनों उपस्थित हो करके बोले कि हे प्रभु !हम यह जानना चाहते हैं कि भगवन !आपने जो हमे इस प्रकार का उद्गम ब्रहे देखो, हम यह जानना चाहते हैं तो भगवन !जब यह शब्द भी नही होता तो प्रकाश का द्योतक कौन बना हुआ है ?मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा हे राजन !हे यज्ञमान ! मानो देखो, जब यह ब्रह्मणे ब्रहा कृतं लोकां व्रताः जब मानो देखो, यह ध्वनि नही होती ,शब्द नही होता ,तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मानो देखो, आत्मा जब तक इस मानव शरीर में वास कर रहा है ,जब तक मुनिवरों ! देखो, ध्वनि पर ध्वनियां आ रही है ,सर्वत्र विज्ञान को वह अपने में समेटे हुए है। सर्वत्र व्याकरण को अपने मे समेटे हुए है ,अपने में ही वह सिमट रहा है ,तो आत्मा के प्रकाश से ही प्रकाशमान बना प्रकाशमान हो रहा है। हे राजन !हे

राजब्रहे हे अप्रतं ब्रह्मा हे यज्ञमान !देखो, मैं इतना ही जानता रहता हूँ ,कि आत्मा का प्रकाश आत्मा में ही मानो देखो, वह दृष्टिपात करता रहता है ,हमारी आत्मा जो प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। जब यह आत्मा शरीर में होता है। जब तक मानो जागरूक रहता है ,क्रियाकलाप करता रहता है ,और अध्ययन करता रहता है ,परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहता है। और अग्नि में प्रवेश कर जाता है। लोक लोकन्तरों की माला बना लेता है ,परन्तु देखो, हे राजन !जब यह आत्मा निकस जाता है। शरीर से यह नेत्रों के गोलकने बनें हुए है। सूर्य का प्रकाश शान्त हो जाता है ,मानो देखो, चन्द्रमा का प्रकाश नही रहता अग्नि अपने में नही रह पाती ,परन्तु देखो, आत्मा के सर्वत्र यह जो प्रकृतिवाद है ,जड़ता को प्राप्त हो जाता है। और जब तक यह शरीर में विद्यमान है यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो, इसके समीप बना रहता है। मेरे पुत्रों !देखो, यह कैसा अदभुत उस प्रभु का यह मानो देखो, निर्माण है। यह आत्मा कैसा प्रकाश है ,मुनिवरों !देखो, यह जितना भी भौतिक विज्ञान है ,वह शब्द विज्ञान पर आ करके मुनिवरों !शान्त हो जाता है। परन्तु देखो, वेद का ऋषि यह कहता है। हे राजन !देखो, जहां यह प्रकृतिवाद और यह भौतिक विज्ञान जहां समाप्त होता है ,वहां से आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हो जाता है ,यह आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ मुनिवरों !देखो, आत्म ब्रह्मणा व्रतं देवाः यह आत्मा को जानने वाले आत्मवेत्ता होते हैं। यह प्रकृति को नीचे दबा लेते है। और अपने में प्रकाश मान हो जाते हैं। मानो जो आत्मवेत्ता होते हैं ,उन्हें लोक लोकान्तरों की माला बना करके अपने में वह धारण कर लेते हैं ,मानो देखो, इसी प्रकार वह अपने प्रभु को निहारते रहते हैं। सृष्टि को निहारते रहते हैं ,और प्रभु के राष्ट्र में चले जाते हैं ,मेरे प्यारे !देखो, प्रभु का राष्ट्र वह है , जहां अन्धकार नही होता ,रात्रि नही होती ,आलस्य नही होता ,मेरे प्यारे !देखो, जहां रात्रि नही हैं ,वहां अज्ञान नही हैं ,जहां ज्ञान है ,वहां प्रकाश है ,वह प्रभु का राष्ट्र है ,और जहां देखो, रात्रि नही हैं ,और जहां रात्रि नही हैं ,वहां आलस्य और प्रमाद भी नही हैं ,और जहां आलस्य और प्रमाद नही है। वहां बेटा !देखो, मृत्यु

भी नही हुआ करती। मेरे पुत्रों !देखो, मृत्यु से मानव पार हो जाता है ,मृत्यु अज्ञान को कहते हैं। अज्ञान को त्यागों और प्रकाश में आ जाओ। तो मेरे प्यारे ! जीवन महान बनेगा ,यह है बेटा !आज का वाक् मैं विशेष चर्चा नही दूंगा केवल यह चर्चा करने लगूंगा तो बेटा !इस संसार की सर्वत्र विज्ञान की धाराएं इसमें लुप्त हो जाती हैं। आओ मेरे प्यारे !देखो, वह प्रगट भी होती रहती हैं तो विचार आता रहता है वेद के ऋषि ने कहा राजन !हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान हैं ,आत्मा जब तक शरीर में रहता है ,जब तक यह पंचाग्नि जागरूक हो जाती है। और यह पंचाग्नि अपने में अग्न्याधान करती रहती है। यह पांचों इन्द्रियां ज्ञानेन्दियां ज्ञान को प्राप्त हो जाती है। इसी से आत्मा का प्रकाश है ,इसी प्रकाश को मानव अग्रणीय बनाता हुआ ,प्रकाश में रत्त हो जाएं। मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मणे कृतं सूर्य, अग्नि और तारामण्डल मुनिवरों !देखो, चन्द्रमा और सूर्य यह सर्वत्र मानो देखो, आत्मा जब तक है ,यह प्रकाशमान हैं ,मुनिवरों !देखो, यह आत्म तत्त्व शरीर से निकस जाता है ,तो उसके पश्चात यह शून्यता को प्राप्त हो जाता है। यह है बेटा !आज का वाक् मेरे प्यारे !देखो, राजा जनक ने यह कहा प्रभु ! आपको धन्य है ,आपने हमारे अन्धकार को दूरी कर दिया हे प्रभु !आपको धन्य है। आपको महानता की आभा आपमें विराजमान रहती है। आप बुद्धिमान हैं। तपस्वी हैं। जिज्ञासां भूतं आप देखो, जिज्ञासा की पवित्रता को जानते हैं। हे प्रभु ! अमृतं ब्रह्मा मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के चरणों को स्पर्श करके उन्होंने धन्य धन्य कह करके उस आसन को त्याग दिया। तो मेरे प्यारे ! विचार आता रहता है कि यह अन्धकार नही मानव को प्रकाश में बनाने वाला वह पुरोहित कहलाता है। वह पराविद्या को देता रहता है ,वह आचार्य कहलाता है। यह है बेटा !आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा !आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करना यह क्या हम जानते हुए आत्मा के समीप चले जाएं। आत्मा में आत्मा का

दर्शन करते रहें। यह चर्चाएं बेटा !अब सम्पन्न होने जा रही हैं। समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। 08 01 1990।

५ 12 01 1990 महर्षि सम्भूति ऋषि द्वारा तप की विवेचना

जीते रहो! देखो मुनिवरोआज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँ !ति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठनपाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही - उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे सर्वज्ञ हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचारविनिमय करते - रहते हैं। क्योंकि वह ऐसा अनन्तमयी है, वे इस संसार का नियमन कर रहे हैं अथवा इसको गतिवान् बना रहे हैं जिससे सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में गतिवान् दृष्टिपात आता रहता है। एकदूसरे में ये संसार प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। - दूसरे में ये पिरोया हुआ सा ही दृष्टिपात आता है। जैसे मानो हमारे यहाँ ये -एक पृथ्वी गुरुत्व में पिरोयी हुई रहती है और गुरुत्व तेजोमयी में पिरोया हुआ है और तेजोमयी अग्नि में पिरोया हुआ है। और ये अग्नि वायु में पिराई हुई है। और ये जो वायु है ये पञ्चम् ब्रव्हा कृत्य है। ये सर्वत्र मानो एकदूसरे में पिरोयी हुई-, एक विचित्र सी माला दृष्टिपात आती रहती है। जिस माला को दार्शनिकजन मानो अपने में धारण करते रहे हैं और विचारवेत्ता इस विचार में तल्लीन रहते हैं कि हमारा मानवीयत्व सर्वत्रता में हमें दृष्टिपात आता रहे। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही नाना प्रकार की मालाओं को धारण करता रहा है। जैसे मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में मानो एक शिशुओं की माला को अपने में धारण करती रहती है। और मानो प्रथम तो वह माला के स्वरूप में विद्यमान रहे, उसी के पश्चात् वो पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। और वे जहाँ पिण्ड रूप में बनें, उनके आकारों में ये सर्वत्रता हमें दृष्टिपात आती रहती है।

बेटाइसी प्रकार मानो देखो ममता में जो शब्द है !, वह उस शिशु के साथ में पिरोया हुआ है। यदि शिशु नहीं होता तो माता का कोई महत्त्व नहीं होता। तो

इसीलिए वह भी एकदूसरे में माला के सदृश ही दृष्टिपात आता रहता है। मानो - देखो, इसी प्रकार ये ब्रह्माण्ड है और ये ब्रह्माण्ड उस शिशु में पिरोया हुआ है। यदि ब्रह्माण्ड का और मानव का यदि कोई समन्वय नहीं होता तो एकदूसरे का - दूसरे का अपना कोई महत्त्व नहीं माना गया है। क्योंकि -कोई सम्बन्ध अथवा एक मानव जब भी जानकारी करता है, वह अपने को मानो अपने में ही पिरोना प्रारम्भ कर देता है। जैसे एक मानव विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है तो वह विज्ञानवेत्ता, मुनिवरोंदेखो विज्ञान में अपने को विज्ञान में दृष्टिपात करता है। ! और वो जब अपने को विज्ञान में दृष्टिपात करता है, तो वही मानव देखो बाह्य जगत में, आन्तरिक जगत और बाह्य जगत का, दोनों का समन्वय करता हुआ, मेरे पुत्रोंदेखो !, उस माला का माला से समन्वय कर देता है तो वह विज्ञानवेत्ता की प्रतिभा में निहित हो जाता है।

आनन्द की अनुभूति

आओ मेरे पुत्रोंमैं इस सम्बन्ध में विचार नहीं दूंगा तुम्हें !, केवल विचारविनिमय - दूसरे में प-इतना ही है कि हम एकिरोये हुए दृष्टिपात आते हैं। इसीलिए सबको धारण करने वाला वह परमपिता परमात्मा है जो हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र बेटाहमें ! अपनी आभा में परणित कर रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र में नाना प्रकार के भाव प्रायः मुनि-हमारे समीप आते रहते हैं। ऋषि, बेटाअपनी स्थलियों पर व !िद्यमान हो करके एकएक वाक्य के ऊपर अपने -एक शब्द के ऊपर अन्वेषण करते रहे। एक- देखो !में रचना को दृष्टिपात करते रहे हैं जिससे मुनिवरों, बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय होकर के और दोनों के इस रूप को जानकर के हम संसार सागर से पार हो जाएँ। और हमारा जो आत्मिक मन्तव्य है उससे हम बाह्य और आन्तरिक दोनों को अपने में समावेश करके हम प्रभु के समीप जा सकते हैं। मेरे प्यारेदेखो !, परम्परागतों से ऋषिमुनि-, प्रायः अपने में प्रत्येक ऋषिमुनि ही नहीं-, प्रत्येक मानव ये परम्परागतों से चाहता रहा है और ये विचार बनते रहे हैं कि हम अपने में अपने को जानते हुए इस सागर से पार हो जाएँ।

हम, प्रभु जो हमारा रचयिता है, निर्माण करने वाला है, गतिवान् है, गति दे रहा है, हम उस प्रभु के समीप चलें और एक आनन्द की अनुभूति को हम प्राप्त करते रहें। मेरे प्यारेदेखो !, हमारे यहाँ प्रत्येक मानव अपने में मुनिवरोंदेखो अपनेपन ! का ही भान करता और विचारता रहा है। महर्षि सम्भूति ऋषि महाराज का आश्रम

मेरे प्यारेआओ आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ! मुनि-ऋषि, मेरे पुत्रोंदेखो अपने बाल्य !, बाल्य बालिकाओं को मुनिवरोंदेखो ! ब्रह्मविद्याऔर वह शिक्षा देते रहे हैं जिस शिक्षा के स्वरूप में मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन भी कराया है। आज भी मुझे स्मरण आ रहा है। मानो देखो, उस वाक्य को मैं आज तुम्हें पुनः से प्रकट करना चाहता हूँ। मेरे प्यारेदेखो !, मुझे स्मरण आता रहता है। एक समय महर्षि सम्भूति ऋषि महाराज के यहाँ, मेरे प्यारेदेखो ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। सम्भूति ऋषि महाराज बड़े ! विज्ञानवेत्ता और दर्शनों के मर्म को जानने वाले थे। परन्तु वे नाना प्रकार के विज्ञान में भी अपने को ले जाते थे और विज्ञान की चर्चाएँ प्रगट करते रहते थे। मेरे पुत्रोंदेखो !, एक समय वे ब्रह्मचारियों और ब्रह्मचारिणीयों को शिक्षा दे रहे थे। मेरे प्यारेउनका मन्तव्य था कि मैं ब्रह्मचारियों को शिक्षा दूँ और वे ब्रह्मचारी ! भी क्या, उनके आश्रम में कन्याएँ अध्ययन करती रहती थीं। मेरे पुत्रोंदेखो वह ! अमृताम् ब्रह्मणे क्रतम्, वह अपने में मानो देखो यह उपदेश देते रहते थे। हे दिव्याम्!, हे पुत्रोहर्षणाम् !, तुम मानो अपने में महान् बनने का प्रयास करो जिससे तुम्हारे गर्भस्थलों से महानता की प्रतिभा का जन्म हो जाए।

तप की विवेचना

मेरे प्यारेदेखो एक समय उनके आश्रम में कन्या अध्ययन क !रती थी। उन्होंने कहा, हे भगवन्, हम कैसे, आपनें जो अभीअभी कहा-, यह कैसे हो सकता है? उन्होंने कहा कि जब संसार में देवियाँ, पुत्रियाँ अथवा तप जाती हैं तो तपने से ही देखो, दिव्या बनती हैं। और जब तक तपायमान नहीं होतीं, तप नहीं

होता तब तक दिव्या शब्द उत्पन्न नहीं होता। क्योंकि देवता बनता ही जब है जब कि वो तपायमान हो लेता है। और तप किसे कहते हैं इसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे। मदालसा ने, कन्या ने कहा, प्रभुये तप क्या है जिसके ! ऊपर आप इतना बल देते हैं। इतनी उद्गीतता गाते रहते हैं। उन्होंने कहा, हे पुत्री, देखो तप उसे कहते हैं। तप कहते हैं ब्रह्मनचत प्रव्हा वृति देवत्वाम्। मानो देखो जो ब्रह्मचर्य में रत्त हो जाता है वह तपस्वी कहलाता है। उन्होंने कहा भगवन् ! ब्रह्मचर्य क्या वस्तु है जिससे इतनी उसकी रद्मम् व्रव्हा मानो देखो तपों को प्राप्त हो जाते हैं।

ऋषि कहता है, हे देवीअमृताम् भूतम् ब्रह्मणे व्रतम् देवाम् ! हे पुत्री ! अम्ब्रहा। हे पुत्री, मानो देखो, ब्रह्मचर्य उसे कहते हैं जिससे हम परमात्मा की प्रतिभा को जान सकें। यदि ब्रह्मचर्य की आभा हमारे अन्तरात्मा अथवा अन्तर्हृदयों में नहीं होगी तो हम अपने को ऊर्ध्वा में नहीं ले जा सकते और न परमपिता परमात्मा के जगत को ही जान सकते हैं। उन्होंने कहा, भगवन् मैं आगे जानना चाहती हूँ ये क्या है इसके गर्भ में? उन्होंने कहा ब्रह्मचरिष्यम् ब ब्रहाः। देखो, ब्रह्मचर्य के कई प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। एक स्वरूप वह कहलाता है जो बाल्यकाल में शिक्षार्थी शिक्षा अध्ययन कर रहा है। परन्तु आचार्य के समीप विद्यमान हो कर के मानो देखो, नम्रता से उसका पालन कर रहा है। नम्रता से इन्द्रियों को आचार्यों को प्रदान करता हुआ वह कहता है चक्षुर्मे शुन्धामि, प्राणंमे शुन्धामि, श्रोत्रम्मे शुन्धामि वह सर्वत्र इन्द्रियों को आचार्यों को प्रदान कर देता है। इन्द्रियों में ही दोष आते हैं। उन दोषों को समाप्त करने के लिए। परन्तु जब वह विद्या में रचित हो जाता है तो विद्या में रचित होने के पश्चात् उसका वो ब्रह्मचारी मानो देखो जिस विद्या का वो अध्ययन कर रहा है, उस विद्या के ऊपर वो मानो देखो जो शब्द आचार्य ने उसे आचरण में लाने के लिए प्रयास किया अथवा उद्गीत गाया है वह उनके ऊपर आचरणीय बन जाता है। उसके पश्चात् जो उस विद्या के गर्भ में विद्यमान जो तथ्य है, उस तथ्य को जानने के लिए वह मानो

देखो अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बनता है। ब्रह्मचरिष्यामि कैसे बनता है जो एक श्वास गतिवान हो रहा है, वह गतिवान होता हुआ श्वास, मेरे प्यारेदेखो !, उससे वो एकएक श्वास को मानो देखो-, मनका बना करके और जो ब्रह्मसूत्र में पिरोने वाला है, बेटावह मानो जब ब्रह्मसूत्र में पिरोना प्रारम्भ कर देता है !, और पिरोने लगता है तो बेटाइन्द्रियों का अपना अस्तित्व अपने में शान्त हो जाता है। और ! इन्द्रियों का जब अस्तित्व शान्त हो गया और ब्रह्मसूत्र में प्रत्येक प्राण और मन वो महान् तपस्वी कहलाता है। !और विचार उसमें परणित हो गया तो बेटा

मेरे प्यारेदेखो !, उसी में प्राण का अभ्यास करता है। मन, प्राण और विचार, मेरे प्यारेदेखो !, क्योंकि सर्वत्र प्राण से पिरोया हुआ ये जगत है। और मन प्रकृति का सूक्ष्मतम् तन्तु कहलाता है। मेरे पुत्रोंदेखो !, जब ये योगेश्वर अथवा साधक इन्द्रियों के विषयों को इनमें समर्पित कर देता है तो मेरे प्यारे ! देखो, जिस इन्द्रिय के विषय को वो जानना चाहता है उसी में मन, प्राण और विचार को लाते ही मेरे प्यारेदेखो !, ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि ने कहा, हे पुत्री तुम्हारे विचार में आ गया होगा। ! ब्रह्मचारी वह है जो मानो प्रत्येक श्वास को मनका बना कर के ब्रह्मसूत्र में पिरोता है और वह ज्ञान और विज्ञान का ज्ञाता बन जाता है।

माताओं को तपने की प्रेरणा

देखो, जैसे उन्होंने शिक्षा दी कि वेद में मन्त्र आता है। वेद कहता है ममत्वाम् ब्रह्मणे तपस्यम् ब्रव्हाः। वेद मन्त्र कहता है कि माता को तपस्वी बनना चाहिए। और माता कैसे तपस्वी बने ये विचार आता रहता है। तो

मदालसा ये अपनी जिज्ञासा प्रगट करने लगी। प्रश्न करने लगी, प्रभुमैं ! जानना चाहती हूँ क्या मानो देखो ये मङ्गलम् ब्रव्हे व्रतम् पिताहा। आपने जो कहा है कि तपस्वी ममम् ब्रव्हे, उन्होंने कहा, हाँ पुत्री, मैंने यही कहा है क्या बेटियों को तपस्वी बनना चाहिए ममतामयी को धारण करते हुए। मेरे प्यारेदेखो वो ! देखो !कैसे। क्या जब मुनिवरों, बाल्यकाल में कन्या जिस समय वेदों का

अध्ययन करना प्रारम्भ कर देती है तो वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए अध्ययन की प्रतिक्रिया में वो अपने में रत्त हो जाती है। मानो देखो वही तो ब्रह्मवर्चस्वतम् ब्रह्माः। ऐसा वेद का मन्त्र कहता है प्राणाम् उद्गम् ब्रहे, प्राणाम् प्राणास्सुति शुद्धम प्राणाम् ब्रहे ऋतम् देवत्वाम् लोकाः। मेरे प्यारेदेखो !, ये कहती है कि माता को बाल्यकाल में ही देखो प्राण का अभ्यास करना चाहिए और वह जब प्राण का अभ्यास करने लगती है तो प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान में परणित हो जाती है। तो मानो देखो, माता प्राण और अपान को जब मिलाना प्रारम्भ कर देती है तो देखो वह अपनी वृतियों को जानने लगती है और जब उसको उदान समीप ले जाती है तो गर्भ के अव्ययों को जानने लगती है।

मेरे प्यारेदेखो !, माता मदालसा के जीवन की आभा तो प्रायः मुझे स्मरण आती रहती है परन्तु वह कन्या बाल्यकाल में शिक्षा का अध्ययन कर रही है। आचार्य ने कहा, हे पुत्री!हे दिव्याम् !, मानो देखो जब प्राणायाम करती है तो माता अपने गर्भ में जो शिशु पनप रहा है अथवा जो गर्भस्थल में है, उस शिशु से वह माता, प्राण और अपान को दोनों को मिलान करती हुई उस गर्भ की आत्मा से, शिशु से वार्ता प्रगट करती है। और वह कहती है कतमोऽसी कत् प्रमाणाम् ब्रहे। वह कहती है, हे बाल्यम् ब्रहे तू कतमोऽसी, तू कहाँ से आया, कौन है। ये वार्ता प्रगट करती है, परन्तु देखो उसके अव्यवों को जानने लगी। मेरे प्यारेयह विद्या वैदिक साहित्य में प्रायः हमें प्राप्त होती रही है। आचार्यजनों ने ! मानो देखो उसको जनाने का प्रयास किया। इसको उद्गीत रूप में गाया और दर्शनों में इसकी प्रायः मीमांसा आती रहती है।

मेरे प्यारेदेखो !, मुझे माता मदालसा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। वह अपने देखो, जब उन्होंने विद्यालय को त्यागने के पश्चात् गृह में प्रवेश किया तो उन्होंने देखो अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट करती रहती थी। मेरे प्यारेदेखो !, माता, यदि वो शक्तिशाली बनना चाहती है, तपस्या में परणित होना चाहती है तो वेद के मन्त्र को ले करके वेदमन्त्र यह कहता है क्या माता ऐसी

शिक्षक है, क्या वो बाल्य को अपने गर्भस्थल में बालक को ब्रह्मवेत्ता बना देती है। वह ब्रह्मनिष्ठ बना देती है। मेरे प्यारेवो मन !, प्राण, विचार को लेकर के ही जब वह प्राणायाम को प्राण को अपान में और अपान को व्यान में इस प्रकार का अभ्यास करती है तो माता, मेरे प्यारेवो तपस्वी कहलाती है। हमारे यहाँ तप ! कहते हैं, इन्द्रियों पर संयम करना, मन विचार को एक बिन्दु पर ले आना। मेरे पुत्रोंवही हमारे यहाँ एकम् अमृतम् तपश्चय ब्रहा। वही तपस्या कही जाती है। तो ! माता मदालसा का जीवन पुत्रों मुझे स्मरण आता रहता है। माता मदालसा जब बाल्यकाल में इस प्रकार का अध्ययन करती रही। वह खग दर्शनों का अध्ययन देखो अप !करते हुए मुनिवरोंने में रत्त रही। क्योंकि मस्तिष्क और मन, मस्तिष्क, मन और विचार, मेरे प्यारेदेखो एक सूत्र में हो जाते हैं तो मन स्थिर हो जाता ! है और मन जब स्थिर हो जाता है तो स्थिरता में संसार की प्रतिभा निहित रहती है।

राजा का सङ्कल्प

मेरे पुत्रोंदेखो !, मुझे स्मरण है माता मदालसा का जीवन। आज भी उस जीवन को विस्तृत रूप में तो नहीं, परन्तु तुम्हें ये उद्गीत गाने के लिए अवश्य आया हूँ। मैंने कई काल में तुम्हें यह वाकय प्रकट करते हुए कहा था, क्या माता मदालसा का जीवन प्रायः विद्यालय में स्मरणावृति रहता था। मेरे प्यारेजब वह ! अध्ययन करती रहती। तो मुनिवरोंदेखो !, भगवान् मनु वंश में एक राजा हुए हैं। मानो देखो, वह राजा उनको राज दे करके वह तो सन्यास को प्राप्त हो गए। वह तो परमपिता परमात्मा को अग्नेय बन करके समर्पित करना चाहते थे। मेरे प्यारे ! देखो, राजा का अभी संस्कार नहीं हुआ था। वह जेठे पुत्र को राज देकर के वह भयङ्कर वन में अपने राष्ट्र में भ्रमण कर रहे थे। तो मुनिवरोंदेखो !, उस समय जब ऋषि के आश्रम में पहुँचे तो मदालसा का दर्शन हो गया। वह वेदों का अध्ययन करने वाली अपने में अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में लगी हुई थी। मेरे पुत्रोंदेखो !, राजा ने दृष्टिपात किया क्या यदि ये कन्या मेरे गृह में सुशोभित हो

जाए तो मेरा राष्ट्र मानो पवित्रतम् को प्राप्त हो सकता है। राजा ने अपने मन में ये सङ्कल्प कर लिया, क्या ये कन्या तो अयोध्या में जानी चाहिए। क्योंकि ये बड़ी सुसज्जित है और सुशील है। मानो देखो वेद के मर्म को जानने वाली है।

मेरे प्यारेदेखो वह जब यह निश्चय कर लिया तो वह ऋषि के द्वार पर ! पहुँचे। और ऋषि से कहा, हे देवत्वाम्मेरी इच्छा ऐसी है !हे ऋषिवर !, क्या आप मुझे तो जानते ही हैं। उन्होंने कहा, हाँ प्रभुक्या !, मेरी इच्छा यह है कि जो कन्या तुम्हारे आश्रम में अध्ययन करती है, ये मदालसा नामक ब्रहे, इसका संस्कार होना चाहिए। क्योंकि हमारा जो ये अयोध्या राष्ट्र है, इसीलिए इसका निर्माण भी भगवान् मनु ने किया है। और हम मनु वंशज भी हैं। हमारी इच्छा ऐसी है कि हमारे यहाँ ये परम्परा उत्तमता की बनी रहे तो बड़ी विचित्र है। मेरे प्यारेउन्होंने कहा !, ऋषिवर स्वाति अमृते, ऋषि ने कहा कि भगवन्, ये तो मदालसा से ही प्राप्त करो। माता मदालसा की प्रतिज्ञाएँ

वह मुनिवरोंदेखो !, उनके यहाँ वो कक्ष में अध्ययन कर रही थी तो राजा उसके समीप पहुँचे। राजा से कहा, कहो राजन्कैसे शा !न्त मुद्रा में विद्यमान हो? उन्होंने कहा, देवी, मैं कुछ इच्छा प्रकट करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, उच्चारण कीजिए। उन्होंने कहा, देवी, मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं मनु वंश का राजा हूँ। और मनु वंश में देखो ये, हमारे पूर्वजों ने इस अयोध्या का निर्माण किया। और अयोध्या में मानो मेरी इच्छा ऐसी है कि उत्तम से उत्तम सन्तानों का जन्म होना चाहिए। मेरे प्यारेदेखो !, उस समय मदालसा ने कहा कि आप अपना मन्तव्य प्रगट कीजिए। उन्होंने कहा कि मैं यह चाहता हूँ कि तुम हमारी अयोध्या में मानो देखो हमारी अयोध्या का सौभाग्य जागरूक हो जाएगा। मदालसा ने कहा, राजन्, मैं तुम्हारी अयोध्या में, नहीं जा सकूँगी। उन्होंने कहा, कारण? उन्होंने कहा कि मैं खग दर्शनों का अध्ययन करती हूँ और मैंने कल्प और निरूक्त में बहुत सी विद्याओं को मैंने अध्ययन किया है। परन्तु मैं गृह आश्रम के ऊपर मेरा बहुत ही अध्ययन रहा है। मैं आचार्य से अपनी जिज्ञासा प्रगट करती रहती हूँ। हे परमदेव !

मैं इसीलिए नहीं जा सकती क्योंकि मैं सदैव अध्ययन करती हूँ। मैंने तीन प्रतिज्ञाएँ की हैं। वास्तव में तो दो ही हैं। परन्तु प्रथम प्रतिज्ञा मेरी यह है क्या मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य की मानो देखो पाँच वर्ष तक मेरी शिक्षा हो। और उस पाँच वर्ष में मेरे में कोई मध्य में बाधक नहीं बनना चाहिए। और जिस दिन मध्य में वो बाधक बनेगा उसी समय में गृह में प्रवेश नहीं करूँगी और मैं मानो देखो बारह वर्षम, बारह वर्ष के पश्चात् मैं स्वेच्छा से अपने शरीर को त्याग दूंगी। मेरे प्यारेदेखो !, राजा ने कहा, देवी, मुझे ये स्वीकार है।

उन्होंने कहा, हृदय को प्रबल करो। क्योंकि ये हृदय, ये हृदय ऐसा है, हृदय, मस्तिष्क दोनों अपने में मानो देखो चर्चा करते रहते हैं और विचारविनिमय होता - रहता है। जब क्रिया वाहक रूप देना प्रारम्भ करोगे, उस समय मानो देखो जब तुम्हें प्रतीत होगा, ये क्या है? मेरे प्यारेदेखो !, राजा ने कहा, नहीं दिव्याम्, मुझे स्वीकार है। मेरे प्यारेदेखो वह माता मदालसा अपने गुरु के !, आचार्य के समीप पहुंची और आचार्य से कहा, प्रभु, ये राजा क्या उद्गीत गा रहे हैं। उन्होंने कहा, देवी जैसी तुम्हारी इच्छा हो। उन्होंने कहा, प्रभु, मैंने आपके लिए प्रतिज्ञा की हैं। मेरी प्रतिज्ञा यदि इन्होंने भङ्ग कर दी तो क्या होगा? उन्होंने कहा जो तुम्हारी प्रतिज्ञाबद्ध हो उसी में तुम तत्पर रहो। मेरे प्यारेदेखो उन्होंने कहा !, तो मेरी ये प्रतिज्ञा है, क्या मैं, कोई भी मेरी शिक्षा में बाधक नहीं बनना चाहिए। और जिस दिन बनेगा, मानो देखो, बाधक को अप्रति में वर्णामकृति में, मानो कृतिका कुल में उस समय में गृह में प्रवेश नहीं करूँगी। राजा ने बेटावो स्वीकार कर ! लिया और स्वीकार करके मेरे पुत्रोंदेखो !, ऋषि से उन्होंने अनुमति लेई। माता मदालसा को दीक्षाम् उपदेश उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु। आपकी अनुपम जो शिक्षा मुझे दीक्षाम् उपदेश दीजिए। प्रभुमैं मानो देखो अपने गृह में प्रवेश कर रही हूँ। ! मैं गृह में प्रवेश करूँ, आपने मेरा संस्कार करने से पूर्व आप मुझे दीक्षाम् उपदेश दीजिए। मेरे प्यारेदेखो !, माता मदालसा से ऋषि ने कहा, हे पुत्रीजिस ! विद्यालय में तुमने अध्ययन किया है और जिस विद्या को मैंने दर्शनों में और

वेदमन्त्रों से मैंने उपार्जन करके इस विद्या को मैंने तुम्हें दिया है, इस विद्या का तुम्हें विचारसी बनना है। क्योंकि !विनिमय करना है। और तुम्हें मानो देखो ब्रह्मव-मैंने पुरातन काल में ये उपदेश दिया था जब बाल्य काल था तुम्हारा क्या तुम्हें देखो !ब्रह्मवर्चोसी बनना है। मेरे प्यारे, ऋषि कहता है, ब्रह्मवर्चोसी वह कहलाता है, जो ब्रह्म को अपने से दूरी नहीं करता है। मानो देखो, गृह में तुम जा रही हो। और राजस्थली में तुम्हारा जाना होगा। परन्तु देखो, तुम्हें आलस और प्रमाद न आ जाए। यदि जो दिव्या को देखो, आलस और प्रमाद आ जाएगा, मानो देखो उस समय गृह का विनाश हो जाएगा, तुम्हारा गृह अशुद्धता में परणित हो जाएगा। क्योंकि तुम्हारी प्रवृति सन्तति है। तुम्हारी प्रवृति ही मानो देखो आगे आने वाला जो समाज है, उसकी धरोहर है तुम्हारे द्वारा। मेरे पुत्रोंदेखो !, माता मदालसा को दीक्षाम् उपदेश आचार्य ने देना प्रारम्भ किया। सबसे प्रथम ये दिया, क्या तुम गृह में देखो, तुम्हें आलस और प्रमाद नहीं आना चाहिए। ब्रह्मचर्य इतना सुरक्षित रहना चाहिए, मानो देखो, सन्तान को जन्म देने से देखो ब्रह्मचर्य की विनाशता नहीं होती। परन्तु देखो, उसमें संयम और धैर्य और तुम्हारा मनस्तत्त्व देखो सदैव प्राणसत्ता के साथ में बना रहना चाहिए।

मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा कि तुम्हारा ब्रह्मवसी बना रहना चाहिए। ! आलस और प्रमाद नहीं रहना चाहिए। और मानो देखो, जिस राष्ट्र को जा रही हो, इस राष्ट्र को तुम अपना मत स्वीकार करना। क्या ये राष्ट्र मेरा है। इदन्नमम् देखो, वेद का मन्त्र कहता है इदन्नमम्, क्योंकि ये मेरा नहीं है। ये हमारे मध्य में मानो देखो प्रभु की धरोहर है। समाज की धरोहर है और ये राष्ट्र की सम्पदा है। मानो देखो, इसमें प्रभु सबकी रक्षा करने वाला है। ये तुम्हें स्वीकार करना होगा। इसमें नम्रता रहनी चाहिए। मानो देखो, जब तुम्हारे हृदयों में इस प्रकार की नम्रता जभी बन सकेगी जब तुम मानो देखो इस धरोहर को परमात्मा की धरोहर स्वीकार करोगे। जब तक मानो देखो इस धरोहर को, द्रव्य को, राज्य को जब तक देखो मानव परमात्मा की धरोहर स्वीकार नहीं करता, तब तक मुनिवरों !

देखो, उसमें निरभिमानता नहीं आ सकती। निरभिमानी वही प्राणी बनता है जो इस अतुलित धरोहर को प्रभु की धरोहर स्वीकार करता है। समाज की धरोहर स्वीकार करता है। हे पुत्रीतुम राष्ट्र में जा रही हो !, तुम्हारा राष्ट्रीयत्व इस प्रकार बना रहना चाहिए।

मेरे प्यारेउन्होंने कहा !, सबसे प्रथम मेरा ये उपदेश है, मानो देखो, जो तुम्हें सन्तान को आगे जन्म देना है, उसमें तुम्हें याग करना है। और याग का अभिप्राय ये है, माता का याग वह होता है, जो गर्भस्थल में शिशु आने से ले करके और पाँच वर्ष तक मानो देखो उसको ब्रह्मवेत्ता बना देती है। उसको ब्रह्मनिष्ठ बना देती है और उसको त्याग और तपस्वी बना देती है। ये माता ही, मानो देखो माता कहलाती है और वो माता याग करके वो पुत्र याग करने वाली कहलाती है।

मेरे प्यारेदेखो ऋषि ने कहा !, देवी, तुम गृह में प्रवेश हो रही हो। परन्तु देखो, तुम्हारा ये विचार रहना चाहिए। मङ्गलम् ब्रह्मेः व्रतम् देवाः। मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि के उद्गारों को दिव्या अपने में ग्रहण कर रही है। उन्होंने कहा प्रभुऔर ! उच्चारण कीजिए मुझे तो परम आनन्द की अनुभुति हो रही है प्रभु। हे भगवन् ! मुझे दीक्षान्त उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा, पुत्री, मैंने तुम्हें उपदेश दिया कि इस विज्ञान को तुमने पाया है उस विज्ञान को प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए तुम प्राण की सत्ता को जानो जिससे तुम अपने आन्तरिक जगत को अपने में दृष्टिपात कर सको।

मेरे प्यारेये विचार देते हुए मदालसा बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने !देखो ! कहा, धन्य है प्रभु। आपके विचारों से मेरा अन्तरात्मा मानो गद्गद् हो रहा है। और मुझे दीक्षान्त उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा, हे पुत्रीजिस गृह में तुम्हारा वास होने जा ! रहा है ये मनु वंश है। इस मनुवंश में इतनी त्याग और तपस्या में जीवन रहा है क्या इसमें, राजा अपने जेठे पुत्र को राज दे दे करके सब ऋषि होते चले आए हैं। ये परम्परा रही है। क्योंकि देखो, वहाँ एक मानवीय परम्परा रही है। राष्ट्रीय

परम्परा तो गौण है परन्तु मानवीय परम्परा एक महान् विशिष्टा में परिणत रही है। मानवता सबसे प्रथम है, राष्ट्र उसके पश्चात् है। क्योंकि राष्ट्रम् ब्रह्मे। देखो राष्ट्र तो एक वृति कहलाती है। परन्तु मानव दर्शन जो है ये परमात्मा की सृष्टि से मिलान कराता है। परमात्मा का आत्मचेतना आत्मा से मानो देखो परिणत हो जाता है। उन्होंने कहा, ये उपदेश, मैं तुम्हें देने जा रहा हूँ। ये मेरा दीक्षान्त उपदेश है। और जिस भूमि पर तुमने अब तक अध्ययन किया है इसको अपने से दूरी नहीं करना है। मानो देखो, इस भूमि के प्रति तुम्हें अपने में सहानुभूति लाना है। समयसमय - पर इस पर किसी प्रकार की क्षति हो जाए या इस पर कोई आक्रमण आ जाए तो ये तुम्हें मानो देखो इसकी रक्षा करना है। उसके ऊपर तुम्हें अपने को धारण करते हुए ऊर्ध्वा में गमन कराना है।

मेरे पुत्रोंउन्होंने कहा !, हे दिव्यातुम्हारा राष्ट्र !, तुम्हारा मन मस्तिष्क यहीं पनपा है। इस मन मस्तिष्क और विचार को लेकर के तुम मानो देखो अपने कर्तव्य का पालन करना। क्योंकि कर्तव्य जीवन है। कर्तव्य ही महानता में ले जाता है। और जो अधिकार होता है वो मानव को मृत्यु में पहुँचा देता है।

मेरे प्यारेदेखो !, ये वाक्य उन्होंने बड़े महत्त्व, बल देकर के कहा, क्या जब कर्तव्य का पालन करोगे, जब कर्तव्य तुम्हारे समीप रहेगा कि ये मेरा कर्तव्य है। मेरे गर्भ में शिशु आया है, मुझे परमात्मा का चिन्तन करना है। प्राणायाम करना है। उदान और समान और विचार को मिलाते हुए मानो मुझे अन्तरात्मा से वार्ता प्रकट करनी है। तब वह कर्तव्य जब तुम करती चली जाओगी तो तुम्हारे गर्भ से ऐसे महापुरुषों का जन्म होगा, वह ब्रह्मवेत्ता बन करके माता के नामकरण को उज्ज्वल करते हैं।

मेरे प्यारेऋषि ने कहा !, ये तो तुम्हारा कर्तव्य है। और मानो देखो, जो अधिकार है, अधिकार को पुकारते रहो क्या राष्ट्र मेरा अधिकार है। अरेराष्ट्रीयता ! के कर्म करते चले जाओगे तो राष्ट्र प्राप्त हो जाएगा। परन्तु यदि राष्ट्रम् ब्रह्मः, राष्ट्र को एक अधिकार समझ कर कि जान करके अधिकार देकर के ही तुम मानो

देखो अपने में लगे रहोंगे। एक समय तुम्हारा मन मस्तिष्क देखो रक्त भरी क्रान्ति में परिणत हो जाएगा।

मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि ने ये अपना दीक्षान्त उपदेश दिया और ये कहा, क्या तुम कर्तव्य, योग्यता के लिए तुमने अध्ययन किया है, यौगिक बनो और यौगिक बन करके तुम्हारे कर्तव्य ही तुम्हें एक मानवीय कर्तव्य का रूप बना देगा। मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि ने इस प्रकार दीक्षान्त अपना उपदेश देकर के ये कहा हे पुत्री ! तुम मानो कर्तव्यवादी बनना राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति अपनी अन्तरात्मा की जो देखो आह्वान है, जो तुम्हारी अन्तरात्मा की जो अन्तः है, पुकार है अथवा उसको जब तुम स्वीकार करोंगे तो तुम आत्मवेत्ता बन करके इस संसार में अपने कर्तव्यवादी बनकर के तुम सागर से पार हो जाओंगे।

मेरे प्यारेदेखो ! माता मदालसा ने कन्या रूप में जब ये उपदेश आचार्य से श्रवण किया तो आचार्य के चरणों को स्पर्श करने लगीं। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु और मुझे कोई उपदेश देना हो। उन्होंने कहा पुत्रीदेखो बाल्याम् भूतम् ब्रह्मः ! । पाँच वर्ष तक तुम्हें शिक्षा है, बाल्य को शिक्षार्थी बनाना है। और पाँच वर्ष के पश्चात् अपने अतिकाल को मानो उससे दूरी कर लो। वह दूसरा कर्तव्य देखो पिता का बन जाता है। पिता के संरक्षण में त्याग दो। और जब पिता के संरक्षण में, वो आचार्य के मानो कुल में जब प्रवेश हो जाता है तो उस समय मानो देखो तुम्हारा दायित्व समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारेदेखो ऋषि ने जब इस प्रकार का उपदेश दिया !, माता मदालसा बड़ी प्रसन्न हो गयी। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु। उन्होंने कहा, हे पुत्रीयदि तुम्हें ! ममता आए तो प्रभु का चिन्तन कर लेना, क्योंकि प्रभु रचाता है और इससे दूरी रहता है। इसी प्रकार माता भी जन्म देती है परन्तु उसके अव्यवों से, मोह से दूरी रहना चाहिए। प्रीति करनी चाहिए। इस प्रकार मुनिवरोंदेखो !, आचार्य ने उपदेश दिया। आचार्य ने जब ये उपदेश दिया माता मदालसा ने ये सब स्वीकार किया। उन्होंने अन्त में एक वाक्य कहा, क्या जो भी जब भी तुम किसी भी काल में

कोई भी सङ्कल्प करो, देखो आत्मा से जो सङ्कल्प किया जाएगा, वह सङ्कल्प तुम्हें देखो, इस सागर से पार ले जाएगा। यदि देखो तुम बाह्य कटुता में कोई सङ्कल्प यदि तुमने लिया है वो कटुता का सङ्कल्प तुम्हें कटु बना देगा। तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। और यदि आत्मा की पुकार है, आत्मा की पुकार से तुमने ये सङ्कल्प लिया है, कोई भी सङ्कल्प हो वह सङ्कल्प तुम्हें देखो सागर से पार ले जाएगा। वह सङ्कल्प तुम्हारी आत्मा का सङ्कल्प है।

आत्मा के भाव को कदापि तुम्हें नष्ट नहीं करना है।

मेरे प्यारेये माता मदालसा को ! ये उपदेश ऋषि ने दिया। ऋषि के देते ही, देखो माता ने चरणों को कन्या भाव में देखो ऋषि के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभुआपको कोई और उपदेश देना हो तो मुझे प्रगट ! कीजिए। उन्होंने कहा, हे पुत्रीदेखो अमृताम् !, जो तुम्हारी परम्परा मनु वंश की बनी हुई है उससे दूरी नहीं होना है। मानो देखो, उन्होंने परम्परा बनायी है, ब्रह्मचर्य, गृह आश्रम में प्रवेश हो करके और जेठा पुत्र जब मानो सुयोग्य बन जाए, राज्य देकर के तुम भयङ्कर वन में चले जाओ। तपस्वी रूप में अपने में ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करो। जिस विद्या का तुमने अब तक अध्ययन किया है, वही तुम्हारे लिए सार्थक है। विद्यालयों को ऊँचा बनाना, सन्यस्त में जाकर के प्रभु के समीप जाना और आनन्द की पगडण्डी को ग्रहण करने का नाम ही परमानन्द है। कर्तव्य की प्रतिभा कहलाती है। मेरे पुत्रोंदेखो !, जब माता ने इन वाक्यों को श्रवण किया तो बेटाप्रोत हो गयीं और उसने ये कहा-चरणों में ओत !, हे प्रभुमेरे मन की इच्छा तो ये चाहती नहीं !, क्या मैं राष्ट्र में चली जाऊँ, मैं मानो गृह में प्रवेश हो जाऊँ। मेरी अन्तरात्मा तो यही कहती है प्रभु, मैं आपके चरणों में सदैव विद्या का अध्ययन करती रहूँ। ब्रह्मज्ञान में परणित होती रहूँ। क्योंकि विद्या की कोई मानो सीमा नहीं है। जैसे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं ऐसे परमपिता परमात्मा की ये विद्या भी एक मानवीय समाज में एक धरोहर है

और एक उज्ज्वल है। मानो ये जो धरोहर है, ये बड़ी विचित्र कहलाती है।

परमात्मा की धरोहर आत्मा के समीप है और आत्मचिन्तन करना मानो देखो ये उसकी तपस्या कहलाती है।

आओ मेरे पुत्रोंदेखो वह ब्रह्मणाम् ब्रव्हा वृतम् देवत्वाम् !, वेद का मन्त्र कहता है कि देवता बनने के लिए तपस्या चाहिए। बेटातप किसे कहते है मैंने तुम्हें ! कुछ सूक्ष्मसी तप की विवेचना की है। क्या वह तपस्वी ही कहलाता है जो बेटा ! देखो माता बनकर के आत्मा से वार्ता प्रगट करने वाली हो। पितर बन करके वो राष्ट्र और समाज को अपना न जानकर के प्रभु की धरोहर स्वीकार करता हुआ व देखो !प्रभु का चिन्तन करता रहे। तो मुनिवरों, राजा के समीप न तो क्रान्ति आती है, उसका आत्मबल, उसका क्रियाकलाप इतना विचित्र रहता है कि प्रत्येक समाज उससे प्रसन्न रहता है।

ये है बेटाआज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा !, मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रगट करूँगा, इससे आगे की शेष चर्चाएँ। आज का विचार ये समाप्त, अब वेदों का पठनपाठन।- ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनुः गायन्त्वाः । ओ३म् ब्रह्म मनश्चमाः वाया रथम् आपाः। ओ३म् यशश्चहम् ब्रह्मणाः। महर्षि महानन्द मुनि जी- अच्छा भगवन् । पूज्यपादगुरुदेव आनन्दित रहो।- दिनांक :12 जनवरी, 1990 समय रात्रि :8 बजे स्थान श्री हरि सिंह : महावीर एन्क्लेव पालम, दिल्ली।

६ 13 01 1990 माता का दायित्व

जीते रहो !देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और वे पुरोहित हैं और अनन्तमयी माने गए हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं और अपने में ये विचारते रहते हैं कि वह परमपिता परमात्मा कितना अनूठा है, अथवा कितना महान् है जिसका ये जगत एक महानता में दृष्टिपात आ रहा है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही उस महान् देव की महिमा का गुणगान गाता रहता है जिस भी काल में ऋषि मुनि एकान्त अपनी स्थलियों पर विद्यमान रहे हैं, उसी काल में उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, उसके ज्ञान और विज्ञान के सम्बन्ध में सदैव विचार विनिमय करते रहे हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं। वो सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए मुनिवरों !देखो, वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। और वे पिण्ड और जगत में मानो सर्वत्रता में निहित रहने वाले हैं। एक-एक अणु और परमाणु में जो एक मानो देखो वृत्तियाँ दृष्टिपात आ रही हैं वह उस परमापिता परमात्मा की ही महती है अथवा अनन्तता है। जिस अनन्तता के ऊपर हमारे यहाँ प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा !अन्वेषण करता रहा है अथवा अनुसन्धान कर रहा है। और करता चला आया है क्योंकि वह अनन्तमयी धारा में रत्त रहना चाहता है।

मानव का मन्तव्य

प्रत्येक मानव की परम्परागतों से बेटा !एक धारणा रही है कि हम आनन्द और महानता को प्राप्त करना चाहते हैं। और जिस आनन्द के लिए प्रत्येक मानव अपने में अन्वेषणा अथवा आनन्द के लिए पिपासी बना रहा है। और उसके मनों में ये मानवीयत्व निहित रहा है कि मैं आनन्द और महानता को प्राप्त करना चाहता हूँ। चाहे वह दार्शनिक रूप में विद्यमान हो, चाहे वह मानो देखो एक परमाणु को अणु में मिलान करने वाला हो, चाहे वह प्राण को अपान में उद्गीत गाने वाला हो, चाहे वह किसी भी स्थली पर विद्यमान है। वह एकान्त भयङ्कर वनों में है, कोई विद्यालयों में है, कोई मानो देखो दार्शनिकों के समाज में एकत्रित हो करके विचार-विनिमय कर रहा है। उसका मन्तव्य केवल एक ही रहा है कि मैं उस परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत को जानने वाला बनूँ। और अपने में श्रोत्रीय बन जाऊँ। जिससे मेरे जीवन की जो धाराएँ है अथवा अनन्तता है वह अनन्तमयी देखो अनन्तवान् से मेरा समन्वय हो जाए। जिससे मैं भी अनन्तता को दृष्टिपात करता हुआ इस सागर से पार हो जाऊँ।

बेटा !ऐसा हमारा वेद का मन्त्र कहता है। वेद का मन्त्र कहता है-"सम्भव ब्रव्हे वृतम आत्माः ।" मेरे पुत्रों !देखो आत्मा को आत्मा से समन्वय चाहता है। आत्मा को परमात्मा से समन्वय चाहता है क्योंकि वह अपने में ही तो अपने को दृष्टिपात किया जाता है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से एक बिन्दु है और बिन्दु को बिन्दु से ही समन्वयता समन्वयता की आभा में रत्त रहना चाहता है। तो मेरे पुत्रों ! देखो, विचार ये प्रारम्भ हो रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते चले जाए। क्योंकि मानव जब भी एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके विचारता रहा है कि वह परमपिता परमात्मा कितना अनन्त है, वह परमपिता परमात्मा क्या है? जब यह विचारता रहता है तो बेटा !उसकी बुद्धि, उसका मानवीयत्व, उसकी मेधावी, मानो देखो ऋतम्भरा बन करके वे मानो सुशीले महानता की पगडण्डी को वो ग्रहण करने लगता है।

आओ मेरे पुत्रों !आज मैं तुम्हें इस विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ।

केवल विचार ये कि हमारे यहाँ ज्ञान और विज्ञान परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत करता रहा है। और विचारता रहा है कि मैं परमपिता परमात्मा की आभा में रत्त हो जाऊँ। तो आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय न देता हुआ, विचार ये क्या कह रहा है। ओजस्तव क्या कह रहा है इस सम्बन्ध में। बेटा !मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन कराते हुए कहा।

माता मदालसा का विद्यालय से प्रस्थान

आओ, मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा !देखो, माता परमपिता परमात्मा की महती को जानती हुई और प्राण तथ्यों को जान करके मुनिवरों !देखो वह अपने में सदैव अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करती रही है। तो मेरे पुत्रों !मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि माता के ऊपर संसार में कितना दायित्व होता है, कितना महान् देखो उसके लिए, उसकी कर्मठता के लिए, विद्यालयों के लिए, मुनिवरों !कितनी सजातीय विचारधारा उसे देनी होती है। तो मैं बेटा !उन विचारों में तुम्हें प्रायः मैं ले जाना चाह रहा था। और ये वाक्य मुनिवरों !देखो जब दीक्षान्त उपदेश महर्षि का मुनिवरों ! देखो प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरों !देखो दीक्षान्त के पश्चात् मेरे पुत्रों !देखो राजा मनु वंश में थे उनका संस्कार हो गया। संस्कार होने के पश्चात् उन्होंने विद्यालय को त्यागते समय कहा मदालसा ने, प्रभु मेरी इच्छा तो ये नहीं थी कि मैं आपके चरणों की जो प्रतिभा है अथवा जो रज है, उसे मैं अपने से दूरी कर सकूँ। प्रभु परन्तु देखो, ब्रह्मणे यह समय अपनी-अपनी आभा में परवर्तित होता रहता है। हे प्रभु !अब मुझे आज्ञा दीजिए और मानो देखो आपके चरणों की रज मेरे मस्तिष्क में सदैव तत्पर रहे जिससे मुझे अपने कर्त्तव्य के ऊपर अभिमान न आ जाए। क्योंकि मानव का जीवन परिवर्तनशील रहता है। और वह परिवर्तनशील इसीलिए रहता है, आज नम्रता है तो कल वही अभिमान में परणित हो जाता है। और वह अभिमानी है तो वही नम्रता में सदैव निहित रहने लगता है। इसीलिए प्रभु, मेरी इच्छा सदैव यह बनी रहती है कि मैं इस मायावी जगत में न प्रवेश हो करके मेरे

हृदय में निरभिमानता बनी रहे और मैं आपके चरणों का गुणगान गाती रहूँ। और आपने जो विद्या मुझे प्रदान की है मानो देखो मेरी वो विद्या सदैव एक विचित्र रूप में बनी रहे। ऐसा मुनिवरों !देखो, उन्होंने अपने में उद्गीत गाया। और ऋषि के चरणों को स्पर्श करते हुए, मेरे पुत्रों !वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया। और भ्रमण करते हुए मुनिवरों !देखो अयोध्या में उनका वास हो गया।

अयोध्या

मेरे पुत्रों !हमारे यहाँ मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया, क्या संसार में ब्रह्मरभे मानो देखो भगवान् मनु वंशलज ही ने इस अयोध्या का सबसे प्रथम निर्माण किया था। मानो शम्भु मनु ने इस अयोध्या का निर्माण किया। अष्टचक्रा नौ द्वारा मानो देखो ऐसी अयोध्या का निर्माण किया था। जैसे परमपिता परमात्मा ने माता के गर्भस्थल में इस मानव शरीर का निर्माण किया-इसमें बेटा !अष्ट चक्र हैं, नौ द्वार हैं। मेरे पुत्रों !देखो ऐसी एक अयोध्या है। यह अयोध्या है यज्ञ करने की स्थली है। जहाँ मानव के शरीर में बेटा !देवासुर संग्राम होता रहता है। इसीलिए उसे अयोध्या कहते है। और वह किसी से विजय न हो सके ऐसी अयोध्या है। मेरे पुत्रों !देखो इसमें दोनों प्रकार का स्वरूप बन जाता है।

विचार आता रहता है कि जब मुनिवरों !देखो निर्माणवेत्ता किसी भी वस्तु का निर्माण करता है उसके निर्माण में कई प्रकार की वृत्तियाँ विद्यमान होती हैं। एक तो मानो देखो वैदिक साहित्य क्या कहता है, द्वितीय हमारे पूर्वज क्या कहते हैं, तृतीय ये होते हैं कि हमारे जो आचार्यजन हैं उन्होंने हमें कौन-सी शिक्षा दी है। तो मेरे पुत्रों !देखो इसी आधार पर मानव अपने में निर्माणित होता रहा है और निर्माण करता रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को अपने मनोनीत हृदयों में ही निर्माण करना चाहिए। वह जो निर्माणशाला है वो बड़ी पवित्र कहलाती है। तो मेरे प्यारे !देखो, अयोध्यापुरी का जो निर्माण किया गया, वह भगवान् मनु ने, शम्भु मनु ने किया बेटा !जिसके अवृत्तों में सदैव देखो एक अभ्युदय होता रहा है।

माता मदालसा का अयोध्या में वास

आओ मेरे पुत्रों !इस सम्बन्ध में मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि माता मदालसा अपने अयोध्या में जब वास हो गया तो बेटा !देखो सर्वत्र राष्ट्र में एक मानो देखो नवीनता उत्पन्न हो गयी। और विचारों में एक मानो नवीन-नवीन विचार मानो प्रार्दुभाव होने लगे। और ये कि देखो वह गृह सम्भव ब्रव्हा, वह गृह में दिव्या का वास हुआ है। मानो देखो मनु वंश सदैव पवित्रता की आभा में सदैव गमन करता रहा है। मेरे पुत्रों !देखो जब गृह में वास करने लगे कुछ समय के पश्चात् माता मदालसा के गर्भस्थल में मेरे प्यारे !एक बिन्दु के साथ एक शिशु का प्रवेश हो गया।

माता मल्दालसा का पुत्रेष्टि याग

जब शिशु का प्रवेश हो गया तो माता तो तपस्वी थी। उसने ये वैदिक साहित्य में अध्ययन किया था, क्या प्रत्येक मानव को तपस्वी होना चाहिए। प्रत्येक प्राणीमात्र जब तपस्या में परणित हो जाता है। वह तपस्या ही उसके मानवीयत्व को ऊर्ध्वा में गमन करा देती है और वही मानो देखो मेधावी, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी को जन्म देने लगती है। और वह जब जन्म दे देती है तो मानो देखो उसका जीवन एक विस्तृत बन जाता है। मेरे प्यारे !देखो मुझे स्मरण आता रहता है मैंने उनके साहित्य को भलीभाँति अध्ययन किया। माता मदालसा, बेटा !देखो वह जब तीन महा वृतम् हो गयी तो बेटा !उस समय उन्होंने संस्कार किया। और संस्कार के पश्चात् याग में ये प्रतिज्ञाबद्ध हुई, क्या मैं अब अपने बाल्य का निर्माण करना चाहती हूँ। मेरे पुत्रों !देखो, निर्माणवेत्ता वास्तव में तो परमपिता परमात्मा है। परन्तु ये विचारने लगी दिव्या कि दर्शनशास्त्र क्या कहता है। वेद का मन्त्र जो मैंने अध्ययन किया है वह क्या कह रहा है निर्माण के सम्बन्ध में तो बेटा !देखो “निर्माणाम् ब्रव्हे ऋतम दिव्यम् ब्रहा, बातम् ददस्ति सुत्राः। "वेद का वाक्य यह कह रहा है कि माता एक सूत्र बन करके बेटा !उसे विचार-

विनिमय प्रारम्भ करने लगी। विचारने लगी मेरे पुत्रों !क्या इसमें कौन अमृत बना हुआ है। कौन अमृत दे रहा है। मेरे प्यारे !देखो कौन है जो प्राणसत्ता को प्रदान कर रहा है। मेरे प्यारे !माता यही विचारने लगी, क्या मेरे गर्भस्थल में जो शिशु है जिसे मुझे ब्रह्मवेत्ता बनाना है तो मानो देखो माता यह विचार रही है। कौन है, जो मानो देखो शिशु को अमृत दे रहा है। तो बेटा !प्रभु के विज्ञान में चली गयी। जब देवी प्रभु के विज्ञान में चली गयी क्या वह प्रभु कितना निर्माणवेत्ता है। कितना मानो देखो विज्ञानवेत्ता, उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं है।

मेरे पुत्रों !देखो, यदि विज्ञानशाला दृष्टिपात करनी है किसी भी वैज्ञानिक को तो वह माता के गर्भस्थल के ऊपर चिन्तन करना प्रारम्भ करे। जिससे मानो देखो सर्वत्र विज्ञानशालाओं का उसे ज्ञान हो जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, वह "ममम् ब्रव्हा ऋतम "जब माता मदालसा विज्ञानशाला के ऊपर विचार-विनिमय करने लगी तो बेटा !अमृत तो चन्द्रमा दे रहा है। वह चन्द्रमा अमृत दे रहा है, सूर्य प्रकाश दे रहा है। और मुनिवरों !देखो अऋतम् !पृथ्वी गुरुत्व दे रही है और मुनिवरों !देखो आपोमयी ज्योति बन करके वास कर रहा है। वह मुनिवरों ! तरलत्त्व को प्रतिपादित कर रहा है और अग्नि उष्णा बना रही है। और देखो ये वायु प्राण दे रहा है। और अन्तरिक्ष बेटा !देखो अवकाश देता है।

तीन प्रकार के परमाणु

विचार आता रहता है संसार में, जब से सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु उन विज्ञानवेत्ताओं ने तीन प्रकार के परमाणुओं को अब तक जानने का प्रयास किया है। संसार में जितने भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं, उन विज्ञानवेत्ताओं की ये मानो उड़ाने रही हैं, बड़ी विचित्र-विचित्र उड़ानें। क्या उन्होंने परमाणुओं के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ किया। तीन प्रकार का परमाणुवाद होता है। जो तीन प्रकार का परमाणुवाद को ही ले करके विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञानशाला में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों !सबसे प्रथम परमाणु गुरुत्व है, तरलत्व है और तेजोमयी कहलाता है। मेरे पुत्रों !वायु उन परमाणुओं को गति

देती है ग्रौर ग्रन्तरिक्ष में बेटा !वो गतिवान होते रहते हैं। तो विचार ग्राता रहता है, जितना भी विज्ञान मानो देखो ग्रपनी ग्राभा में गमन कर रहा है वह तीन प्रकार के परमाणुग्रों में गमनम्ब्रहे, कहीं बेटा !देखो विज्ञानवेत्ता देखो वह तरलतत्व को ऊर्ध्वा में गमन कराते हैं। कोई काल ऐसा ग्राता है जो गुरुत्व को ले करके गमन करता है। कोई ऐसा काल ग्राता है जहाँ तेजोमयी परमाणुग्रों को महत्त्व विशेष देता है। तो मेरे प्यारे !परन्तु ये तीन प्रकार का जो परमाणुवाद है इसी को मिलाता रहता है। इसी को एक सूत्र में लाने का प्रयास करता रहता है। प्राण की इसमें जब वायु की पुट लगती है गतिवान होते हैं तो बेटो !यही परमाणुग्रों को एकत्रित करके विज्ञानवेत्ता बेटा !देखो विज्ञानशालाग्रों का निर्माण करते हैं। ग्रौर वे ग्रपने यन्त्रों का निर्माण करके वायुमण्डल में क्या सूर्य की किरणों के साथ गमन कराने लगते हैं। कहीं बेटा !देखो ये "ग्रमृताम् दिव्यम् ब्रह्मा वायुस्सुतो में गमन कराते हैं। परन्तु विज्ञानवेत्ता ग्रपने में बड़ा विचित्र उड़ाने उड़ता रहा है।

माता की उड़ान

मेरे पुत्रों !देखो इसी प्रकार माता मदालसा ग्रपने गर्भस्थल वाले देखो शिशु के ऊपर ऊँची उड़ाने उड़ रही है। ग्रौर माता यह विचार रही है कि निर्माणवेत्ता तो वह चेतन्य देव है। मानो देखो, वही देखो देवताग्रों की पुरी में ग्रौर देवता ग्रपनी पुरी में शिशु को ले जा करके निर्माणित करते रहते हैं।

तो मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया ग्रौर ये कहा "निर्माणम् ब्रव्हो कस्सुतम् ब्रीव्हि वृतम् देत्वा"। मेरे प्यारे !देखो माता मदालसा ग्रपने में विचारने लगी। मेरे पुत्रों !देखो, शिशु से कहीं वार्ता प्रकट करती है। क्योंकि प्राण को ग्रपान की प्रतिभा में ले जाती है ग्रौर ग्रपान को समान की प्रतिभा में ले जाती है ग्रौर समान को व्यान में प्रवेश करती। मुनिवरों !देखो, उदान की पुट लगा करके उस गर्भ वाले ग्रात्मा ग्रात्मस्वरूप, मेरे पुत्रों !देखो ग्रात्मस्वरूप जो शरीर में धारयामी बन रहा है शिशु बन करके उसके मानो देखो

आकार को वह दृष्टिपात करने लगी।

मेरे पुत्रों !मैंने तुम्हें कई काल में कहा है विचार-विनिमय करते हुए यह विद्या हमारे यहाँ परम्परागतों से रही है। एक विद्या यह रही है, क्या माता यदि ये चाहती है कौन-से देवताओं के गुणों वाले सन्तान को जन्म देना है उसी मानो देवताओं की उपासना करना प्रारम्भ कर देती हैं। ये विद्या बेटा !देखो द्वापर के काल तक, इस विद्या का उद्धरण होता रहा है। इस विद्या को अध्ययन करती रही हैं। मेरे पुत्रों !देखो मैं तुम्हें द्वापर के काल में नहीं ले गया हूँ। केवल मैं उस काल की चर्चा कर रहा हूँ।

मन्त्रदृष्टा

जहाँ बेटा !देखो माता मदालसा जो वेद के मर्म को जानने वाली, मानो देखो मन्त्रदृष्टा कहलाती थी। हमारे यहाँ मन्त्रदृष्टा उसे कहते हैं जो मन्त्रों के गुण उसके समीप आ जाएँ और वह उसी में मानो देखो उद्गीत गाती उसी में संलग्न हो जाए, उसी में लय हो जाए। और उसी में मुनिवरों !देखो, उद्गीत गाने लगे। जैसा मैंने पुरातन काल में कहा है क्या मुनिवरों !देखो माता मदालसा ही नहीं, मेरे पुत्रों !देखो चाक्राणी गार्गी जब भयङ्कर वनों में सामगान गाती रहती थी। क्योंकि वह भी मन्त्रदृष्टा कहलाती थी। जब वह सामगान गाती रहती तो बेटा ! सिंहराज, मृगराज, सर्पराज मेरे पुत्रों !देखो एक स्थली पर उसके गान को श्रवण करने लगे। विचार आता रहता है बेटा !कितना अहिंसामयी विचार है, कितना विचारम् ब्रव्हे। मेरे पुत्रों !देखो वह मन्त्रदृष्टा कहलाते हैं जो जिस मन्त्रदृष्टा वह है जिसमें हिंसा का एक अङ्कुर भी न आ पाए।

मेरे पुत्रों !देखो, मुझे स्मरण बहुत सा काल आता रहता है, आज मैं उस काल की विवेचना में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय ये, क्या माता देखो चाक्राणी जब गान गाती रहती थी तो बेटा !देखो सर्पराज भी उस ध्वनि को अपने में ध्वनित हो रहे हैं, सिंहराज भी ध्वनित हो रहा है, मृगराज भी ध्वनित हो रहा है परन्तु देखो उसमें हिंसा का भाव नहीं आ रहा है। वाह रे मेरे

प्रभु !तेरा ज्ञान और विज्ञान कितना अनन्तमयी माना गया है।

प्रभु का विज्ञान

मेरे पुत्रों !देखो माता के गर्भस्थल में जो निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, अमृत दे रहा है, तेजोमयी दे रहा है, वह कैसा मेरा देव है। कैसा विज्ञानवेत्ता है। मेरे पुत्रों !देखो, माता के गर्भस्थल में जब निर्माण करता है तो बेटा !बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण कर देता है। मेरे पुत्रों !देखो, निर्माण में कहीं बुद्धि का निर्माण है, बुद्धि भी एक नहीं। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। इसकी बहुत-सी शाखाएँ बन जाती है। मेरे पुत्रों !देखो मन के व्रतम बन जाते हैं। मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार, ये अन्तःकरण बन जाता है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऐसी विचित्रता है। मुनिवरों !देखो, हृदय भी दो प्रकार के माने हैं। एक लघु मस्तिष्क में हृदय है, एक मेरे प्यारे !देखो अनुष्ठान स्थली पर एक हृदय माना गया है जो मेरे पुत्रों !देखो "हृदयम् ब्रह्माः ऋतम"। विचार आता रहता है क्या मुनिवरों !देखो वह प्रभु कितना रचियता है, कितना विज्ञानवेत्ता है। उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं हैं। आज मैं उस विज्ञान में नहीं जाना चाहता हूँ।

माता की शिक्षा

विचार क्या मुनिवरों !देखो, माता मदालसा, गम्भीरता से प्रभु के गुणों का इस प्रकार वर्णन करती रहती थी। मेरे पुत्रों !देखो, जब वह शिशु के अभ्युदय मुनिवरों !देखो प्रत्येक माह का आहार, माता का उसी प्रकार का उन्होंने ग्रहण किया तो बेटा !ऐसा मुझे स्मरण आ रहा है, ऐसा श्रवण किया, क्या मुनिवरों ! देखो, नौ माह के पश्चात् माता के गर्भस्थल से एक बाल्य का जन्म हुआ। मेरे पुत्रों !देखो, उसे वो शिक्षा देना, लोरियों का पान कराती रहती। और तीन शब्द उद्गीत रूप में गाती, बुद्धोसी, शुद्धोसी और निरञ्जनोऽसी। ये तीन शब्द है बेटा !

मेरे प्यारे !सबसे प्रथम बुद्धोसी है। हे आत्मा!, तू बुद्धिमान है। हे आत्मा तू महान् है, तू बुद्धिमान है। मानो देखो बुद्ध है। और शुद्ध उसे कहते हैं जो शुद्ध मानो तो है, पवित्र नहीं है। तू सदैव पवित्र रहती है तू बुद्ध है, शुद्ध है और निरञ्जन है। तेरी मृत्यु भी नहीं होती। तू सदैव अखण्ड रहने वाली आत्मा है। मेरे प्यारे !देखो, माता अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती रहती और इस प्रकार प्रसन्न हो करके वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती। बेटा !वेद-मन्त्र अपने में उद्गीत गाता रहता शुद्धम् भव प्रव्हा लोकस्सुतम्, वस्सुतम् देवत्वाहम् ।

मेरे प्यारे !जैसे परमपिता परमात्मा इस संसार का निर्माणवेत्ता है। मानो देखो वह सदैव ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहता है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में, माता का जो गर्भाशय है, वह भी ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी कहलाता है। लोरियों का जब पान कराती है तो माता प्रसन्न रहनी चाहिए। माता में ज्ञान होना चाहिए। माता जब ज्ञानी बन करके, ब्रह्मवेत्ता बन करके और ब्रह्म का बखान करती रहती है तो बेटा !देखो, बाल्य में उसी प्रकार के संस्कार उबुद्ध होने लगते हैं। वह संस्कारित बन जाता है और वही संस्कारित बन करके बेटा ! देखो माता को ही ममता में परणित कर देता है।

मेरे प्यारे !देखो, मैंने तुम्हें उस काल, बहुत से कालों की चर्चाएँ की हैं। मेरे पुत्रों !देखो, जब माता इस प्रकार बाल्य का निर्माण करती है तो माता से प्रथम बाल्य का निधन नहीं होता। उससे ओझल नहीं हो पाता। परन्तु देखो वो ज्यों का त्यों तपस्या का एक फल है वह सदैव फल रूप में उसके समीप रहता है।

आओ मेरे पुत्रों !विचार-विनिमय क्या, माता मदालसा ने उसका मानो देखो जातकर्म और देखो नामकरण संस्कार करने के पश्चात्, मेरे प्यारे !देखो, उसे ये उद्गीत गाती रहती हे बाल्य !तू आत्मा है, तू चेतना है, तू मानो देखो अभ्युदय होने वाला है। तू ज्ञान और विज्ञान से मानो परिपूर्ण है। अपने में मानो यह स्वीकार न करना कि मैं मानो ज्ञान और विज्ञान से ओझल हूँ। सदैव तेरा ज्ञान और विज्ञान, सदैव तेरे हृदय में सदैव प्रवेश होता रहता है !तू ज्ञान और विज्ञान

की एक कुञ्जी है, एक महानता है। इस प्रकार का जो उपदेश दिया जाता है बेटा !वह एक महानता की आभा में परणित होता रहता है।

बाल्य ब्रह्मवेत्ता का माता से तपस्या गमन की आज्ञा

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। बेटा !तुम्हें परिचय देने चला आता हूँ और वह परिचय क्या है? मुनिवरों !देखो, माता मदालसा का जो अद्भुत जीवन रहा है-वह बाल्य को बेटा !देखो, पाँच वर्ष का ब्रह्मचारी होते ही, वह ब्रह्मवेत्ता है। और ब्रह्मवेत्ता ने कहा, हे मातेश्वरी !अब मुझे आज्ञा दीजिए, मैं देखो ब्रह्मज्ञान की पुष्टि करने के लिए मैं तपस्या करने के लिए जा रहा हूँ। मेरे प्यारे !माता मदालसा बड़ी प्रसन्न हो गयी। उन्होंने कहा, ये मेरा सौभाग्य है। मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य इस संसार के मान, अपमान से रहित हो गया है, वह रहित हो गया है। देखो, मान अपमान में ये संसार में जितना भी रत्त रहेगा प्राणी, उतना वो मान अपमान की आभा में परणित हो जाएगा। और मान अपमान जितना मानव स्वीकार करता है उतने ही उसके संस्कार आवागमन के बनते रहते हैं।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने अमृताम् देखो ऋषि दिव्या ने बाल्यम् ब्रह्मेः ये कहा कि हे बाल्य तुम्हें धन्य है। जाओ, तुम तपस्या करने चले जाओ। मेरे प्यारे !वो ही तपस्या का प्रसङ्ग आता है कि तपस्या किसे कहते हैं। मेरे पुत्रों !देखो ब्रह्मसूत्र को जानने का नाम ही तपस्या है। ब्रह्मसूत्र क्या है? जिसमें बेटा !ये ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। यह ब्रह्माण्ड जिसमें पिरोया है वही ब्रह्मसूत्र कहलाता है। मेरे पुत्रों !एक मण्डल दूसरे मण्डल में पिरोया हुआ है। एक प्राणी, प्राणी में पिरोया हुआ है। विचार, विचार में पिरोया हुआ है। दर्शन, दर्शन में पिरोया हुआ है। वेद-मन्त्र बेटा !वेद-मन्त्रों की झड़ियों में पिरोया रहता है।

मेरे पुत्रों !विचार आता रहता है। इस आभा को ले करके मेरे पुत्रों !माता ने कहा जाओ। बाल्य तुम तपस्या करना। तुम अपने प्राण सखा को जानने का प्रयास करो। और मन की और देखो विचारों की धारा में तुम परणित हो जाओ।

और मन की गति को जानो। परन्तु देखो जिससे जो मैंने उपदेश दिया है वह तुम्हारा देखो पोष्टिक बन करके वह तुम्हारे अन्तरात्मा में परणित होता रहे। तो मेरे पुत्रों !देखो, जब दिव्या ने इस प्रकार का उसे उपदेश दिया तो वह बाल्य बड़ा प्रसन्न हुआ। और प्रसन्नचित्त हो करके मेरे पुत्रों !वो भयङ्कर वन में चला गया।

अन्य पुत्रों को शिक्षा व तपस्या के लिए गमन

जब वनों में चला गया तो मेरे पुत्रों !देखो, कुछ समय के पश्चात् माता के गर्भस्थल में द्वितीय शिशु का जब प्रवेश हो गया तो बेटा !माता उसी प्रकार उसका एक कर्म था, कर्मबद्धता थी। वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती "शिशुणाम् ब्रह्मा ऋतम् देवत्वाम्, 'व्रतम देव ब्रह्मा देवो भवस्सुतम् "मेरे पुत्रों !देवो, माता इस प्रकार के वेद मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती और कहती "चन्द्रमो सम्भव प्रमाणम् ब्रहे सूर्याः द्यौ लोकाम् हिरण्यम् ब्रहाः'। हे बाल्य !तुम सत्यवादी बनो। और सत्यवादी देखो उसका द्यौ में वास होता है। और जो द्यौ में वास हो जाता है वही तो मुनिवरों !देखो दिव्यत्व में परणित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों !देखो, मैं तुम्हें विशेष विवेचना नहीं, केवल ये, क्या माता मदालसा का कितना ऊर्ध्वा में मानो विचार रहा है, दर्शनों में प्रवेश करती हुई दिव्या कहती है, हे बाल्य ! तुम्हारा मानवीय दर्शन, तुम आत्मा के समीप जाने का प्रयास करो। क्योंकि आत्मा एक ऐसी चेतना है, आत्मा ऐसा एक वृत्ति है जिसको जान करके मानो देखो तुम धन्य हो जाओगे।

मेरे पुत्रों !देखो, आत्मा के कारण ये शरीर चेतनित बना रहता है। आत्मा के कारण ही सर्वत्र विज्ञान इसके समीप रहता है। आत्मा के कारण ही इस ब्रह्माण्ड की माला बना करके बेटा !अपने में धारण कर लेता है।

मेरे पुत्रों !विचार आता रहता है इस प्राण को सखा बना करके, मेरे पुत्रों ! देखो, प्राण और अपान में प्राण को अपने में ग्रहण करने लगता है। मेरे पुत्रों ! देखो, बाल्य अमृताम्, ये तीन पुत्र इस प्रकार माता के गर्भ से जब जन्म लिया

तो वो तीनों ही ब्रह्मवेत्ता बन गए। और ब्रह्मवेत्ता बन करके भयङ्कर वन में चले गए। मेरे प्यारे !वो तपश्चर में प्रवेश कर गए। और तपस्या कहते ही इसे है, क्या मन प्राण और विचार को एक सूत्र में लाते हुए, इन्द्रियों के विषयों को जान करके, उनका साकल्य बना करके और जो अन्तर्हृदय में मुनिवरों !देखो यजमान याग करता है, देखो आत्म याग करता है। हृदयरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, उसे अग्नि में वो स्वाहा कह करके साकल्य मेरे पत्रों !प्रदान कर देता है। इन्द्रियों का साकल्य बेटा !रूप, रसः, गन्ध, स्पर्श और शब्दः, मेरे पुत्रों !देखो, ये अमृताम्, ये पञ्चम ब्रह्मा सुगन्धम् ब्रव्हे मुनिवरों !देखो, ये पञ्च वृत्तियों में देखो ये साकल्य बन जाता है। इसका हृदय में हृदय से हृदय में ही सिमट जाता है और वही मुनिवरों !देखो आध्यात्मिक याग करता है। जैसे भौतिक विज्ञानवेत्ता अथवा यजमान अपनी यज्ञशाला में, मेरे पुत्रों !देखो, अग्नि में अपने साकल्य को प्रदान कर देता है। और वह अग्नि उसे अपने में ग्रहण करती मानो देखो उसका विभाजन कर देती है। उसको सूक्ष्म रूप बना देती है। इसी प्रकार हृदय में ही मेरे पुत्रों !देखो शब्द के आने का ही रूप बना, जैसे रूप आता रहता है, शब्द है, गन्ध है, रस है और स्पर्श है। जब ये पञ्चीकरण का साकल्य बना करके योगेश्वर जब अपने अन्तर्हृदय में याग करता है तो बेटा !उसका विस्तृत रूप बन जाता है। और व्यष्टि और समष्टि का एक स्वरूप बन करके मेरे पुत्रों !देखो ब्रह्मवादी बन करके अपने में रत्त हो जाता है। "

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय ये, देखो माता मदालसा ने तीनों पुत्रों को ब्रह्मवेत्ता बना करके, ब्रह्म का उपदेश दे करके, बेटा !वह भयङ्कर वन में चले गए।

माता मदालसा से राजा की प्रार्थना

मेरे पुत्रों !देखो, जब माता मदालसा के चतुर्थ मानो देखो शिशु गर्भ में प्रवेश हुआ तो उस समय राजा ने ये प्रार्थना की, हे देवी ये राष्ट्र कैसे चलेगा? हमारी राष्ट्रीय परम्परा रही है, क्या देखो राष्ट्रीय राजा होना चाहिए। और तुम मानो

तुम्हारे से ब्रह्मवेत्ता तुम निर्माणित कर रही हो, मेरी इच्छा ये है कि एक राजा होना चाहिए। माता मदालसा ने कहा राजन्, मैंने देखो विद्यालय में तुमसे एक प्रतीज्ञा की थी आपसे। और ये कहा था कि मैं, जिस समय मेरे क्रियाकलापों का उल्लङ्घन कर दिया जाएगा उस समय मैं, मेरा वृत रूप बन जाएगा। हे देव, आप ये क्या उच्चारण करने लगे। मेरी प्रतिज्ञा भङ्ग क्यों कर रहे हैं। मेरी प्रतिज्ञा को नष्ट न कीजिए। राजा ने कहा, देवी !मेरी इच्छा तो ऐसी ही है, आगे तुम्हारी इच्छा है। मेरे पुत्रों !माता मदालसा ने कहा, तो मैं आगे गृह में प्रवेश नहीं करूँगी। मेरे पुत्रों !देखो, राजा ने वहाँ से अपने राष्ट्र को गमन किया। और माता मदालसा ने ये मानो उसे कोई विचार नहीं दिया। वह राष्ट्रीय आहार व्यवहारों में पनपता रहा। मेरे पुत्रों !गर्भ से पृथक् हो गया। तो उसको मुनिवरों !देखो, नाना सेविकाएँ मानो अपने आङ्गन में धारण करके उसे राष्ट्र की शिक्षा देते रहे।

माता मदालसा द्वारा शरीर त्याग

विचार आता रहता है मेरे पुत्रों !क्या माता मदालसा के वह "ब्रह्मणाम् ब्रहे ऋतम् देवत्वाम् लोकाम्"। मेरे पुत्रों !देखो रस्सुतम अब जब समय ब्रहा, वह बाल्य मेरे पुत्रों !देखो बारह वर्ष का हो गया। और बारह वर्ष का हो जाने के पश्चात्, माता मदालसा अपनी स्थली पर विद्यमान हो गयी। राजा को निमंत्रित किया। राजा भी विद्यमान हो गया और एक स्थली पर पुत्र है। उन्होंने कहा राजन्, वो मेरा समय आ गया है। मैं प्रतिज्ञाबद्ध हूँ। मैंने एक सङ्कल्प किया था आचार्य कुल में कि मेरा जब बाल्य बारह वर्ष का हो जाएगा मैं अपने शरीर को त्याग दूंगी। मेरे पुत्रों !राजा बड़े दुखित हुए। राजा ने कहा, हे दिव्या !हमारा क्या बनेगा? उन्होंने कहा प्रभु !मैं नहीं जानती, आपका क्या बनेगा। मुझे तो अपनी प्रतिज्ञाओं को विचार-विनिमय करना है। मानो देखो, मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो गया है जिस कर्तव्य के लिए मैं अपने जीवन में सदैव प्रयास करती रही हूँ जिसके लिए मैंने अध्ययन किया और गृह में प्रवेश हुई, वह मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो गया।

मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने बाल्य को, अपने पुत्र को एक वसीयत उन्होंने

नियुक्त की। और एक मानो देखो, व्रतम्, उन्होंने कहा कि हे पुत्र !ये संसार निस्सार है। ऐसी लेखनीबद्ध करके बेटा !देखो, बाल्य के कण्ठ में निहित कर देई। और उन्होंने गायत्री छन्दों का पठन-पाठन किया। वेद-मन्त्रों का अध्ययन किया। मेरे पुत्रों !देखो, प्राणायाम् करके उन्होंने अपने शरीर को त्याग दिया। और शरीर को त्यागने के पश्चात् अब्रहे उसका दाह हो गया। परन्तु राजा बड़े दुखित हुए। राजा ने भी अपने जेठे पुत्र, उसको राज दे करके और वह मुनिवरों !देखो, वह भी भयङ्कर वन में तपस्या के लिए चले गए।

गम्भीर अध्ययन की प्रेरणा

तो मेरे प्यारे !देखो, विचार-विनिमय क्या, विचार-विनिमय ये हमारा कि हम बेटा !अपनी बहुत ऊर्ध्वा में अपनी उड़ाने उड़ते रहें जिससे हमारा मानवीय जीवन एक महानता में परणित हो जाए। और अपने दायित्व को हम जानकारी में ला करके वैदिक साहित्य के ऊपर हमारा गम्भीरता से अध्ययन होना चाहिए। आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल ये, क्या मुनिवरों !देखो, हमारे यहाँ वह जो परमपिता परमात्मा, जो सृष्टि का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। जो हमारे अङ्ग-सङ्ग मानो सदैव निहित रहता है। हम उसकी प्रार्थना करते हुए अपने में ज्ञान को उपार्जन करते हुए ब्रह्मवेत्ता बन करके बेटा !देखो हम ब्रह्मनिष्ठ बन करके प्रभु की उपासना करने वाले बने।

हे ममत्व !को धारण करने वाली, हे माता !तेरे ऊपर कितना दायित्व है। तू कितना मानो देखो अपने में विचारवान बन सकती है और उस विचार को दे करके तू ब्रह्मनिष्ठ बना करके देखो अपने जीवन को सार्थक बना सकती है।

ये है बेटा !आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते बेटा !इस सागर से पार हो जाएँ। ऐसा हमारा सदैव मन्तव्य रहता है। इसी विचार के साथ मुनिवरो !देखो आज का ये वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य

उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए, ब्रह्मज्ञान में मानो आत्मतत्त्व के ऊपर गम्भीरता से मनन करने वाले बने। ये है बेटा !आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो हम शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः कि माता जो अपने पुत्र को और बाल्यों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करती हैं तो बेटा !गृह स्वर्ग कहलाता है। वह गृह ब्रह्मपुरी कहलाती है, वह गृह इन्द्रपुरी कहलाती है। ये है बेटा !आज का वाक्। वह परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी है, जिसका ये जगत है, जो जगत का नियन्ता है, निर्माण करता है। हम उसकी उपासना करते रहें। ये है बेटा !आज का वाक् । अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज के वेद-मन्त्र ओ३म् ब्रह्मः कृतम् ओ३म् देवाः माः वर्णाश्रमः रथम् आपा रहम् । ओ३म् गायन्तवा रथम् आप्याम् लोकाः याश्रमाः रथम आपाः।। ओ३म् यश्शचरे रथाः माम् रेवहम् आपाः ।। महर्षि महानन्द मुनि जी-अच्छा भगवन् । पूज्यपाद-गुरुदेव-आनन्द रहो। दिनांक :13 जनवरी, 1990 समय :रात्रि 8 बजे स्थान :श्री हरिसिंह जी महावीर एन्क्लेव पालम, दिल्ली

७ 25 01 1990 आत्म चिन्तन

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं अोर उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है ,क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं ,परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमादबद्ध कर सके, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा में आने वाले नही है। वह सीमा से रहित है ,और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। हमारे यहां सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं ,परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा हुआ है ,जिन्होंने आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान के ऊपर अपना अन्वेषण किया ,परन्तु कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए हैं, जिन्होंने परमाणुवाद को जानने में अपना गौरव स्वीकार किया ,परन्तु कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए ,जो मानो एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का दर्शन करते रहे हैं। मेरे प्यारे !एक परमाणु का विभाजन किया और उसमें इतना ब्रह्माण्ड निहित होता है ,कि उसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण वह प्रायः अपने में दृष्टिपात करते रहे हैं। तो आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में तो ले जाऊंगा ,नहीं केवल विचार यह है कि हमारे यहां कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए हैं ,जिन्होंने मुनिवरों !आध्यात्मिकवाद को और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में महान कहलाए गएं। तो जब हम इन वाक्यों के ऊपर विचार विनिमय करते हैं ,तो परमात्मा का यह परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी जगत मेरे प्यारे ! हमारे समीप आता रहता है ,और विचारते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा इतना अनूठा है ,उसका ज्ञान और विज्ञान भी इतना अनूठा है। परन्तु उसको हम

उपास्य देव अपना स्वीकार करते हुए मानो अपने में उसकी प्रतिभा का चिन्तन और मनन करते रहें। जिससे हमारा अन्तर्हृदय आन्तरिक जगत पवित्र बनता हुआ ,और इस सागर से हम पार हो जाएं। जो मान अपमान वाला सागर है , इस सागर से प्रत्येक प्राणी बेटा !अपने को दूरी ले जाना चाहता है। मानो देखो, इसी के ऊपर अन्वेषण और विचार विनिमय करता रहा है ,एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो जाता है। सूर्य मानो अस्ताचल को चला जाता है ,रात्रि छा जाती है , परन्तु रात्रि के गर्भ में प्रवेश करके वह अपने में ध्वनित होता रहता है ,और ध्वनियों को अपने में धारण करता हुआ मेरे प्यारे !देखो, परमात्मा की उस अनन्तमयी ध्वनि को अपनी ध्वनि से मुनिवरों !देखो, उसका समन्वय करने लगता है। तो हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा !जहां भौतिक विज्ञान को जानने का प्रयास किया ,वहां आध्यात्मिक विज्ञान में भी उन्होंने प्रवेश किया। क्योंकि जब तक आध्यात्मिक और भौतिकवाद का समन्वय नही हो जाता। जब तक मुनिवरों ! देखो, हमें आनन्द की अनुभूति नही होती ,और वह हम केवल एक विज्ञान को ले करके गमन करते हैं। भौतिक विज्ञान को अणु और परमाणु को ले करके जब हम गमन करते हैं ,तो मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड और अणु में हम प्रवेश तो हो जाते है। परन्तु अपंग बन जाते हैं ,परन्तु अपंग जब तक नही जब तक रहते हैं , जब तक हमें आध्यात्मिक विज्ञान में हम जब तक प्रवेश नही हो जाते। आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान का दोनों का एक दोनों एक मनके एक सूत्र में नही पिरोए जाते। जब तक मानव बेटा !अपंग बना ही रहता है। तो आज मैं मुनिवरों !देखो, इस सम्बन्ध में विशेषता नही केवल यह कि आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गा रहा है। अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। उसका गुणां ब्रह्मा गुणाधानम् अपने में हम धारयामि बने रहें ,तो मेरे पुत्रों !आज का वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी विज्ञानवेत्ता है। जो विज्ञानमयी स्वरूप है। वेत्ता भी नही ,क्योंकि विज्ञान उसका आयतन है ,उसका गृह है ,उसका सदन है ,और वह उसी में वास

कर रहा है। वह विज्ञान से पृथक नही हो सकता। इसीलिए हम देखो, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव अपने में धारयामि बने रहें। और धारणा बनायें रहें कि हम परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत को अपने में पान करना चाहते हैं। अपने में धारणा करना चाहते हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा का सदैव गुणगान गाते रहें ,और उसके अनन्तमयी स्रोत्रों को अपने में धारणा करते रहें ,क्योंकि संसार में जितना भी मानव क्रियाकलाप कर रहा है ,जितना भी मानव अपने में अपनेपन को अपने में धारणा कर रहा है ,और वह जितने भी अनुष्ठान करता है ,याग करता है ,ध्यानावस्थित हो जाता है , प्राणायाम करता है ,रेचक और कुम्भक और पूरक में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे !वह इसीलिए कि हमने परमानन्द को प्राप्त करने लगे प्रत्येक मानव की परम्परागतों से ही, एक धारणा रही है। कि मैं आनन्द को प्राप्त करने जाऊं ,और आनन्द से मेरा विच्छेद हो गया है ,उस आनन्द को मैं पुनः से धारणा करने लगूं। तो आओ मेरे पुत्रों !आज तुम्हें मानो विशेषता में तो नही ले जाऊंगा आज का एक वेदमन्त्र आ रहा था यज्ञं भवा ब्रहे कृत्यं दिव्यं ब्रह्मा वरणासुतं ब्रह्मा मेरे प्यारे ! आज तुम्हे व्याख्या नही कर पाऊंगा ,मैं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ ,और वह परिचय देना हमारा कर्तव्य है। मेरे पुत्रों !आज मैं आज का हमारा वेदमन्त्र और वेदों की प्रतिभा हमें बहुत ऊर्ध्वा में गमन करा रही है। परन्तु आज का वेद का मन्त्र याग के ऊपर बड़ा बल देता चला जाता है। कई समय से बेटा ! आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों की विवेचना हो रही थी। आज भी वेदों में इस प्रकार के हमारे पठन पाठन में मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा था कि हम आध्यात्मिक और भौतिकवाद में पुनः से प्रवेश कर जाएं। परन्तु देखो, इसका कोई मापदण्ड नही हैं कि बेटा !कितना आध्यात्मिकवाद करता हुआ बेटा !उसमें मानव मौन हो जाता है। परन्तु विचार और उसकी प्रतिभा समाप्त नही होती ,इसी प्रकार एक इन्द्रिय के ऊपर अन्वेषण करते रहो ,विचार विनिमय करते रहो ,बेटा ! अन्त में मौन हो जाओगे ,और मौन हो करके इन्द्रिय के विषय से दूरी चले

जाओगे। मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में भी नही आज मैं तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ ,कि हमारे ऋषि मुनियों ने बेटा !अपने यहां कितना अन्वेषण किया है ,उन्होंने आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान को मानो एक सूत्र में लाने का उन्होंने प्रयास किया है।

आओ मेरे पुत्रों !देखो, संकल्प ब्रव्हा संकल्प में सर्वत्र जगत उन्होंने स्वीकार किया है ,परन्तु देखो, उन्होंने एक एक वस्तु के ऊपर कितना विश्लेषण किया है। विश्लेषण में भी हम करने लगें तो समय की आवश्यकता होती है ,आज तो केवल तुम्हें मैं परिचय कराने जाऊंगा। उन वाक्यों को ,आओ आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ ,जहां मुनिवरों !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने यहां प्रातःकालीन विद्यालय में याग कर रहे थे , ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान है। बेटा !याग जैसे ही सम्पन्न हुआ और याग के सम्पन्न होने के पश्चात मुनिवरों !देखो, ब्रह्मचारी उपस्थित हो गएं ब्रह्मचारियों ने कहा आपसे हम कुछ प्रश्न करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बोलो तुम क्या चाहते हो मेरे प्यारे !देखो, उन ब्रह्मचारियों में एक यज्ञमान बना एक मानो प्रश्नकर्त्ता बन गया जिज्ञासु ने कहा हे प्रभु !यह यज्ञमान उपस्थित हैं ,और यह यज्ञमान याग करना चाहते हैं तो कितने होता होने चाहिए। इनके याग में मेरे पुत्रों !महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले क्या देखो, हमारे यहां तो वेदमन्त्रों में ऐसा आया है कि यज्ञमान यदि याग करना चाहता है, तो उसके चौबीस होता होने चाहिए ?और चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। यागां भवतं ब्रह्मे क्योंकि यह जो परमपिता परमात्मा का जो यह ब्रह्माण्ड है ,यह भी एक प्रकार की यज्ञशाला है , इसमें मानो देखो, आत्मा यज्ञमान है ,पञ्च महाभूत बेटा !देखो, उद्गाता बने हुए हैं , और परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा बन करके उनका संचालन कर रहा है। इसी प्रकार यह जो ब्रह्मणे व्रतं यह जो यज्ञमान याग करना चाहता है ,चौबीस होता होने चाहिएं। इसी प्रकार परमात्मा के इस संसार रूपी यज्ञशाला में भी चौबीस होता कहलाते हैं। तो मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी ने

कहा हे प्रभु !यज्ञमान कहता है क्या भगवन !यज्ञमान याग करना चाहता है तो कितने होता होने चाहिएं ?उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है तो सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे !देखो, पुनः जब यह प्रश्न किया क्या महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होते होने चाहिए ?तो उन्होंने कहा कि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। पुनः जब ब्रह्मचारी ने यह प्रश्न किया जिज्ञासा से क्या हे प्रभु !यज्ञमान कहता है कि मैं याग करना चाहता हूँ ,उन्होंने कहा नौ होताओं के द्वारा तुम्हारा याग सम्पन्न होना चाहिए। मेरे पुत्रों !देखो, पुनः जब यह प्रश्न किया क्या यज्ञमान याग करना चाहता है। प्रभु कितने होता होने चाहिएं ,उन्होंने कहा सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है ,कितने होता होने चाहिए ?उन्होंने कहा पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए पुनः जब यह प्रश्न किया कि यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता उन्होंने कहा तीन होताओं के द्वारा ?जब पुनः प्रश्न किया तो बेटा !दो रह गएं दो से असुतं पुनः प्रश्न करने के पश्चात बेटा !एक होता रह गया तो विचार आता रहता है बेटा !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस संसार को मापने का प्रयास किया , आध्यात्मिक और भौतिकवाद के इस संसार से मापने का प्रयास किया मेरे प्यारे ! देखो, अब ब्रह्मचारी कहता है। हे प्रभु !यह जो चौबीस होता है ,वह कौन से हैं जिनके द्वारा यज्ञमान याग करना चाहता है ,मेरे प्यारे !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उस समय मौन हो गएं और मौन हो करके ब्रह्मचारी के प्रश्नों का उत्तर देने लगे। उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है परन्तु यागां भवतं ब्रह्मणे कृतं दिव्यं प्रव्हा दिव्यं लोकाः क्या यज्ञमान जब याग करना चाहता है मानव कितने होता जानना चाहते हो मानो चौबीस होता कहलाते हैं। जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया यज्ञशाला का सृजन किया तो तो यह मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया यहां बेटा !ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्र शैली रही है ,चिन्तन और मनन करने की आध्यात्मिकवाद को और

भौतिकवाद को दोनों को एक ही सूत्र में लाने का बेटा !ऋषि ने प्रयास किया है , वेदां ब्रह्मे वेदमन्त्रों के आधार पर ऋषि कहता है ,क्या चौबीस होता अमृतं देखो, दस इन्द्रियां हैं और दस प्राण है ओर पञ्च महाभूत हैं मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मणे कृतं देवत्वां मुनिवरों !देखो, उन पञ्च महाभूतों में वह चित्त का मण्डल भी आ जाता है तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह चतुष अन्तःकरण कहलाया गया है ,और उसमें दस प्राण दस इन्द्रिया तो मुनिवरों !देखो, यह चौबीस होताओं की यज्ञशाला है बेटा !जिसमें यज्ञमान याग कर रहा है। प्राणाय स्वाहाः ,अपानाय स्वाहाः ,व्यानाय मुनिवरों !देखो, प्राणों से याग कर रहा है और वह अपने में गतिवान हो रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जानना चाहता है। मेरे पुत्रों !देखो, वह मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह अन्तःकरण कहलाता है। इसमें बेटा !जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, इसको मनं ब्रहे देखो, मन और मन की ऊर्ध्व धारा मुनिवरों !देखो, बुद्धि और बुद्धि से मन बुद्धि चित्त और अहंकार यह चतुष अन्तःकरण बेटा !बुद्धि के नाना प्रकार हैं। मनस्तव के नाना प्रकार है व्याख्याकार तो बेटा !इसके ऊपर नाना पोथियों का निर्माण कर देता है ,परन्तु देखो, संक्षिप्त परिचय यह है क्या मुनिवरों ! देखो, बुद्धि के चार प्रकार माने गएं हैं। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती हैं। यह चार प्रकार की बुद्धियां हैं ,और भी नाना बुद्धियां मानी गई हैं। जो हम सुनीता कहते हैं ,गो कहते हैं ,धेनु कहते हैं ,रेणुका कहते हैं ,सम्भूति कहते है। बुद्धि के नाना प्रकार माने गएं हैं बेटा !इनके नाना पर्यायवाची शब्द आते रहते हैं। तो विचार आता रहता है मन के भी नाना प्रकार के मानो पर्यायवाची हैं। इसको मन भी कहते है। मनस्तव भी कहते हैं ,वृषभ भी कहते हैं , वृचि भी कहते हैं ,इसको भी नाना प्रकार से माना गया है। परन्तु मैं इनकी विवेचना तो तुम्हें नही दे सकूंगा, क्योंकि मैं व्याख्यान देने नही आया हूँ। तुम्हें इनका परिचय देने के लिए आया हूँ ,मेरे पुत्रों !देखो, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार नाना प्रकार माने गएं हैं ,बेटा !देखो, दस प्राण हैं देखो, इनमें प्राण, अपान,

उदान, समान और व्यान मेरे पुत्रों !देखो, और पांच उपप्राण हैं ,नाग, देवदत, धनंजय कुरू और कृकल यह दस प्राण कहलाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, इन दसों प्राणों का जो समावेश जानता है ,दस प्राणों की प्रतिभा को जानता है ,उसका मानो शरीर और ब्रह्माण्ड से क्या क्या समन्वय रहता है। और प्राण को हम प्राण कौन से प्राण को हम अपने में धारण करके चित्त के मण्डल को जान सकते हैं। बेटा !मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है ,वायु गोत्र में बेटा !एक सुनीता नाम के ऋषि हुए उन्होंने बेटा !पिच्चासी वर्षों तक बेटा !मौन रह करके और वायु का सेवन करके अन्न जल का सेवन करके समय समय पर मेरे प्यारे !देखो, मौन रह करके कोई वाक् भी उच्चारण नही किया। तो उन्होंने बेटा !अपने पिच्चासी जन्मों के संस्कारों को जान सकें। क्या एक सौ पिच्चासी जन्मों में मेरी क्या क्या गतियां रही हैं। उनको जान गएं। आगे के जीवनों को भी बेटा !देखो, योगेश्वर जान सकता है। आज बेटा !मैं इस सम्बन्ध में या प्राण का सम्बन्ध में कुछ विशेषता नही केवल यह क्या मुनिवरों !देखो, इन प्राणों को जाना जाएं। जैसे मैंने पुरातन काल में कहा है ,क्या माता जब अपनी गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती है तो बेटा !देखो, मैं यह कहा करता हूँ ,पुरातन काल में भी मेरी पुत्री इतना मानो विद्यालय में प्राणायाम की शिक्षा का अध्ययन होता रहा है। प्राण को अपान में अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान में उदान में बेटा !जब सिमट लिया जाता है। तो उस समय मेरी प्यारी माता अपने गर्भ के शिशु से वार्त्ता प्रगट कर लेती है। मेरे प्यारे !इसी प्रकार मानव जब इस प्रकार के प्राणायाम करने लगता है। तो विमुख हो करके वह आन्तरिक जगत में बेटा !देखो, बाह्य जगत से अन्तर्मुखी हो करके मेरे प्यारे !देखो, अपने में अपने को ले जाता है बाह्य जगत से वह सिमट जाता है। तो मेरे पुत्रों !देखो, ये प्राण को जानना चाहिए ,मानो देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं ,पांच कर्मेन्द्रिया हैं ,इन इन्द्रियों के ऊपर अन्वेषण होना चाहिए। मेरे पुत्रों !देखो, जब ऋषि ने यह कहा कि क्या यह मानो चौबीस खम्बों वाला ब्रह्माण्ड चौबीस खम्बों वाला यह मानव शरीर है ,

ओर चौबीस खम्बों की बेटा !यह सुन्दर यज्ञशाला है ,इसमें यज्ञमान याग कर रहा है ,इसमें बेटा !यज्ञमान स्वाहा कह करके अपनी वाणी को अपने चित्रों को और अपने क्रियाकलापों को बेटा !वह द्यौ में प्रवेश करा देता है। बेटा !द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं। वही समय समय पर बेटा चित्त मण्डल में प्रवेश होते रहते हैं।

तो आओ बेटा !मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नही केवल विचार विनिमय यही है कि हम अपने में अपनेपन को इतना जानने लगें क्या अपने में ही मुनिवरों ! देखो, सिमट जाएं ,और अपने को ही देखो, बाह्य जगत भी अपने में ही सिमट जाएं ,हम उसमें सिमट जाएं ,वह हममें सिमट जाएं ,तो बेटा !एक आनन्द की अनुभूति होने लगती है। तो आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नही , केवल विचार विनिमय यह कि ऋषि कहता है कि वेद का आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारियों !हे याज्ञिक पुरूषों !तो मानो तुम यह चौबीस होताओं का याग प्रारम्भ करो ,जिससे तुम्हारी प्रत्येक इन्द्रियां पवित्र बन जाएं। और तुम ब्रह्माण्ड में ब्रह्मण्डित हो जाओ। मेरे पुत्रों !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ,ये वाक् कहा जब ये कहा तो उन्होंने कहा हे भगवन !इन वाक्यों को तो हम पूर्व ही जानते रहे हैं ,हम ये जानना चाहते हैं प्रभु !सत्रह होता के द्वारा जो यज्ञमान याग करता है , वह सत्रह होता कौन से हैं ?उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों !ये जो मानव का स्थूल जगत है ,स्थूल जो शरीर है ,इसमें चौबीस होता हैं ,जब इसको त्याग देता है तो मानो देखो, सूक्ष्म शरीर रह जाता है और वह सूक्ष्म शरीर में मुनिवरों !देखो, दस प्राण हैं ,दस प्राण, मन, बुद्धि और मुनिवरों !देखो, यह प्रकृति की अमृतां यह देखो, पञ्च वासनायें रह जाती हैं। तो मेरे पुत्रों !देखो, यह सत्रह होता सत्रह अमृतं सत्रह तत्त्वों का यह शरीर कहलाता है तो आओ मेरे पुत्रों !देखो, सत्रहं ब्रह्मा ग्रणां लोकं कृताः वेदं ब्रह्मा कृतं लोकं ब्रहे कृताः यह सत्रह तत्त्वों का शरीर माना गया है। मेरे पुत्रों !देखो, जो मानव याज्ञिक बना हुआ है ,और वह याग करना चाहता है ,यह आध्यात्मिक याग बन जाता है। इसको आध्यात्मिकवाद कहते हैं। मेरे पुत्रों !इसके अमृतियों में एक शरीर और है जिसको हमारे यहां

कारण लिंग के रूप में वर्णित किया गया है। वह कारण शरीर कहलाता है। जिसमें बेटा !ज्ञान और प्रयत्न रह जाता है। प्रकृति का मण्डल तो हमारे यहां ज्ञान का माध्यम है ,और क्रिया का माध्यम बेटा !प्राण जिसको हम प्रयत्न के रूप में वर्णित करते रहते हैं। तो मेरे पुत्रों !आज मैं तुम्हें दर्शनों में ले जा रहा हूँ ,यह मानवीय दर्शन है ,तो वेद का ऋषि कहता है क्या यह जो सत्रह होताओं का जो मानो देखो, यज्ञशाला में याग करने वाल होताजन हैं ,यह सत्रह होताओं को जानने वाला यह पञ्च महाभूतों को और मुनिवरों !देखो, दस प्राण मन और बुद्धि को इन सर्वत्र को जानता हुआ मुनिवरों !देखो, वह सत्रह होताओं का याग यज्ञमान करने वाला जब बन जाता है। तो बेटा !उसे आनन्द की अनुभूति होने लगती है। वह आनन्द के स्रोत्रों को जानने लगता है। तो मुनिवरों !देखो, वह कारण शरीर में प्रवेश हो जाता है। तो मुनिवरों !देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है जिसे वह अपने में अपनापन ही दृष्टिपात आता है।

तो आओ मेरे पुत्रों !ऋषि मुनियों की यह शैली रही है ,विचार विनिमय करने की ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में तो मुनिवरों !देखो, यह दोनों प्रकार की शैली हमारे ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्रतम रही है। आदि ऋषियों ने इसके ऊपर बड़ी टिप्पणियां और विचार विनिमय दिए हैं। और जिज्ञासुओं ने अपनी जिज्ञासाएं प्रगट की हैं। तो मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्मचारियों ने पुनः जब प्रश्न किया कि महाराज !ग्यारह होता कौन से हैं ?जिनके द्वारा याग करता है यज्ञमान ,उन्होंने कहा ग्यारह होता दस इन्द्रियां और ग्यारहवां मन कहलाता है। जब भी यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो तो वह मानो देखो, दसों इन्द्रियों को और देखो, यह ग्यारहवां जो मन है इससे कटिबद्ध रहते हैं। इनको एकाग्र करता हुआ जब वह याग प्रारम्भ करता है। तो उसका बेटा !देखो, बाह्य याग और आन्तरिक दोनों ही पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं। वह पवित्रतम बन जाते हैं। तो दोनों प्रकार के यागों में मानव को संलग्न रहना चाहिए। मेरे पुत्रों ! देखो, पांच ज्ञानेन्द्रिया हैं ,पांच कर्मेन्द्रियां हैं ,मेरे पुत्रों !देखो, ज्ञानेन्द्रियों को जो

साकल्य बनाना जानता है वह दोनों प्रकार के याग को जानता है और जो मुनिवरों !देखो, यह अमृतं अव्रतं जो कर्मेन्द्रियां हैं जो इनको जानता है वह बाह्य जगत को जानता है ,मेरे पुत्रों !देखो, दोनों इन्द्रियों के ऊपर हमें अन्वेषण करना चाहिए। विचार विनिमय करना चाहिए। बेटा !बाह्य जगत प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित रहता है। देखो, पांच कर्मेन्दियों में और जितना भी यह परमाणुवाद है , अणुवाद है ,विज्ञानवाद है ,प्रकृतिवाद है ,ब्रह्मचरिष्यामिवाद है ,बेटा !ये सर्वत्र मानो देखो, ज्ञानेन्द्रियों में समाहित रहता है। मेरे प्यारे !ज्ञानेन्द्रियों के विषयों को जानता जानता मानव बहुत दूरी चला जाता विचारता रहता है। अन्त में मौन हो जाता है। सिमट करके हृदय में आ जाता है। प्रत्येक इन्द्रियों का विषय जब हृदय में सिमट जाता है। तो मुनिवरों !देखो, हृदय अगम्यमयी बन जाता है। तो पवित्रमयी बन जाता है।

तो आओ मुनिवरों !देखो, वेद का ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों !देखो, दस इन्द्रियां हैं ,ग्यारहवां मन है ,मन से यह इन्द्रियों का विषय कटिबद्ध रहता है। क्योंकि यह जो मन है यह प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु माना गया है। क्योंकि हमारे जब भी ब्रह्मचरिष्यामि की विवेचना हुई तो ब्रह्म और चरी दो प्रकार के शब्द बेटा !मानव के समीप आए हैं। वह दोनों शब्द हैं ब्रह्म और चरी ,ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को मेरे पुत्रों !देखो, चरी और ब्रह्म का जब दोनों का समावेश होता है ,तो यह जगत रचना में आ जाता है। यह मानो देखो, उग्रता जब उत्पन्न हो जाती है तो उग्रता ने उग्रता में प्रदान कर दिया यह कैसा अनुपम जगत है ,पुत्रों !यह कैसा अदभुत है ,क्या मानो देखो, परमात्मा उग्रवादी बना ,प्रकृति से सम्मिलान हुआ रचना हो गई और वही मुनिवरों !देखो, उग्रवाद को समर्पित करके अपने में सिमट गई। तो विचार आता रहता है उग्र में उग्रवाद को जन्म दे करके उसी को मानो उसी को वह सिमट जाता है। उसी में ओत प्रोत हो जाता है। तो बेटा !देखो, यह कैसा अदभुत जगत है ,आज मैं प्रभु की रचना के ऊपर विचार विनिमय हम न करते हुए विचार

केवल यह कि मन प्रकृति का सूत्मतम तन्तु है। वह देखो, ब्रहे कृतं कहलाता है , मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्म और चरी अपने में जब धारयामि बनता है। तो ब्रह्म और चरी को जानता है ,ब्रह्म कहते हैं ,परमपिता परमात्मा को और चरी कहते है। प्रकृति को जब ब्रह्मचारी दोनों का मन्थन करता है। तो बेटा !वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। वह ब्रह्म सूत्र को अपने में और अपने को ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है। तो विचार आता रहता है बेटा !वह याग कर रहा है पांच ज्ञानेन्द्रियां देखो, दस इन्द्रियों के द्वारा ग्यारहवां जो मन है ,यह होता कहलाते हैं। बेटा !देखो, इनमें वह सिमट जाता है। अपने में धारयामि बन जाता है।

तो विचार आता रहता है बेटा !ऋषि ने कहा प्रभु !यह मनस्तव की धारा उन्होंने कहा यह जो मनस्तव है ,यह प्राण की गति से स्थिर रहता है ,यदि मानो इसमें गति नही दी जाएगी ,यह प्राण की गति नही होगी ,तो न तो मन ही गतिवान हो सकेगा। और न इन्द्रियां ही गतिवान हो सकेंगी तो इसीलिए मानो देखो, गति देने वाला प्राण है ,और यह प्राण मानो देखो, आत्मा के सन्निधान मात्र से देखो, उसमें ज्ञान और प्रयत्न की त्तमता हो जाती है ,दोनों का एक कृतियों में रत्त हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों !देखो, वेद का ऋषि आगे कहता है सम्भव ब्रहे यशचनं ब्रह्मा लोकां हिरण्यं रथा मेरे प्यारे !देखो, वह जो हिरण्य है वह रथ ब्रहा मेरे पुत्रों !देखो, संसार को जो रथी कहलाता है ,मानो उसको जो गमन करा रहा है ,गति दे रहा है ,वह संसार स्वतः अपने में गतिवान हो रहा है।

तो आओ मेरे पुत्रों !देखो, वेद का ऋषि क्या कहता है ब्रह्मचारियों को हे ब्रह्मचारियों !देखो, दस इन्द्रिय और ग्यारहवां मन एक याज्ञिक यज्ञमान याग करता है ,तो उसका सफलता को प्राप्त हो जाता है ,यदि देखो, इन्द्रियां और मन कहीं है। तो वह याग सम्पन्न उसका न हो सकेगा। तो इसीलिए उन्होंने कहा यह ग्यारह होताओं के द्वारा यज्ञमान को याग करना चाहिए। मेरे पुत्रों !ब्रह्मचारियों ने कहा हे प्रभु !आप ने नौ होताओं से कहा था वह नौ होता कौन से हैं ?उन्होंने कहा नौ होता वह कहलाते हैं ,हमारा जब परमपिता परमात्मा ने यज्ञशाला का

निर्माण किया तो मानो इसमें नौ द्वार उस प्रभु ने निर्धारित किए हैं ,और नौ द्वारों को एकाग्र करता है ,जब याज्ञिक याग करता है ,तो नौ जो देवता विद्यमान है। प्रत्येक द्वार पर नौ ऋषि विद्यमान हैं। उन देवताओं की प्रतिभा के आश्रित हो करके बेटा !जब वह आहुति देता है ,स्वाहाः करता है ,यज्ञमान याग करता है तो बेटा !अपने में सफलता को प्राप्त हो जाता है।

आओ मेरे प्यारे !मैं विवेचना नही देने आया हूँ ,केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ ,इनकी विवेचना यदि मैं देने लगूंगा तो बेटा !बहुत समय की आवश्यकता है ,विचार केवल यह कि नौ द्वारों का उन्होंने कुछ वर्णन किया उन्होंने कहा कि नौ द्वारों को एकाग्र करो मानो देखो, उसी से यज्ञमान को याग करना चाहिए ,नौ द्वार उसके अपने कटिबद्ध रहने चाहिएं। मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु !यह वाक् तो हमे मेरी माता भी वर्णन कराती रही है , हम यह जानना चाहते हैं कि आपने सप्त होता कहा था ,उन्होंने कहा अमृतं सात होता ओ३म् के द्वारा याग होता है ,मेरे पुत्रों !देखो, अमृते देखो, कस्तप्रहा मानो देखो, यह नौ द्वार कहलाते हैं नौ होता कहलाते हैं। बेटा !जो कण्ठ के ऊपरले भाग में रहते हैं। यह नौ द्वार है। नौ होता है। इनके द्वारा ही यज्ञमान याग करता है। क्योंकि जो इसके नीचे का भाग है ,जब यह सप्त होता एकाग्र हो जाते हैं ,तो मानो देखो, निचला भाग उसका शून्यवत हो जाता है। अप्रति हो जाता है। तो मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि कहता है सम्भव ब्रहे कृतं क्या मानो देखो, सप्त होताओं के द्वारा याज्ञिक याग करने वाला बने मेरे पुत्रों !यज्ञमान की यज्ञशाला में सात होता हों ,और वह होता जितेन्द्रिय और इन्द्रियों को मानो अपने में वशीभूत करने वाले और मानो देखो, सप्त होता बन करके देखो, बाह्य और आन्तरिक जगत में दोनों में यही चिन्तन मनन करता रहे। याग करता रहे ,तो मेरे पुत्रों !देखो, वेद के ऋषि ने जब यह वर्णन किया तो ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु !आपने पञ्च होता का वर्णन किया था उन्होंने कहा पञ्च होता मानो देखो, यह पञ्चम् ब्रव्हा कृतहोतप्रव्हा वेद का वाक् कहता है क्या यह पञ्च होता कौन से हैं ?बेटा !देखो, गुरूतव ,

तरलतव ,तेजोमयी और गति और मुनिवरों !देखो, जिसमें वह भ्रमरा करता है , प्राणी तो यह मानो देखो, पञ्च होता कहलाते हैं। पाच इन्द्रियां हैं इसी प्रकार कहलाई जाती है जिनका इनसे सबसे समन्वय रहता है। मेरे पुत्रों !देखो, जैसे नेत्रों का देवता अग्नि है ,और मुनिवरों !देखो, अमृतं ब्रहे रसों का देवता रस स्वादन ब्रहे देवतं देखो, आपो है। मेरे पुत्रों !देखो, गुरूतव मानो देखो, पृथ्वी की आभा कहलाती है। इसी प्रकार जो गति हो रही है। वह तेजोमयी इतना वह अग्नि का ब्रहे है ,और मुनिवरों !देखो, गति वायु में उसमें भ्रमरा कर रहे हैं ,इसी प्रकार बेटा !सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक जितने भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं ,वह पांच प्रकार की गतियां पर निर्धारित विज्ञान रहा है। और तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। मेरे प्यारे !देखो, गुरूतव, तरलतव, और तेजोमयी मुनिवरों !यह तीन परमाणु हैं। और गति देने वाली परमाणुओं को वायु है ,और जिसमें वह गतिवान हो रहे हैं उसको अन्तरिक्ष कहते हैं। उसे अवकाश कहा जाता है। तो मेरे पुत्रों !देखो, यह विज्ञान अपनी आभा में गतिवान हो रहा है , और पांच प्रकार की गति हैं ,मुनिवरों !इस प्रकृति की मुनिवरों !देखो, सबसे प्रथम प्रसारण ध्रुवा, ऊर्ध्वा, और मुनिवरों !देखो, आंकुचन और कृति कहलाती है। तो मानो यह पञ्च गतियां मानी गई है। जिसको बेटा !हमारे यहां प्रसारण और गति में परणित कर दिया जाता है। और उसी को ध्रुवा और ऊर्ध्वा में ओर उसी को मुनिवरों !आंकुचन शक्ति ला करके बेटा !देखो, विज्ञान अपनी आभा में गमन करता रहता है ,वैज्ञानिक अपनी अपनी प्रतिभा में प्रतिभाषित होते रहे हैं। तो बेटा !देखो, यह पांच गतियां हैं। ओर तीन परमाणु हैं ,और मुनिवरों !देखो, वायु इनको गति दे रहा है। सम्भवं ब्रह्मा कृतं मेरे पुत्रों !देखो, यह गतिवान हो रहा है , जगत अपने में गतिवान होता हुआ दृष्टिपात आ रहा है। जब मेरे पुत्रों !देखो, विज्ञान अपने कक्ष में गमन करता है। तो मेरे प्यारे !इस ब्रह्माण्ड को माप देता है। पांचों में ही ओर देखो, परमाणुवाद को मापने लगता है। तो तीन परमाणुओं को जान करके उनका मिलान करता हुआ नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण

करता रहा है।

तो आओ मेरे पुत्रों !मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ ,केवल यह क्या यज्ञमान जब याग करता है ,तो बेटा ! उसके पांच होता होने चाहिएं। मानो देखो, उन पांचों होताओं के द्वारा जो यज्ञमान याग करता है ,वह धन्य हो जाता है। वह इस ब्रह्माण्ड को अपने में मापने लगता है। मेरे पुत्रों !यह बाह्य जगत और आन्तरिक जगत में दोनों में प्रवेश कर जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, जिज्ञासुओं ने कहा हे भगवन !यज्ञमान ने यह कहा है कि आप ने तीन होताओं का नामोकरण भी तो किया है ,उन्होंने कहा तीन होता रजोगुण ओर तमोगुण और सतोगुण कहलाते हैं। मानो देखो, सतोगुण जितना भी पालन करने का जितना भी क्रियाकलाप है ,संसार में वह सतोगुण से होता है ,मानो इसीलिए परमपिता परमात्मा को विष्णु कहते हैं। क्योंकि विष्णु पालन करने वाला है ,और पालना करने वालों में बेटा !देखो, परमपिता परमात्मा मेरी प्यारी माता आत्मा सूर्य नाना रूप है ,बेटा !जो पालन कर रहा है मानो देखो, जो पालना करता है ,उसी का नाम विष्णु हैं। उसी का नाम मेरे पुत्रों !देखो, सतोगुण में माना गया है। जितना भी पालन होता है ,वह सब सतोगुण के रूपों में ही पालन होता रहता है। कोई भी प्राणी हो बेटा !देखो, चाहे वह स्थावर सृष्टि हो मानो जंगम हो मुनिवरों !देखो, अण्डज हो कोई भी प्रकार की सृष्टि हो सर्वत्रता में बेटा !तीनों गुण प्राप्त होते रहते हैं ,मेरे पुत्रों !देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण यह तीनों गुणों में मानो सतोगुण वशिष्ठ माना गया है। मेरे पुत्रों !देखो, तमोगुणं ब्रह्मा और दूसरा जो गुण है ,वह रजोगुण है ,जिसमें शासन होता है ,उस शासन में भी पालना की मानो देखो, भावना होती है ,उसमें भी सतोगुण मिश्रित रहता है। बेटा !और सतोगुण में भी रजोगुण मिश्रित रहता है ,बड़ी विचित्रता है ,उस प्रभु की बेटा !कितनी महानता से उन्होंने इस मानो जगत की रचना की है और मानवीयता की रचना की है ,बेटा !जब मैं उसके विज्ञान के ऊपर हम विचार करने लगते है। तो बेटा !अन्तर्हृदय गद् गद् हो जाता है। और मैं यह कहा करता हूँ कि हे प्रभु !तू कितना अनूठा है ,कितना महान कितना पवित्र है। मानो तेरे गुणों का गुणगान गाने के लिए हम असमर्थ हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, वह रजोगुण उसमें राजा पालन कर रहा है ,शासक मानो देखो, रजोगुण से दण्डित कर रहा है ,और दण्ड देने में भी सतोगुण विद्यमान रहता है मेरे पुत्रों !देखो, इसी प्रकार ऋषि ने कहा क्या यह मानो देखो, सतोगुण में पालन है रजोगुण में शासन है ,और तमोगुण में मानो देखो, पालना भी समाप्तं ब्रहे मानो रजोगुण नही वह केवल तमोगुण रह जाता है ,तमोगुण में उत्पति का मूल रह जाता है। मेरे प्यारे !देखो, उत्पति रह जाती है। माता अपने गर्भ से सन्तान को जन्म देना चाहती है। वह अपने स्वामी से कहती है ,हे प्रभु !हमारी इच्छा है कि हम पुत्र याग चाहते हैं ,मेरे प्यारे !देखो, यागां भवितं ब्रह्मणा लोकां मेरे पुत्रों !वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए मेरे पुत्रों !देखो, तमोगुण में सतोगुण की भावना उनमें तरंगें मुनिवरों !देखो, विद्यमान रहती हैं। मेरे पुत्रों !देखो, जैसे काष्ठ में अग्नि विद्यमान रहती है। प्रत्येक स्थूल में अग्नि का और देखो, अनुभूति होती रहती है। इसी प्रकार मुनिवरों !देखो, तमोगुण में भी सतोगुण की अनुभूति है। और रजोगुण की और तमोगुण तो अपने में तमोगुण कहलाता ही है। मेरे पुत्रों !देखो, कितनी उग्र क्रिया है। उग्र क्रिया में तमोगुण उत्पति के मूल में प्रविष्ट हो जाता है। मेरे पुत्रों !ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों !वही सतोगुण है ,वही रजोगुण है ,और वही तमोगुण कहलाता है। परन्तु अपने में वह सिमटता रहता है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विचित्र है। मेरे प्यारे !देखो, एक दूसरे में वह सिमटता रहता है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विचित्र है। मेरे प्यारे !देखो, एक दूसरे में यह तीनों मनके हैं ,एक दूसरे में पिरोए हुए हैं ,और एक ही सूत्र में पिरोऐ जाते हैं। बेटा !तो मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने कहा क्या यह रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण इसकी विवेचना तो बड़ी विचित्र है। मैं व्याख्या नही देने आया हूँ ,केवल ऋषि कहता है ब्रह्मणे मानो देखो, दो होता और रह गएं हैं। प्रकृति और ब्रह्म दोनों ही होता हैं मेरे पुत्रों !देखो, यज्ञमान जब याग करता है तो अपने में मेरे पुत्रों ! यज्ञशाला में विद्यमान हो करके और वह दो के द्वारा विद्यमान हो करके और वह दो के द्वारा यज्ञ होता रहता है ,दो होता

कहलाते हैं। बेटा !प्रकृति और ब्रह्म वह दोनों ही मेरे पुत्रों !हूत कर रहे हैं। वह हूत हो रहा है ,आहुति दी जा रही है ,बेटा ! देखो, वह ब्रह्मणे प्रकृति को जब अपने में सिमट लेता है। तो उस समय बेटा !एक ही ब्रह्म रह जाता है। और वह ब्रह्म को अपने में पिरो देता है। तो आनन्द की पगडण्डी और देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है ,तो विचार आता रहता है मेरे पुत्रों !देखो, हम एक ब्रह्म की उपासना देवतव की उपासना करते हुए परन्तु देखो, उस संसार को जानते जानते हम बेटा !एकोकी ब्रह्म को अपने में स्वीकार कर लें। ब्रह्म को अपने में ,अपने को ब्रह्म में तो बेटा !देखो, आनन्द की वृष्टि होने लगती है। हम आनन्दमयी प्रवेश कर जाते हैं ,अपने को देखो, जब द्वितीय भाव वृत्तियों में नही रह पाता तो बेटा ! आनन्द क्या मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। तो आओ मेरे प्यारे !देखो, आज का हमारा विचार क्या है ,हम बेटा !इस संसार रूपी यज्ञशाला को अपने में धारण करते रहें ,और शरीर रूपी यज्ञशाला को भी हम जानते रहें क्योंकि जिसमें हमारा आत्मा विद्यमान है ,और परमात्मा सखा भी उसमें विद्यमान है। मेरे पुत्रों !देखो, आत्मा अपने में चिन्तन करने वाला बने ,ज्ञान और विज्ञान में रत्त होता रहे। तो बेटा !देखो, इस संसार सागर से वह पार हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि परमपिता परमात्मा का यह जो जगत है ,यह बड़ा विचित्र है यह मानो देखो, यज्ञशालाएं बड़ी विचित्रतव मानी गई हैं। तो वेद के ऋषि ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ......शेष अनुपलब्ध ,दिनांक 1990 01 25।

८ 26 01 1990 याग के स्वरुप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। क्योंकि याग उसका आयतन है ,उसका गृह है, उसका सदन है ,और वह उसी में वास कर रहा है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा का यह जो यज्ञामयी स्वरूप अथवा ब्रह्माण्ड है, ये जगत है मानो यह सब उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है।

आओ मेरे पुत्रों !हम उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन तो प्रायः हमारे विचारों में और हमारी मानवता में और सर्वत्र ब्रह्माण्ड के एक एक कण कण में व्याप्त हो रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो व्याप्यं ब्रहे जिसका इतना ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप है ,जितना इसका ऊर्ध्वा में महावृत्तियां कहलाती हैं तो बेटा !उसका आनन्दमयी ,यज्ञोमयी स्वरूप जो जगत है ,इसके ऊपर प्रत्येक मानव को बेटा !अन्वेषण करना चाहिए। अनुसन्धान करना चाहिए , जिससे हम परमपिता परमात्मा की जो रचनामयी जगत है, रचनामयी यज्ञशाला है ,इसको हम अच्छी प्रकार जान जाएं। क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने ,याग के ऊपर बेटा !अपने अपने बड़े मन्तव्य दिए हैं ,अथवा उनका बड़ा गम्भीर अध्ययन रहा है ,और आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों प्रकार के यागों को जानने के लिए ,वह सदैव तत्पर रहे हैं। क्योंकि हमारे यहां दो प्रकार का विज्ञान ,दो प्रकार का क्रियाकलाप ,परम्परागतों से बेटा !मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहा है, और ऋषि मुनियों की प्रतिभा में वह सदैव अभ्योदय होता रहा है। जिससे बेटा !उन्होंने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ मनन और चिन्तन किया है और उस चिन्तनमयी वाक्

आज हमारे स्मरण आ रहे हैं। क्योंकि मुझे भी कहीं से ये हमें प्रेरणा प्राप्त हो रही है ,क्या याग के ऊपर कुछ विचार विनिमय दिया जाएं ,और याग के ऊपर कुछ विचार देना ही मानव का कर्तव्य है। क्योंकि यह जो संसार हमे दृष्टिपात आ रहा है ,यह परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला के रूप में प्रायः हमे दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि जो भी मानव अपने क्रियाकलापों में तत्पर रहा है ,वह याग में परिणत हो रहा है ,और याग कर रहा है।

विभिन्न यागों के उद्देश्य

तो आओ मुनिवरों !देखो, मैं इस सम्बन्ध में कुछ और विवेचना नही दूंगा , आओ ,याग के सम्बन्ध में बेटा !ऋषि मुनियों का अपना अपना मन्तव्य देना प्रारम्भ करूंगा ,क्योंकि हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार के याग माने गएं हैं। जैसे हमारे यहां विष्णु याग है ,क्योंकि वह पालन करने में आता है ,हमारे यहां जैसे वाजपेयी याग है वह पुरूषार्थ का प्रतीक कहलाता है। जैसे हमारे यहां अजामेध याग है ,हम अपनी इन्द्रियों को विजय करते हुए इस संसार की जानकारी करें , जैसे अश्वमेध याग है ,मेरे प्यारे !राजा और प्रजा दोनों प्रसन्न रह करके जब देखो, अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए याग करते हैं। अथवा अश्वमेध क्योंकि अश्व नाम राजा का है ,और मेध नाम प्रजा का है। जब दोनों एक दूसरे के सन्तुष्ट रहते हैं। और वह समय समय पर हमारे देखो, याग में परिणत हो जाते हैं। मेरे प्यारे !देखो, **वास्तव में वृष्टि याग है ,जहां मनोनीत भावनाएं बेटा !देखो, मानव की अन्तरिक्ष में और द्यौ में प्रवेश हो जाती है।** बेटा !वह याग में परिणत होता है तो वह मुनिवरों !देखो, वह अश्वं ब्रहे वह वृष्टि याग कर रहा है। एक बेटा !कन्या याग होता है मुनिवरों !देखो, कन्या देवलोक में ,पितर लोक में वह पति लोक को प्राप्त हो करके बेटा !वह याग करने का उसे भी अधिकार प्राप्त होता है। विचार आता है ,मेरे प्यारे !मैं याग के नामोकरण का उद्गीत तो गाना नही चाहता हूँ ,क्योंकि विचार तो कुछ और ही कह रहा है केवल मन्तव्य हमारे विचारों का कि ये भिन्न भिन्न नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में आता

रहता है। जैसे अग्निष्टोम याग है ,मेरे पुत्रों !देखो, जैसे ब्रह्मयाग है ,देवी याग है , रुद्र याग है भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चलन होता रहता है ,जैसे गो मेध याग है ,बेटा !गऊओं की रक्षा करना वह बेटा !प्रसन्नचित जब होती है। तो गो मेध याग हो जाता है ,जैसा तुम्हें स्मरण होगा जब मुनिवरों !गऊएं प्रसन्न हो करके दुग्ध को प्रदान करती रहती है ,उसको मानो याग इत्यादि कार्यों में बेटा ! परणित करता है तो वह गो मेध याग कहलाता है। उसका तृण उसकी वृत्तियां मानो देखो, उसको अन्नाद से मानो तृप्त करना चाहिए। और प्रसन्न रहना चाहिए। जिस राजा के राष्ट्र में जब इस समाज में मानो प्राणी एक दूसरे प्रसन्न रहता है , एक दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है ,मेरे पुत्रों !देखो, वह राष्ट्र महान पवित्र कहलाता है। और जहां एक प्राणी दूसरे से दुखित रहता है ,एक प्राणी दूसरे में ओत प्रोत की भावना नही विचार रहा है ,जानो कि उस राजा का राष्ट्र बेटा !नारकिक कहलाता है। आज बेटा !मैं तुम्हें राष्ट्र के ऊपर नही केवल याग के सम्बन्ध में विवेचना दे रहा था। क्या याग अपने मे महान और कृतियों में रत्त रहा है।

आओ मेरे पुत्रों !आज मैं तुम्हें कई समय से याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की विवेचना दे रहा था मुनिवरों !उनके यागों की चर्चाएं हो रही थी क्या वह अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को याग के सम्बन्ध में उनका कुछ गम्भीर अध्ययन कितना तपस्या में जीवन रहा है। उन्होंने उस ब्रह्माण्ड और पिण्ड का दोनों का एक ही समन्वय किया है। आन्तरिक जगत अथवा बाह्य जगत अथवा दोनों का उन्होंने समन्वय किया है, इसी दृढ़ संकल्प में हम यह विचारने लगते हैं कि हमारा याग कितना पवित्र और ऋषि मुनियों ने इसके ऊपर कितना अध्ययन किया है। कितनी गम्भीरता से मुनिवरों !देखो, उसका मनन किया है आओ मेरे पुत्रों !आज मैं तुम्हें देखो, एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहां याग के ऊपर बेटा !ऋषि मुनि अपने में अध्ययन करते रहते थे ,मेरे पुत्रों !देखो, हमारे यहां देखो, वर्णानं ब्रव्हा कृतं धारसुति श्वंजनं मेरे प्यारे !देखो, कुछ वेदमन्त्रों के

ऊपर विचार विनिमय किया गया महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां नाना प्रकार के याग के ऊपर बेटा !अन्वेषण होता रहता था। जहां वह मानो देखो, परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर उनका अध्ययन होता रहा वहीं मुनिवरों !देखो, उनके अध्ययन की जो प्रतिक्रिया थी। वह केवल यह कि याग के ऊपर ब्रह्मचारी कवन्धि सुकेता, ब्रह्मचारिणी गार्गी यज्ञदत्ता और मुनिवरों !देखो, सोमकेतु और मुनिवरों !देखो, नाना ब्रह्मचारी बेटा !अध्ययन करते रहते थे। मेरे पुत्रों !देखो, जब वह अध्ययन करते रहे ,तो कुछ ऋषि मुनियों का किसी से समय समूह वहां परणित हो जाता तो बेटा !देखो, उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया था। जिस यज्ञशाला में बेटा !याग करने से उन्होंने यह अनुभव किया कि हमारा जो याज्ञिक शब्द है ,वेदमन्त्रों से सुगठित वाला जो शब्द है ,स्वाहाः है ,वह कहां जाता है ?तो मेरे पुत्रों !देखो, एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा ! महर्षि पणपेतु ने ये ब्रह्मचारियों के मध्य में एक प्रश्न लाए ,और उन्होंने एक जिज्ञासा प्रगट की और वेदमन्त्र बेटा !यह उद्गीत गा रहा था चित्रं रथं ब्रह्मा व्रतं देवत्वां ब्रव्हा व्रहे श्वंजन्म ब्रीहि कृता बेटा !वेद का मन्त्र यह कह रहा था क्या चित्रों शमं ब्रहे मानो देखो, याग का जो चित्र है वह चित्र द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है। क्योंकि द्यौ मण्डल ही एक ऐसा मण्डल है जहां बेटा !देखो, सर्वत्र चित्रों की स्थिरता वहां हो जाती है। तो मेरे पुत्रों !देखो, जब यह वाक् ब्रह्मचारियों के मध्य में जब वेदमन्त्र आया ,तो वेदमन्त्रों ने एक वाक् और विचारा ममत्वां ब्रह्मणे मातस्वतप्रव्हा गर्भ श्वंजनं ब्रीहि व्रतं देवत्वा तो यह वेद की आख्यिका उन्हें स्मरण आई ,उन्होंने कहा सम्भो ब्रह्मणे ब्रहाः मेरे प्यारे !देखो, ऋषि मुनि इसके ऊपर अध्ययन करने लगे ,और ब्रह्मचारी सुकेता ने ये प्रश्न लिया ,और उन्होंने कहा कि हम याग के ,कर्मकाण्ड को या याग की चित्रावलियों को जब जान सकते हैं, जबकि हम माता के गर्भाशय में जो एक बिन्दु है ,बिन्दु में शिशु है , जब तक हम उसकी प्रतिक्रिया को जान सकेंगें ,जब तक हम इसको नही जान सकेंगें। मेरे प्यारे !देखो, यह भी अम्ब्रहा माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है ,उस

बिन्दु में शिशु है ,और शिशु का मानो देखो, माता के गर्भ में निर्माण हो रहा है , और निर्माणवेत्ता ,निर्माण कर रहा है ,जो निर्माणशाला है ,उस संसार की उस प्रभु की विज्ञानमयी एक रचना है। मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्मचारी सुकेता ने ,इसके ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया। मेरे पुत्रों !जब अध्ययन करते रहे ,करने के पश्चात उन्हें एक यन्त्र की अनुभूति हुई ,क्या मुनिवरों !देखो, एक एक रक्त के बिन्दु में ,जो मानव का चित्र विद्यमान है ,उसको दृष्टिपात करो। मेरे पुत्रों !उन्होंने एक यन्त्रशाला का निर्माण किया ,और यन्त्रशाला का जब निर्माण किया ,तो मेरे पुत्रों !देखो, उन्हें यन्त्रं ब्रहा उस यन्त्र में एक रक्त का बिन्दु प्रवेश करने से ,मेरे पुत्रों !जिस मानव का वह रक्त का बिन्दु है ,वह उस मानव का चित्र ,मेरे प्यारे ! देखो, यन्त्रों में साक्षात्कार दृष्टिपात आने लगा ,उन्होंने यन्त्रों का निर्माण किया परन्तु यन्त्रों के निर्माण को लेकर कोई उन्होंने एक यज्ञशाला में एक कृतिका का निर्माण किया ,उस यन्त्र का मेरे पुत्रों !देखो, शब्द जैसा भी है उसी प्रकार का शब्द उसका आकार ,और उसमें मुनिवरों !देखो, चित्र दृष्टिपात आना ,ये जैसे सर्वत्र दृष्टिपात आने की प्रतिभा बन गई। मेरे प्यारे !देखो, जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विराजमान हो करके ,मुनिवरों !देखो, यज्ञं ब्रह प्रव्हा वे उन यन्त्रों का स्थिर करते थे। ऋषि मुनियों का जब भी भारद्वाज मुनि के यहां ,बेटा !देखो, समागम या तो ऋषि मुनियों का समूह आता रहा ,उसी समय उनके यहां एक नियम था कि याग करो साकल्य विद्यमान है ,घृत विद्यमान है ,मेरे पुत्रों !देखो, उसमें याग करो विधि विधान के द्वारा तो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां चौबीस कोणों की यज्ञशाला थी। जैसा मैंने इससे पूर्व काल में वर्णन किया था ,बेटा ! क्या चौबीस कोणों की यज्ञशाला में याग होने लगा ,यं ब्रह्मे देखो, वह देखो, ऋषि मुनियों का समूह आया ,उनमें से बेटा !कोई ब्रह्मा बना ,कोई उद्गाता बना , कोई अध्वर्यु बना ,और कोई यज्ञमान और पुरोहित बन करके ,बेटा !याग प्रारम्भ होने लगा जैसे याग प्रारम्भ हुआ ,उन्होंने अग्निहोत्र किया ,तो बेटा !देखो, अग्नि में जैसे, स्वाहा उच्चारण करते थे ,वही स्वाहा मेरे पुत्रों !देखो, यन्त्रों में द्यौ लोक

को जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा। मेरे पुत्रों !स्वाहा उच्चारण करने वाले का शब्द भी है ,और उसके चित्र भी हैं ,और मुनिवरों !देखो, उनका क्रियाकलाप भी उसके साथ विद्यमान है। वह सर्वत्र दृष्टिपात आ रहा है।

तो आओ मेरे पुत्रों !देखो, इस सम्बन्ध में विशेषता में नही ,केवल तुम्हें यह परिचय देने के लिए आया हूँ ,क्योंकि प्रत्येक वाक्यों का परिचय ही दिया जाता है ,वह भी संक्षिप्त में क्या मुनिवरों !देखो, चित्रो रथं ब्रव्हा जब इस प्रकार के ऋषि मुनियों के चित्र उसमें दृष्टिपात आने लगे ,यन्त्रों में तो बेटा !ऋषि ने ब्रहे कृतं ब्रह्मा बेटा !देखो, भारद्वाज के चरणों की वन्दना की ,उन्होंने कहा प्रभु !धन्य है। वेदमन्त्रों में ,हम मानो देखो, विज्ञानवेत्ताओं के समीप ,इसको ये उदगीत गाते रहे कि हम जिन वाक्यों को शब्द की क्या क्या गतियां हैं ,हम गतियों में हम पंहुच गएं हैं। परन्तु सम्पूर्णता से निर्णय नही हो सका है। मेरे प्यारे !देखो, जब उन्होंने ऐसा वृत किया ,तो ब्रह्मे कृतं क्या आज हमारा बड़ा सौभाग्य है ,जो इसको दृष्टिपात कर रहे। भारद्वाज मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए ,और मुनिवरों !देखो, उनके यहां नाना विज्ञानशालाए ,चित्रशालाएं ऐसी ऐसी चित्रशालाएं मेरे पुत्रों !देखो, एक समय सोमकेतु दद्दड़ीय गोत्रीय महर्षि भारद्वाज मुनि के समीप आ पंहुचे ,और उन्होंने कहा हे प्रभु !मैं अपने पूर्वजों का ,यन्त्रों में दर्शन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे !उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। उन्होंने कहा मैं एक रक्त का बिन्दु कहीं भी तुम्हारे पिता ,महापिताओं का तुम्हें प्राप्त हो जाएं ,तो हम तुम्हें दर्शन करा सकते हैं। तो मुनिवरों !देखो, महर्षि सोमकेतु दद्दड़ीय अपने दद्दड़ीय गोत्रीय जब अपने गृह में उन्होंने प्रवेश किया तो उनके पूर्वजों के बहुत से संग्राहलय थे ,मेरे पुत्रों !एक संग्रहालय में कहीं एक वस्त्र पर ,उन्हें एक रक्त का बिन्दु प्राप्त हो गया कहीं अपने छठे महापिता का जो संसार में नही थे मेरे पुत्रों !देखो, उस वस्त्र को ले करके वह महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे ,और भारद्वाज ने कहा प्रभु !ये अमृतं ब्रह्मा ये एक रक्त का बिन्दु ,मेरे महापिता जो छठे महापिता जिनको एक सौ अस्सी वर्ष मानो जो संसार में नही है उतना

समय हो गया है शरीर और आत्मा को पृथक हुए। हे प्रभु !देखो, यह तो मुझे प्राप्त हुआ है ,भारद्वाज मुनि बोले क्या यह तो प्रर्याप्त है। तो ब्रह्मचारी सुकेता कवन्धि और भारद्वाज मानो देखो, अपनी स्थली पर उस यन्त्र में ,उस वस्त्र को उन्होंने प्रवेश किया ,यन्त्र में तो बेटा !चित्रावलियों में मानो देखो, उनके छठे महापिता का दर्शन होने लगा। मेरे पुत्रों !देखो, विज्ञान अपने पद्द में सदैव गमन करता रहा है। एक एक रक्त के बिन्दु में मुनिवरों !देखो, प्रत्येक मानव का ,उसी मानव का चित्र विद्यमान है। जिस मानव का वृत्ति कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, एक ही नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं ,विज्ञानशालाओं में शिकामकेतु उद्दालक के यहां चले जाओ तो देखो, बेटा !वहां तुम्हें और भी कुछ प्राप्त होगा। महर्षि शिकामकेतु उद्दालक तो एक सौ पांच वर्ष तक बेटा !याग करते रहे ओर यागों में अन्वेषण करते रहे ,अनुसन्धान करते रहे परन्तु देखो, अपने पूर्वजों के चित्रों चित्रित होने लगे। तो मेरे पुत्रों !देखो, विचार आता है ,आज मैं उन वाक्यों की पुनरूक्ति करने नही जा रहा हूँ। केवल ,विचार कि हम देखो, उन यागों में परणित हो जाएं ,उन यागों को विचारने लगे ,मानो देखो, जो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ,अपनी विज्ञानशाला में जानने का प्रयास किया। तो मेरे पुत्रों ! देखो, विचार आता रहता है ,ऋषि मुनियों ने याग के ऊपर जो अन्वेषण किया है ,अथवा अनुसन्धान किया है ,वह बड़ा विचित्र है। इसीलिए जो पालक है , इसीलिए वेद इसको विष्णु याग कहता है ,विष्णु कहते है पालन करने वाले को , बेटा !यज्ञमान अपने द्रव्य का ,जब सदुपयोग करता है ,तो वह अन्तिम चरमसीमा का द्रव्य का उपयोग है ,क्योंकि साकल्य ला रहा है ,घृत को ला रहा है ,और आहुति समिधा में परणित करके उसे याग में देवताओं के में परणित कर देता है। और अग्नि देवताओं का मुखं ब्रह्मे देवत्वां वह अग्नि मेरे पुत्रों !देखो, उसको चहुमुखी बना देती है। और देवतव मेरे पुत्रों !देखो, वह श्रोत्रां भूतं ब्रह्मा वह अपने में मेरे पुत्रों !देखो, बड़ा विचित्र क्रियाकलाप है। जो यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में याग कर रहा है ,मानो द्रव्य को देवताओं का प्रदान करता है। जिससे देखो, द्रव्य

अमृतां देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश करने से कोई न शत्रु होता है ,न कोई मानो देखो, किसी प्रकार निन्दक रहता है ,तो उसी को प्राप्त होता रहता है।

तो आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए ,और याग के ऊपर जो ऋषि मुनियों ने अनुसन्धान किया है अथवा चित्रों में चित्रित होते रहे हैं ,अब मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यमाः रथं ब्रह्मणा विश्वचमा रेवं भद्राः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव !अथवा मेरे भद्र ऋषिमण्डल !अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों के सम्बन्ध में ,बड़ी ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ रहे थे ,क्योंकि ये उनकी उड़ान परम्परागतों से ही, बड़ी विचित्र मानी गई है। बाल्यकाल में ,जब हम पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते रहें ,उस काल में भी उड़ान बडी विचित्र उड़ी जाती थी ,और याग के सम्बन्ध में जितना अध्ययन किया जाएं ,उतना ही सूक्ष्मतम कहलाता है। परन्तु इसी याग पर ,नाना प्रकार के आक्रमण भी हुए हैं , पूज्यपाद गुरुदेव तो उस आक्रमण को इतना नही जान पाते ,परन्तु महाभारत के काल में और उसके पश्चात याग के ऊपर आक्रमण होना प्रारम्भ हुआ। और यागों में देखो, अर्थों को न जान करके याग के ऊपर उन्होंने एक अशुद्धिकरण का और अपने स्वार्थपरता का उन्होंने अपना एक परिचय दिया। जब मैं यह कहता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से ,प्रभु !आपने वाजपेयी याग का वर्णन किया है ,अग्निष्टोम याग का नामोकरण उद्गीत गाया है ,और अजामेध और अश्वमेध याग अपने यागों का वर्णन किया परन्तु महाभारत काल के पश्चात इन अर्थों को न जान करके , स्वार्थपरता में देखो, वह अपने अपने मन ,मानो अर्थों को ले करके ,उन्होंने याग के ऊपर आक्रमण किया। जैसे अग्निष्टोम याग में बैल की बलि का वर्णन है , परन्तु देखो, बलि का अर्थ केवल पुरूषार्थ को न जान करके ,देखो, मध्य काल में केवल उसको केवल देखो, बलि का स्वरूप दिया और बलि का अर्थ देखो, पुरूषार्थ है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव की भाषा में मैं आधुनिक भाषा नही कह रहा हूँ ,

जो पूज्यपाद गुरुदेव हमें विश्लेषण कराते रहते हैं ,और हम भी उसका विश्लेषण करते रहे हैं। परन्तु आधुनिक काल में देखो, महाभारत के पश्चात देखो, वाममार्ग काल आया ,और वाममार्ग ने यागों के ऊपर आक्रमण किया। क्योंकि याग जब तक जीवित है ,संसार जीवित है ,और याग अगर मृत्यु को प्राप्त हो गया तो संसार की भावना ही मृतक बन जाती है, ऋषि मुनियों की विचारधारा मृतक बन जाती है। जब इस प्रकार देखो, अर्थो का अनर्थ हुआ ,देखो, जैसे गो मेध याग में गो का वर्णन है ,और अजामेध में बकरी की बलि का वर्णन है ,अश्वमेध याग में अश्व घोड़े का वर्णन है ,क्या उसकी इन्द्रियों की आहुति दी जाएं। तो इस प्रकार क्योंकि देखो, अर्थों का अनर्थ है ,अजामेध में तो देखो, अजा कहते है , अजा कहते हैं बुद्धि को जो किसी से विजय न हो सके। अजा कहते हैं बल को जो किसी से मानो देखो, परास्त न हो सके। अजा कहते हैं जो ज्ञानी में देखो, किसी से अपने में कोई अग्रणीय न हो परमपिता परमात्मा के ज्ञान में रत्त रहने वाला हो। इसी प्रकार अजोमध याग का अभिप्रायः पूज्यपाद गुरुदेव ने उसका अर्थ करते हुए कहा ,क्या देखो, ये अश्व नाम देखो, पर्यायवाची शब्द हैं ,अश्व नाम देखो, परमपिता परमात्मा का है ,अश्वनाम राजा का है ,और अश्व नाम देखो, एक घोड़े को भी कहा जाता है। परन्तु देखो, हे पूज्यपाद मध्य काल में इसके अर्थों को न जान करके ,देखो, अश्वमेध देखो, घोड़े को स्वीकार करके , उसके प्रति उसके अंगों की देखो, यज्ञशाला में बलि प्रदान की गई हैं ,वह वहां बलि का वर्णन आता रहता है। मैं यह कहता हूँ कि हे भोले प्राणियों !याग में कोई बलि नही होती। बलि का जो स्वरूप बनता है ,वह केवल पुरूषार्थ बनता है ,और पुरूषार्थ ही करना ही अपने लिए मानो देखो, अपने को समर्पित कर देना है। इस प्रकार की भावना जब हृदयों में मानो देखो, बुद्धिमानों में इस प्रकार आती है तो देखो, उसी प्रकार देखो, जैसे वाजपेयी याग में बैल ब्रहे व्रतं इस प्रकार का वर्णन आता रहता है तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से जिज्ञासा से प्रगट करता रहता हूँ ,प्रभु !उन्होंने मेरे बहुत सी जिज्ञासाएं समाप्त की है। तो

विचार आता रहता है ,जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी वर्णन किया ,कि और भी नाना याग हैं ,यहां नाना देखो, नाना प्रकार के यागों का कर्मकाण्ड , उनकी प्रतिभा ,उनकी मानो मानवीय मस्तिष्कों में सदैव और ऋषि मुनियों के आंगन में विद्यमान रही है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये कहता रहता हूँ , पूज्यपाद देखो, आज जो यह हमारी आकाशवाणी जा रही है ,वहां एक याग का आयोजन हुआ है ,मेरा अन्तरात्मा याग को दृष्टिपात करता हुआ ,बड़ा प्रसन्न रहता है। और मैं यज्ञमान से कहता रहता हूँ ,हे यज्ञमान !तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ,क्योंकि मेरा अन्तर्हृदय यज्ञमान के साथ होता है ,और मैं यह कहा करता हूँ क्या जिस महा अमृतम् पुरूष के यहां द्रव्य का सदुपयोग होता है वह बड़ा सौभाग्यशाली है ,क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना ही ,बहुत अनिवार्य है। हे यज्ञमान !ये जो काल चल रहा है ,यह ऐसा काल है जिसे मैं वाममार्ग का काल कहता हूँ। जहां राजा भी वाममार्गी है ,प्रजा भी वाममार्गी है ,जहां देखो, वाममार्ग प्रतीत हो रहा है ,और वाममार्ग उसे कहते हैं जहां सुरा ,सुन्दरी और जहां देखो, द्रव्य की लोलुपता में प्राणी लगा रहता है। ये तीनं ब्रव्हा लक्षणं, ये लक्षण हैं वाममार्ग काल के मानो देखो, राजा भी उसी में प्रजा भी उसी में , सर्वत्र देखो, देवियां भी उसी में ,जब इस प्रकार का देखो, क्रियाकलाप समाज का बन जाता है ,तो वह काल वाममार्ग है ,क्योंकि उल्टे मार्ग को गमन करने वाले को यहां ,वाम मार्गी कहते हैं। जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है ,जो कुमार्ग पर गमन करता है ,वह महान कहलाता है ,सुमार्गी कहलाता है, तो इसीलिए जो विचार है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से नाना प्रकार की जिज्ञासाएं हम प्रगट करते रहे हैं ,इन्होंने बहुत से अपने मन्तव्य दिए ,विचार केवल यह कि राजा भी महान बनना चाहिए ,क्योंकि राजा के राष्ट्र में क्रान्तियां रक्त में नही होनी चाहिए ,जब राजाओं के राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति का सञ्चार हो जाता है , मानव मानव को नष्ट करने लगता है ,ये सब वाममार्ग कहलाता है ,और क्यों कहलाता है ?क्योंकि राजा अपने में अपने को नही जान रहा है। राजा प्रजा को

नही जान रहा है ,इसीलिए देखो, राजा ब्रह्म ज्ञानी नही है ,राजा को ब्रह्म ज्ञानी होना चाहिए। एक समय देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया ,क्या एक समय भगवान मनु ने ,अपने महापुरोहित से कहा देखो, कालेत्वर मुनि ऋषि से कि महाराज !मैं यह जानना चाहता हूँ कि राजा कैसा होना चाहिए ?जो प्रजा का नेतृत्व करने वाला हो वह कैसा हो ?तो उस समय कालेत्वर ऋषि ने कहा था भगवान मनु से क्या राजा ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। जिसे ब्रह्म का ज्ञान हो ब्रह्म की प्रतिभा को जानने वाला हो और ब्रह्मज्ञानी ही राजा अपनी प्रजा को ब्रह्मवेत्ता बना सकता है ,तो इस प्रकार देखो, श्रवण करके वह मौन हो गएं। तो कालेत्वर ऋषि ने बेटा !इस राष्ट्रवेत्ताओं का निर्माण करते हुए कहा क्या राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना चाहिए। जिससे राजा के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नही पनपनी चाहिएं। जब रूढ़ियां पनप जाती है , तो यह राष्ट्र विनाश के मार्ग पर चला जाता है ,विचार आता रहता है पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई काल में वर्णन कराया आज वह वर्तमान का काल उसी प्रकार का है नाना प्रकार के रूढ़ियां हैं और वह रूढ़ियां मानो देखो, राष्ट्र के विनाश के लिए हैं विचार आता रहता है ,मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया जाने न जाने परन्तु यहां देखो, मोहम्मद के मानने वाले ,नानक के मानने वाले ,और इशु के मानने वाले और भी नाना प्रकार की रूढ़ियां बनी हुई हैं। ईश्वर के नाम पर इसीलिए धर्म एक है, और रूढ़ि अनेक कहलाती है। इसीलिए रूढ़ि नही रहनी चाहिए। और धर्म रहना चाहिए। जो ईश्वरीय मानवीय धर्म दोनों का कटिबद्ध मानो दोनों का समन्वय हो जाएं। मैं भी अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है कि जितनी भी रूढियां हैं ,वह राष्ट्र तक सीमित रहती हैं ,आत्म ज्ञान से उनका कोई समन्वय नही हैं। आत्म के स्वरूप को नही जान पाती। क्योंकि कहीं आत्मा स्वीकार कर रहा है। कोई कहीं आत्मा स्वीकार कर रहा है। तो इस प्रकार देखो, यहां चेतना में भी अभाव जब स्वीकार करने लगते हैं। तो जो समाज जो सम्प्रदाय ऐसे राजा जो राजा ब्रह्मज्ञानी हो ,और ब्रह्मज्ञानी हो करके

जिसमें रूढ़ियों के आचार्य उनको एकत्रित किया जाएं ,और उनका शास्त्रार्थ अथवा विचार विनिमय होना चाहिए। एक दूसरे की जिज्ञासा पूर्ण होनी चाहिए ,और राजा को मध्यस्थता करनी चाहिए। और राजा जब मध्यस्थत बनेगा तो ब्रह्मवेत्ता इसी प्रकारं भूतं ब्रव्हा वह अपने देखो, रूढ़ियों को समाप्त कर सकता है। और जब रूढ़ि समाप्त हो जाएगी ईश्वर के नाम पर जहां रूढ़ियां समाप्त हुई वही शान्ति की स्थापना होगी। वहां एक दूसरा प्राणी को प्राणी को नष्ट नही कर सकेगा। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में यह वाक् प्रगट करते हुए कहा था और विचार देते हुए कहा था हे पूज्यपाद !ऐसे राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए क्योंकि मैंने तो पुरातन काल में कहा था कि राजाओं का जब भी निर्वाचन हुआ है ,वह ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा होना चाहिए। जिज्ञासुओं के द्वारा देखो, विवेकीयों के द्वारा अविवेकीयों का निर्वाचन देखो, राष्ट्र के लिए लाभप्रद नही होता। वह समाज को अन्धकार में ले जाता है। तो इसीलिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह वाक् प्रगट करते हुए कहा था क्या हे भगवन !क्या देखो, इसीलिए मैं कहता रहता हूँ ,क्या समाज को ऊँचा बनना है। और याग की पद्धति को महान बनाना है। क्योंकि वह विज्ञान में ,ज्ञान में, रक्षा में तीनों में देखो, याग ही हमें बल देता है ,और उस याग के बल को हम अपने में धारण करते हुए बलवती हो जाएं। ऐसा मेरा मन्तव्य रहा है। मेरे आचार्यों ने तो बहुत सी वार्त्ताएं प्रगट की हैं। इसके ऊपर बहुत चिन्तन और मनन किया है। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव का अनुभव याग के सम्बध में बड़ा विचित्र बन करके रहा है ,महान बन करके रहा है ,याग का अभिप्रायः यह कि जितने भी सुक्रियाकलाप है। वह सर्वत्र का नाम एक याग कहलाता है। जिसमें सर्वत्रता हो जिसमें मानो देखो, व्यष्टि से समष्टि के मार्ग पर गमन करने वाला हो ,तो इस प्रकार का जो बिखरे विचारों को मैं देने के लिए आया हूँ। विचार यह कि राजा को अश्वमेध याग करना चाहिए। प्रजा और राजा दोनों मिल करके जब याग करते हैं। तो अग्निहोत्र करते हैं। तो सुगन्धि विचारों की करते है। वेद मन्त्रों की ध्वनियों से

सुगन्धि होती है ,साकल्य के द्वारा मानो देखो, उसकी सुगन्धि और देखो, होती है। तो उसको राजा को उस क्रियाकलापों को करते हुए अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहिए। और ईश्वर के नाम पर रूढ़ियां नहीं रहनी चाहिए। यदि राजा के राष्ट्र में रूढ़ियां बनी रहेगी ,तो एक समय राजा का राष्ट्र अग्नि का कारण्ड बन करके रहेगा ,मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक् कहा था मैं आज विशेष चर्चा देने नही आया हूँ ,विचार यह है कि क्या देखो, अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना ,प्रजा में प्रसन्न रहना ,यह मानो जब ही हो सकता है। जबकि राजा ब्रह्मवेत्ता हो ,ब्रह्मज्ञानी हो ,निर्वाचन प्रणाली पवित्र हो ,विद्यालयों में निर्वाचन प्रणाली पवित्र हो ,तब ही तो यह सम्भव हो सकेगा। असम्भव ब्रहे असम्भव को सम्भव बनाया जा सकेगा। अन्यथा देखो, यह संसार गमन कर ही रहा है। कोई वाक् मैं भी अपने विचार देता रहता हूँ। देखो, हमारे इन विचार हैं। अन्तर्हृदय में जो विचार हैं ,उनको देना बहुत अनिवार्य हैं। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के यह वाक् उच्चारण करता हूँ ,मेरा अन्तर्हृदय यही कहता रहता है। हे यज्ञमान !तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है ,वह गृह बड़ा सौभाग्यशाली है ,देवतव कहलाता है। और जिस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग होता है। सुरा में लगाया जाता है। वह गृह नारकिक कहलाता है। वह गृह उन्नत नही हो पाता ,इसीलिए देखो, मैं अपने विचारों को देता हुआ ,अपने विचारों को विराम देने के लिए आया हूँ। क्योंकि मैं एक याग को दृष्टिपात कर रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर !अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बड़े विचित्र विचार दिए इनके विचारों में बड़ा एक उदगार है ,विडम्बना है , मानो उस विडम्बना के साथ ही अपने विचारों को व्यक्त करते रहते हैं। इनके विचारों में राष्ट्रीयता आध्यात्मिकवाद मानो एक ही आभा में निहित रहता है। इनके विचारो में मैं परमपिता परमात्मा से मैं सदैव यह प्रार्थी रहता हूँ। क्या ऐसे राजा भी समय समय पर आते रहे हैं। काल आयेगा, आते रहेंगें ,इनकी विडम्बना

भी पूर्ण हो सकेगी। जो इनके हृदय में एक दाह है ,एक विडम्बना है ,एक मानो देखो, प्रबलता है ,जो इनका हृदय पुकार कर कहता है ,वे परमपिता परमात्मा के आश्रित है। यह आज का विचार यह क्या कह रहा है ?क्या हमारे ऋषि मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अध्ययन किया है और यागों में बड़ा महत्व माना गया है। इन यागों की व्याख्या तो किसी काल में ही कर पायेंगें। परन्तु आज का विचार विनिमय क्या कि हमारा परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता ओर देखो, मानो देखो, यह जो हमारा ज्ञान और विज्ञान है यह आध्यात्मिक ओर भौतिकवादों में दोनों में परणित रहता है दोनों में ही गमन करता रहता है। इसीलिए आज का विचार यह सम्पन्न होने जा रहा है, आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि विज्ञान अपने कक्ष में गमन करता रहा है और विज्ञान मानो देखो, मानवीय मस्तिष्क की महानता है ,जब महानता के आधार पर मानव जब विज्ञान का विकास करता है ,तो वह विज्ञान सार्थक बन जाता है। और विज्ञान जब भी दुरूपयोग हुआ है ,उसी काल में देखो, राष्ट्र और समाज देखो, नारकिक बन गया है। यह चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं ब्रहा गतप्राणां त्वा रेवं आपा ऋषि वायाः३म्। अच्छा भगवन् !आज्ञा। दिनांक 1990 01 26।

९ 03 02 1990 आत्मा के स्वरूप (प्रथम-भाग)

जीते रहो! देखो मुनिवरो !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वे पुरोहित हैं। पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं और वे विष्णु हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में विष्णु का बड़ा वर्णन आता रहा है। और विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है। हम उस परमपिता परमात्मा को विष्णु कहा करते हैं क्योंकि वह सत्य में ही रक्त रहने वाला है और सत्य में ही पालना का मूल रहता है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। क्योंकि वह अनन्तमयी है और वे अनन्तवान हैं। और उसका अनन्तमयी ये ब्रह्माण्ड है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे सीमा में आने वाले नहीं हैं इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र उसकी महती का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वे माता वसुन्धरा के रूप में विद्यमान हैं। जो अपने में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को बसाने वाला है, अपने में ही धारणा कर रहा है। उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव उसका गुणगान गाते रहते हैं। दो प्रकार का विज्ञान आओ मुनिवरों !देखो, आज मैं तुम्हें उस महान् देव की जहाँ प्रशंसनीय और उसकी महती के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है।

हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। ज्ञान और विज्ञान की महिमा का सदैव वर्णन होता रहा है। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों के मध्य में दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है। हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान प्रायः माना गया है। एक भौतिक विज्ञान है और द्वितीय आध्यात्मिक विज्ञान कहलाया गया है। तो मेरे पुत्रों !हमारे यहाँ दोनों प्रकार के विज्ञान की महिमा का गणगान गाते हुए ऋषि-मुनियों ने अपना-अपना मन्तव्य दिया है। क्योंकि उनके यहाँ दोनों प्रकार की विचारधाराएँ उनके मस्तिष्कों में सदैव नृत्त करती रहीं। क्योंकि दोनों प्रकार के विज्ञान में एक तो चाहता है कि संसार में वह अणु और परमाणुओं में रत्त होता हुआ और नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता हुआ उनमें लोक-लोकान्तर और मानो भौतिकवाद में परणित हो जाऊँ। एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है, वह यह चाहता है कि मैं संसार को जानने लगूं। और संसार में जितने भी अव्यय हैं, जितनी भी धाराएँ हैं, वे चाहे ज्ञान में हों, चाहे विज्ञान में हों, परन्तु उनको जानते हुए हम मृत्यु से पार हो जाएँ। क्योंकि प्रत्येक मानव की एक ही आकांक्षा बनी रहती है, क्या मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ। प्रत्येक मेरी प्यारी माताएँ ये चाहती हैं कि मैं मृत्यु से मेरा जीवन ओझल हो जाए, प्रत्येक प्राणी चाहता है। तो विचार आता रहता है कि मृत्यु के सम्बन्ध में हमारे यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का प्रायः विचार-विनिमय होता रहा है। और उन विचारधाराओं में एक से एक ऊर्ध्वा में विचार अपने में रत्त में होना उनका प्रारम्भ हुआ। महर्षि जगदग्नि आश्रम में ऋषि-मुनियों का मृत्यु पर चिन्तन मेरे पत्रों ! आओ, आज मैं तुम्हें मानो देखो एक आध्यात्मिक विज्ञान की विवेचना में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा !ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और मृत्यु के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करते रहे हैं। तो मुनिवरों !मुझे स्मरण आ रहा है, आज बेटा!, मैं तुम्हें एक ऐसी स्थली पर ले जा रहा हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि अपने में एकत्रित हो करके बेटा !अपना विचार-

विनिमय प्रारम्भ करते रहे हैं। अपनी धाराएँ, मानो अपने आन्तरिक और बाह्य जगत के ऊपर वो विचार-विनिमय जब प्रारम्भ करते रहे हैं, तो उनका मानवीयत्व एक महानता में गमन करता रहा है। मुझे स्मरण आ रहा है बेटा !एक समय महात्मा जमदग्नि आश्रम में एक सभा हुई बेटा !जिसमें मुनिवरों !देखो, महर्षि प्रहाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, चाक्राणी गार्गी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्तः और ब्रह्मचारी वेतकेत . जिसमें महर्षि पिप्पलाद मनि महाराज विद्यमान थे और भी नाना ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ। तो मुनिवरों !देखो, उसमें ये विचारधारा प्रारम्भ हुई। महर्षि जमदग्नि आश्रम में पारेत्वर ऋषि महाराज के कथनानुसार बेटा !उन्होंने एक वेद मन्त्र का उद्गीत गाया और वेद मन्त्रों में कहा, "ब्रह्मणे व्रतम ब्रह्माः ऋतप्रव्हा, वृश्चनम् ब्रहि व्रतम देवाः"। मेरे पत्रों !मझे स्मरण आता रहा है, क्या महात्मा जमदग्नि ने एक वेद मन्त्र उन्होंने उद्गीत रूप में गाया। और उन्होंने कहा, क्या हे ऋषि अमृतम् !मैं यह जानना चाहता हूँ कि संसार में मृत्यु क्या है। मेरे प्यारे !देखो वेद मन्त्र का आशय यही प्रश्न कर रहा था। हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में एक विशेषता रही है, क्या एक मन्त्र प्रश्न कर रहा है, वही उसका उत्तर दे रहा है। तो मेरे पुत्रों !वेद का मन्त्र कहता है, व्रतम ब्रव्हा कृत देवाः, वेद का मन्त्र कहता है कि ये मृत्यु क्या है? जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक मानव अपने में व्याकुल हो रहा है। मेरी पुत्रियाँ !व्याकुल हो रही हैं। माताएँ व्याकुल हो रही हैं। प्रत्येक प्राणीमात्र मानो देखो इससे दुखित हो रहा है। ये क्या है? चाक्राणी गार्गी के उद्गार मेरे पुत्रों !देखो, चाक्राणी गार्गी ने उपस्थित होकर के कहा, क्या हे भगवन् !मेरे विचार में ये आता है कि शरीर और आत्मा का, दोनों का विच्छेद होना ही, मानो देखो पृथक् होना ही मृत्यु कही गयी है। मेरे पुत्रों !इसमें महर्षि प्रहाण ने कहा, हे दिव्या !ये हमारे विचार में नहीं आ रहा है। यहाँ मृत्यु शब्द नहीं बनता है। यदि आत्मा पृथक् है, शरीर पृथक् है, तो मृत्यु क्या है? मेरे पुत्रों !देखो चाक्राणी ये उद्गीत गाती अपने में शान्त हो गयी। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज

का निर्णय महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने ये कहा, “सम्भवम् व्रतम ब्रव्हे कृतम नधत्मधम्"। मेरे प्यारे !देखो वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए महर्षि पिप्पलाद ने कहा कि संसार में मृत्यु का अभाव है। मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती। क्योंकि इसका अभाव परम्परागतों से ही ऋषि-मुनि अपने मस्तिष्कों में मनन और चिन्तन करते हुए दार्शनिक रूप में मानो ये सिद्ध नहीं होता, क्या मृत्यु भी कोई वस्तु है। तो मेरे पुत्रों !देव इत्यादि ऋषियों ने, उन्होंने इस वाक्य का समर्थन किया और पिप्पलाद जी ने भी इस वाक्य को माना। पिप्पलाद जी ने कहा कि मेरी माता, माता ने मुझे यही शिक्षा दी कि हे अमृतम ब्रह्माः संसारा स्वतम् ब्रव्हे, क्या ये जो संसार है, ये निस्सार है। इसमें कोई सार नहीं है। जब मुझे मेरी प्यारी माता ये कहा करती तो बाल्यकाल में ही ये प्रश्न करते रहे, क्या वास्तव में जो आपने कहा, ये तथ्य यथार्थ है। उन्होंने कहा, यथार्थ है। मेरे पुत्रों !उन्होंने कहा, मृत्युञ्जय भवतम्, उन्होंने कहा, अन्धकाराम रूपम् ब्रव्हे क्रतम् । माता ने ये कहा कि अन्धकार को त्यागना ही जीवन है। मेरे पुत्रों !ज्ञान में जाना ही जीवन है। ये मेरी प्यारी माता ने मुझे मानो देखो उद्गीत रूप में गाया। इस वाक्य को मैंने स्वीकार कर लिया। और ये वाक्य मैं सदैव सञ्चार करता रहता हूँ।

मेरे पुत्रों !महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज से, आदि सर्वत्र ऋषियों ने ये कहा कि भगवन् आपने जो ये कहा है कि मृत्यु का अभाव है तो मृत्यु शब्द बनता कैसे है हम ये जानने के लिए सदैव लालायित रहते हैं। उन्होंने कहा ये जो मृत्यु शब्द है ये अज्ञानाम् भवितम् ब्रह्मणो व्रतम् देवत्वाम् ब्रह्माः ऋषि ने कहा कि ब्रह्मवेत्ताओं का ये मत रहा है, क्या वह अन्धकार को त्यागने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे हैं। जितनी भी विचारधाराएँ हैं संसार में चाहे वह विचारधारा मानो देखो आध्यात्मिकवाद से ओतप्रोत हों, चाहे वह विचारधारा दर्शनों से ओतप्रोत हों परन्तु देखो मानवीय दर्शन सर्वत्र का एक ही मन्तव्य रहा है कि संसार में अज्ञान नहीं रहना चाहिए। अज्ञान से विमुख होना चाहिए। और ज्ञान में परणित होना चाहिए

क्योंकि ज्ञान ही हमारे लिए एक महत्त्वदायक माना गया है। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज और उनकी पत्नि शकुन्तका का सम्वाद मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो मुनिवरों !संध्या का काल हो गया। सब ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने आसन को त्याग करके वह तो संध्या की पुलकित आनन्दमयी रमण कर गए। अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे। परन्तु महर्षि पिप्पलाद मुनि ने बहुत समय से अपने गृह को त्याग दिया था। वह मेरे पुत्रों !देखो अपने गृह में, उनका गृह बहुत ही आश्रम निकटतम था। वह अपने गृह में पहुंचे। उनकी मानो जैसे ही आश्रम में पहुँचे तो उनकी देवी व्याकुल हो गयी। और व्याकुल हो करके कहा, हे देवब्रह्म !पिप्पलाद मुनि बोले, देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा, हे प्रभु !मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। पिप्पलाद मुनि बोले, हे देवी !तुम्हें यह प्रतीत है, मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से पधार रहा हूँ। और ब्रह्मवेत्ताओं में मैं यह निर्णय देता रहता हूँ, क्या मृत्यु का अभाव है। तुम ये क्या उद्गीत गाने लगी हो। उन्होंने कहा, हे भगवन् !ये वाक्य मैंने स्वीकार कर लिया, क्या मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन्, क्या जो हमारे समीप मानो एक बाल्य था, और वह आज नहीं रहा। यह क्या है? परमाणुवाद मेरे पुत्रों !उन्होंने कहा, यही तो परमाणुओं का विच्छेद होना है। परमाणु अपने-अपने स्वरूप में प्रवेश हो जाते हैं। मानो देखो, आत्मा अपने-अपने रूप में चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों ! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने उद्गीत रूप में गाया। उन्होंने कहा हे भगवन् !चलो मैंने ये भी स्वीकार कर लिया। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या ये परमाणुवाद कहाँ रहता है, क्या है? उन्होंने कहा, इन परमाणुवाद से हमारा जो शरीर है, ये जो तुम्हारा शरीर है, ये परमाणुओं का ही तो एक सङ्घात है, परमाणुओं की प्रतिवृत्तियाँ कहलायी गयी है। उन्होंने कहा, हे दिव्यम् ब्रह्माः!, हे देव !ये परमाणुवाद, मानो जब मेरा ये शरीर इस रूप में नहीं था तो ये परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा, हे देवी !ये परमाणुवाद, जब तुम्हारा

शरीर इस रूप में नहीं था, इन्हीं परमाणुओं से माता के गर्भस्थल में मानो ये परमाणुवाद था और इन्हीं परमाणुओं से तुम्हारे इस मानव शरीर का निर्माण हो रहा था। और वह निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा था जो संसार का निर्माणवेत्ता है। जो निर्माणवृतम्, वह ऐसी पवित्र निर्माणशाला है। मानो जहाँ निर्माण होता रहता है माता के गर्भस्थल में, कहीं बुद्धि का निर्माण है, कहीं मेधा है, कहीं प्रज्ञा है, कहीं मानो देखो वृत्तियों में रत्त रहने वाली मानो कृषित्या कहलायी जाती है। हे देवी !निर्माण करने वाला, निर्माण कर रहा है। परन्तु मेरी भोली माँ को तो कोई ज्ञान नहीं होता। कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रों !देखो ऋषि कहता है, सम्भवब्रहे, मानो देखो माता के गर्भस्थल में जब निर्माणवेत्ता निर्माण करता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता रहता है। मानो देखो वो निर्माणवेत्ता वो चेतन्य देव है। निर्माण करता रहता है। वह कितना भव्य निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रों !देखो, माता के गर्भस्थल में, कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, कहीं प्रज्ञा का निर्माण हो रहा है। कहीं मेधावी है, कहीं ऋत्मभरा का निर्माण हो रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, हृदयस्थली में मानो देखो अनुष्ठान स्थली पर कहीं हृदय को स्वीकार किया गया है। कहीं मेरे पुत्रों !देखो, मानव के मस्तिष्क में मानवीयत्व में देखो वह हृदय को और अमृतम् को उन्होंने स्वीकार किया है।

मेरे पुत्रों !देखो, वह परमपिता परमात्मा निर्माणवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में बेटा !देखो, विज्ञान की पुष्टिता का हमें ज्ञान होता है। माता के गर्भस्थल में, हे देवी !एक बिन्दु होता है, उस बिन्दु में शिशु है। और शिशु के प्रवेश होते ही मानो सर्वत्र देवता उसकी रत्ता के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, चन्द्रमा अमृत देने लगता है। सूर्य प्रकाश देता है। और मुनिवरों !देखो, ये पृथ्वी गुरुत्व देना प्रारम्भ करती है। और देखो ये जल तरलत्त्व, "जलम् ब्रह्मणा व्रतम्"। मेरे प्यारे !देखो, जल ही उसका ओढ़न है, जल ही बिछौना है और जल ही पाशे बन करके, मेरे पुत्रों !देखो, शिशु पनप रहा है। अग्नि उष्णा बना रही है। वायु

प्राण दे रहा है, अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है। वा रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है। आज जब हम तेरे विज्ञान की महिमा का गुणगान हम गाने लगते हैं तो देखो वह शब्दों से वह गणगान गाया नहीं जाता। मेरे पत्रों !देखो .जब माता के गर्भस्थल में शिशु, हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो मेरे पुत्रों !देखो यह जलम् धरत्व प्रमाणम् ब्रव्हे। मेरे प्यारे !देखो, यह जो आपोमयी ज्योति है जिसे हम जल के रूप में वर्णित करते रहते हैं यही बेटा !देखो, आसन बन करके रहता है। ओढ़न और पाशे बन करके और उसी के आङ्गन में बेटा ! विद्यमान रहता है, परन्तु चन्द्रमा अमृत दे रहा है। मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं है कैसे अमृत दिया जा रहा है। जब हम आयुर्वेद की दृष्टि से अथवा वैदिक सिद्धान्त से इसको हम विचारने लगते हैं तो मेरे प्यारे !देखो माता के रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। और नाड़ी का, अमृतम् बेटा !उस नाड़ी का समन्वय पुरातत्त्व नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत्व नाम की नाड़ी का जो समन्वय है, वह मुनिवरों !देखो, माता की लोरियों से और माता की लोरियों से पश्चम नाड़ी बन करके चलती है। और वह मुनिवरों !देखो, माता की नाभि से और बाल्य की नाभि से उसका समन्वय हो जाता है। बेटा ! अमृत बहाया जा रहा है। अमृतमयी पान किया जा रहा है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है सर्वत्र विज्ञानधारा को आपने मानो शिशु की पालना में ही अर्पित किया है। इससे बेटा !हमें यह सिद्ध होता है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। तो मुनिवरों !देखो, "ब्रह्मणे व्रतम् देवाः" जब ऋषि ने इस प्रकार अपनी देवी को वर्णन कराया। हे देवी !मानो देखो, यही तो अमृत है, इसी को तो पान करना है। इस विज्ञानधारा में रत्त रह करके अपनी मानवीय दर्शन के ऊपर अध्ययन करना है। मेरे पुत्रों !देखो, इतने में देवी ने कहा, प्रभु !ये वाक्य तो देखो मेरी प्यारी माता मुझे वर्णन कराती रही हैं। और विद्यालय में, मैं जब अध्ययन करती थी तो मुझे इस ज्ञान की चर्चाएँ, विज्ञान की विवेचनाएँ प्रायः होती रही हैं। हे प्रभु !मैं यह जानना चाहती हूँ जब माता का

गर्भाशय नहीं होता, तो ये परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन् !उन्होंने कहा, हे देवी !ये परमाणुवाद, जब माता का गर्भाशय नहीं होता तो ये परमाणुवाद मानो देखो कुछ वीरत्व में रहते हैं, कुछ मानो वीराङ्गनात्व में रहती हैं। इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीराङ्गना बन जाती है। इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो मुनिवरों !देखो, ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। ब्रह्मव!सि बन जाता है और वो देवताओं की सभा में सुशोभनीयता में दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रों ! विचार आता रहता है “सम्भवम् ब्रह्मणे सम्भवा लोकाम्" वेद का आचार्य कहता है, मेरे पुत्रों !देखो वीराङ्गना के सम्बन्ध में, क्या इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीराङ्गना बन करके मुनिवरों !देखो वेदों का उद्गीत गाती है। ऋषि कहता है-हे देवी !एक समय मुझे स्मरण है, क्या मानो हम भयङ्कर वन में चले गए। तो भयङ्कर वनों में मुनिवरों !देखो वीराङ्गना चाक्राणी गार्गी अपने में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करती हुई, मानो देखो परमाणुओं की रक्षा करने वाली, दिव्याम् भूतम् ब्रह्मणेः। मानो देखो वेदों का उद्गीत गा रही थी। भयङ्कर वनों में एकान्त स्थलियों में वेदों का उच्चारण करती हुईं, मन्त्रों में उच्चारण करती हुई अपने में मानो रत्त हो रही थी। शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों !देखो, अपने में गान गा रही थी।

मुनिवरों !देखो, उनके आश्रम में श्रवण करने वाले सिंहराज, श्रवण करने वाले मृगराज, सर्पराज, बेटा !देखो उसकी आभा को अपने में ग्रहण कर रहे थे। मेरे पुत्रों !देखो, वेदों का जो ज्ञान है अथवा जो गान है, जब इसको जटा पाठ या माला पाठ में गाया जाता है तो मानो देखो अपनी बाह्य प्रवृत्तियों से आन्तरिक जगत में प्रवेश हो करके जब गान गाता है तो मेरे पुत्रों !कोई प्राणी ऐसा अभागा नहीं है जो अपने पिता की मानो देखो गुणों को गुणवादन अथवा उसके गुणों को अपने में श्रवण करने वाला न हो। मेरे पुत्रों !देखो, सर्पराज उस ध्वनि को अपने में श्रवण कर रहा है, सिंहराज उस ध्वनि को अपने में श्रवण कर रहा है। मेरे पुत्रों !देखो कैसा ये प्रियतम गायन है। जब मेरे पत्रों !देखो, हमारे यहाँ जब वेदों

का उद्गीत गाने वाला माला पाठ में गाता है, जटा पाठ में गाता है। उदात्त, अनुदात्त में गान गाने वाला बन जाता है तो बेटा !प्रत्येक प्राणी उसको श्रवण करने के लिए तत्पर हो जाता है। क्योंकि सर्वत्र प्राणियों का वह एक मात्र प्रभु ही पितर के रूप में परणित रहता है, माता के रूप में परणित रहता है। तो उसकी महिमा और उसकी महानता को बेटा !कौन प्राणी नहीं चाहता है कि हम उसको ग्रहण न करें। प्रत्येक प्राणी चाहता रहता है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी !इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्रियाँ वीराङ्गना अपने ब्रह्मवर्चोसि का पालन करती हैं और अपने में धारयामि बन करके गान गाने वाली हैं। मेरे पुत्रों !देखो, वेदों का जब उद्गीत गाया जाता है तो प्रत्येक प्राणी की अन्तरात्मा में एक मानो आत्मीयता के भाव उसमें उत्पन्न हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, ये वीराङ्गना है और एक वीरत्व कहा जाता है, वही परमाणु बेटा !वीरत्व के रूप में विद्यमान रहते हैं। वीरत्व वह कहलाता है जो ब्रह्मवर्चोसि का पालन करता है। मेरे पत्रों !मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों से यही प्रश्न करते रहे। मेरे पुत्रों !देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि ने कहा, हे देवी !ये प्रश्न, बड़े प्रशंसनीय कहलाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है, मैं भी इन प्रश्नों को, करता रहा हूँ। अपने पूज्यपाद गुरु देव के समीप विद्यमान हो करके मैं इन प्रश्नों को, जिज्ञासा को ले करके मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव के समीप जब विद्यमान होता तो मैं कहता रहता, हे प्रभु !ये वीरत्व क्या है? तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि वीरत्व वह जो परमाणुओं की रक्षा करने वाला हो। जो अपने में ओज और तेज की उत्पत्ति करने वाला हो। मानो देखो, उसे वीरत्व कहते हैं। मैं, अपने पूज्यपाद गुरु देव से पुनः ये प्रश्न करता कि हे भगवन् !ये वीरत्व कौन है? तो उस समय देखो, पूज्यपाद गुरु देव, मुझे इसका उत्तर देते, क्या वीरत्व वह कहलाता है, जो मानो अपने परमाणुओं की रक्षा करता हुआ वीरत्व, मानो उस ब्रह्म की आभा में रत्त रहने वाला हो। मेरे पुत्रों !ब्रह्म की आभा क्या है? ब्रह्म का ज्ञान और विज्ञान

इतना अलौकिक और अनूठा कहा जाता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही विचार-विनिमय करता रहा है। हे दिव्या! "ब्रह्मणे ऋतम्" मानो देखो उन्होंने कहा कि वीरत्व ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव से ये प्रश्न करता रहा कि ये ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म और चरि को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जो प्रकृति को और ब्रह्म को अङ्गों-उपाङ्गों से जानने वाला है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। जब मैंने पुनः ये प्रश्न किया, क्या महाराज, ब्रह्मचारी कौन है। तब देखो, पूज्यपाद यह कहते कि ब्रह्मवर्चसम् ब्रह्माः मानो जो ब्रह्मचारी प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके, जैसे देखो, नेत्रों का जो विषय है, वह रूप है और चक्षुओं का जो मानो स्वरूप है वह शब्दम् ब्रह्मा है, शब्द है। रसना का विषय रस है और घ्राण का विषय गन्ध-सुगन्ध है। और मुनिवरों !देखो, त्वचा का विषय अमृतम् स्पर्श है। ये प्रत्येक इन्द्रियों के पञ्चीकरण को ले करके जो इनका साकल्य बनाना जानता है, जो इनका साकल्य बना करके अन्तिम मानो साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में जो याग करता है। मानो देखो यजन करता है, वह ध्यावस्थित हो जाता है। मन और प्राण को ले करके, मेरे पुत्रों !देखो, विचार-विनिमय करता है, वो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी!, मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव से पुनः बोला कि हे देवत्वम् !हे ऋषिवर !मैं जानना चाहता हूँ, ये ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो प्रत्येक मानो श्वास की जो गतियाँ चल रही

हैं, प्रत्येक श्वास का मनका बना करके जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है, मेरे पुत्रों !देखो वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

वेद के आचार्य ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा, हे दिव्या ! मैंने पुनः कहा कि भगवन् ये ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो प्रत्येक अपने शरीर में जितने अङ्ग हैं और छ उनमें जो चक्र हैं,

अष्ट चक्रा नौ द्वारा, मानो देखो ऐसी अयोध्यापुरी को जो जानने वाला है, और जान करके उसके निर्माणवेत्ता ब्रह्म को स्वीकार करता है तो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने जब ये कहा, हे देवी !मेरे पितर ने, मेरे आचार्य ने मुझे जो निर्णय कराया है, मैं आज तुम्हें वो निर्णय दे रहा हूँ। तुम इसको स्वीकार करो। उन्होंने कहा, "ब्रह्मणे ऋतम ब्रह्मणे रुद्राः ब्रह्मणे ऋतम देवत्वाम् देवाः" क्या ब्रह्मणे व्रतम, जो ब्रह्म को जानने वाला है। मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्म की चरि को जो चरने वाला है वह ब्रह्मचारी है। ब्रह्म की चरि को कौन चरता है, मेरे पुत्रों !उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि को, जो परमाणुओं की रक्षा करना जानता है। मेरे प्यारे !जो ब्रह्म को और चरि को, दोनों को एक सूत्र में लाता हुआ और मुनिवरों !देखो मनस्तत्त्व को उसमें पिरो देता है, वही मुनिवरों !देखो, ब्रह्मचारी कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे !मैं बहुत विशाल वन में नहीं जाना चाहता हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ। तुम्हें केवल मैं एक परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है। परिचय ये है कि ब्रह्मम् ब्रहे ऋदम्, उन्होंने कहा-हे देवी !संसार में यही परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मवेत्ता कहलाता है, ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मव!सि बन जाता है और वही मानो देखो अन्धकार से प्रकाश के लिए गमन करता है। मुनिवरों !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया-वर्णनवेत्ता जब वर्णन करने वाले ने, तो देवी ने कहा हे प्रभु !मैं जानना चाहती हूँ भगवन्, जब मानो ये माता देखो वीरत्व और वीराङ्गना भी नहीं होते तो इन परमाणुओं की रक्षा, अमृतम ब्रह्मेः ये परमाणुवाद कहाँ चला जाता है? सात प्रकार का अन्न मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी !तुम्हें ये प्रतीत है कि सृष्टि के पिता ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है। जब सृष्टि को ये सृजन किया गया। मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का जिसने सृजन किया है उसी देव ने, मुनिवरों !देखो, सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। और सात प्रकार अन्न क्या है, उस अन्न को तुम जानते हो। दो प्रकार का अन्न सबसे प्रथम देखो यह जो अन्न है, यह साझा

अन्न कहलाता है। एक ही पौधा है उस पे दो प्रकार का अन्न कहलाया गया है। एक अन्न को मानव पान करता है मनस्तत्त्व और एक को मानो देखो ये पशु इत्यादि पान करते रहते हैं। मेरे प्यारे !देखो, जब मानव उसे पान करता है तो वह ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। और जब पशु पान कर रहा है तो मेरे पुत्रों !देखो, वह पय दे रहा है, वह दुग्ध दे रहा है। वह मुनिवरों !देखो, नाना प्रकार के अव्ययों को प्रदान कर रहा है। ये सृष्टि के पिता ने बेटा !एक पौधे को उत्पन्न किया। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है। बेटा !एक ही पौधा है उसे मेरे पुत्रों !देखो, उस पे दो प्रकार का अन्न विद्यमान है। एक मानव का है, तो एक पशु अन्न कहलाता है। एक पय कहलाता है, एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है। एक अन्न मेरे पुत्रों !देखो पशु पान करता हुआ देखो पय दे रहा है, दुग्ध दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब मैं तेरे विज्ञान की महिमा का गुणगान गाने लगता हूँ तो मुनिवरों !देखो, कोई शब्द नहीं प्राप्त होता जो मैं आपकी प्रशंसनीयता का वर्णन कर सकूँ।

आओ मेरे पुत्रों !वेद का ऋषि कहता है, एक ही पौधा है। एक अन्न को मुनिवरों !देखो मानव पान कर रहा है औज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। वीरत्व को प्राप्त करा रहा है। और दूसरा जो अन्न है बेटा !ये दोनों अन्न सबके साझे अन्न कहलाते हैं। इसको साझा अन्न कहते हैं। तीसरा अन्न-हुत तीसरा जो अन्न है मेरे पुत्रों !देखो, उसे हुत कहते हैं। आहुति देने वाले को याग करने वाला याज्ञिक याग कर रहा है और वह हुत कर रहा है। अग्नि के मुखारबिन्द में बेटा ! नाना प्रकार के साकल्यों को प्रदान कर रहा है। मुनिवरों !देखों, अग्नि उसे सूक्ष्म बना देती है। उसको मेरे प्यारे !देखो, विभाजन करती हुई, और विभक्त करती हुई मुनिवरों !देखो, एक-एक परमाणु को शोधन करती चली जाती है। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों !देखो, इसी विचार को ले करके, इसी हुत को ले करके ऋषि-मुनियों ने बड़ा गम्भीर अध्ययन किया है। जब मैं इन विचारों में प्रवेश करने लगता हूँ तो बेटा !एक अपने में अपनेपन का ही ध्यान आने लगता है। अपने में

अपनेपन में समाहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो हुत करना, आहुति देना अग्नि में बेटा !देखो नाना प्रकार के साकल्य पदार्थों को प्रदान करना वो हुत-याज्ञिक बेटा !अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है और यज्ञशाला में अपने पुरोहित से 'कहता है-हे पुरोहित !हे परविद्या के देने वाले वाले, हे पुरोहित !मेरी त्रुटियों को शान्त करने वाले आ मैं अमृतम् देखो अग्नि के मुखारबिन्द में मैं साकल्य प्रदान करना चाहता हूँ। क्योंकि अन्नम् ब्रह्मणाः मैं होत्रि हूँ। मानो देखो, ये जो अग्नि है, ये सब देवताओं का मुख कहलाता है। ये देवताओं का मुख बन करके, ये सर्वत्रता में मानो प्रदान कर रहा है। देवता मानो देखो प्रसन्न हो रहे हैं।

मुनिवरों !देखो, ऋषियों ने एक लोलुती प्रगट की इस सम्बन्ध में। कहते हैं कि एक समय, याग को मुनिवरों !देखो काला हिरण ले गया। और काले हिरण ने मुनिवरों !देखो वत्रासुर को प्रदान कर दिया। और वत्रासुर जब मानो देखो अभिमानी बन गया तो उस समय देखो अमृतम् मुनिवरों !देखो, इन्द्र और शचि ने जब इन्द्र से कहा, हे प्रभु !वत्रासुर का हनन होना चाहिए। तो उस समय देखो इन्द्र का, इन्द्र ने मानो अपने वज्र से उसको वर्जित करते हुए उस पर आक्रमण करके बेटा !धीमी-धीमी वृष्टि के रूप में वत्रासुर का विनाश हो गया। तो विचार आता रहता है बेटा !ऋषि-मुनियों ने अपनी बड़ी विचित्र लोलुप्तियों में कहा है क्या वह जो काला हिरण है वह मानो धुन्ध है। और याग को मुनिवरों !देखो, वह भावनाओं को और याग की सुगन्ध को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे !देखो, उससे मेघ मण्डलों का निर्माण होता है, मेघ मण्डलों को वत्रासुर कहा जाता है। मुनिवरों !देखो जब वत्रासुर छा जाता है तो उस समय मङ्गलम् ब्रव्हे, मेरे पुत्रों !वायु कहते हैं इन्द्र को और विद्युत कहते हैं शचि को, दोनों का सम्मिलन हो करके प्राणरूपी वज्र का जब निर्माण होता है और वह मेघ मण्डल पे जब आक्रमण किया जाता है वत्रासुर पर, तो उससे बेटा !वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है और जब ये वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है तो मुनिवरों !देखो, प्रथम ब्रह्माः व्रतम् देवत्वाम्, तो वह देखो, गऊ के बछड़े की यहाँ बलि का वर्णन आता रहा

है। मुनिवरों !देखो, बलि का अभिपायः देखो उसे नष्ट करना नहीं है। बलि का अभिप्रायः है पुरुषार्थ करना। और वह अपने पुरुषार्थ से मुनिवरों !देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रणाः, मानो देखो बीज की स्थापना करा देता है ये पृथ्वी, बेटा !नाना प्रकार की अन्नवान बन जाती है, नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है यही तो पृथ्वी है बेटा !जो गऊ के बछड़ों के आश्रित हो करके नाना प्रकार के अन्ननाद को प्रदान करती रहती है।

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने जा रहा हूँ बेटा ! विचार ये दे रहा हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, अमृतम् ब्रह्मणाः, ये तीसरा अन्न कहलाता है जो सृष्टि के पिता ने, बेटा !हुत के रूप में जिसकी रचना की है। मेरे प्यारे !इससे सूक्ष्म देवतात्त्व इससे प्रसन्न होते हैं। इसी अन्न से वायु मण्डल पवित्र बनता है। इसी याग से बेटा !अग्नि के मुखारबिन्द में साकल्य प्रदान करने से प्रदूषण प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है 1 और आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनों का निर्माण हो जाता है।

मेरे पुत्रों !याग के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बड़ी मानो देखो लेखनियाँ बद्ध की हैं। अपना विचार दिया है। परन्तु उनके विचारों की जो उड़ान रही है वह बड़ी विचित्रतम उड़ाने रही हैं। जिस उड़ान के सम्बन्ध में ऋषि-मुनि बेटा !अपना-अपना वक्तव्य देते रहे हैं। आओ मेरे पुत्रों !देखो ऋषि ने कहा, हे देवी !तुम्हें ये प्रतीत हो गया होगा, ये तीसरा अन्न कहलाता है। इसे हुत कहते हैं। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है याग कर रहा है, हुत कर रहा है और देवताओं को अपना साकल्य और अपने मनों की वृत्तियों को प्रदान कर रहा है। मेरे पुत्रों ! देखो, ऋषि कहता है, हे देवी !यही हुत कहलाता है, ये तीसरा अन्न कहलाता है। चौथा अन्न-प्रहुत चौथा जो अन्न है वह मानो देखो प्रहुत कहलाता है। हमें पुरोहित के लिए, हमारे आचार्यों ने ये कहा है कि वास्तव में यथार्थ जो पुरोहित है वह तो परमपिता परमात्मा है। परन्तु दूसरा जो पुरोहित है वह जो पराविद्या को मानो सिमट करके .वह देने वाला है। अपनी जो विद्या है .जो धनुर्विद्या को प्रदान

कराता है। देखो अश्वमेध याग में, ज्ञान को परणित कर देता है। अजामेध याग में परणित कर देता है। मेरे पुत्रों !देखो उसे पुरोहित कहा जाता है। वह “पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मणाः क्रतम, देवत्वाम लोकाम् वर्णाब्रहे क्रतम्"। मेरे प्यारे !देखो वह पुरोहित कहलाता है। मुझे स्मरण आ रहा है, आओ बेटा !मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ। पुरोहित वह कहलाता है जो राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए सदैव मानो अपनी मनोवृत्तियों को प्रदान करता रहता है, वह ब्रह्म विद्या में रत्त रहता है। वह बाह्य मानो देखो वह अपने में भौतिक विज्ञान में रत्त रहने वाला है। मेरे पुत्रों !देखो, एक समय महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अपनी स्थली पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे !देखो महात्मा वशिष्ठ ने कहा, ब्रह्मवेत्ता ने, हे विश्वामित्र !देखो मेरी इच्छा यह है कि तुम धनुर्याग करो। क्योंकि देखो, ये जो राष्ट्र चल रहा है ये राष्ट्र मानो देखो उन्नत होना चाहिए। समाज में एक महानता का प्रदर्शन होना चाहिए। इससे धनुर्याग करो। मेरे पुत्रों !देखो, महर्षि विश्वामित्र ने कहा, बहुत प्रियतम।

मुनिवरों !देखो वह आज्ञा पा करके वशिष्ठ मुनि महाराज की वह भ्रमण करते हुए बेटा !देखो अयोध्या में उनका गमन हुआ। अयोध्या में जब गमन हुआ तो राजा को जब ये प्रतीत हुआ कि आज तो महर्षि का आगमन हो रहा है। तो उन्होंने ब्रह्मणे आश्चर्य में हो करके कहा, क्या बिना सूचना के ऋषि का आगमन। मेरे पुत्रों !देखो जब राजा के समीप पहुँचे और राजा से ये कहा, अमृतम्, राजा ने अपने आसन को त्याग दिया। और आसन को त्यागने के पश्चात् उन्होंने कहा, आइए भगवन् विराजिए। वह विराजमान हो गए। उन्होंने कहा, सम्भूति ब्रह्मणाः सम्भूति लोकाम् वाचन्नमम् ब्रहेअस्सुतम्।

मेरे प्यारे !राजा दशरथ ने कहा, हे प्रभु !आप बिना सूचना के आए हैं, इसका क्या कारण है। हम जान नहीं पाए हैं, आप सूचना कर देते तो हम अपने वाहनों में आपको देखो, यहाँ आपका पदार्पण होता। आपके स्वागतार्थ के लिए सर्व नगरी और देखो राष्ट्र तुम्हारा, तुम्हारे लिए समर्पित होता। उन्होंने कहा कोई

बात नहीं, मेरी इच्छा ऐसी बनी, परन्तु देखो मैं किसी कार्यवश आ पहुँचा हूँ। उन्होंने कहा, प्रभु !आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा, मुझे राजकुमार चाहिए। और मैं राजकुमारों के द्वारा, मैं अपने याग को सम्पन्न कराना चाहता हूँ। मैं दण्डक वनों में एक धनुर्याग कर रहा हूँ। तो उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम् भगवन् !मैं राजा हूँ, बाल्य तो किशोर हैं। प्रभु मैं आपके याग को सम्पन्न कराऊँगा। उन्होंने कहा, नहीं, मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे !देखो, दोनों का ये विचार-विनिमय हो रहा था। इतने में राजलक्ष्मियों ने, जब ये श्रवण किया कि आज तो ऋषि का आगमन हो रहा है। तो बेटा !कौशल्या इत्यादि सर्व राजलक्ष्मियाँ, ये मेरे पुत्रों ! देखो, वह भी ऋषि के दर्शनार्थ के लिए, ऋषि के चरणों की वन्दना और उनकी सेवा के लिए अग्रतम, मेरे पुत्रों !कुछ अन्न इत्यादि ले करके पहुँची। और उन्होंने बारी-बारी चरणों को स्पर्श किया। मेरे पुत्रों !कौशल्या जी ने कहा, कहो भगवन् ! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा हे दिव्या !मैं अपने यहाँ एक दण्डक वन में याग करा रहा हूँ, धनुर्याग और मैं राजकुमारों को ले जाना चाहता हूँ। परन्तु राजा स्वीकार नहीं कर रहे हैं? उन्होंने कहा, कहो भगवन्, आप क्यों नहीं स्वीकार कर रहे हैं? उन्होंने कहा, हे देवी !मैं इसलिए स्वीकार नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि बाल्य किशोर हैं और मैं धनुर्याग को पूर्ण करूँगा। उन्होंने कहा, नहीं भगवन्,आप राजकुमारों को प्रदान कीजिए। क्योंकि ये हमारे पुरोहित हैं, पराविद्या के देने वाले हैं। मानो यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य, यदि ऋषि की सेवा नहीं कर सकते, अपने में अपनेपने को समा नहीं सकते तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा प्रभु !मेरे प्यारे !देखो जब कौशल्या जी ने इन शब्दों को उद्गीत रूप में गाया तो राजा ने स्वीकार किया। राजा मौन हो गए। मेरे पुत्रों !देखो, राजकुमारों को ले करके वे धनुर्याग करने के लिए तत्पर हो गए।

मुझे स्मरण आता रहता है। मेरे पुत्रों !देखो, एक सौ पचासी ब्रह्मचारी उनके विद्यालय में धनुर्याग की शिक्षा पान करते रहे। तो मेरे पुत्रों !देखो वह पुरोहित कहलाते हैं जो राष्ट्र और समाज के लिए सदैव मानो अपनी सुकामना और

सुविचार और सुक्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहते हैं। मानो वे पुरोहित कहलाते हैं। इसीलिए पराविद्या को हमें विचारना चाहिए। हे देवी !सृष्टि के पिता ने मानो चौथे अन्न की उत्पत्ति करते हुए कहा कि ये पुरोहित जो हैं, ये भी अन्नाद कहलाता है। अन्नाद का अभिप्रायः है कि जिससे देखो संसार अपनी आभा में सदैव परणित रहा है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी !ये मानो देखो सात प्रकार का अन्न, मेरे पिता ने रचना में लाने का प्रयास किया है। तो मुनिवरों !देखो, ऋषि ने कहा "पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मणाः लोकाम्, हिरण्यम् व्रथम ब्रहे ऋतम देवाः।" _मेरे पुत्रों ! देखो वह महाराजा विश्वामित्र उन राजकुमारों को ले करके दण्डक वनों में, मेरे पुत्रों !देखो, धनुर्विद्या को प्रदान कराने लगे। नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन करना, उनमें एक धनुर्याग भी है। जैसे बेटा !हमारे यहाँ वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, अश्वमेध याग है, अजामेध याग है। मेरे प्यारे !विष्णु याग है, रुद्र याग है, ब्रह्म याग है। नाना प्रकार के यागों में एक याग बेटा !देखो, धनुर्याग भी कहा जाता है। नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। तो आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार-विनिमय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का चिन्तन करते हुए और ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हुए, बेटा !उस परमपिता परमात्मा के स्वरूप को हम सदैव जानने वाले बने। ये है बेटा !आज का वाक्।

आज का वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, मुनिवरों !देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज अपनी देवी को ये शिक्षा दे रहे थे, ये वर्णन करा रहे थे, क्या संसार में देखो "ब्रह्मणेः व्रतम देवाः आत्माः" मानो देखो आत्मा के स्वरूप को जानने का प्रयास करो। तो बेटा !ये चर्चाएँ, वह जो तीन अन्न रह गए हैं, उनकी चर्चाएँ मैं कल प्रगट कर सकूँगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, क्या परमपिता परमात्मा का विज्ञान, ज्ञान कितना अनुपम है, कितना देवत्व से मानो परिपर्ण है। समय मिलेगा तो हम शेष चर्चाएँ बेटा !आगे

तीन अन्नों की चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज मैंने चार प्रकार के अन्न की विवेचना की। ये भी बेटा !देखो, व्याख्या के रूप में नहीं केवल संक्षिप्त परिचय दिया और इससे आगे का परिचय हम कल दे सकेंगे।

आज का विचार बेटा !यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती का चिन्तन करते हुए और मुनिवरों !देखो उसमें रत्त रहते हुए वह परमपिता परमात्मा, बेटा !जितना भी ये जड़ जगत और चेतन्य जगत 'है, उस सर्वत्र दोनों प्रकार के ब्रह्माण्ड में जो ओतप्रोत हो रहा है। मानो उसको संचालन कर रहा है, वह परमपिता परमात्मा कहलाता है। आओ मेरे प्यारे !मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् ब्रह्माः आपाः आभ्याम् रथम् मा वायु गताः। ओ३म् तनु गन्धर्व प्रजाहम् आभ्याम् देवाः। यम रथश्च सञ्जनाः आप्याम् लोकाः। ओ३म् वसुप्राची रथम् आभ्याम् लोकाः। दिनाँक :3 फरवरी, 1990 समय :सायँ 4 बजे स्थान :श्री आलम सिंह ए-42, शास्त्रीनगर जोधपुर, राजस्थान।

१० 04 02 1990 आत्मा के स्वरूप (द्वितीय-भाग)

जीते रहो! देखो मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि ये जगत दो प्रकार का माना गया है एक जड़वत् है तो द्वितीय चेतन्यवत् कहा जाता है। परन्तु चेतना के गर्भ में ज्ञान और प्रयत्न रहता है और जो ज्ञान और प्रयत्न से शून्य जगत है उसको जड़वत् माना गया है।

आत्म-चिन्तन

इसलिए हम ये विचारते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा इतना अनूठा है और इतना ज्ञान और विज्ञानमयी है कि वे दोनों प्रकार के जगत में निहित रहते हैं। वे जड़वत् में भी हैं और चेतना में भी निहित रहते हैं परन्तु ज्ञान और प्रयत्न, ये आत्मा का मौलिक गुण माना गया है। परन्तु जड़म् ब्रव्हा कृतम देवाः और ये जो जगत है, जितने भी लोक-लोकान्तर हैं, जितना भी ये पिण्ड रूप है और पिण्ड में जो गतियाँ हो रही हैं वो सर्वत्र जड़वत् माना गया है। क्योंकि उनमें ज्ञान और प्रयत्न नहीं है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है, क्या वह जो परमपिता परमात्मा, जो अन्नतवान् है और इन दोनों प्रकार के जगत् में निहित रहने वाला है, वह हमारा पूज्य है और हमारा देवत्व माना गया है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें जिससे हमारा मनोनीत हृदय पवित्रता को प्राप्त होता रहे। और हम परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड में जितना भी ज्ञान और प्रयत्न है, मानो विज्ञान है, उसको जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। क्योंकि यदि हम संसार की प्रत्येक वस्तु को अथवा परमात्मा की प्रतिभा को जब तक नहीं जानेंगे हमारे में प्रकाश नहीं हो सकेगा। क्योंकि हमने इससे पूर्व काल में ये कहा है प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान काल तक ही अन्वेषण करता रहा है कि हमारा जीवन आनन्द में ही प्राप्त हो जाए और हम उसी के लिए ही सर्वत्र प्रयत्नशील रहते हैं। नाना प्रकार के द्रव्य का उपार्जन करते हैं। संसार की प्रत्येक वस्त में मानो हम रत्त रह करके उसको गम्भीरता से दृष्टिपात करते रहते हैं। परन्तु उनका केवल एक ही मन्तव्य होता है कि हमारे जीवन में मानो एक महानता की प्राप्ति हो जाए और हम महान् बन जाए। परन्तु महान् वो व्यक्तित्व कहलाता है जिसका अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है। और आत्मा यदि अन्तःकरण मानव का प्रसन्न नहीं है तो जितना भी संसार का वैभव है अथवा प्रतिभा है वो सर्वत्र न होने के तुल्य मानी गयी है। तो मुनिवरों !देखो आत्म चिन्तन होना बहुत अनिवार्य है और आत्मत्व में हम सदैव प्रसन्न रहें। और

चित्रों रथम् ब्रह्माः, चित्र एक रथ की भाँति हम अपने में दृष्टिपात करते रहें। प्रेरणा की प्रतिभा आओ मेरे पुत्रों !आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें एक प्रेरणा दे रहा है क्योंकि ये तो ये संसार सर्वत्र प्रेरणा का स्रोत है। एक-दूसरे से प्रेरणा प्राप्त करता रहता है और वह प्रेरित होता रहता है। संसार के नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव वो रत्त रहता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा जो प्रेरणा का स्रोत है, प्रेरणा की प्रतिभा कहलाता है हम उस परमपिता परमात्मा की महती को जानने का सदैव प्रयास करें। क्योंकि इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें ये प्रगट कराया था क्या प्रत्येक मानव आनन्द को चाहता है और प्रकाश में रत्त रहना चाहता है। बेटा !वेदों का उदगीत गाया जा रहा है। और वेद का जब उदगीत गाया जा रहा है तो जिस समय वो हृदय से गान गाता है वह हृदय अगमता को प्राप्त होता हुआ, हृदयग्राही बन करके अपने में ही वो संतुष्ट हो करके अपने को ही प्राप्त करता रहता है। मेरे प्यारे !देखो वह जो परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है वो बड़ा अनूठा माना गया है। मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ, क्योंकि विज्ञान अपनी आभा में सदैव नृत करता रहा है। और प्रत्येक मानव के मस्तिष्कों में सदैव विज्ञान की प्रतिभा का जन्म होता रहा है। और वह उसमें प्रयास करता रहा है।

साझा अन्न

मेरे पुत्रों !आओ, आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों !देखो, महर्षि विश्वामित्र अपने में धनुर्याग कर रहे थे। और वह मुनिवरों ! देखो हमारे यहाँ प्रहुत कहा जाता है। मेरे पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में, बेटा !सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया था। तो मुनिवरों !देखो चार प्रकार का जो अन्न है वो सबका साझा अन्न कहलाता है। वह सबमें सम्मिलित रहने वाला है। मेरे प्यारे !माता जब भोजनालय में भोजन को तपायमान करती है तो अपने लिए नहीं कर रही है। वह मानो देखो सबका साझा अन्न है। मेरे प्यारे !देखो पय देने वाला रात्तम् प्राणीवृत्तम् देवत्वाम्, मेरे प्यारे !दुग्ध देता है वो भी साझा अन्न है।

जो हुत कर रहा है यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अग्नि के मुखाबिन्दु में पदार्थों को प्रदान कर रहा है वह भी मुनिवरों !देखो सबका साझा अन्न है। वह आत्मा को प्राप्त होता है। वह मानो दिशाओं को प्राप्त होता है, वह मुनिवरों !पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। वह सूर्य की किरण अपनी आभा में परणित कर लेती हैं। चन्द्रमा की कान्ति अपने धारण करती हुई समुद्रों से मिलान करती हैं, वही सोम बन जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, वह अपने में कितना विचित्रत्व माना गया है। तो विचार आता रहता है बेटा !ये चार प्रकार का, जो मैंने मानो चतुष प्रकार के देखो पुरोहितों की चर्चाएँ की हैं वास्तव में पुरोहित तो परमपिता परमात्मा है। पुरोहित उसे कहते हैं जो प्रेरणा का स्रोत है, प्रेरणा को देने वाला है। मेरे पुत्रों ! एक मानव अपने में मानवीय चिन्तन कर रहा है और उसके चिन्तन में अशोभनीय चिन्तन हो जाता है तो उसे अन्तरात्मा से ही प्रेरणा प्राप्त होती रहती है और उसी प्रेरणा के आधार पर यदि वो अपने जीवन को तत्पर बना लेता है तो उसके जीवन का कल्याण हो जाता है और यदि मुनिवरों !देखो, उसकी अवहेलना कर देता है तो मानो नार्किक बन जाता है। पुरोहित के स्वरूप विचार आता रहता है कि वास्तव में यथार्थ स्वामी तो पुरोहित वह परमपिता परमात्मा है, जो प्रकाश के देने वाला है। अन्धकार से दूरी करने वाला है। जिसे वेदों ने बेटा !विष्णु कहा है। विष्णु कहते हैं परमपिता परमात्मा को जो पालन करने वाला है। पालना कर रहा है। पालना के स्रोत में बेटा !वास्तव में जब पर्यायवाची शब्दों में प्रवेश करने लगते हैं तो पर्यायवाची शब्दों में बेटा !विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो सृष्टि का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है, सत्य में ही रमण करने वाला है। वह "सत्यमेव रमण ब्रहाः' मेरे प्यारे !देखो उसे विष्णु कहा जाता है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जब विष्णु की विवेचना प्रारम्भ होती है कि विष्णु क्या है। तो वेद का ऋषि कहता है "पालनाति ब्रह्मणे विष्णुः" मेरे प्यारे !जो पालना करने वाला है वही विष्णु कहलाता है। हमारे यहाँ आचार्यों ने इसके ऊपर विचार-विनिमय करते हुए कहा है कि जो भी पालना कर रहा है, उस पालना में माता

भी आती है, उसी पालना में आत्मा भी आता है। उसी पालना में बेटा !सूर्य भी आता है। ये नाना पर्यायवाची शब्द हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आते रहते हैं।

मेरे पुत्रों !देखो जो पालना करने वाला है वही विष्णु कहलाता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा देखो पालना करता है क्योंकि सत्य के बिना पालना नहीं उत्पन्न होती तो इसीलिए उसका नाम विष्णु है। माता जब पालना करती है तो माता का नाम भी विष्णु है। क्योंकि वह मुनिवरों !देखो सतोगुण से शिक्षा दे रही है, लोरियों का पान करा रही है। वेद के आचार्यों ने तो यहाँ तक कहा है कि माता वो ममत्वाम् को प्राप्त हो जाती है जो माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट करने वाली हो।

मेरे पुत्रों !बड़ा विचित्र एक वाक्य प्रगट कर रहा हूँ। वेद का मन्त्र कहता है "ममत्वम् प्राणाम् ब्रहे, ऋतम देवत्वाम् प्राणाम् ब्रहा ऋदम उद्वय प्रव्हे लोकाम् वर्चस्सुते।" मेरे प्यारे !ये वेद का मन्त्र आता है। हे माता !जब तू महान् बनना चाहती है, महान् सन्तान को और देवत्व को जन्म देना चाहती है, तो उस समय मानो देखो, तू प्राण और अपान को अपने में धारण करने वाली बन। क्योंकि जब प्राण को अपान से, अपान को व्यान से और व्यान को समान में और समान को उदान में जब प्रवेश कर दिया जाता है तो मेरे प्यारे !देखो माता अपने गर्भ के आत्मा से, शिशु से वार्ता प्रगट करने लगती है।

मेरे पुत्रों !ये बड़ा विशिष्ठ एक विज्ञान और साधनामयी मानो देखो विचार माना गया है। मुझे स्मरण आता रहता है जब माता मदालसा के गर्भस्थल में यह आत्मा का जैसे ही प्रवेश होता था उसी समय मानो देखो वो प्राण और अपान का समन्वय करती बेटा !अपनी गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट करके और ये वेद मन्त्र उद्गीत गाती कत्मास्वम्भवा कत्मास्वर्णाम् ब्रहे। मेरे प्यारे !देखो, ये आख्यायिका प्रगट करके जब आत्मा उद्गीत गाने वाला कि आत्मा तू सुसुज्य है, मानो पवित्रतम् है। और तू सदैव रमण करने वाला है। मेरे प्यारे !जब आत्मा से इस प्रकार की वार्ता माता प्रगट करती है, तो माता वो ब्रह्म में परणित करा रही है।

तो मेरे प्यारे !देखो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं, केवल विचार-विनिमय ये मुनिवरों !देखो ये ममत्वम् ब्रह्माः व्रतम् देवाः। ये आत्मा, मेरे प्यारे !ये :माता विष्णु कहलाती है जो सतोगुण से पालन कर रही है, रजोगुण में शासन कर रही है और तमोगुण में उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहती है। एक-दूसरे के पूरक मेरे प्यारे !विचित्रता तो ये है प्रभु की इस नियमावली में, क्या एक-दूसरे का एक दूसरा पूरक कहलाया गया है। मेरे प्यारे !देखो सतोगुण, रजोगुण-वही रजोगुण है, वही सतोगुण है और वही तमोगुण माना गया है। परन्तु देखो रजोगुण और तमोगुण, सतोगुण एक-दूसरे का पूरक कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो वही, यदि तमोगुण नहीं होगा तो उत्पत्ति का मूल नहीं बन पाएगा। उग्रवाद में उत्पत्ति का मूल है। मेरे प्यारे !देखो, यदि रजोगुण नहीं होगा तो मुनिवरों !देखो उसमें शासन की प्रवृत्ति नहीं रहेगी। और यदि सतोगुण नहीं होगा तो बेटा !न तो रजोगुण रहेगा, न तमोगुण की प्रतिभा रहेगी। वह एक-दूसरे का पूरक नहीं हो पाएगा। इसीलिए एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे !मैं अपने विचारों को देता हुआ दूरी न चला जाऊँ। विचार-विनिमय केवल ये कि आज हम बेटा !हम ये उद्गीत गा रहे थे कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते हुए मेरे पुत्रों !देखो महात्मा विश्वामित्र अपने में याग कर रहे थे। बेटा !मुझे वो काल जब स्मरण आने लगता है तो प्रायः हृदय गद्गद् हो जाता है। मैं ये कहा करता हूँ कि जहाँ अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण अथवा अस्त्रों-शस्त्रों की शिक्षा देना है वही तो धनुर्याग कहा जाता है। धनुर्याग का अभिप्रायः यह है कि बेटा !महर्षि विश्वामित्र अपने आसन पर विद्यमान हैं ब्रह्मचारी धनुर्विद्या के ऊपर अध्ययन कर रहे हैं। मेरे प्यारे !देखो विज्ञान में रत्त हो रहे हैं।

आत्मा का अन्न-प्राण, मन और विचार

मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा !एक समय महर्षि विश्वामित्र की इस यज्ञशाला में अथवा विद्यालय में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का पदार्पण हुआ।

महर्षि भारद्वाज मनि के यहाँ बेटा !देखो ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारिणी शबरी ये इत्यादि सब देखो विज्ञान में अभ्यस्थ थे और वे विज्ञान के एक-एक वेद मन्त्र को विज्ञान से कटिबद्ध करते रहते। बेटा !एक समय भ्रमण करते हुए वह महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में पधारे। महात्मा विश्वामित्र ने महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का स्वागत किया। क्योंकि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज विज्ञान में बड़े पारायण थे। उनके यहाँ विज्ञान की एक महानता का जन्म होता रहता था। मेरे पुत्रों !देखो जब ऋषि का आगमन हुआ तो साँय काल के समय सर्वत्र ब्रह्मचारी अपने-अपने कक्ष से ऋषि के चरणों में उपस्थित हुए और वे विराजमान हो गए। तो मुनिवरों !देखो महर्षि विश्वामित्र ने कहा, क्या हे भगवन् ! आप ब्रह्मवेत्ता भी हैं और विज्ञानवेत्ता भी हैं। आप परमाणु विद्या में बड़े पारायण हैं। हे प्रभु !ब्रह्मचारियों को कुछ शिक्षा प्रदान कीजिए। मेरे प्यारे !देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा क्या ये तो सर्वत्र तुम जानते हो। हे विश्वामित्र ! आप तो धनुर्विद्या में पारायण रहे हैं। क्योंकि राजा से ऋषि हुए हैं और ऋषि से ब्रह्मवेत्ता बने हैं। और ब्रह्मवेत्ता और देखो वह धनुर्विद्या का दोनों का जिस पर सङ्गम हो अथवा जो स्वरों में गान गाने वाला हो, वह तो महान् ऋषि कहलाता है। भगवन् !आप ही इनको उद्गीत गाइये। उन्होंने कहा, नहीं भगवन्, मैं तो मानो देखो रोस्वधम्, मैं इनको नित्यप्रति अपना उपेदश प्रगट करता रहता हूँ। परन्तु आज तो आपका आगमन हुआ है। आप अतिथि हैं विद्यालय के, आप कोई न कोई उपदेश दीजिए। तो उन्होंने कहा, हे ब्रह्मणेः विराजो। तुम एक पंक्ति में विद्यमान हो जाओ। मेरे प्यारे !ब्रह्मचारियों ने एक पंक्ति लगायी। और वह बोले कि तुम्हें यह प्रतीत है कि मैं कञ्जली वनों में एक मानो देखो कि मैं अपने में एक विज्ञानशाला का मैंने निर्माण किया है। जिस विज्ञानशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहता है। उन यन्त्रों में मानो देखो ऐसे-ऐसे ब्रह्मास्त्र हैं, मानो वरुणास्त्र हैं, वेतुक अस्त्र हैं जिसको जान करके देखो हम राष्ट्रों को भी समाप्त कर सकते हैं। परन्तु ऐसे-ऐसे यान हैं जिनमें विद्यमान हो करके एक-एक लोक में

नहीं, हम देखो मङ्गल से, हम मङ्गल से चन्द्रमा के मध्य में जितने मराडल हैं सर्वत्रता में एक ही मराडल हमारा भ्रमरा करता रहा है। मानो देखो इस प्रकार का विज्ञान तुम्हारे यहाँ भी होना चाहिए। मेरी इच्छा ये है कि तुम्हारे यहाँ एक अहिल्या प्रतिभा यन्त्रों का निर्माण होना चाहिए। ।

मेरे प्यारे !देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि हमारे वैदिक साहित्य में अहिल्या के पर्यायवाची शब्द होते हैं। अहिल्या नाम पृथ्वी को कहते हैं, अहिल्या नाम रात्रि का है, अहिल्या नाम बुद्धि का है। मानो देखो अहिल्या के बहुत से पर्यायवाची शब्द माने गए हैं। अहिल्या का अभिप्राय ये है जो मेरे प्यारे ! देखो जो सुवर्णियों में रत्त रहने वाली हो-जिस बुद्धि को हम मानो पवित्रता से जब हम धारयामि बनते हैं तो उस बुद्धि का नाम जो मेधावी प्रणव हो जाती है तो उस बुद्धि का नाम अहिल्या कहा जाता है। मेरे प्यारे !उस पृथ्वी का नाम अहिल्या है जो पृथ्वी मानो देखो वज्र, वज्र के तुल्य देखो वैसे ही उष्णा में परणित होने वाली हो और उसमें अन्न उत्पन्न किया जा सकता हो उस भूमि का नाम अहिल्या कहा जाता है। अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण भी होता रहा है। क्योंकि यन्त्रों का अभिप्रायः, क्या जो अहिल्या इस पृथ्वी के गर्भ के मानो देखो दस-दस योजन गर्भ के खनिज और खाद्यों को जो मानो देखो दृष्टिपात करने वाला हो, विज्ञान के द्वारा बेटा !वह अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण करता रहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था कि अहिल्या अपने में मानो बड़ी विशिष्ठ मानी गयी है अहिल्याम् भूतम् ब्रह्मणाः। मेरे प्यारे !देखो अहिल्याम् पृथ्वी, जो पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज तपायमान हो रहा है और उस तपते हुए खनिजों को जो जानने वाला है वही मुनिवरों !देखो अहिल्या को जानने वाला है।

आओ मेरे पुत्रों !देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों ! तुम्हारे यहाँ नाना प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण होना चाहिए। एक समय मानो जब मैं महर्षि तत्व मनि महाराज के आश्रम में जब अध्ययन करता रहा, तो मानो

देखो अध्ययन करते-करते एक समय मानो क्योंकि मेरे पिता ने ये कहा था "सम्भवे ब्रह्मणाः प्रमाणाम् ब्रहे" ये परमाणु विद्या को जानना चाहिए। मानो जब मैंने परमाणु विद्या को जानने के लिए तत्पर हुआ तो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के चरणों में विद्यमान हो करके मानो जहाँ उसमें वहाँ नाना प्रकार की शिक्षा थी, वहाँ एक निर्माणशाला भी थी। वहाँ निर्माणशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहा। हमारे यहाँ तत्व मुनि महाराज के यहाँ देखो एक यन्त्र का निर्माण हुआ था किसी काल में। उस यन्त्र को हमारे यहाँ सौवृस्सतम् यन्त्र कहा जाता था। उस यन्त्र में विराजमान हो करके मानो एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे "तत्वेताम् भूतम्" मेरे आचार्य ने एक समय कहा, जाओ तुम ब्रह्माण्ड में देखो, लोक-लोकान्तरों का कुछ भ्रमण करो। तो मानो यन्त्र में विद्यमान हो करके महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहाँ से एक यन्त्र मानो यान एक उड़ान उड़ता है। और वो उड़ान उड़ करके चन्द्रमा में जाता है। चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है, वह बद्ध में जाता है और बुद्ध से उड़ान उड़ता है वह शुक्र में जाता है, शुक्र से उड़ान उड़ता है तो मङ्गल में जाता है और मङ्गल से उड़ान उड़ता है तो स्वाति में प्रवेश कर जाता है और स्वाति नक्षत्र से उड़ान उड़ता है तो मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो अरुन्धती में चला गया। अरुन्धती मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह वशिष्ठ मण्डल में प्रवेश कर गया और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो रोहिणी कृतिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और रोहिणी कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो भानमुक मण्डल में प्रवेश गया और भानमुक मण्डल से उड़ान उड़ता हुआ मुनिवरों !देखो मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो मूल नक्षत्र में प्रवेश कर गया। और मूल नक्षत्र से उड़ाने उड़ी तो बेटा !देखो वह मानधुनि मण्डल में प्रवेश कर गया। बेटा !मैं लोकों की गणाना करने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें ये परिचय देने के लिए आया हूँ क्या विज्ञान अपने कक्ष में बेटा !बड़े ऊर्ध्वा से गमन करता रहा है। और वो ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों में अथवा वेद मन्त्रों की

प्रतिभा का अन्वेषण करता हुआ बेटा !विज्ञान अपने कक्ष में रमण करता हुआ मानवीयता की आभा में सदैव प्रवेश करता रहा है।

मुनिवरों !देखो महर्षि भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारियों से कहा, हे ब्रह्मचारियों ! तुम्हारा यह विद्यालय जब ही श्रेष्ठ बनेगा जबकि तुम्हारा मानो देखो ये जो विज्ञान है ये पराकाष्ठा पर रमण करने वाला हो। तुम्हारे देखो, मेरे विद्यालय में एक यन्त्र-हमारे यहाँ ये ब्रह्मचारी सुकेता हैं। इन्होंने इनकी सहायता से एक वेद मन्त्र का उद्गीत गया जा रहा था और वह वेद मन्त्र यह कह रहा था "सम्भवे ब्रह्मणाः गर्भस्यतम् विश्वञ्जनम् ब्रहा ऋतम् देवो व्रतम्"। मानो देखो ये वेद मन्त्र का जब उद्गीत गाया जा रहा था तो ये वेद मन्त्र यह कह रहा है क्या , एक-एक रक्त के बिन्दु में मानव के चित्रों का दर्शन हो सकता है।

मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, क्या हमारे यहाँ ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता और रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी देखो महर्षि पणपेतु इत्यादि ऋषियों ने ब्रह्मचारियों ने विद्यमान हो करके और मानो देखो इस वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन किया। छः माह हो गए कि वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन करते-करते। अन्त में चरमसीमा पर पहुँचे। क्या इन्होंने मुनिवरों !देखो एक यन्त्र का निर्माण किया और इस यन्त्र में ये विशेषता थी, क्या एक रक्त का बिन्दु मानो देखो यन्त्र में प्रवेश करो और जिस मानव का रक्त का बिन्दु है, उसी का चित्र उन्हें साक्षात्कार दृष्टिपात आता रहता था।

मेरे प्यारे !देखो, जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये कहा कि तुम्हारा विद्यालय जब ही ऊर्ध्वा को प्राप्त होगा, जब ही महर्षि विश्वामित्र का स्वपन पूर्ववत् हो सकेगा, जब तक तुम्हारे यहाँ इस प्रकार के ब्रह्मचारी और अध्ययन करने वाले मानवीयत्त्व को धारण करने वाले हों। तो मेरे प्यारे !देखो ब्रह्मचारी अपने में उन वाक्यों को श्रवण करते रहे। तो भारद्वाज मुनि ने कहा कि मेरे यहाँ हमारी विज्ञानशाला में इस प्रकार के यन्त्र हैं, ऐसी यज्ञशालाएँ हैं, जो स्वाहा उच्चारण करने मात्र से उनके चित्र यन्त्रों में दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि अग्नि

की धाराओं पर प्रत्येक शब्दः मानो देखो उद्धृत होता हुआ वह द्यौ को प्राप्त होता रहता है। इसीलिए हमारे यहाँ याग को सर्वश्रेष्ठ क्रियाकलाप माना है ऋषि-मुनियों ने और विज्ञान ने। क्योंकि जो शब्द है, जो वेद मन्त्रों से गुथा हुआ शब्द होता है, साकल्य से गुथा हुआ शब्द होता है वह द्यौ को प्राप्त होता हुआ, जब वो गमन करता है अग्नि की धाराओं पर तो ये प्रदूषण को समाप्त करता हुआ और मुनिवरों !देखो वो द्यौ को प्राप्त हो जाता है।

मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष वाक्य तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ। जो ऋषि-मुनियों ने इस सम्बन्ध में बड़ा परिचय दिया है, उसी परिचय के आधार पर अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ। मेरे प्यारे !देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, क्या जब तुम विद्यालय से दीक्षा ले करके गमन करोंगे। जिस विद्या का तुम अध्ययन करो, उसी विद्या पर तुम्हारा क्रियात्मक जीवन होना चाहिए। यदि क्रियात्मकत्त्व में जीवन नहीं है तो ये विद्याध्ययन किया हुआ जो तुम्हारा ज्ञान है, जिसको तुमने उपार्जन किया है ये न होने के तुल्य बन जाएगा। ऐसा मुनिवरों !देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने विचार व्यक्त किए और विचार देते-देते मुनिवरों ! देखो अपने में मौन हो गए।

महर्षि विश्वामित्र उपस्थित हो करके बोले, क्या ऋषि ने अपना जो विचार दिया है, वह बड़ा भव्यतम् है। परन्तु मेरी इच्छा ये है कि जहाँ अपने भौतिकवाद की चर्चाएँ की हैं वहाँ आप एक आध्यात्मिकवादी भी हैं, आप ब्रह्मवेत्ता भी हैं। तो ब्रह्म की भी कुछ चर्चाएँ हो जानी चाहिए। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, क्या हे ब्रह्मचारियों !देखो तुम्हारी जो जीवनचर्या है वह पवित्र होनी चाहिए। यदि तुम्हारी जीवनचर्या पवित्र हो जाएगी तो ये तम्हारा राष्ट्र और समाज और गह सब पवित्रत्त्व को प्राप्त हो जाएगा। जैसे माता-पिता अपने गृह को पवित्र बनाने के लिए मानो देखो बाल्य-बालिका को महान् बनाने के लिए माता-पिता ब्रह्म की चर्चा करते हैं। ग्रहपत्य नाम की अग्नि की पूजा करते हैं। अग्नि का

अभिप्रायः ये है कि हमारे जो हृदय से उत्पन्न हुए जो शब्द हैं उन शब्दों में इतनी मानो गम्भीरता होनी चाहिए जिससे हम अपने गृह को स्वर्ग बना सकें। तो गृह कैसे स्वर्ग बनेगा। मेरे पुत्रों !देखो, जब माता-पिता अपनी एकान्त स्थली पर विद्यमान हों तो वह मुनिवरों !देखो अपने में अपनेपन की चर्चाएँ करते चले जाएँ। आत्म-चिन्तन करते चले जाएँ ग्रहपत्य नाम की अग्नि का 1. पूजन करें। प्रातःकालीन याग होना चाहिए। उस याग में विचार होना चाहिए और उन विचारों को, मानव दर्शनों की भाषा को मेरे प्यारे !देखो गृह में बाल्य-बालिका जब सब श्रवण करते हैं तो मुनिवरों !देखो गृह स्वर्ग बन जाता है। गृह यदि स्वर्ग बनाना है, विद्यालय को स्वर्ग बनाना हो तो आचार्य तपस्वी और ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता की आभा उसमें होनी चाहिए जिससे उसके आन्तरिक जो विचार हैं और बाह्य जो जगत है, दोनों उसका सजातीय होने चाहिए।

मेरे पुत्रों !देखो मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज मुनि महाराज का जीवन, आन्तरिक जीवन भी ऐसा ही था, बाह्य जीवन भी इसी प्रकार का। मेरे पुत्रों !देखो वह बाल्य-बालिका सर्वत्र उनके जीवन से शिक्षा अध्ययन करते रहते थे। शिक्षा जो प्राप्त होती है वह द्वितीय जो प्रेरणा का एक प्रीति माना गया है उसी से उसको प्राप्त होती रहती है।

आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, आचार्य ने कहा, हे ब्रह्मचारियों !तुम देखो प्राण को अपान में प्रविष्ट करने का प्रयास करो। क्योंकि जो भी मानव आध्यात्मिकवादी बनना चाहता है वह आत्मा में चिन्तन करने वाला होना चाहिए। क्योंकि जब वह प्राण और अपान को और अपान को व्यान में और व्यान को समान में, समान को उदान में जब मिलान करना जानता है तो मानो देखो आत्मा का जो क्षेत्र है, आत्मा का जो लोक है, मेरे प्यारे !देखो उसमें पवित्रता को वो दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे पुत्रों !मुझे स्मरण आता रहता है, जब हम अपने पूज्यपाद गुरु ओं के द्वारा अध्ययन करते थे तो प्रातःकालीन वह प्राण की प्रतिष्ठा के ऊपर वर्णन करते

रहते थे। प्राण की प्रतिष्ठा क्या है? मेरे पुत्रों !देखो प्राण हमारे हृदय में सुसज्जित, हमारे में गतिवान् होना चाहिए। और जब प्राण से हम यह विचारते हैं कि अरबों खरबों परमाणु, मेरे प्यारे !बाह्य जगत से आन्तरिक जगत में आते हैं और आन्तरिक जगत से बाह्य जगत में चले जाते हैं। तो मेरे प्यारे !वो प्राण कहा जाता है। वह "प्राणस्वमधम् ब्रव्हे" जब मन और प्राण को, दोनों का मिलान करा दिया जाता है तो बेटा !एकाग्रता होनी प्रारम्भ हो जाती है और वही देखो जब एकाग्र होना प्रारम्भ होता है तो उससे विचारों की उपलब्धियाँ होती हैं और वही विचार मेरे पुत्रों !देखो इन्द्रियों के ऊपर घटित हो जाता है। महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा है “अमृताम् देवत्वाम्" देखो जब मानव नेत्रों के ऊपर अध्ययन करता है, नेत्रों का जो विषय है वह रूप है। और रूप को तुम दृष्टिपात करते रहो, दृष्टिपात करते रहो, मानो यन्त्रों से दृष्टिपात करते रहो। देखो समाधि में प्रवेश हो जाओ। दृष्टिपात करते अन्त में बेटा !देखो ये सीमाबद्ध हो जाता है। दृष्टिपात, मानो दृष्टिवान देखो उतनी सीमा में सीमित हो जाता है। इसी प्रकार जब शब्दों के ऊपर बेटा !शब्द अपने में ग्रहण करने लगता है। ध्वनियाँ आ रही हैं, वह ध्वनित हो रहा है। मेरे प्यारे !मानव वाणी से उद्गीत गा रहा है। उसके शब्द आ रहे हैं। मानो देखो उसके शब्द आ रहे हैं, उसका चित्र आ रहा है। वह मस्तिष्क में उसका निर्माण हो रहा है, वही शब्द मेरे प्यारे !देखो दिशाओं में भ्रमण करने लगता है। वही शब्द है मेरे पुत्रों !जो अन्तरिक्ष में एक ध्वनि बन करके रहता है। वही शब्द है, मेरे प्यारे !देखो, योगी समाधिष्ठ हो करके अपने अनहद में मानो जो अनहद बाह्य स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं मस्तिष्क में, जो मेरे प्यारे !देखो तरङ्ग, आपस में तरङ्गों का मिलन हो रहा है, उसमें जो धीमी ध्वनियाँ हो रही हैं उन्हें वो स्वर सङ्गम बना करके अपने में धारण कर रहा है।

मेरे पुत्रों !देखो वही अमृतम्, वही मुनिवरों !देखो व्याकरण के रूप में, शब्दों की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। वही ध्वनि देखो, आन्तरिक जगत में प्रवेश कर रही है। मेरे प्यारे !अन्त में देखो वह महा, वह महापुरुष ध्वनि को ध्वनित करता

हुआ, बेटा !अपने में सीमित हो जाता है।

मेरे पुत्रों !देखो, सुगन्ध आ रही है। और वह सुगन्धी मुनिवरों !देखो वह अपने में सुगन्धी को धारण कर रहा है। यदि वो अध्ययन करता है तो पृथ्वी के एक-एक कण में से उसे सुगन्धी आ जाती है और वह सुगन्धी मुनिवरों !देखो इतनी विचित्र बन करके रहती है। मुझे स्मरण है, भगवान् राम को इतनी सुगन्धी मानो सिद्ध थी क्या वह मुनिवरों !देखो पृथ्वी के कणों से सुगन्धी ले करके दस-दस योजन के नीचे पृथ्वी के गर्भ के मुनिवरों !देखो खनिज का वो निर्णय दे देते थे। इस प्रकार की मनिवरों !देखो सुगन्धी होनी चाहिए। जिससे वो सुगन्ध लेता हुआ घ्राण के द्वारा जो प्रभु ने एक यन्त्र निर्माणित किए हैं उन यन्त्रों के द्वारा मुनिवरों !सुगन्धित होता रहता है। अन्तरिक्ष के परमाणुओं को जो सुगन्धित करता हुआ, मुनिवरों !देखो अपने में निर्णय देता रहता है। अन्त में विचार-विनिमय करता-करता, सुगन्ध करता-करता, बेटा !वह भी सीमाबद्ध हो जाता है।

मेरे पुत्रों !देखो जब रसना के क्षेत्र में जाता है, नाना प्रकार का स्वादन अपने में ग्रहण करने लगता है, वह रसना का विषय है। रसों को लेता रहता है। जल में कितने प्रकार के परमाणुओं का गमन होता रहता है। मानो देखो पृथ्वी गुरु त्त्व में कितने परमाणुओं का आदान प्रदान होता रहता है। मेरे पुत्रों !देखो ये अग्नि अपने में तेजोमयी बन करके, ये सुगन्ध और दुर्गन्ध को ले करके गमन कर रही है वह मुनिवरों !देखो, रस उसे अपने में रसास्वादन कर रहे हैं। अपने में ग्रहण कर रही है। अन्त में ये होता है कि वह मुनिवरों !वह अणु और परमाणुओं पर गतिवान हो जाता है। क्योंकि तीन प्रकार के परमाणु विज्ञान में स्वीकार किए गए हैं। जिन्हें मेरे प्यारे !देखों गुरु त्त्व, तरलत्त्व और तेजोमयी, ये तीन प्रकार के परमाणुओं पर बेटा !देखो विज्ञान अपने में स्थिर रहता है। तो विचार आता रहता है। उन्हीं परमाणुओं में बेटा !वो अपने में रसास्वादन करने लगता है। अन्त में बेटा !देखो स्पर्शस्ता में वायु को वेग में गमन करते हुए कोई ये निर्णय दे देता है महापुरुष, क्या इस अग्नि में देखो अमुक प्रकार का परमाणु गमन कर रहा है। ये

शीतल है। मानो ये उष्णा है। नाना देखो उष्णाता में ये प्रतिभा और तरलत्त्व में भी ये प्रतिभा है। ये निर्णय देता हुआ बेटा !देखो इसको हमारे यहाँ पञ्चीकरण कहते हैं। ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ का विषय है और इसका मुनिवरों !देखो योगी जब अपने में साकल्य बना लेता है और साकल्य बना करके बेटा !हृदयरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसमें जब इस साकल्य का हुत कर देता है तो मेरे प्यारे !देखो परमात्मा का हृदय, मानव के हृदय का दोनों का बेटा !देखो अपने में परस्पर समन्वय हो जाता है। वह मेरे पुत्रों !देखो आनन्द को प्राप्त हो जाता है। मोक्ष की पगडण्डी आओ मेरे प्यारे !देखो मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। ये तो बड़े गम्भीरतम रहस्य हैं जिनको मैं उद्गीत रूप में गाता रहता हूँ। तो मेरे प्यारे !देखो ऋषि कहता है "ब्रह्मणे ऋतम् देवाः" मेरे प्यारे !देखो उस समय महर्षि पिप्पलाद ने अपनी पत्नी से कहा, हे देवी !ये मानो देखो महर्षि विश्वामित्र की यज्ञशाला में देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को आध्यात्मिकवाद की चर्चा की। और उन्होंने कहा, ये तीन प्रकार का अन्न कहलाता है। ये मानो जो इन्द्रियों में समाहित रहता है। तीन प्रकार का अन्न है अन्नम् भूतम् ब्रह्मणाः देखो जिसको हम अमृतम देखो, मन, प्राण और विचार ये तीन प्रकार का अन्न है जिस अन्न के पान करने से हमें आत्मा की सिद्धि हो जाती है। इन्द्रियाँ वश में हो जाती है और मन और प्राण का जब सम्मेलन होता है, समागम होता है तो उस समय देखो वह विचारों में प्रतिभा आ जाती है। मन, कर्म और विचार जब विचार में महानता आ जाती है तो मुनिवरों !देखो हृदयरूपी यज्ञशाला में बेटा !वो याग करता है। उन्हीं विचारों का साकल्य बना करके, उन्हीं विचारों का चरू बना करके बेटा !हृदयरूपी यज्ञशाला में वो याग करता हुआ मेरे प्यारे !देखो परमात्मा में हुत करता है। वह "हृदयम् ब्रह्मणाः हृदयम् दिव्याम भूतम्"। मेरे पुत्रों !देखो हृदय का जब सम्मिलान होता है तो वही मुनिवरों !देखो मोक्ष की पगडण्डी कही जाती है। । मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये आध्यात्मिकवाद की चर्चाएँ की। और उन्होंने कहा कि

आध्यात्मिकवाद के आगे ये जो भौतिक विज्ञान है, ये न होने के तुल्य है। तुम्हें ये प्रतीत है, क्या जहाँ ये भौतिक विज्ञान समापन होता है, वहाँ से आगे आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ करता है। मेरे प्यारे !आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान, जब दोनों का समन्वय होता है, उसी काल में मुनिवरों !देखो ये संसार महानता को प्राप्त हो जाता है। शेष अनुपलब्ध दिनाँक :4 फरवरी, 1990 समय :सायँ 4 बजे स्थान :श्री आलम सिंह ए-42, शास्त्रीनगर जोधपुर, राजस्थान।

११ 05 02 1990 महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप

जीते रहो !देखो मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। और उसका अनन्तमयी ये ज्ञान और विज्ञान है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अन्वेषण करता रहा है। और अनुसन्धान करता रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तवान् हैं। और उसका अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। क्योंकि हमारे यहाँ नाना विज्ञानवेत्ता, नाना प्रकार की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ते रहते हैं। परन्तु जब वह अपनी उड़ाने उड़ने लगता है तो वह परमपिता परमात्मा की परिनिधि में ही रमण करता रहता है। क्योंकि विचारणीय कोई विषय नहीं रहता है जिससे वह ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगे। क्योंकि उसकी उड़ाने अपने में ही सीमित रहती है और अपने में ही अपनेपन को वो विचारता रहता है।

आओ मुनिवरों !देखो इस सम्बन्ध में कोई हम तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहते। विचार केवल यह है कि हम केवल परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तमयी, विज्ञानमयी धारा को हम सदैव अपने में धारण करते रहें। जिससे हमारा मानवीयत्त्व और मनस्तत्त्व पवित्रता को धारण करता रहे। तो बेटा !आज का हमारा वेद का मन्त्राः, नाना प्रकार की उड़ाने उड़ रहा है। ''आभाम् ब्रह्मणाम् ब्रव्हा, ऋतम देवत्वाम् लोकाः'' क्योंकि वे परमपिता परमात्मा देव है और देवता का भी देवता कहलाया जाता है। जिस देवता को हम सदैव परम्परागतों से ही अपने में अन्वेषण करते रहे हैं। और विचार विनिमय करते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी हैं। अनन्तमयी जो उसका ज्ञान

है, उसका विज्ञान है और उसका ये मानो रचनामयी जगत है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उस अनन्तवान् को अपने में धारण करते रहें। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्य नाना रूपों में मानो प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो हमारे यहाँ वेद का मन्त्राः एक-एक महानता की उड़ाने और विचार-विनिमय कर रहा है। क्योंकि परमात्मा की जो अमूल्य वाणी है, परमात्मा का जो अमूल्य मानो ज्ञान और विज्ञान है वो वेद की एक-एक आभा में निहित रहता है। तो आओ मेरे पुत्रों !मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय ये कि हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों में विद्यमान हो करके नाना प्रकार का अन्वेषण करते रहे हैं, नाना प्रकार की आभा में सदैव रत्त रहे हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

आओ मुनिवरों !देखो, आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि अपने में बेटा !विचार-विनिमय करते रहे हैं और अन्वेषण करते रहे हैं। हमारे यहाँ बेटा !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जो विद्यालय है वह अपने में बड़ा विशिष्ट रहा है और वह अपने में विचारणीय रहा है। उनके यहाँ बेटा !त्याग और तपस्या की महिमा का प्रायः वर्णन होता रहा है। तो मेरे पुत्रों !देखो, ''हिरणयम् ब्रह्माः ऋतम् देवत्वाम् देवो लोकाः'' वेद का वाक्य कहता है कि जब मानव अपनी तपस्या में परणित होता है और वह तपश्चर को प्राप्त हो जाता है तो अपने में ही अपनेपन को बेटा !दृष्टिपात करने लगता है। मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय अपने में बड़ा विचित्र रहा है। और उन्होंने बेटा !देखो, प्रातःकालीन उनके यहाँ ब्रह्मचारियों के मध्य में मानो देखो, अग्निहोत्र अथवा याग करते हुए और ऋषि का उसके पश्चात्

बेटा !उपदेश प्रारम्भ हुआ। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों !वेद मन्त्रा में ये आया है कि ''तपम् हिरणयम् तपाः दिव्यम् ''तपम्

हिरणयम् तपाः दिव्यम् ''तपम् हिरणयम् तपाः दिव्यम् ब्रह्मणाः देवत्व तपाः'' ब ्रह्मणाः द ेवत्व तपाः''। ब्रह्मणाः देवत्व तपाः'' क्योंकि ये संसार सर्वत्र मानो तपमय माना गया है। इसलिए प्रत्येक मानव को यहाँ तपस्वी होना चाहिए और बिना तप के मानव अपने में मानवीयता को धारण नहीं कर सकेगा।

तपस्वी बनने की प्रेरणा तपस्वी बनने की प्रेरणा तपस्वी बनने की प्रेरणा

मेरे प्यारे !देखो, उन ब्रह्मचारियों में यज्ञदत्त ब्रह्मचारी उपस्थित हुए और यज्ञदत्त ने कहा, हे प्रभु !यह तपस्या कैसे करें? तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यहाँ प्रत्येक वस्तु तप रही है। मानो ब्रह्मचारी विद्यालय में तप रहा है तो आचार्यत्त्व को प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, मेरी प्यारी माता तपायमान है। वह तपने के पश्चात् ममतामयी बन जाती है। इसी प्रकार मुनिवरों ! देखो, सूर्य प्रातःकाल से साँयकाल तक तपता रहता है और वो संसार को तपाता रहता है। और वो तपोमयी कहलाता है। नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है। नाना पृथ्वियों को तपा रहा है। वो तपायमान कर रहा है। तो वेद का ऋषि कहता है, इसलिए मानव को तपस्वी बनना चाहिए। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वस्तु तप रही है। जब ये पृथ्वी तपायमान होती है ग्रीष्म ऋतु में। तो मानो देखो, जब वर्षा काल आता है तो ये तपने के पश्चात् मुनिवरों !नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दे देती है। इसी प्रकार हमारा जो वैदिक साहित्य है अथवा वेद में जो आख्यायिकाएँ आती रहती हैं उनमें ये कहा है कि ''तपम् तपश्चम् ब्रह्मणाः लोकाम् ''तपम् तपश्चम् ब्रह्मणाः लोकाम् ''तपम् तपश्चम् ब्रह्मणाः लोकाम् राष्ट्रतौ।'' राष्ट्रतौ।'' मेरे प्यारे !देखो, प्रत्येक मानव को यहाँ तपना चाहिए। राजा के राष्ट्र में यदि राजा तपा हुआ होता है तो प्रजा भी तपायमान होती है। और जब प्रजा में तप होता है, राजा में होता है तो बेटा !देखो, राष्ट्र में सुमति आ जाती है, सम्मति आ जाती है। पवित्रता आ जाती है और वह मानो देखो, राष्ट्र ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे !देखो, विद्यालय में आचार्य जब तपे हुए होते हैं तो तपने के पश्चात् ही मुनिवरों !देखो विद्यालय अपने में पवित्रता को धारण करने लगते हैं।

तो मेरे प्यारे !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या हे प्रभु !अमृतम् ब्रह्मणे, हे ब्रह्मचारियों, तुम स्वयँ तपस्वी बनो। क्योंकि तपने के पश्चात् ही यह मानवत्त्व पवित्रता को प्राप्त हो सकता है।

मेरे प्यारे !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु !आपका वाक्य तो यथार्थ है परन्तु तपस्या है क्या? तो वैदिक ऋषि ने कहा है क्या मुनिवरों !देखो तप उसे कहते हैं तप उसे कहते हैं जो तप उसे कहते हैं मनस्तत्त्व को अपने में तपायमान कर लेता है। और इन्द्रियों को जब अपने में तपायमान कर लेता है। इन्द्रियों को जब अपने में तपा लेता है और मन में वशीभूत कर देता है। और मन प्राण में समाहित हो जाता है तो बेटा !उसे तप कहा जाता है। बेटा !आचार्यों ने, हमारे यहाँ वर्णन करते हुए कहा है कि हे मानव तू तपस्वी बन। क्योंकि परमात्मा ने जब सृष्टि का सर्जन किया तो मानो वो स्वयँ उसकी उग्र क्रिया बनी और उग्रता से ही मुनिवरों !देखो इस संसार की रचना होती है अथवा उसका एक-दूसरे में समावेश हो जाता है। तो इसलिए यह संसार रचनामयी दृष्टिपात आने लगता है। तो इसलिए वेद का ऋषि कहता है, क्या यहाँ प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। हे ब्रह्मचरिष्यामि !तुम अपने में तपस्वी बनो।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप के लिए गमन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का तप के लिए गमन

मेरे प्यारे !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के वाक्यों को पान करने वाले ब्रह्मचारियों ने अपने में उन वाक्यों को स्वीकार किया। स्वीकार करने के पश्चात् मेरे प्यारे !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक वाक्य कहा। वेद मन्त्रा का उद्गीत गाया। उन्होंने कहा, ''तपम् ब्रह्मणेः तपम् रुद्राहम् ''तपम् ब्रह्मणेः तपम् रुद्राहम् ''तपम् ब्रह्मणेः तपम् रुद्राहम् प्रमाणम् येषो सम्भवम् ब्रह्माः तपाः।'' प ्रमाणम ् य ेषा े सम्भवम ् ब ्रह्माः तपाः।'' हे प्रमाणम् येषो सम्भवम् ब्रह्माः तपाः।'' ब्रह्मचारियों !मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं तप करने जा रहा हूँ।

उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम्। ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु, ये तो हमारा सौभाग्य है क्योंकि विद्यालय में जितना तपा हुआ आचार्य होता है उतना ही विद्यालय पवित्र बनता है। और उनसे महानता की प्राप्ति होती है। तो प्रभु आप तप करने के लिए जाइए। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, मेरे पुत्रों !ब्रह्मचारियों से आज्ञा पा करके और वह भयङ्कर वन में जा पहुँचे और वनों में जा करके मुनिवरों !देखो, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, उन्होंने वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रव्हे ऋतम् ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रव्हे ऋतम् ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रव्हे ऋतम् मनाः वर्णाम ब्रह्मेः तपम् सम्भवे प्रव्हे लोकाम् वृत्ति देवाः'' मनाः वणा र्म ब ्रह्म ेः तपम ् सम्भव े प ्रव्ह े ला ेकाम ् व ृत्ति द ेवाः''। मनाः वर्णाम ब्रह्मेः तपम् सम्भवे प्रव्हे लोकाम् वृत्ति देवाः''

वेद का आचार्य बेटा !ये अपने में अन्वेषण करने लगा, अनुसन्धान करने लगा कि वेद मन्त्रा यह कहता है, क्या जो भी मानव तप से ही अपने गृह को, अपने आश्रम को त्यागता है। मानो देखो, जो उसके मन से सम्बन्धित जो प्राणी होते हैं उनको वह सन्तुष्ट करके मुनिवरों !देखो तप कर सकता है। अन्यथा वह तप जब करता है तो उसके मन की तरúेंं मानो उसे, मन को प्रभावित कर देती हैं। तो मेरे प्यारे !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, अपने में विचारने लगे, क्या मेरी दो पत्नियाँ हैं। एक का नाम कात्याणी, तो एक का नाम मैत्रेय है। मुझे दोनों को सन्तुष्ट करना है। तभी मैं तपस्या कर सकूँगा।

महर्षि द्वारा कात्याणी से सम्मति महर्षि द्वारा कात्याणी से सम्मति

बेटा !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज भ्रमण करते हुए बेटा !अपने गृह में पहुँचे। मेरे पुत्रों !सबसे प्रथम वह कात्याणी के द्वार पर पहुँचे। कात्याणी ने उनके चरणों को स्पर्श किया। और चरणों को स्पर्श करके कहा, कहिए भगवन् !आज बिना सूचना के आपका आगमन हुआ है, इसके मूल में क्या है? मेरे पुत्रों !महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या हे

देवी !मैं प्रातःकालीन आज ब्रह्मचारियों को वेद का अध्ययन करा रहा था। और वेद मन्त्रों में आ रहा था ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्माः ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्माः ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्माः लोकाम् तपम् ममब्रव्हे देवत्वाम् देवासन्धम् तपम् सूर्यश्चतम् देवा लोकाम् तपम् ममब्रव्हे देवत्वाम् देवासन्धम् तपम् सूर्यश्चतम् देवा लोकाम् तपम् ममब्रव्हे देवत्वाम् देवासन्धम् तपम् सूर्यश्चतम् देवा अदिति।'' अदिति।'' हे अदिति।'' देवी !देखो, वेद मन्त्रा में आया है कि प्रत्येक पदार्थ संसार का तपायमान है। अदिति बन करके तप रहा है सूर्य। उदेन बन करके उदय हो रहा है। परन्तु मेरी इच्छा ये है कि देवी !मैं भी तप करने जा रहा हूँ। अब मैं तुम्हारी सम्मति लेने के लिए आया हूँ। क्या तुम्हारी क्या सम्मति है। क्या मैं तप करने के लिए चला जाऊँ?

मेरे प्यारे !देखो, कात्याणी ने कहा, प्रभु, ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। क्योंकि जिस गृह में मानो पति तपस्वी होता है, वह गृह तो तपायमान हो जाता है। हे प्रभु !यह हमारा सौभाग्य है। आप तप करने के लिए जाइए भगवन् ! ''इन्द्राणी भूतम् ब्रह्मध्सेः'' कात्याणी ने कहा, प्रभु इन्द्रियों के ऊपर सँयम कीजिए। और आप तप करने के लिए जाइए। ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। मेरे पुत्रों ! देखो, जब काल्याणी ने ऐसा कहा, तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने कहा, धन्य है देवी !

माता मैत्रेय को महर्षि द्वारा मधु-विद्या माता मैत्रेय को महर्षि द्वारा मधु-विद्या माता मैत्रेय को महर्षि द्वारा मधु-विद्या

मेरे प्यारे !उनकी द्वितीय पत्नी का नाम मैत्रेय था। और मैत्रेय के जब समीप पहुँचे तो मैत्रेय ने भी उसी प्रकार उनका स्वागत किया। और मैत्रेय ने कहा, कहिए भगवन् !''ब्रह्मणे ऋतो देवत्वाम् लोकाम्''। हे प्रभु !आप देखो गृह लोक में पधारे हैं। आपके आने का कारण क्या है बिना सूचना के? मेरे प्यारे !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ''तपम् हिरण्यम् तपम् ब्रह्मेः लोकाम्, तपम् सम्भव ब्रहे ऋतम् देवत्वाः''। हे देवी !मैं तप करने के लिए जा रहा हूँ। तुम्हारी

क्या इच्छा है? क्योंकि तप करना ही मानव का कर्त्तव्य है। तो देवी मुझे आज्ञा दो, मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों !मुझे स्मरण आता रहता है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ये कहा, तो मैत्रेय ने कहा हे प्रभु !हमारे यहाँ यह आया है, यदि आप तप करने चले जाओंगे तो मैं प्रभु आपकी पत्नी हूँ। मेरा क्या बनेगा? उन्होंने कहा, हे देवी !तुम अज्ञानता में पहुँच गयी हो। अज्ञानता के शब्दों को प्रतिपादित न करो। मानो देखो, ये जो तपम् ब्रह्मणाः है ये तो अपना ही क्रियाकलाप है। अपने में ही मानव रत्त रहता है। हे देवी !देखो, यह अज्ञान तुम्हें कहा से आया है। मानो पति जो होता है, वह पत्नी तक सीमित होता है। यदि वह अपने लिए तपश्चर, अपने लिए पति बन जाए। अपने में पति उसे कहते हैं जो अधिपति कहलाता है। जो इन्द्रियों का स्वामित्व होता है वह अधिपति कहलाता है। हे देवी !यदि मैं अपने लिए स्वतः पति बन जाऊँगा तो मेरा कल्याण हो जाएगा। हे देवी !पत्नी जो होती है वह पति तक सीमित रहती है। परन्तु यदि वह अपने लिए पत्नी बन जाए, अपनी इन्द्रियों पर सँयमी बन जाए। मन और प्राण की दोनों की पुट लगाना जान जाए तो हे भगवन् देखो ये ''पत्नम् ब्रह्मणाः लोकाम्'' ''पत्नम ् ब ्रह्मणाः ला ेकाम ्'' ये ''पत्नम् ब्रह्मणाः लोकाम्'' अपने लिए पत्नी बन करके प्रभु को सखा स्वीकार करके मानो सागर से पार हो सकते हैं। हे देवी !देखो पुत्र जो होती है, वह पिता तक सीमित रहती है। यदि वह अपने लिए पुत्र बन जाए। क्या मेरा स्वामी, मेरा पिता तो मानो परमपिता परमात्मा है और मैं उसी में रत्त होना चाहती हूँ। तो मानो देखो, पुत्र का कल्याण हो जाएगा। हे देवी, पुत्र जो होता है वह माता तक सीमित होता है और यदि वह अपने लिए पुत्र बन जाए। प्रभु का पुत्र बन करके रहे तो देवी ! उसका कल्याण हो जाएगा। इसलिए जो भी मानव अपना कर्म करता हुआ, अपने लिए किया करता है। हे देवी !जो भी संसार में क्रियाकलाप हो रहा है वह सर्वत्र मानो अपने लिए हो रहा है। देखो चित्त जो होता है आत्म तृप्ती के लिए वह एकत्रित कर लेता है। परन्तु देखो आत्मा अपने में ही अपने में प्रतिष्ठित हो

जाती है। हे देवी देखो, जो अपने लिए क्रियाकलाप कर रहा है। परन्तु देखो जो भी संसार में लोकप्रियता को धारणा करता है, लोकप्रियता में रत्त हो जाता है वह भी अपने लिए ही क्रियाकलाप करता रहता है। हे देवी, इस संसार में जो भी मानव अपने में क्रियाकलाप कर रहा है वो अपने में संसार में जो भी मानव अपने में क्रियाकलाप कर रहा है वो अपने में संसार में जो भी मानव अपने में क्रियाकलाप कर रहा है वो अपने में ही तृप्त होने के लिए कर रहा है। ही तृप्त होने के लिए कर रहा है। परन्तु ये मधु विद्या है। इस मधु विद्या को जानने के लिए तुम सदैव तत्पर हो जाओ।

तुम्हें ये प्रतीत है, जब मेरा तुम्हारा आत्म विज्ञान के ऊपर शास्त्रार्थ हुआ था। उस समय मानो देखो, मैंने आत्मा के सम्बन्ध में क्या कहा था। वह आत्मा एक चेतना है और ज्ञान और विज्ञान से युक्त रहने वाला है। मानो ये आत्मा देखो ज्ञान और प्रयत्न से देखो प्रियम ब्रहे अपने में ही रत्त रहने वाला है। हे देवी !जो भी मानव अपने में ही कर्म करता रहता है वह अपने में ही सिमट जाता है। अपने में ओत-प्रोत हो जाता है। अपने में ही वो प्रतिष्ठता को प्राप्त कर लेता है। जैसे मानो देखो, ये पृथ्वी जब जल में प्रतिष्ठित हो जाती है तो यह आपोमयी कहलाती है। मानो आपो जब अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है तो मानो देखो, अग्निमयी कहलाता है। हे देवी !इसी प्रकार संसार एक-दूसरे के लिए कटिबद्ध हो रहा है। एक-दूसरे में रत्त हो रहा है। तो मानो देखो अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात तो मानो देखो अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करते रहो। करत े रहा े। हे करते रहो। देवी !मानो देखो, ये अज्ञान है, जो तुम उच्चारण कर रही हो। मानो देखो, मैं कर्म करूँगा, आत्मीयता में पहुँच जाऊँगा तो अपने लिए पहुँचेगा। परन्तु देखो ये तो सब क्रियाकलाप कहलाता है। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि के वाक्यों को पान करने वाली दिव्या ने कहा, प्रभु आप को धन्य है। आपने मेरे बाल्यकाल का जीवन और मानो ज्ञान और विज्ञान मुझे स्मरण कराया है। देव ने कहा, हे देवी !तुम्हें यह प्रतीत है कि एक विज्ञानवेत्ता है, वह परमात्मा के विज्ञान

में रत्त हो जाता है। और परमात्मा के विज्ञान में रत्त हो करके अन्वेषण करने लगता है। इस ब्रह्माण्ड की गणना करने लगता है। ब्रह्माण्ड के लोक-लोकान्तरों में चला जाता है। परन्तु वह अपने लिए ही व अपने में विज्ञानवेत्ता बन जाता है।

हे देवी !तुम्हें प्रतीत होना चाहिए। वेद का एक-एक मन्त्रा हमें विज्ञान की आभा में परणित कर रहा है। वेद मन्त्रा कहता है, ''प्रत्थम् ब्रह्माः ''प्रत्थम् ब्रह्माः ''प्रत्थम् ब्रह्माः प्रत्थम् दिव्याम् गतम् ब्रव्हे सम्भव प्रव्हा कृति लोकाः।'' प ्रत्थम ् दिव्याम ् गतम ् ब ्रव्ह े सम्भव प ्रव्हा कृति ला ेकाः।'' हे प्रत्थम् दिव्याम् गतम् ब्रव्हे सम्भव प्रव्हा कृति लोकाः।'' देवी !ये जो संसार है, मानो देखो, लोक-लोकान्तरों में परणित हो रहा है। और लोक-लोकान्तरों का कोई सूत्र बना हुआ है। उस सूत्र के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए। तुम्हें ये प्रतीत है कि मैं एक समय, हे देवी !अपने ब्रह्मचारियों के सहित मानो देखो, शिकामकेतु उद्दालक के गृह में चला गया था। और उद्दालक के गृह में मानो देखो, आकाशगङ्गा के ऊपर गणना की जा रही थी। मानो वहाँ पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण हो रहा था। वहाँ एक-दूसरे की माला के ऊपर मानो देखो, माला में माला को धारण कराया जा रहा था। मेरे प्यारे !देखो, मैत्रेय ने कहा, प्रभु वह कौन-सी माला थी जिन मालाओं को धारण करने में मानव एक-दूसरे में रत्त हो जाता है। तो बेटा !देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी !वह माला मानो देखो, शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ और वहीं मानो देखो, वृत्तिका मुनि विद्यमान थे। उन्होंने बेटा !वैशम्पायन इत्यादि सर्वत्र ऋषि-मुनियों का एक विचार-विनिमय होता रहा। तो उन्होंने कहा, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने ये कहा था कि ये जो माला है, इस माला को अपने में धारण करते चले जाओ। यदि तुम अपना कल्याण और अपने प्रभु के समीप जाना चाहते हो। मेरे प्यारे !उस विज्ञान में रत्त रहना चाहते हो।

माला का दिग्दर्शन माला का दिग्दर्शन

उन्होंने कहा प्रभु वह माला कौन-सी है? उन्होंने कहा कि वेद का ऋषि,

बेटा !वेद मन्त्रा उच्चारण करता हुआ कहता है ''प्रत्थम सूर्यस्वतम् ''प्रत्थम सूर्यस्वतम् ''प्रत्थम सूर्यस्वतम् ब्रव्हा ऋतम, व्रतम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः कर्ताः।'' ब ्रव्हा ऋतम, व ्रतम ् द ेवत्वाम ् ब ्रह्मण ेः कता र्ः।'' ब्रव्हा ऋतम, व्रतम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः कर्ताः।'' मेरे प्यारे !वेद का मन्त्रा, वेद के मन्त्रा में, ग्रह में, एक-एक देव के ग्रह में बेटा !देखो, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा निहित रहती है। जब वेद मन्त्रा को विचारने लगते हैं तो बेटा !उसमें एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है। वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य कहता है, क्या शिकामकेतु उद्दालक ने मुझे वर्णन कराया, हम सब ब्रह्मचारियों को। और हमें मानो अपनी विज्ञानशाला में ले गए। जिस विज्ञानशाला में पृथ्वियों को जानने का प्रयास किया। उनको जब जान लिया गया तो मुनिवरों !देखो, उसकी माला बनायी गयी। वे माला बन गयी। उस माला को कौन धारण कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, सूर्य उनको धारण कर रहा है। ''वेदाम् भूतम् ब्रह्माः सूर्याः'' बेटा !सूर्य में वे माला पिरोयी गयी और अपने में उन्होंने धारण कर लिया। क्योंकि सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा !तीस लाख पृथ्वियों की माला बन करके, बेटा !सूर्य, अपने में धारण करता है।

मेरे पुत्रों !देखो, इसी प्रकार वेद के ऋषि ने कहा, हे देवी !जब शिकामकेतु उद्दालक से यह प्रार्थना की गयी कि महाराज, ये माला किस प्रकार की है। उन्होंने कहा, ये तीस लाख पृथ्वियों की माला को धारण करने वाला प्राण सूत्र को अपने में धारयामि बनाने वाला सूर्य कहलाता है। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि अपने में शान्त नहीं रहा करते हैं। वह तो अन्वेषण करते ही रहते हैं। मुनिवरों ! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने जब और अनुसन्धान किया। तो मुनिवरों ! देखो एक सहस्त्रा सूर्यों को उन्होंने जानने का प्रयास किया। अपनी विज्ञानशाला में जाना एक सहस्त्रा सूर्यों को। सूर्यों की माला बनी। उस माला के धारण करने वाला बृहस्पति कहलाता है। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा !एक सहस्त्रा सूर्य की माला बन करके उसको अपने में धारण कर रहा है। इतना

विशाल मण्डल है बेटा !मैं तुम्हें विवेचना नहीं देने जा रहा हूँ। बेटा !इनका परिचय देने जा रहा हूँ कि वेद मन्त्रा क्या कह रहा है। और वेद का ऋषि क्या उद्गीत गा रहा है इस सम्बन्ध में। मेरे पुत्रों !देखो, जब और माला बनी तो वैदिक ऋषियों ने बेटा !देखो, एक सहस्त्रा बृहस्पतियों को जाना। उसकी माला बनी। उस माला को मुनिवरों !देखो, आरुणी अपने में धारणा करने लगा। आरुणी इतना विशाल मण्डल है बेटा !जिसमें मुनिवरों !देखो, एक सहस्त्रा बृहस्पति समाहित हो जाते हैं। और आरुणी मण्डल इतना विशाल मण्डल, मुनिवरों !देखो, उनको अपने में धारणा कर रहा है। एक सहस्त्रा आरुणी मण्डलों की माला बनी बेटा ! उसको धुरव मण्डल ने अपने में धारणा कर लिया। धुरव मण्डल इतना विशाल मण्डल है जिसमें एक सहस्त्रा आरुणी समाहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, एक सहस्त्रा आरुणाम् ब्रव्हे ऋतम् धुरवम् ब्रह्माः ऋदम् देवाः''। वेद के आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा क्या एक सहस्त्रा धुरव मण्डलों की माला बनी। मेरे पुत्रों !उसको पुष्प नक्षत्र ने अपने में धारणा कर लिया। एक सहस्त्रा पुष्प नक्षत्रों की माला बनी उसको बेटा !देखो, स्वाति ने अपने में धारणा कर लिया। एक सहस्त्रा स्वाति मण्डलों की माला बनी उसको अचú मण्डल ने अपने में धारणा कर लिया। एक सहस्त्रा अचú मण्डलों की माला बनी बेटा !उसको मूल नक्षत्र ने अपने में धारणा कर लिया। एक सहस्त्रा मूल नक्षत्रों की माला बनीं जिसको मेरे प्यारे ! मौनत्रितिका मण्डल ने अपने में धारणा कर लिया। एक सहस्त्रा मौनत्रितिका मण्डलों की माला बनी बेटा !देखो, उसको अपने में, देखो गन्धर्व मण्डल ने अपने में धारणा कर लिया।

मेरे पुत्रों !उस प्रभु का कितना विशाल मण्डल है। आज मैं बहुत मण्डलों में चला गया हूँ। विचार आता रहता है बेटा!, इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है। इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बना। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि शान्त नहीं रह सकते थे। मेरे प्यारे !शिकामकेतु उद्दालक ने समाधिष्ठ हो करके और महर्षि वैशम्पायन ने और मुनिवरों !देखो तत्वेत्वर ऋषि महाराज ने अपने में

अन्वेषण करना प्रारम्भ किया, समाधिष्ठ हो गए। और उन्होंने समाधि के द्वारा, मुनिवरों !देखो, क्रियात्मकता में भौतिक विज्ञान को जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे !देखो, उसमें शिकामकेतु उद्दालक ने, मुनिवरों !देखो अपने ब्रह्माण्ड वृत्तियों को जानने के लिए मुनिवरों !देखो, उन्होंने लगभग एक अरब छानवे करोड़ उनतीस लाख उनचासवें हजार पाँच सौ इकसठ (1,96,29,49,561)के लगभग बेटा !इतने सौर मण्डलों की एक, एक मुनिवरों !देखो आकाशगङ्गा बन गयी। मानो देखो, एक आकाशगङ्गा बन गयी। मानो देखो, एक आकाशगङ्गा का इतना विस्तार माना गया है। वैदिक आचार्यों ने बेटा !अपने में विज्ञानवेत्ता बन करके प्रभु के विज्ञान को जानने के लिए जब तत्पर होने लगे। तो बेटा !विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा है। विज्ञान अपने में बड़ा सार्थक माना गया है। आओ मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने आगे जब विचार-विनिमय किया तो बेटा !देखो, एक अरब पचासी करोड़ नवासी लाख उनचासवें हजार पाँच सौ बावन (1,85,89,49,552)के लगभग बेटा !ऐसी-ऐसी आकाशगङ्गाएँ की बेटा !देखो, एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे !देखो, एक अवन्तिका बन गयी। और मुनिवरों !पौने दो अरब अवन्तिकाओं की बेटा !एक निहारिका बन गयी। मेरे पुत्रों !देखो, प्रभु का ब्रह्माण्ड तो बड़ा अनन्तमयी है। ऋषि आगे नेति-नेति कह करके मौन हो गया। और वेद के ऋषि ने कहा है क्या, ''ब्रह्मणेः कतम् देवत्वाम् लोकाः'' मानो देखो, एक-दूसरे में माला पिरोयी जाती है। मालाओं का निर्माण होता है। और उन मालाओं को मुनिवरों !देखो, परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, उद्गीत गाने वाला है। मेरे प्यारे !एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो रहा है। एक-दूसरे में पिरोया जा रहा है। तो विचार आता रहता है। मेरे पुत्रों ! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की जिज्ञासा महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की जिज्ञासा महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की जिज्ञासा

हे देवी !मेरे पुत्रों !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे देवी !हमने

शिकामकेतु उद्दालक से जिज्ञासा प्रगट की। उन्होंने कहा, हे ऋषिवर !ये आपने कैसे जाना है इतने ब्रह्माण्ड को। तो उन्होंने कहा, मैं अपनी विज्ञानशाला में याग करता रहता हूँ। यज्ञशालाएँ हैं, और विज्ञानशालाएँ हैं, उनमें अन्वेषण करता रहता हूँ। शब्द के ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। अग्नि की धाराओं के ऊपर शब्द विद्यमान हो करके ये मानो देखो, ब्रह्माण्ड और द्यौ में ओत-प्रोत हो जाता है। हे देवत्याः, मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान, मैंने याग के माध्यम से जानने का प्रयास किया है। मेरी जो पत्नी है, दिव्या है, रम्भेश्वरी, मानो हम दोनों अन्वेषण करते रहते हैं। अपने पूर्वजों का दर्शन करते रहते हैं। मानो देखो, ये विज्ञान अपने में हमने जानने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले, हे देवी !महर्षि ने जब मुझे ये वर्णन कराया तो मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो गया। और मैंने ये विचारा कि इसमें तो तप की आवश्यकता है। मेरे पुत्रों ! देखो, ऋषियों ने वायु का सेवन करते-करते इस विद्या को जानने का प्रयास किया व विज्ञानवेत्ता बनने के लिए सदैव तत्पर रहे। परन्तु विज्ञान अपने में महान् है, विचित्रत्व है। परन्तु विज्ञान में देखो दुरुपयोगिता नहीं होनी चाहिए।

मेरे पुत्रों !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब अपनी पत्नी मैत्रेय से यह कहा कि हे देवी !जो भी कुछ मानव विज्ञानवेत्ता बनता है, निहारिकावेत्ता बनता है, वह आकाशगङ्गाओं को जानता है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में रमण करता हुआ अपने लिए ही कर रहा है। मानो देखो, अपने राष्ट्र के लिए, अपने समाज के लिए, अपने समूह के विज्ञान को जानने के लिए तो वो सदैव तत्पर रहता है। हे देवी!, यदि ये विद्याएँ तुम्हारे समीप आ जाएँ। मानो ये सङ्कीर्णता को त्यागना तुम्हारा धर्म है। मानो देखो, तुम व्यष्टि और समष्टि में प्रवेश हो जाओ। व्यष्टि को त्यागते व्यष्टि को त्यागते व्यष्टि को त्यागते रहें और समष्टि में प्रवेश हो जाओ। रहें और समष्टि में प्रवेश हो जाओ।

देवी ने कहा, प्रभु !आपको धन्य है। आप भगवन् तप करने जाइए, भगवन् ! तो मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा हे मैत्रेय !तुम सन्तुष्ट हो।

मेरे इस ज्ञान के उच्चारण करने से तुम्हारा हृदय सन्तुष्ट हो गया है। उन्होंने कहा, हे भगवन् !हम सब सन्तुष्ट हैं। आप तप करने जा रहे हैं ये हमारा बड़ा सौभाग्य है। हे मेरे देव !आप तप करने के लिए जाइए।

मेरे प्यारे !महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस मधु विद्या को प्रदान करते हुए, क्या मानव अपने में ही अपनेपन का दर्शन करता रहे। अपने, अपने में ही विज्ञान का दर्शन करता रहे। अपने में अपने विज्ञान को बाह्य जगत के विज्ञान का, दोनों का समन्वय करता रहे तो मानो देखो, ये अपनापन कहलाता है। इसे मधु विद्या कहते हैं। ये मधुमय मानी गयी है।

महर्षि का पुनः से तप के लिए भयङ्कर वन में गमन महर्षि का पुनः से तप के लिए भयङ्कर वन में गमन

मेरे पुत्रों !देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने दोनों देवियों को सन्तुष्ट करने के पश्चात् वह भयङ्कर वन में चले गए। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि जब भयङ्कर वन में चले गए तो वहाँ विचारने लगे। वेद मन्त्रा उन्हें स्मरण आने लगा। और वेद मन्त्रा उन्हें स्मरण आने लगे। और वेद मन्त्रा यह कह रहा था ''तपम् हिरण्यम् तपम् दिव्याम् तपम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः तपाः'' ''तपम् हिरण्यम् तपम् दिव्याम् तपम् देवत्वाम् ब्रह्मणेः तपाः'' तो वेद का ऋषि यह विचारने लगा कि वेद मन्त्रों में तप की महिमा तो आयी है।

परन्तु तप किसे कहते हैं। ये तप है क्या। मेरे पुत्रों !देखो ऋषि विचारने लगा। वेद मन्त्रा को पुनः विचारने लगा ''अन्नम् भूतम् ब्रह्मणे मनाः, ''अन्नम् भूतम् ब्रह्मणे मनाः, ''अन्नम् भूतम् ब्रह्मणे मनाः, अन्नम् दिव्याम् प्राणम् ब्रव्हे विचारास्सुतम् देवत्वाम्।'' अन्नम ् दिव्याम ् प ्राणम ् ब ्रव्ह े विचारास्स ुतम ् द ेवत्वाम ्।'' अन्नम् दिव्याम् प्राणम् ब्रव्हे विचारास्सुतम् देवत्वाम्।'' मेरे प्यारे ! देखो, जब इस प्रकार के वेद मन्त्रों का ऋषि उद्गीत गाने लगा। उसने कहा कि वेद मन्त्रा तो यह कहता है, क्या ये जो मन है, ये तो अन्न से पवित्र बनता है। और मन जब पवित्र होता है तो विचार आते हैं। विचार आते हैं और मन जब

पवित्र होता है तो विचार आते हैं। विचार आते हैं और मन जब पवित्र होता है तो विचार आते हैं। विचार आते हैं तो प्राण की धाराएँ पवित्र होती हैं और उसी से हम ज्ञान और तो प्राण की धाराएँ पवित्र होती हैं और उसी से हम ज्ञान और विज्ञान में सार्थक बन जाते हैं। विज्ञान में सार्थक बन जाते हैं। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार अपने में अन्वेषण किया। अपने में अनुसन्धान किया। तो मुझे बेटा !स्मरण आता रहता है क्या ऋषि, बेटा !देखो, उस अन्न को एकत्रित करना ऋषि ने प्रारम्भ किया जिसको शिलस्त अन्न कहा जाता है। उस अन्न को एकत्रित किया। उस अन्न को पान करते थे। वायु का सेवन करते थे। और मुनिवरों !देखो, मन कैसे पवित्र बनता है, अन्न के द्वारा। अन्न जब पवित्र बन जाता है तो मन पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। ये देव प्रवृत्ति को प्राप्त होने लगता है। इन्द्रियों के ऊपर सँयम हो जाता है। इन्द्री बेटा !देखो, पाँच ज्ञानेन्द्रि, पाँच कामेन्द्रियाँ और दस प्राण कहलाते हैं। और मुनिवरों !देखो ये मन, बुद्धि, चित्त अंहकार, ये चतुषश्चः अन्तःकरण अन्तःकरण अन्तःकरण कहलाता है।

शतपथ ब्राह्मण का निर्माण शतपथ ब्राह्मण का निर्माण शतपथ ब्राह्मण का निर्माण

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि इसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे। तो मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है पुत्रों !क्या ऋषि ने बेटा !बारह वर्ष तक उस शिलस्त अन्न को पान किया। और जब पान करते थे तो बेटा !उसके पश्चात् उन्होंने एक लेखनीबद्ध, एक लेखनी प्रारम्भ की। और उस लेखनी में मुनिवरों !देखो उन्होंने शतपथ ब्राह्मण का निर्माण किया। जो सत् का जो सत् का जो सत् का पथिक होता है वही तो ब्राह्मण कहलाता है। पथिक हा ेता ह ै वही ता े ब ्राह्मण कहलाता ह ै। पथिक होता है वही तो ब्राह्मण कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने ये लोलुप्ति दी। वेद का आचार्य कहता है ''ब्रह्मचरिष्यामि गतम् ब्रह्माः ''ब्रह्मचरिष्यामि गतम् ब्रह्माः ''ब्रह्मचरिष्यामि गतम् ब्रह्मणाम् लो ब्रह्मणाम् लो ब्रह्मणाम् लोकम् ब्रह्मे व्रतम्।'' कम ् ब ्रह्म े व ्रतम ्।'' कम् ब्रह्मे व्रतम्।''

मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने तीन शब्द प्रारम्भ में उच्चारण किए। जो वेद के प्रथम रूपों में रत्त होते रहते हैं। उन्होंने कहा, अग्नि क्या है। मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने कहा, अग्नि वह है जिसमें दुरिता न रहे। उन विचारों का नाम देखो अग्नि तुल्य माना गया है। मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने कहा, ब्रह्मवर्चोसि ब ्रह्मवचा े र्सि किसे कहते ब्रह्मवर्चोसि हैं। ब्रह्मवर्चोसि उसे कहते हैं जो मानो देखो चरि, दो ही शब्द हैं संसार मेंदृचरि और ब्रह्म। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जो चरि को अú और उपाúोें से जानता है और ब्रह्म उसमें ओत-प्रोत है, जो उसे जानता है बेटा !वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है।

मेरे प्यारे !देखो, जब ब्रह्मचारी विद्यालय में प्रवेश करता है तो आचार्य कहते हैं, चक्षु में शुन्धामि, प्राणम् में शुन्धामि, श्रोत्रम् में शुन्धामि। मेरे प्यारे !वो आचार्य कहता है, ब्रह्मचारी तू मुझे इन्द्रियों को प्रदान कर। मैं तेरे इन्द्रियों के दोष को अपने में धारण करना चाहता हूँ। आचार्य के जो विचारणीय उद्गार हैं वही तो बह्मचारी के हृदय में बेटा !प्रविष्ट हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, इस प्रकार का उद्गीत अमृतम् देखो वह ब्रह्मचरिष्यामि कहलाया गया है। उन्होंने कहा, ब्राह्मण कौन है। वेद के ऋषि ने कहा है ''ब्रह्मणाम् ब्रह्मेः ऋतम् देवत्वाम् देवा ब्रहा कृति लोकाम्''। ब्राह्मण वह कहलाता है जो कण-कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करने वाला है। एक-एक कण-कण में ब्रह्म का दर्शन करता है। अपने को ब्रह्म में और ब्रह्म को जो अपने में पिरो देता है, मेरे पुत्रों !देखो, वह ब्राह्मण कहलाया जाता है। वेद के ऋषि ने प्रश्न किया, क्या ब्राह्मण कौन है। जो कण-कण में मानो देखो, ब्रह्म की आभा को दृष्टिपात करता है और ब्रह्म की आभा में ही ये संसार विज्ञान के रूप में रत्त रहता है, वह ब्राह्मण कहलाता है। परन्तु वेद का ऋषि पुनः प्रश्न करता है, क्या ब्राह्मण कौन है। उन्होंने कहा, ब्राह्मण वह है जो, जो अपने में ब्रह्म को समाहित कर देता है और अपने को ब्रह्म में समाहित कर लेता है। एक-दूसरे के जब पूरक बन जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, वह प्रत्येक प्राणी मात्र में; अपने में ही अपनेपन का दर्शन करता है। बेटा !वो ब्राह्मण कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे !वेद का ऋषि अपनी विवेचना देते हुए, कितनी महानता की वार्त्ता प्रकट कर रहा है। वह कहता है ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्मचारी कौन है। अरे ! ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी किसे कहते हैं। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। मानो ब्रह्म की चरि क्या है। बेटा !जितना भी ये ब्रह्माण्ड है और उसमें जो ब्रह्म की चरि अग्निमयी स्वरूप में रमण कर रही है। आपोमयी स्वरूप में रमण कर रही है। गुरुत्व रूप में रमण कर रही है। मेरे पुत्रों !जो तेजोमयी बनी हुई है। उसे जो बेटा !वो अúोें-उपाúोें से जानता है, वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि कहता है क्या ब्रह्मचारी कौन है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह है जो अपने को मानो देखो, ब्रह्म में पिरो देता है। वह अपने को मनका बना देता है और मनका किसी सूत्र में पिरो देता है, वो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की बुद्धि बड़ी प्रखर और महानता में थी। उन्होंने स्वयँ प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी कौन है। वह कहता है कि एक-एक श्वास जो गतिवान् हो रहा है। एक-एक श्वास का जब वो मनका बना देता है और मनका बना करके जब वो ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है, मेरे पुत्रों !वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मवर्चस्सुतम्, मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी कौन है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी लौकिकता में उसे कहते हैं जो प्रजा का निर्माण करता है। प्रजामयी बना देता है वो समाज को प्रजामयी। मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसी का पालन करता रहता है। आओ मेरे प्यारे !मैं विशेष तुम्हें विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों !देखो विचार ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी महानता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें।

वेद के ऋषि ने जब शतपथ ब्राह्मण की विवेचना करने लगे, लेखनीबद्ध करने लगे तो उन्होंने तीन शब्दों को लिया। वह तीन शब्द तीन शब्द, तीन शब्द

ब्राह्मण क्या है, ब्रह्मचारी क्या है और ब्रह्म की चरि को कौन चरता है। तो मेरे प्यारे !देखो, ये तीन शब्दों की विवेचना करने वाला ये सर्वस्व शतपथ ब्राह्मण कहलाता है। तो आओ मेरे प्यारे !देखो, विचार-विनिमय क्या। आज का हमारा वेद मन्त्रा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए और देखो ब्रह्म, ब्राह्मण ब्रहे ब्रह्मचरिष्यामि, हम सर्वत्रता को जान करके बेटा ! उन्होंने एक तपश्चर, बारह वर्ष का तप किया। और वे शिलस्त अन्न को पान करते थे। वायु का सेवन करते थे। मेरे पुत्रों !देखो, वह तपस्या कही जाती है। हमारे यहाँ पर उसे तप कहते हैं, तप कहते हैं इन्द्रियों के विषयों को जानना, और जान करके मुनिवरों !देखो उनकी चर्म सीमा पर पहुँच जाना। और उनको समेट लेना और समेट करके मुनिवरों !देखो मन को समर्पित कर देना और मन को समर्पित करके प्राण में प्रतिष्ठित हो जाना। मेरे पुत्रों !उसके पश्चात् जो भी महापुरुष अपनी लेखनियाँबद्ध करने लगेगा, बेटा !वह परमपिता परमात्मा की वैदिक वाणी में से देखो अपनी वाणी को सन्तुलित कर लेता है। तो विचार-विनिमय बेटा !उच्चारण करने का हमारा क्या है। हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे !देखो, हमारा जीवन तपोमय होना चाहिए। तप की मीमांसा करने वाले याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, बेटा !बारह वर्ष का तप करने के पश्चात् वह शतपथ ना ब्रह्मे, शतपथ नाम की पोथी का निर्माण करते हुए वह वहाँ से बेटा !भयङ्कर वनों से गमन करते हैं।

महर्षि का तप के उपरान्त पुनः से विद्यालय में आगमन महर्षि का तप के उपरान्त पुनः से विद्यालय में आगमन

बारह वर्ष के पश्चात् मेरे पुत्रों !देखो, अपने विद्यालय में पहुँचे। विद्यालय में प्रसन्नता का वातावरण छा गया। ब्रह्मचारियों ने चरणों की वन्दना की। और उन्होंने कहा, कहो भगवन् !आपने क्या तप किया है। उन्होंने कहा, ब्रह्मचारियों ये पोथी का मैंने तुम्हारे लिए निर्माण किया है। इसके ऊपर तुम अपना आचरण

करो। मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मचारी कहते हैं धन्य है प्रभु !आपने हमाने अज्ञान को दूरी कर दिया है। हमारे जीवन को प्रकाश में पहुँचाया है। हम प्रकाश को चाहते हैं। क्योंकि प्रकाश का नाम प्रकाश का नाम जीवन है। जीवन ह ै। अ जीवन है। और अज्ञान का नाम मृत्यु है। अन्धकार से आपने हमें प्रकाश में पहुँचाया है। बेटा !देखो, ''तपम् ब्रह्मणे ऋतम्'' वेद के आचार्य ने कहा कि संसार में तप ही जीवन है। स ंसार म े ं तप ही जीवन ह ै। ये संसार में तप ही जीवन है। संसार एक-दूसरे में तप रहा है। मानो सूर्य तपता है तो चन्द्रमा को तपायमान करता है। चन्द्रमा अमृत देता है और सूर्य ऊर्ज्वा देता है। मानो देखो, अग्नि अपने में उष्णा बनी रहती है तो यह तपोमय कहलाती है। आपोमयी तप रहा है, यह मानो प्राण सत्ता प्रदान कर रहा है। ये पृथ्वी तप रही है नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देती है। संसार में मेरी प्यारी माता जब तपस्वी बन जाती है तो ये मानो देखो, अपने गर्भ के आत्मा से वार्त्ता प्रगट करके, प्राण को अपान में समेट करके मानो देखो, उससे ''अमृताम् भूतम् ब्रह्मणे।'' मेरे प्यारे !वह तपो से देवता को, प्रजा को जन्म दे देती है। तो विचार आता रहता है।

आज के हमारे वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः वाक्य उच्चारण करन े का अभिप ्रायः ये है कि हम वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें। परमात्मा का ये जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है वह प्रभु कैसा अनन्तवान् है। ऐसा ही उसका अनन्तमयी जगत की रचना उसने की है। इस ब्रह्माण्ड को बेटा !ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा !मापते चले आए हैं। निर्माणित करते चले आए है। ये है बेटा !आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ''ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनुः वाचन्न गताः'' ''ओ३म् तनु गायाः वसुः वाचाहम् ब्रह्मणाः'' ''ओ३म् देवम् रथ् सञ्जनाः आभ्याम् लोकाः'' ''ओ३म् यश्शाचाहम् भूः आभ्याम् रथश्स्वाहम् मनुः आपाः'' ''ओ३म् भद्राणि वसु मन्थाः आपा देवम् अग्नम् ब्रह्मणाः वायाः'' दिनाँक 5 :फरवरी,

: 1990स्थान :जोधपुर)राजस्थान(

१२ 11 02 1990 याग के होता

जीते रहो !देखो मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके सर्वज्ञता की प्रतिभा का दर्शन होता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और याग उसका आयतन है उसका गृह है, उसका सदन है। और वह उसी में वास कर रहा है। मैं कई समय से याग के सम्बन्ध में अपने विचार देता रहा। आओ मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि-मुनियों ने इस याग को ब्रह्माण्ड रूपी याग को, मुनिवरों !देखो पिण्ड को वर्णित किया गया। ये कहा कि ''पिण्डम् ब्रव्हा ब्रह्माण्डेः ममत्वम् देवत्वाम् लोकाः।'' मानो ये जो मानव का पिण्ड है। क्योंकि हमारे यहाँ भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का अपने में समन्वय किया है। और समन्वय करने का उन्होंने प्रयास किया। और अन्त में बेटा!, उसी चिन्तन में वो मौन हो जाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों !आज मैं तुम्हें एक विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जिस विद्यालय में याग की प्रायः चर्चाएँ होती रही हैं। ये वाक्य हमने पूर्व काल में भी प्रगट किया है। आज भी उन्हीं वाक्यों में तुम्हें हम ले जाना चाहते हैं। जहाँ ब्रह्मचारीगण अपने में मानो देखो, अपनेपन के विचार देते रहे हैं। और आचार्यों से जिज्ञासा प्रगट करते रहे हैं। और वे अपने में उनकी जिज्ञासा को पूर्ण करने वाले सदैव रहे हैं। आओ मुनिवरों !आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ मुनिवरों !देखो गुरु और शिष्य दोनों में परस्पर प्रायः चर्चाएँ होती रहती हैं। ये चर्चाएँ मुनिवरों !देखो त्रेता के काल में वशिष्ठ आश्रम में भी और विश्वामित्र आश्रम में भी इस प्रकार की चर्चाएँ होती रही हैं। ज्ञान और विज्ञान की प्रायः मानव अपने में उड़ाने उड़ता रहा है और

आध्यात्मिकवाद के ऊपर समन्वय करता रहा है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का उपदेश महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का उपदेश महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का उपदेश

आओ मुनिवरों! देखो मैं इसी क्षेत्र में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा ! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं। क्योंकि विद्यालय में प्रातःकालीन मुनिवरों !देखो याग हुआ और न्योदा में मन्त्रों का उद्गीत गाया गया। सामगान अपने में गाने लगे। ''तपम् हिरण्यम् ब्रव्हे ऋतम दिव्यम् ब्रव्हाः'' हिरण्यम ् ब ्रव्ह े ऋतम दिव्यम ् ब ्रव्हाः'' वह तप की हिरण्यम् ब्रव्हे ऋतम दिव्यम् ब्रव्हाः'' इसमें विवेचना होने लगी। और तप की चर्चाएँ हमारे यहाँ सर्वोपरि मानी गयी हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। और तप की विवेचना करते हुए ऋषि ने यह कहा है, क्या प्रत्येक मानव को अपनी इन्द्रियों पर संयम करना चाहिए और इन्द्रियों को इन्द्रियों पर जब संयम होता है। जब ''मरस्तम् पवित्रणी भूतम् ब्रव्हे'' जब ये मन की पवित्रता महान् और पवित्रतम् कहलायी जाती है। तो आओ मेरे पुत्रों !देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यह उपदेश दे रहे थे। और प्रातःकालीन अपने ब्रह्मचारियों से उद्गीत गा रहे थे हे ब्रह्मचारियों !तुम्हें महान् और पवित्रत्व में रमण करना है जिससे तुम्हारा मानवीयत्व पवित्रता को प्राप्त होता रहे। और तुम ऊर्ध्वा में गमन करने वाले बनो। लोक-लोकान्तरों में तुम्हारा यातायात होना चाहिए। और तुम मानो देखो, अपने सूक्ष्म, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों में तुम सदैव अपने में यातायात तुम्हारी मानो देखो, स्मरण शक्ति से बना रहे। और उसके ऊपर तुम्हारा आधिपत्य होना चाहिए।

यजमान की जिज्ञासा यजमान की जिज्ञासा यजमान की जिज्ञासा

मेरे पुत्रों !देखो, ये वाक्य, ये उच्चारण कर रहे थे। इतने में ही ब्रह्मचारियों ने, ब्रह्मचारी उनमें से एक यजमान बना। एक मानो देखो,

जिज्ञासा में परणित हो गया और एक मुनिवरों !देखो उनकी सहायता के

लिए विद्यमान हुआ। तो उस समय प्रश्नकर्त्ता ने कहा, जिज्ञासा को ले करके ऋषि के समीप जा करके बोले कि हे प्रभु, ये जो यजमान है, यह उपस्थित है और यह अपने में याग करना चाहता है। हे प्रभु !कितने होता होने चाहिए? मैं होताओं के सम्बन्ध में प्रश्न करना चाहता हूँ। मेरी यह जिज्ञासा बनी रहती है। तो मुनिवरों ! देखो ऋषि ने इस सम्बन्ध में उत्तर दिया। ब्रह्मणेः मानो देखो, चौबीस होताओं के द्वारा यजमान याग कर सकता है। चौबीस होता तुम्हारे पवित्रत्व को प्राप्त रहेंगे। उनके द्वारा तुम याग करो। मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए। तो उन्होंने कहा यजमान याग करना चाहता है तो ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों ! उन्होंने जब पुनः यह प्रश्न किया, क्या यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए। तो उस समय याज्ञवल्क्य ऋषि महाराज ने कहा, क्या वह नौ होताओं के द्वारा याग कर सकता है। मेरे पुत्रों !पुनः जब यह प्रश्न किया, क्या यजमान याग करना चाहता है, उन्होंने सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया कि महाराज !यजमान याग करना चाहता है भगवन् !वह कितने होताओं के द्वारा याग करे। उन्होंने कहा, पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए। तो उन्होंने कहा, तीन होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों !पुनः जब ये प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों। उन्होंने कहा, दो के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों ! देखो, पुनः जब ये प्रश्न किया तो एक होता रह गया। मुनिवरों !देखो ऋषि अपने में मौन हो गया। मौन हो जाने के पश्चात् ब्रह्मचारी ने पुनः ये प्रश्न किया। क्या महाराज !ये सत्रह होता कौन से हैं जिनके द्वारा यजमान याग करेगा? उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ ''यश्स्वतम् ब्रह्मणाः ऋतम् देवत्वाम् लोकाः यश्सञ्जनम् ब्रीहि ऋतम् देवत्वाम्।''

चौबीस होता चौबीस होता चौबीस होता

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों !यजमान यदि अपने होता की गणना करना चाहता है, वह क्यों चाहता है। उन्होंने कहा, प्रभु वो यजमान है और यजमान अपने में याग करने के लिए तत्पर हुआ है। उन्होंने कहा, क्या ये मानो देखो, चौबीस होता कौन-से हैं? बेटा !दस प्राण दस प्राण दस प्राण हैं और दस इन्द्रियाँ हैं। और मुनिवरों !देखो मन, बुद्धि, चित्त और हैं और दस इन्द्रियाँ हैं। और मुनिवरों !देखो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये अहंकार चतुषः अन्तःकरण कहलाता है। मानो देखो, इनके द्वारा याग होना चाहिए। जब तक हमारे, देखो हम प्राणों के एक-दूसरे के सहयोग को नहीं जान पाएँगे। क्या हमारे शरीर रूप यज्ञशाला में प्राणों का जो सहयोग हो रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, प्राण है, अपान है, उदान है, समान है, व्यान है। इन प्राणों का हमें मानो समन्वय करना चाहिए। जैसे देखो नाग, देवदत्त, धनञ्जय, कुरू, कृकल, ये दस प्राण कहलाते हैं। और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती हैं। इसका परस्पर दोनों का जो समन्वय होता है। परस्पर जो एक-दूसरे में, मानो पिरोए हुए रहते हैं इसको हमें जानना है। और जान करके मुनिवरों !देखो मन में पिरोना है। इनके विषय को मन में पिरोना है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। तो मेरे प्यारे ! देखो, एक-दूसरे के ये पूरक कहलाते हैं। जैसे परमपिता परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड है। यह भी एक-दूसरे में पूरक कहलाया गया है। एक-दूसरे में पिरोया हुआ दृष्टिपात आ रहा है। जैसे बेटा !देखो, ये पृथ्वियाँ हैं और पृथ्वी सूर्य में पिरोयी हुई है। और सूर्य गन्धर्व में पिरोया हुआ है। गन्धर्व में मुनिवरों !देखो ये अमृतम्, आरुणी पिरोया हुआ है और आरुणी, मुनिवरों !देखो वह स्वाति धुरव में पिरोया हुआ है। और स्वाति, पुष्प में पिरोया हुआ है और पुष्प, मुनिवरों !देखो वह मूल नक्षत्र में पिरोया हुआ है। और मूल, अचú में पिरोया हुआ है। अचú, ब्रीहि मण्डल में पिरोया हुआ है। ब्रीहि मण्डल, मुनिवरों !देखो वातकेतु मण्डल में पिरोया हुआ है। और वातकेतु मण्डल, मुनिवरों !देखो गन्धर्व में पिरोया हुआ रहता है। तो इसी प्रकार मुनिवरों !देखो यजमान की प्रत्येक इन्द्रियाँ और प्राण,

मुनिवरों !देखो ये मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार एक-दूसरे में पिरोयी हुई रहती हैं। और ये मनस्तत्त्व में पिरोयी रहनी चाहिए। और मन मुनिवरों !देखो प्राण में पिरोया मानो प्राणेश्वर में प्रणव में पिरोया हुआ रहता है। इसी प्रकार मुनिवरो ! देखो, बुद्धि अपने में महान् कहलाती है। बुद्धि कहीं रेणुका बन करके रहती है। कहीं बुद्धि बन करके रहती है। कहीं मानो देखो, ऋतम्भरा, प्रज्ञावी और मेधावी बन करके रहती है। तो विचार आता रहता है मेरे प्यारे !सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा इसमें सदैव निहित रहती है तो हमें इसे विचार-विनिमय करना चाहिए। यजमान जब याग करने के लिए तत्पर होता है तो उसको बाह्य जगत और आन्तरिक जगत, दोनों को जान लेना चाहिए। कि बाह्य जगत मेरा कैसा होना चाहिए। मेरे पुत्रों !देखो, आन्तरिक जगत मेरा कैसा होना चाहिए। जब तक इन दोनों में समन्वय नहीं होगा, उन्हें मुनिवरों !देखो याजम् भूतम् ब्रह्माः याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं, क्या वो याग में परणित हो जाता है और वो याज्ञिक बन जाता है।

मेरे पुत्रों !देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। उन्होंने कहा, सबसे प्रथम मानव को देखो प्राणों को जानना चाहिए। मुनिवरों !देखो, प्राण अपान में, अपान व्यान में और व्यान मानो देखो, समान में और समान व्यान में जब प्रवेश हो जाता है तो मुनिवरों !देखो, उसे नाना प्रकार की प्रतिभाएँ और इस ब्रह्माण्ड की आभाएँ उसे प्राप्त हो जाती हैं। मेरे पुत्रों !देखो, जब प्रत्येक इन्द्रियों का एक-दूसरे में समन्वय हो जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, नाग प्राण को जानना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि नाग प्राण एक ऐसा है जब मानव को क्रोधाग्नि जागरुक होती है तो नाग प्राण का ऊर्ध्वामुख बन जाता है और वो इस मानवीय जो शरीर है, शरीर रूपी यज्ञशाला है इसमें जो अमृत की उपलब्धि हो रही है वह उस मानो देखो, अमृत को वह विष बना देता है। और विष बना करके मुनिवरों ! देखो, वह अमृत को निगल जाता है और विष को वह त्याग देता है। और विष ही मुनिवरों !देखो, किसी-न-किसी रूप में मानो देखो, नाना प्रकार के रुग्णों के

रूप में वह परणित हो जाता है। उसका स्वरूप एक मानो विचित्र बन करके मुनिवरों !देखो, मानव अपने में रुग्णता को प्राप्त हो जाता है।

विचार आता है बेटा !नाग, देवदत्त, धनञ्जय अपने में अपनेपन को ही मुनिवरों !देखो, अपने में वह जो प्राण है, उनको वृत्तियों में रत्त रहना चाहिए। तो मेरे प्यारे !मैं इस विज्ञान में जाना नहीं चाहता हू ँ। वह देखो इस विज्ञान में बहुत समय की आवश्यकता है। अब तो मैं तुम्हें केवल परिचय देने के लिए आया हू ँ। देखो एक दूसरा प्राण एक-दूसरे की जो माला बना हुआ है। जैसे ये परमात्मा का ब्रह्माण्ड मुनिवरों !देखो, मानव के सदृश दृष्टिपात आता है। इसी प्रकार मुनिवरों !देखो मानव का जीवन भी एक माला के सदृश हमें दृष्टिपात आता है। जैसे मुनिवरों !देखो प्रत्येक ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियों में पिरोयी हैं, कर्मेन्द्रियाँ मुनिवरों !ज्ञानेन्द्रियों में पिरोयी हुई हैं। एक-दूसरे में मानो देखो, एक-दूसरे का सहयोग हो और शरीर रूपी यज्ञशाला का क्रियाकलाप देखो क्रिया में लाने के लिए उसमें सदैव एक-दूसरे का सहयोग इसी प्रकार मेरे पुत्रों !देखो, मन, बुद्धि ये मन से जकड़ी हुई है। मन से ही अवृत रहती हैं। और मन ही मुनिवरों !देखो इनका एक प्रकार का स्तम्भ कहलाया गया है। जिसमें ये कटिबद्ध हो जाती हैं। वृत्तियों में रत्त हो जाती हैं। मेरे पुत्रों !देखो, अपने में मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार ये सर्वत्र एक मन ङ्कार ये सर्वत्र एक मन की ही अवस्था कहलाती है। की ही अवस्था कहलाती है। इसके ऊपर हमें विचार-विनिमय करना है। अपने में धारयामि बनना है। और विचित्रता में मानो अपनी विचित्रता को धारण करने के लिए सदैव मानव को तत्पर रहना है।

सत्रह होता सत्रह होता सत्रह होता

मेरे पुत्रों !देखो, जब ये वाक्य उन्होंने श्रवण किया तो ब्रह्मचारियों ने ये कहा, हे प्रभु !हम मानो देखो, जब ऋषि-मुनियों के समीप जाते हैं। उससे पूर्व मानो देखो, माता के आúन में मानो पनपते रहते हैं। पितरों के गृह में पनपते रहते हैं। तो मानो देखो, वह हमें इस प्रकार की विवेचना देते रहे हैं। प्रभु !हम ये

जानना चाहते हैं, ये जो सत्रह होता हैं, ये कौन-से होते हैं जिनके द्वारा यजमान को याग करना है। उन्होंने कहा, सत्रह होता वह कहलाते हैं, दस प्राण हैं, पञ्च तनमात्रएँ हैं, और मन और बुद्धि, दस प्राण हैं, पञ्च तनमात्रएँ हैं, और मन और बुद्धि, दस प्राण हैं, पञ्च तनमात्रएँ हैं, और मन और बुद्धि, मानो देखो, ये सत्रह होता कहलाते हैं जिनके द्वारा यजमान याग करता है। मेरे पुत्रों !देखो, प्राणेश्वर प्राण को जान करके और प्रकृति के सूक्ष्म स्वरूपों को, पञ्चीकरण को जान करके ही मुनिवरों !देखो अपने सूक्ष्म शरीर को जाना जाता है। क्योंकि ये हमारा स्थूल शरीर है। स्थूल शरीर के साथ में सूक्ष्म शरीर कहलाता है। वह जो सूक्ष्मत्त्व है। मानो देखो, उसका तृतीय स्वरूप जो माना गया है वो कारणमयी माना गया है। मेरे पुत्रों !देखो, सूक्ष्म शरीर में ये दस प्राण रहते हैं और तनमात्रएँ रहती हैं और मुनिवरों !शरीर में ये दस प्राण रहते हैं और तनमात्रएँ रहती हैं और मुनिवरों ! देखो, ये मन, बुद्धि रहता है। द ेखा े, य े मन, ब ुद्धि रहता ह ै। ये देखो, ये मन, बुद्धि रहता है। चित्त का मण्डल कहलाता है। ये चित्त में संस्कारों की जो उद्बुद्धता है, वह प्रायः होती रहती है। और वह चित्त का मण्डल कहलाया गया है।

वेद का ऋषि कहता है, हे आचार्यजन!, अमृतम्, हे ब्रह्मचारियों!, मानो देखो, वही सूक्ष्म शरीर के साथ में कारण शरीर होता है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न कहलाता है। और जहाँ ज्ञान और प्रयत्न की दोनों की एकता हो जाती है। उस समय परमपिता परमात्मा का जो ये गर्भाशय है, ये मानो हृदय है। हृदय का हृदय से मिलन हो करके मुनिवरों !देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को अपने में ग्रहण करने लगता है।

विचार आता रहता है कि सूक्ष्म और कारण, ये जो कारण शरीर है, इसकी विवेचना तो मुनिवरों !मैं किसी काल में दे सकूँगा। आज तो केवल परिचय देना है। और वह परिचय केवल ये कि हम अपने में, मानो देखो, अपनेपन को विचारते हुए इस संसार की प्रतिभा में रत्त हो जाएँ। तभी हमारा जीवन मानो सफलता को प्राप्त होता है। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने कहा, क्या ये सत्रह होताओं

के द्वारा याग होना चाहिए। हे यजमान !तुझे सत्रह होताओं के उस मानो देखो, यज्ञमयी स्वरूप को जानना है। जिसको जान करके तेरी अन्तरात्मा पवित्र हो जाए। और तू अन्तरात्मा में ही मानो देखो, अन्तरात्मा के विज्ञान को अपने में दृष्टिपात करता हुआ तू परमपिता परमात्मा की महती में रत्त हो जाए। ऐसा बेटा ! देखो, ऋषि ने कहा। इससे देखो ब्रह्मचारियों ने कहा, हे भगवन् !यजमान कहलाता है। मानो देखो, दस इन्द्रियों को संयम में करने वाला ही याग का अधिकारी होता है। जब तक इन्द्रियों पर अपने पर संयम नहीं होता। और संयम वह मानव करता है जो मुनिवरों !प्रत्येक इन्द्रियों के अव्ययों को जानने लगता है। प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान जाता है और उस विषय में साकल्य बनाना जानता है। और जो बाह्य जगत में मुनिवरों !देखो औषधियों का साकल्य बनाना जानता है वो यजमान मुनिवरों !देखो परमगति को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रों ! देखो, प्रत्येक इन्द्रिय को संयम में लाना, और संयमी वह प्राणी बनता है जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जानता है। प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके वह तपस्या में परणित हो जाता है। और वह मुनिवरों !देखो, ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियों को, मानो ज्ञानेन्द्रियों को कर्मेन्द्रियों में समाहित कर लेता है। और ज्ञानेन्द्रियों को मुनिवरो !देखो पञ्चमहाभूतों में समाहित कर लेता है। और पञ्चमहाभूतों को मुनिवरों !देखो मन में समाहित कर लेता है। और मन को प्राण में समाहित कर लेता है। और प्राण और मन को मुनिवरों !देखो जो विचारों में समाहित कर लेता है मेरे प्यारे !वह परमधाम को प्राप्त होने लगता है। विचार आता रहता है। बेटा !देखो, विचार आता रहता है। बेटा !देखो, विचार आता रहता है। बेटा !देखो, मन, प्राण और विचार यही तो मुनिवरों !देखो महत्त्वदायक हैं। मन, प्राण और विचार यही तो मुनिवरों !देखो महत्त्वदायक हैं। इनके द्वारा ही तो यजमान याग करता है। जब उसके मनस्तत्त्व, प्राण में परणित हो जाते हैं। इसीलिए हमारे आचार्यों ने, साधकों ने कहा है, क्या हमें प्राणायाम करना चाहिए। बेटा !देखो, प्राणवेत्ता कुम्भक और पूरक और मुनिवरों !देखो सङ्कल्पमयी

प्राणायाम खेचरी मुद्रा में परणित हो जाता है। और भी नाना प्रकार के मानो देखो, इसमें प्रकार माने गए हैं। मैं आज प्राणों के ऊपर विचार देना नहीं चाहता हूँ। हमारे यहाँ बहुत से ऋषि इस प्रकार की विद्याओं में प्राणों के ऊपर अपनी विद्याएँ परणित की हैं। मेरे पुत्रों !मेरी पुत्रियाँ !बहुत-सी ऐसी पुत्रियाँ हुई हैं जिन्होंने मुनिवरों !देखो, अपने में प्राण को जान करके अपने गर्भ की देखो अन्तर्ग्रह में ये जीव मानो शिशु को लेके इससे वो वार्त्ता प्रगट कर लेती हैं। इस प्रकार की विद्याएँ बेटा!, वैदिक साहित्य में प्राप्त होती रहती हैं। इस प्रकार की विद्याएँ हैं, मुनिवरों !देखो, प्राण के द्वारा, जब प्राण और अपान को मिला करके मानव प्राण की प्रतिष्ठा में प्रविष्ट हो जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, उसमें उदान और समान का दोनों की पुट लग जाती है तो मेरे प्यारे !देखो, वह अग्नि में ही प्रविष्ट हो जाता है। उसका मस्तिष्क अग्निमयी बन जाता है।

बेटा !मैं इस सम्बन्ध में विशेष नहीं प्राणायाम करने वाला एक अú में ही प्राण को ले आता है। और वह मुनिवरों !देखो इतना प्रखर बन जाता है कि प्राणमय, प्राण जहाँ एकत्रित हो जाता है उसमें मेरे पुत्रों !देखो, अमृताम् भूत प्रव्हे, कोई मानो अस्त्रों का प्रयोग भी करे, अस्त्रों से भी मुनिवरों !देखो वह छिन्न-भिन्न नहीं होता है। ऐसा प्राणायाम करने वाले बहुत से महापुरुष हुए हैं।

ग्यारह होता ग्यारह होता ग्यारह होता

आज बेटा !देखो, मैं इस विवेचना में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल तुम्हें परिचय देना है। एक-एक वाक्य पर बेटा !बहुत समय की आवश्यकता है। विचार केवल ये है कि ऋषि कहता है, क्या मुनिवरों !देखो पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ इनके सबके देखो अस्तित्व को जान करके और इनके स्वरूपों को जान करके एक-दूसरे में जो इसकी माला बनाना चाहता है वह मन में पिरो देता है। और मन प्राण में प्रतिष्ठित हो मन जाता है। प्राण, विचार में जब प्रतिष्ठित हो जाता है तो मेरे प्यारे !देखो, मानव अपने में महान् और पवित्रता को प्राप्त हो जाता है।

नौ होता नौ होता नौ होता

आओ मेरे प्यारे !देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु !ये वाक्य तो हमारी माता जब हमें लोरियों का पान कराती थी। हम ही तो चरणों में प्रविष्ट रहते थे। तो ये विवेचना हमें प्रायः देती रहती थी। हम ये जानना चाहते हैं, क्या प्रभु !वह जो नौ अमृतम्, देखो नौ होता कौन-से हैं जिनके द्वारा हम याग करने वाले बने? मेरे प्यारे !ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों ! तुम मानो देखो, देखो हमारे इस मानव शरीररूपी यज्ञशाला में मुनिवरों !देखो नौ द्वार नौ द्वार कहलाते हैं और नौ द्वारों में जो देवता विद्यमान रहते हैं। मानो देखो, नौ द्वारा के ऊपर संयम करता हुआ मानव जब याज्ञिक बनता है तो मेरे पुत्रों ! देखो, रूप, रस, गन्ध इत्यादियों को वह अपने में धारयामि बना लेता है। अपने में धारण कर लेता है इन्द्रियों का, क्योंकि वह द्वारों का विषय है। और वह द्वार जब एकाग्रित हो जाते हैं। उन सर्वत्र देवताओं की जो स्थिति है वह हृदय में जब सिमट जाती है तो याज्ञिक याग करने वाला बन जाता है।

सप्त होता सप्त होता सप्त होता

मेरे पुत्रों !देखो, इतने में ऋषि ने कहा प्रभु !ब्रह्मचारियों ने ऋषि से कहा, हे देव !हम मानो विशेष नहीं, क्योंकि जब हम पितरों के मानो देखो, आúन में क्रीड़ा करते रहते थे तो पितर हमें इन्द्रियों के और द्वारों के विषय में मानो देते रहते थे। विचार-विनिमय करते रहते थे। तो हे प्रभु !हम जानना चाहते हैं, क्या वो सप्त होता कौन-से हैं, जिनके द्वारा याग किया जाता है? मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि कहता है, कण्ठ के ऊपर का जो भाग ऋषि कहता है, कण्ठ के ऊपर का जो भाग है हमारा। मेरे पुत्रों !ऋषि ने कहा, यही मानो सप्त होता कहलाता है हमारा। मेरे पुत्रों !ऋषि ने कहा, यही मानो सप्त होता कहलाता है हमारा। मेरे पुत्रों !ऋषि ने कहा, यही मानो सप्त होता कहलाता है। चक्षुम् ब्रव्हा, श्रोत्रम् ब्रव्हा। मेरे प्यारे ! देखो, उन्होंने कहा, घ्राणाम् है। स्वस्तम् ब्रव्हे और उन्होंने अमृताम् रसनम् ब्रव्हे ऋतम् दिव्याहम्। ये मानो देखो, सप्त होता कहलाते हैं। इन सप्त होताओं के द्वारा

जो याज्ञिक याग करता है मानो वो अपने में महान् और पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। विचारवेत्ता ने कहा ब्रव्हे, हे प्रभु !ये सप्त होता तो हमने पूर्व भी काल में श्रवण किए। जब आचार्य के कुल में हम प्रवेश हुए तो आचार्य ने हमें ये निर्णय कराया था कि सप्त होताओं के द्वारा तुम अपने को वशीभूत करो। और तुम अपने में याज्ञिक बन जाओ। तो मानो देखो, ये आचार्य कुल में हमें प्रवेश कराया गया है।

पञ्च होता पञ्च होता पञ्च होता हे प्रभु !हम जानना चाहते हैं, ये पञ्च होता कौन-से हैं जिनके द्वारा याज्ञिक याग करता है? उन्होंने कहा, पञ्च होता, मानो देखो, ये पञ्चम् ब्रव्हा ऋतम् देवाः, हे ब्रह्मचारी !मानो देखो, तीन पदार्थम् ब्रव्हे तीन प्रकार के परमाणु होते हैं। एक गति कराने वाला होता है। एक जिसमें समाहित रहते हैं। मानो देखो, हमारे यहाँ जब विज्ञान में प्रवेश करते हैं तो गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी ये तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। गुरुत्व पृथ्वी का पृथ्वी स्वरूप है। और तरलत्व जल का, आपो का स्वरूप है। और मúलम् ब्रव्हे जल मानो देखो, तेजोमयी अग्नि का अग्नि स्वरूप माना गया है। इन तीनों प्रकार के परमाणुओं को गति देने वाला वायु है वायु और जहाँ ये गतिवान् होते हैं उसे अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष कहते हैं। तो मेरे पुत्रो !देखो, ऋषि ने कहा, क्या सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके भौतिक विज्ञान भी इन्हीं मानो देखो, पञ्चीकरण पञ्चीकरण पञ्चीकरण में परणित हो रहा है। तीन प्रकार के परमाणु हैं, गति देने वाला चतुषः है। और पञ्चम् मानो जिसमें ये समाहित हो जाते हैं। तो मुनिवरो !देखो, ऋषि ने कहा धन्य ब्रव्हे, जब ऋषि ने ऐसा उत्तर दिया ब्रह्मचारियों को। तो ब्रह्मचारियों ने कहा, ''सम्भव ब्रव्हे ऋतम् देवत्वाम् लोकाः'' हे प्रभु !हमने ये भी जान लिया।

तीन होता तीन होता तीन होता

हम ये जानना चाहते हैं कि वो तीन अभद्रवाहा व त्रितेयिम् ......मानो देखो, तीन होता कौन-से होते हैं। उन्होंने कहा, तीन होता कहलाते हैं रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण रजा ेग ुण, तमा ेग ुण आ ैर सता ेग ुण। इन रजोगुण,

तमोगुण और सतोगुण तीनों गुणों के द्वारा, मानव जब इनका एकोकीकरण कर लेता है और सत्यमयी प्रवृत्ति बन जाती है और मानो देखो, जो इससे भी तीनों गुणों को त्याग करके भी ऊर्ध्वा में गमन करता है तो याज्ञिक बनता है संसार में। वह महायाज्ञिक बन करके संसार से पार होने का प्रयास करता है। ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों !मानो तुमने ये जान लिया कि मैंने इससे पूर्व काल में कहा है, क्या ये तीनों गुण एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानो देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के गृह में समाहित रहते हैं। यदि मानो देखो, सतोगुण, उत्पत्ति के मूल के गृह में नहीं होगा तो उत्पत्ति का मूल ही नहीं बनेगा। और यदि वो रजोगुण की आभा में सतोगुण नहीं होगा तो न्याय भी नहीं बन पाएगा। इसीलिए मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक-दूसरे में पिरोए हुए हैं। और मानो एक-दूसरे में पिरोए हुए होने से, मेरे पुत्रों !देखो, एक सूत्र के ये तीन मनके कहलाते हैं।

दो होता दो होता दो होता

ऋषि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु !दो होता कौन-से होते हैं? उन्होंने कहा दो होते हैं प ्रकृति आ ैर ब ्रह्म। प्रकृति और ब्रह्म मानो देखो, एक-दूसरे में जब पिरोए जाते हैं तो ये संसार की रचना हो जाती है। मानो ये संसार रूपी यज्ञशाला रचित हो जाती है। और मुनिवरों !देखो, वही तो देखो ब्रह्म है, वही प्रकृति अपने स्वरूप में गमन करती रहती है। मानो जहाँ उग्र क्रिया ब्रह्म की, उग्र क्रिया बनती है तो प्रकृति उसे अपने में धारण कर लेती है। और धारण करते ही मुनिवरों !देखो उत्पत्ति का मूल बन जाता है। तो इसीलिए देखो यजमान अपनी उग्र क्रिया के द्वारा जब याग करता है तो अपने में तेजोमयी बन जाता है।

एक होता एक होता एक होता

जब एकोकी रह जाता है तो एक ही ब्रह्म की मुनिवरों !देखो एक ही ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। वही हमारा आध्यात्मिकवादी मानो देखो, याग

कहलाता है। जब एक ब्रह्म की हम उपासना करते हैं, एक ही ब्रह्म में जब हम रत्त हो जाते हैं तो मानव देखो, अपने में मानवीयता की आभा में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने कहा है, हे ब्रह्मचारियों !यदि यजमान को याग करना है तो एक-दूसरे में पिरोने वाले जगत को विचारना है और जगत के ऊपर अन्वेषण करना है। अनुसन्धान करना है। जिससे मानो देखो, उसका याग सफलता से प्राप्त हो जाए व अपने में सफल हो जाए।

मेरे पुत्रों !देखो, आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की महती को विचारते हुए और परमात्मा के रचाए हुए अमूल्य जगत को विचारते हुए हम इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। आओ मेरे प्यारे !देखो, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की महती और आनन्दमयी मानो देखो, अपने में ही अपने को ले जाएँ, जिससे हमारा जीवन महानता को प्राप्त हो करके और हम देखो नाना प्रकार की घृणात्मक दृष्टि से ऊर्ध्वा को प्राप्त होते हुए एकोकी परमपिता परमात्मा में हमारी निष्ठा होनी चाहिए। ऐसा मुनिवरों !देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा।

आओ, मेरे प्यारे !देखो, मैं तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बेटा !बहुत अनुसन्धान किया है। मेरे पुत्रों ! एक-एक विचार को ले करके वर्षों चाहिए विवेचना देने के लिए। कितना विशाल ये ब्रह्माण्ड है। कितनी विशालता है। एक-दूसरे में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात आता है। तो ये ब्रह्माण्ड पिण्ड का मुनिवरों !देखो, ऋषियों ने अपने में सम्मिलन किया है। सम्मिलन होने का प्रयास किया है। और उनको एक-दूसरे में पूरक स्वीकार करके, एक-दूसरे में पिरोने का प्रयास किया है।

मानव की पिपासा मानव की पिपासा मानव की पिपासा

आओ, मेरे पुत्रों !मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें सूक्ष्म-सा परिचय देने के लिए आया हूँ। और वह परिचय क्या है, मेरे पुत्रों !देखो, हम याज्ञिक बने और याग में अपने को परणित करते चले जाएँ। जिससे

मुनिवरों !देखो, यजमान कहता है भगवन् !आपको धन्य है।

आपने हमारी जिज्ञासाओं की पूर्ति की है। आप महान् हैं और वेदज्ञ कहलाते हैं। क्योंकि जो वेदज्ञ होता है वो जिज्ञासा को पूर्ण करता है। क्योंकि प्रश्न करना, जिज्ञासा में रत्त रहना ये दो वाक्य कहलाते हैं। मुनिवरों !देखो प्रश्नकर्त्ता तो अन्त में देखो मौन हो जाता है परन्तु जिज्ञासा जो उत्पन्न होके वो अपने अन्तरात्मा में प्रसन्न हो जाता है। तो विचार -विनिमय हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और अपने में मानो याग में प्रवेश हो जाएँ। और आध्यात्मिक मानो देखो, हम याग में परिणित हो करके अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपात करते रहें। बेटा !ये आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है जो यज्ञोमयी स्वरूप कहलाता है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और इस सागर से पार हो जाएँ। आओ, मेरे पुत्रों !देखो, इस संसार सागर से पार होना ही हमारा कर्त्तव्य है। और हमारे यहाँ जितने भी सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके नाना प्रकार के अनुष्ठान होते रहते हैं, नाना प्रकार के याग होते रहते हैं, प्राणायाम जितनी भी साधना है वो सर्वत्र मानव के मानव के मानव के अन्तरात्मा में यही पिपासा होती है कि मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊँ। अन्तरात्मा में यही पिपासा होती है कि मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊँ। और मैं आनन्दमयी स्वरूप में ही अपने को परिणित कर लूँ। उसी में समर्पित हो करके मानो उसी में अपने को दृष्टिपात करूँ। और मैं उसी में ओझल हो करके अपने में मौन हो जाऊँ। प्रत्येक मानव की एक ही पिपासा रहती है। ये सृष्टि के प्रारम्भ से ही मेरे प्यारे !देखो, क्रम बना हुआ है और ये क्रियाकलापों में ही मानव सदैव तत्पर रहता है।

आओ, मुनिवरों !देखो, आज का विचार क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती और उसके आनन्दमयी स्वरूप को अपने में धारण करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा !आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने

का अभिप्रायः ये कि हमारे यहाँ याग के ऊपर बेटा !ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया है और बड़ा गम्भीरता से इसको जाना है। मानो बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में और आन्तरिक जगत को बाह्य जगत में, जगत को अपने में समेट करके ही मुनिवरों !देखो हमारे यहाँ सिद्ध हो जाता है। आओ, मुनिवरों ! देखो आज का विचार, अब हमारा ये समाप्त होने जा रहा है। कल मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। ये तो आज मैंने तुम्हें संक्षिप्त-सा परिचय दिया। कहीं से ये प्रेरणा आ रही थी, क्या याग के ऊपर विचार-विनिमय दिया जाए। कई समय से बेटा !याग के ऊपर अपना विचार दिया जा रहा है। याग ही संसार है और संसार ही याग है। संसार है और संसार ही याग है। मेरे पुत्रों !देखो इन दोनों को विचारना है। और विचार करके मुनिवरों !देखो व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करना है। यही हमारा देखो मन्तव्य रहता है। ये है बेटा ! आज का विचार, अब समय मिलेगा, तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। अब मेरे प्यारे महानन्द जी !दो शब्द उच्चारण करेंगेद्द

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

"ओ३म् यौ शरणाम् ब्रह्मणाः देवत्वाम् रथाः।"

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव !अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल !अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। क्योंकि वे सूक्ष्म से समय में इतने विशाल विचार देते हैं, जिन विचारों को हम अपने में विचारने लगते हैं तो उसका मार्ग भी हमें प्राप्त नहीं होता। परन्तु जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग का आयोजन हुआ। और मेरा अन्तरात्मा सदैव याग के ऊपर बड़ा प्रसन्नीय रहता है। और हम ये विचारते रहते हैं कि मध्य काल में महाभारत के काल के पश्चात् कर्मकाण्ड की कुछ युक्तियाँ, कुछ कर्मकाण्ड की युक्तियाँ लुप्त हुई। परन्तु उसके पश्चात् भी जो कर्मकाण्ड है वह अपने में महान् और पवित्र कहलाता है। आज मानो देखो, मेरा जो अन्तर्हृदय रहता है वो यजमान के साथ

रहता है। वास्तव में, मैं यह कहा करता हूँ कि ये जो काल चल रहा है, ये वाममार्ग का काल है। और वाममार्ग उस काल को कहते हैं जो मानो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा हो। क्योंकि आधुनिक जो ये जगत चल रहा है, आधुनिक जगत में जहाँ विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा हो। और राष्ट्रवेत्ता भी वाममार्ग की आभा में रत्त हो रहे हों। ऐसे काल में देखो यजमान अपने गृह में जो याग में लगा हुआ है। उसे वाममार्ग की प्रवृत्तियों से ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए और मेरा हृदय यजमान के साथ रहता है।

यजमान का सौभाग्य यजमान का सौभाग्य

मैं यजमान को कहता रहता हूँ कि ऐसे काल में जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता हो और वायुमण्डल में जिसकी सुगन्धी परणित हो रही होद्द वेद के पठन-पाठन में, वेद के मन्त्रों के द्वारा आहुति उसमें परणित होती हुई उसमें एक-दूसरे में रत्त रहती हुई रहें। द्यौ और देखो अपने में परणित हो रही हों। हे यजमान !ऐसे यज्ञम् ब्रहा, मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। हे यजमान ! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

महर्षि कारव का आश्रम महर्षि कारव का आश्रम

मानो कहीं ये स्थली इतनी विचित्र बन करके रही है। पुरातन काल में जहाँ महर्षि कारव, कारव ऋषि का आश्रम रहा है। मानो देखो, उनके यहाँ प्रायः यागों के ऊपर यन्त्रों के द्वारा अनुसन्धान होता रहता था। और वो अनुसन्धान बड़ा विचित्रत्त्व को रहा है। मुझे वो काल, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सहित कई समय में मानो उस काल में देखो भ्रमण करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता रहा है। और ऋषियों के यहाँ जो विज्ञान और विचार-विनिमय होता रहा है वो बड़ा विचित्र रहा है। कारव ऋषि के यहाँ, ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण होता रहता था क्या वे मानो देखो, मानव के एकोकीकरण विज्ञान, एकोकीकरण विज्ञान अपने में बहुत समय तक रत्त रहा है। क्या वे देखो यदि भुजा में यन्त्रा को स्थित कर दिया जाए तो वो मानो देखो, उसकी भुजा में सुशोभित होने वाला कंगण है। और यदि वही

नीचे जब जाए तो वही सर्प की आभा में परणित हो जाता था यन्त्रा। तो इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण महर्षि कारव ऋषि के आश्रम में निर्माणित होता रहा है। आज मैं उनके जीवन के सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं चाहता हूँ। तो समय-समय पर अपने में तपस्वी महापुरुष अपनी-अपनी प्रतिभा को त्याग करके चले जाते हैं। उनका नामोकरण ही रह जाता है। तो इसीलिए मैं इस सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं चाहता।

आधुनिक काल में विज्ञान के दुरुपयोग के परिणाम आधुनिक काल में विज्ञान के दुरुपयोग के परिणाम

केवल विचार-विनिमय यह कि आधुनिक काल, आधुनिक समय में जहाँ विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा हो। जहाँ मेरी पुत्रियों का नृत्य, चरित्र में परणित होने वाला है। चरित्र में परणित हो जाता है तो ये विज्ञान का दुरुपयोग है। विज्ञान अपने में जब सार्थक बनता है जबकि राजा महापुरुष होता है और राजा ये विचारता है कि द्रव्य का लोलुप्ति नहीं बनता। और राष्ट्र में जब द्रव्य की लोलुप्ता आ जाती है वो राष्ट्र का पालन नहीं कर सकता। वह राष्ट्र में अधुरापन रहता है। और उसके राष्ट्र में देखो द्रव्य की लोलुपता के कारण विज्ञान का सदैव दुरुपयोग होता रहता है। और विज्ञान के दुरुपयोग होने से देखो मानव में अधिकार की बलवती हो जाती है। कर्त्तव्यवाद नष्ट हो जाता है। और जहाँ कर्त्तव्यवाद नहीं रहता और विज्ञान, विज्ञान देखो अधिकार की पुकार करने लगता है तो संसार में अब तक कोई किसी के अधिकार को पूर्ण नहीं कर सका है। अन्त में देखो वो ही अधिकार ''अन्तम् ब्रहे'' अन्त में देखो वही अपने में देखो रक्तभरी क्रान्ति में परणित हो जाता है।

मैं बहुत पुरातन काल से अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये प्रगट करता रहा हूँ, क्या जब मानव देखो अश्लील चित्रों को दृष्टिपात करता है और उनको मेरी पुत्रियाँ, छात्र और छात्रएँ सब दृष्टिपात करते हैं तो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है। और ब्रह्मचर्य दूषित होने से आलस्य और प्रमाद की बलवती हो जाती है।

ओर जब आलस्य और प्रमाद आ जाता हैद्दआलस्य और प्रमाद के आने से ही देखो कर्त्तव्य रह नहीं पाता। और वह अपने कर्त्तव्य को अमृताम् देखो अपने अधिकार की पुकार करने लगता है। और जब अधिकार ही अधिकार चाहने लगता है तो कोई संसार में सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक कोई राजा ऐसा नहीं हुआ जो उनकी इच्छाओं की मानो पूर्ति कर सके। उनके अधिकार की पूर्ति कर सके। अन्त में वो कर नहीं पाता। राजा और प्रजा दोनों ही रक्तभरी क्रान्ति में परिवर्तित हो जाते हैं।

वाममार्ग वाममार्ग वाममार्ग

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, क्या हे भगवन् !ये जो काल है ये सुरा, सुन्दरी और द्रव्य का काल कहा गया है। जहाँ देखो द्रव्य एकत्रित करने में मानव लगा हुआ है। वहाँ सुन्दरी में भी परणित हो जाता है। और सुरा में भी परणित हो जाता है। इसीलिए देखो ये काल मैं इसे वाममार्ग कहता हूँ। जहाँ राजाओं का निर्वाचन महापुरुषों के द्वारा, विवेकी और वेद के मर्म को जानने वाले योगियों, विवेकियों के द्वारा होता रहा है वही तो राजा महान् कहलाता है। और जो अपठित समाज के द्वारा राजा का निर्वाचन होगा वह राजा और प्रजा दोनों ही अधोगति को प्राप्त हो जाते हैं। मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहा है क्या राष्ट्र का जो निर्वाचन है जब तक वह पवित्र नहीं होगा, तो कर्त्तव्यवाद नहीं आ सकेगा, तब तक ये मानव की प्रवृत्ति ऊर्ध्वा में गमन नहीं कर सकती। इसीलिए मैं आज विशेष चर्चा नहीं, केवल ये कि हे यजमान !तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो देखो, ऐसे काल में, वाममार्ग काल में तू अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है। और "वाममार्ग ब्रहे" ये जो वाममार्ग की प्रवृत्ति, इसे अपने हृदय से दूरी कर देना चाहिए। अपने में महान् और पवित्रता को ले करके अपने में महान् और पवित्रता को ले करके अपने में महान् और पवित्रता को ले करके और कर्त्तव्यवाद की आभा में रत्त रहना चाहिए। आ ौर कत्त र्व्यवाद की आभा म े ं

रत्त रहना चाहिए। ये और कर्त्तव्यवाद की आभा में रत्त रहना चाहिए। आज का हमारा वाक्य अब समाप्त।

यजमान को आशीर्वाद यजमान को आशीर्वाद

मेरा विचार सदैव ये रहता है, हे यजमान !हे द्रव्य के सदुपयोग करने वाले द्रव्य !भ्रमण ब्रहे, जहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है अरे !वहीं तो द्रव्य देखो मानव को नहीं त्यागता। और जहाँ द्रव्य का दुरुपयोग होता है वह द्रव्य मानव को त्याग देता है। और वो अधोगति को प्राप्त हो जाता है।

इसीलिए हे यजमान !मेरा अन्तरात्मा सदैव यही कहता रहता है, क्या द्रव्य का सदुपयोग हो। और याग के माध्यम से अग्नि के मुखारबिन्दु में जो याग के माध्यम से अग्नि के मुखारबिन्दु में जो याग के माध्यम से अग्नि के मुखारबिन्दु में जो आहुति हुत किया जाता है वही द्रव्य का सदुपयोग है। आहुति हुत किया जाता है वही द्रव्य का सदुपयोग है। इसीलिए हे यजमान !तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। ''आनन्दम् ब्रव्हे कतम देवाः।'' अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे !ऋषिवर अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बड़े भव्य विचार दिए हैं। उनके विचारों में एक विडम्बना बनी रहती है। क्या राष्ट्र कितना पवित्र होना चाहिए। ये सदैव अपने विचारों में विष्णु राष्ट्र की स्थापना में लगे रहते हैं और ये चिन्तन में यही विचार देते हैं, क्या हमारा जो राष्ट्र है, वो पवित्र बने। मेरे पुत्र !ने अभी-अभी वर्णन किया, क्या कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। क्योंकि मानव जब परमात्मा के आनन्द में और ब्रह्माण्ड को परमात्मा की रचना स्वीकार करता है तो उसी काल में देखो मानव आध्यात्मिकवादी बन करके और भौतिक विज्ञान का वो तिरस्कार कर देता है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने भव्य विचार दिए। कारव ऋषि की उन्होंने चर्चाएँ की हैं। कारव ऋषि तो बड़े भव्य महान, देखो विज्ञानवेत्ता और तपस्वी कहलाते थे। एक-एक परमाणु, एक-एक

लोक-लोकान्तरों के ऊपर वह अध्ययन करते रहते थे। और अध्ययन करते तो यन्त्रों में कैसे क्रियात्मक जीवन बने ऐसे वो लगे रहते थे। तो आज का विचार अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् .....ओ३म् गन्धर्व ग्रहीताऔ आपः रथम् मन्थाः वायाः। ओ३म् भद्राणि यश्शचम् रेवम् आपा रथम् मन्थाः वायाः।। दिनाँक :11 फरवरी, 1990 : स्थान :ग्राम सुवाहेड़ी, बिजनौर :

१३ 13 02 1990 तपस्वी

जीते रहो ! देखो मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में महामना, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि हमारा वेद मन्त्र कह रहा है ''अग्नम् ब्रह्मणाः व्रतम् ''अग्नम् ब्रह्मणाः व्रतम् ''अग्नम् ब्रह्मणाः व्रतम् देवाः'' देवाः'' क्या वे परमपिता परमात्मा अग्निमयी स्वरूप माने गए हैं। मानो वो तेजोमयी कहलाते हैं। वह अनन्तमयी हैं, क्योंकि अनन्तवाद है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तवान् हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानव अपने में अनुसन्धान करता रहा है और अन्वेषण करता रहा है कि मैं उस प्रभु की अनन्तता को, मैं जानने का प्रयास करूँ। परन्तु वह जानने के लिए तत्पर होता है और विचार-विनिमय करता रहता है। और वह अपने में ही अपनेपन को जब दृष्टिपात करता है तो उसकी अनन्तमयी महिमा, उसका अनन्तमयी ज्ञान और विज्ञान, ये मानव के समीप आता रहा है। क्योंकि मानव अपने सर्वत्र इन्द्रियों का जब अपने में ही स्वरूप को जानने के लिए तत्पर होता है तो वह अनन्तवाद प्रभु की महिमा को वो अपने में ही दृष्टिपात करता रहता है।

आओ मेरे पुत्रों !हमारा वेद मन्त्र हमें क्या कह रहा है। वेद मन्त्र कहता है ''अन्नम् ब्रह्माः ऋतम् देवत्वाम् विष्णुः'' ''अन्नम ् ब ्रह्माः ऋतम ् द ेवत्वाम ् विष्ण ुः'' कि वे ''अन्नम् ब्रह्माः ऋतम् देवत्वाम् विष्णुः'' परमपिता परमात्मा विष्णु है जो इस संसार का पालन कर रहा है। क्योंकि उसका प्रत्येक जो

अप्रतम् में रत्त होने वाला ये जगत है। ये मानो अनन्तमयी दृष्टिपात आता रहता है। आज मैं तुम्हें जहाँ ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में अथवा उसकी अलौकिकता के क्षेत्र में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। क्योंकि वे बड़ी विचित्रताएँ दृष्टिपात आती रहती हैं। आओ मुनिवरों !देखो आज मैं तुम्हें उसी विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि अपने में अध्ययन करते रहते थे। और एक-एक वेद मन्त्रा के ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसन्धान और अनन्तमयी जगत को विचारने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। क्योंकि जब तार्किक अपनी आभा में नियुक्त होता है तो वो दर्शनों को विचारने लगता है और वह मानवीय दर्शनों के ऊपर अपनी आभा में रत्त हो जाता है। तो आओ मुनिवरों !देखो, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने अपने में अपनेपन को दृष्टिपात किया है। मुझे वो काल दृष्टिपात आता रहता है जिस काल में बेटा !देखो, ऋषि-मुनि अपने विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान हो करके एक-दूसरे की आभा में परणित होते रहे हैं। क्योंकि अपने में जिज्ञासु बनना, ये बड़ी महान् एक उपलब्धि मानी गयी है। क्योंकि जहाँ प्रश्नकर्त्ता है, वहीं, मुनिवरों !देखो, वह जिज्ञासु भी विद्यमान होता रहा है।

विचारों का याग विचारों का याग

आओ मुनिवरों !देखो आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और ब्रह्मचारीजन अपने में परस्पर विचार-विनिमय करते रहे हैं। मेरे पुत्रों !देखो, प्रातःकालीन आचार्यजन और ब्रह्मचारीजन बेटा !देखो, अपने में याग करते थे। और याग दो रूपों में उपलब्ध होता रहा है। बेटा !एक तो वह याग कहलाता है जो ''विचारार्थम् ब्रह्मा'' जो मेरे पुत्रों !देखो, वेद मन्त्रा का उद्गीत गाया जाता है। और एक वह हमारे यहाँ याग माना गया है जो साकल्य के द्वारा सुगन्धी उपलब्ध होती रही है। तो हमारे यहाँ मुनिवरों !देखो जो विचारों का यज्ञ है, विचारों का जो याग हैद्रजहाँ ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसी विद्यमान हो करके अपने में याज्ञिक बने रहे हैं। और विचार-विनिमय होता रहा है। क्योंकि अपने में अपनेपन की

विचारधारा को सदैव अपने में धारण करने का नाम ही मुनिवरों !देखो एक मानवीयत्त्व माना गया है। तो आओ मुनिवरों !देखो आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में जहाँ ब्रह्मचारीजन अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण करते रहे हैं। और आचार्यजन परस्पर देखो उनके विचारों को अपने में ग्रहण करते हुए, अपने में धारयामि बनाते हुए, नाना ऋषि-मुनियों के विचार और उनकी धाराएँ वो वर्णित करते रहते थे। और वेद मन्त्रों की आभा में वो सदैव रत्त रहे हैं।

तपस्वी बनने की प्रेरणा तपस्वी बनने की प्रेरणा तपस्वी बनने की प्रेरणा

आओ मुनिवरों !देखो आज मैं तुम्हें ब्रह्मचारीजन और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा !एक समय प्रातःकालीन उन्होंने याग किया। और याग के पश्चात्, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ये कहा, क्या ये जो तुम्हारा परस्पर मानवीयत्त्व और विद्यालय है इस विद्यालय में मानो देखो, तुम महान् बन के और ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने वाला अपने में बेटा !देखो, उड़ाने उड़ता रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ''तपम् ब्रह्मणाः तपम् दिव्यम् गतम् ब्रह्मणाः लोकाम्।'' आचार्य ने कहा हे ब्रह्मवर्चोसी तुम्हें तपस्वी बनना है। क्योंकि तपस्या उसे कहते हैं जो तपस्या उसे कहते हैं जो तपस्या उसे कहते हैं जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को, साकल्यों को एकत्रित करने वाला हो। प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को, साकल्यों को एकत्रित करने वाला हो। और वह एकत्रित करके मुनिवरों !देखो, परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहे। परमात्मा के जगत को अपने में धारण करता रहे। और उसको निहारते-निहारते हुए अपने में बेटा !मौन हो जाए। क्योंकि परमात्मा का जो अन्तिम चरण है, वह आत्मा का विषय नहीं कहलाता। तो विचार आता रहता है बेटा !ऋषि ने कहा, क्या ''तपम् ब्रह्मणहम् तपम् तर्थयम् ब्रव्हे ऋतम् देवाः''। वह बोले, हे ब्रह्मचारीजनों !देखो ये जो संसार है, ये तपोमयी माना गया है। प्रत्येक प्राणी संसार का तपायमान हो रहा है। क्योंकि मेरा आचार्य तपता है तो मुनिवरों !देखो ब्रह्मचारी महान् बन जाते हैं। ब्रह्मचारी तपता है तो वो ही आचार्यत्त्व को प्राप्त होता रहता है।

ब्रह्मचारी नचिकेता की जिज्ञासा ब्रह्मचारी नचिकेता की जिज्ञासा ब्रह्मचारी नचिकेता की जिज्ञासा

मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियों !एक समय मानो देखो, उद्दालक गोत्र में एक ऋषि हुए हैं। उद्दालक गोत्र के ऋषि ''अमृताम् ब्रह्मणेः व्रतम् देवाः''। मेरे प्यारे !देखो, अपने में अपनेपन को विचारते रहे। और उसमें मानो विश्वसर्वा थे। और विश्वसर्वा के पुत्र का नाम बाल्य नचिकेता था। वही नचिकेता देखो एक समय अपने पिता की आज्ञा पा करके और पिता ने जब ये विचारा कि ब्रह्मचारी अपने में ऊर्ध्वा को गमन कर रहा है। उसने कहा, हे ब्रह्मचारी !ब्रह्मणेः ऋतम् देवाः, ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु !आपने जो अभी-अभी याग किया है उस याग में बहुत-सी अशुद्धियाँ रह गयी हैं। हे प्रभु !मैं आपकी सम्पदा हूँ और यह गृह भी आपकी सम्पदा है। आप मुझे किसे दोंगे। उन्होंने कहा, हे नचिकेता !मैं तुम्हें मानो मैं तुझे मृत्यु को दूँगा। अब बाल्य ने कोई अपराध तो किया नहीं था। परन्तु देखो वह वहाँ से बोले ब्रहा, वह अपने में मौन हो गए। और जब साँय काल को ऋषि अपने आसन में, अपने कक्ष में विश्राम कर रहे थे। तो उन्होंने, बाल्य नचिकेता ने उनके चरणों को स्पर्श करके कहा, हे प्रभु !आप महान् हैं। आप पवित्रतम् हैं और मेरे पितर कहलाते हैं। हमारा जो गोत्र है ये मानो देखो, उद्दालक गोत्र कहलाता है। और उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं और नाना मानो हजारों इस संख्या में मानो देखो, वंशलज रहे हैं। उनमें कोई भी मिथ्यावादी नहीं हुआ है। इसीलिए आपने, आपको भी मिथ्या में नहीं उच्चारण करना है और मुझे मृत्यु को प्रदान कर दीजिए। तो मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँगा।

यमाचार्य के तीन वर यमाचार्य के तीन वर

मेरे प्यारे !देखो, जब आचार्य ने, ''ब्रह्मणेः ऋतम् देवत्वाम् ब्रह्माः'' वह गृह में थे नहीं। उनकी देवी ने कहा, हे ब्रह्मचारी !उद्दालक, आओ तुम विराजो अपने आसन पर। मानो कुछ जल अन्न का पान करो। भगवन् !देखो यमाचार्य भी कहीं से भ्रमण करके तुम्हारे समीप आएँगे। उन्होंने कहा, ब्रह्मणे ऋतम देवाः हे माता,

जब तक मैं आचार्य के दर्शन नहीं कर पाऊँगा, मृत्यु को प्राप्त नहीं हो जाऊँगा, जब तक मानो मैं दर्शनाम् भूतम् ब्रह्मा:, मैं मानो देखो, द्वार पर ही विराजमान रहूँगा। वह अपने में द्वारपाल बने रहे। उस समय मानो तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए ब्रह्मचारी को, न अन्न का पान किया है, न जल का पान किया है। वह अपने में मानो देखो, द्वारपाल बने रहे। और द्वारपाल बन जाने के पश्चात् जब यमाचार्य कहीं से भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों !देखो, अपने गृह में प्रवेश हुए, अपने गृह में गमनम् प्रव्हा, देखो देवी ने कहा, हे प्रभु !अमृताम् देवत्वाम् लोकाम् हिरण्यम् ब्रव्हाः हे प्रभु !उद्दालक गोत्र के ब्रह्मचारी नचिकेता, मेरे आश्रम में विद्यमान है। और तीन दिवस तीन रात्रि हो गए हैं। हे प्रभु !एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी यदि हमारे गृह में अन्न जल से पीड़ित रहता है तो ये भगवन् देखो, अभिशाप है हमारे लिए। हम बड़े पापाचार में परणित हो जाएँगे। क्योंकि किसी भी गृह आश्रम में, कोई भी ब्रह्मवेत्ता, अन्न जल से पीड़ित नहीं रहना चाहिए। मेरे प्यारे ! देखो, यमाचार्य ने इस वाक्य को स्वीकार किया। और यमाचार्य ने कहा, हे देवी ! मैं ब्रह्मचारी को सबसे प्रथम सन्तुष्ट करूँगा। वह बेटा !देखो, यमाचार्य ब्रहे, वह ब्रह्मचारी के समीप पहुँचे। और ब्रह्मचारी से कहा, हे ब्रह्मचारी तुम्हें तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए हैं मैं तीन वर देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, प्रभु !सतप्रमाणम् ब्रहे, हे प्रभु !आप जैसा भी उचितम् ब्रहे। मेरे पुत्रों !देखो, यमाचार्य ने जब ये कहा, क्या तीन वचनम् ब्रहे। और उस समय नचिकेता ने कहा, हे प्रभु !मैं सबसे प्रथम वचन में ये चाहता हूँ क्या मेरे पितरों ने, मेरे पितर ने जिस द्रव्य के द्वारा याग किया है। और वह द्रव्यम् ब्रह्मेः मानो देखो, मुझे, मेरे पिता की अभिलाषा पूर्ण हो जानी चाहिए। वह मोक्ष चाहते हैं। आनन्द चाहते हैं। और प्रभु के आनन्दरूपी सागर में रमण करना चाहते हैं। हे प्रभु !उन्हें आप देखो अप्रत कीजिए। मेरे प्यारे !देखो, यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता !तुम्हारे पितरों की इच्छा पूर्ण हो। मानो उन्होंने तथास्तु कह करके बेटा !वह मौन हो गए। उन्होंने कहा, प्रभु !मैं दूसरा वचन चाहता हूँ कि वह स्वर्ग क्या है। संसार में स्वर्ग किसे कहते

हैं। तो मुनिवरों !देखो, यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता !स्वर्ग उसे कहते हैं जो अपनी देखो अग्नियों की पूजा करता है। ये तीन प्रकार की अग्नियाँ विशिष्ट मानी गयी है। जो इन अग्नियों का पूजन करता है वो ही श्रेष्ठ कहलाता है।

गार्हपत्य अग्नि गार्हपत्य अग्नि

उन्होंने कहा, सबसे प्रथम अग्नि का नाम, गार्हपत्य नाम की अग्नि कहा जाता है। गार्हपत्य नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी तपता है। और वह ब्रह्मचारी मानो देखो, गार्हपत्य नाम की अग्नि के द्वारा वह अपने को मानो अपनेपन में ही दृष्टिपात करता रहता है। वह प्रातःकालीन अपने आसन को त्याग देता है। और त्याग करके वह देखो अपनी नाना क्रियाओं से निवृत्त हो करके, और वह मुनिवरों !देखो अपने में अध्ययन करता है। स्वतः अपनेका अपने में अध्ययन करता रहता है। उसी अध्ययन प्रतिक्रिया को हमें विचार में लाना है। मेरे पुत्रों ! देखो, नचिकेता ने अमृताम्, यमाचार्य ने नचिकेता से कहा, हे नचिकेता !तुम मानो देखो, गृहपत्य, गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा करो। जिस अग्नि के द्वारा, अग्नि कहते हैं अग्नि कहते हैं विचारों को। अग्नि कहते हैं मन, मस्तिष्क और देखो हृदय की आभा को जब मानो देखो, अपने में अग्नि को विचारने लगता है। मेरे पुत्रों !देखो, अग्नि कहते हैं प्राण को। अग्नि कहते हैं मुनिवरों !देखो मनस्तत्त्व की धारा को। और अग्नि कहते हैं जो इन्द्रियों का साकल्य है। और अग्नि कहते हैं बेटा! विचार को। जब विचार-विनिमय करता रहता है। मेरे पुत्रों !देखो, सबसे प्रथम वह अपने में देखो उस मन को पवित्र बनाता है। और मन के द्वारा ही देखो प्राणों की आभा का जन्म होता है। और वही मन और प्राण और मुनिवरों ! उसके पश्चात् उसके हृदय से उद्गम विचारों की उत्पत्ति होती है। और वही विचार मुनिवरों !देखो दर्शनों के मानवीयत्त्व के कहलाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों !देखो, विचार आता रहता है कि इस अग्नि की पूजा करने वाला मानव महान् कहलाता है। वह ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। मेरे पुत्रों ! ब्रह्मवर्चोसी कौन कहलाता है, ब्रह्मचारी कौन है। वेद का मन्त्रा कहता है ''ब्रह्मम्

ब्रव्हे ऋतम् देवात्वाम् ब्रह्मचरिष्यामि'' ''ब ्रह्मम ् ब ्रव्ह े ऋतम ् द ेवात्वाम ् ब ्रह्मचरिष्यामि'' ''ब्रह्मम् ब्रव्हे ऋतम् देवात्वाम् ब्रह्मचरिष्यामि'' क्या ब्रह्मचारी वह होता है, जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। मेरे पुत्रों !देखो, आचार्य कहता है कि ब्रह्म की चरि को कौन चरता है। ब्रह्म की चरि को वो चरने वाला है जो विज्ञानवेत्ता है। और विज्ञानवेत्ता भी जो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है। बेटा !देखो, आत्मोन्नति करने वाला अथवा ब्रह्मवर्चोसी का पालन करने वाला, ब्रह्मचारी वह कहलाता है बेटा !देखो, जो एक-एक श्वास को मुनिवरों !देखो अपना एक मनका बना लेता हैं और मनका बना करके वो सूत्र में पिरो देता है। तो वह सूत्रों में परणित होने से बेटा !वो माला बन जाती है। जैसे वेद का उद्गीत गाने वाला प्रत्येक शब्द को माला के सदृश दृष्टिपात करता है। जैसे एक-एक वेद के मन्त्रों की ऋचाओं को ऋचित करता हुआ मुनिवरों !देखो ब्रह्मसूत्र में पिरोना स्वीकार करता है। वही मुनिवरों !देखो माला बन करके रहती है और वही शाश्वत रह करके ब्रह्मचारी को ऊँचा बनाती है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने जब ये कहा, हे ब्रह्मचारी !ब्रह्मणेः ऋतम् देवाः, हे ब्रह्मचारी !व्रतम् देवत्वाम्, ब्रह्मचारी कौन होता है। मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि कहता है। ब्रह्मचारी वह है जो चरि, ब्रह्म और चरि को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं बेटा !प्रकृति को जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। मेरे पुत्रों !देखो, चरि का सूक्ष्मतम् मनस्तत्त्व माना गया है। और वही मनस्तत्त्व है बेटा !जो प्राण के साथ में गमन करता है। और प्राण मेरे पुत्रों !देखो, विचारों में परणित हो जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है, ''सम्भवम् ब्रह्मणाः ऋतम् देवाः'' ''सम्भवम् ब्रह्मणाः ऋतम् देवाः'' क्या वह ब्रह्मचारी कहलाता है बेटा !जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। ब्रह्म की चरि को कौन चरता हैद्दब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी कौन है, जो मुनिवरों !देखो, प्रत्येक श्वास का मनका बनाना जानता है और वह ब्रह्मसूत्र में मुनिवरों !देखो अपने को पिरो लेता है।

विचार आता रहता है मेरे पुत्रों !क्या वह देखो, वेद का ऋषि कितनी ऊँची

उड़ाने उड़ रहा है। वह कहता है कि तुम, मानो देखो, गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के पूजन करने से मानव तेजोमयी बन जाता है। और तेज की आभा में परणित हो जाता है। वेद का ऋषि कहता है, ब्राह्मण कौन है। वेदाचार्य कहते हैं, ''ब्रह्मवर्चो सम्भव ब्व्हे, ऋतम् देवाः'' जो मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में जो स्वीकार करता है, वही ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों !देखो, ब्राह्मण की विवेचना करते हुए, वेद का ऋषि कहता है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भी इसी प्रकार की विवेचना की है मानो देखो, यही विवेचना मुनिवरों !देखो उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने भी इसी प्रकार वर्णन किया। और उस समय गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला ब्रह्मचारी कहलाता है। हे ब्रह्मचारी !हे ब्रह्मवर्चोसी !तू अपने में पालन कर जिससे मानो तेरी ब्रह्मवर्चोसी पूर्णता को प्राप्त हो जाए।

आओ, मेरे पुत्रों !मैं विशेष विवेचना नहीं दूँगा। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। क्योंकि ''ब्रह्माचारः प्रव्हाणाम् ब्व्हे'' मेरे पुत्रों !अपने में प्राण का निदान करता है। और प्राण को अपने में समेट लेता है। वही ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, आगे वेद का ऋषि कहता है ''सम्भूति ब्रह्माः सम्भूति लोकाम्, सम्भूति ऋतम् देवम् लोकाः'' वेद का आचार्य कहता है कि उस महान् देव को हमें विचारना है। मेरे पुत्रों !देखो, द्वितीय अग्नि का नाम गृहपत्य नाम की अग्नि कहलाती है।

यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता !ये स्वर्ग की प्रथम दहली है जो ब्रह्मचर्य मानो देखो, अपने में ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ और देवत्व को प्राप्त कर लेता है। जो हिंसा से रहित हो जाता है। हिंसा से जो रहित होता है और अहिंसा में परणित हो जाता है मेरे पुत्रों !देखो, वही देवता कहलाता है।

गृहपत्य अग्नि गृहपत्य अग्नि

विचार आता है कि गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला, अपने में गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन कौन करता है बेटा !गृह आश्रम में रहने वाले

पति और पत्नी मानो अपने बाल्य को यदि ऊँचा बनाना चाहते हैं, अपने मानो देखो, गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो वह दोनों अपने में परस्पर चर्चाएँ करते रहें। और परस्पर क्या चर्चाएँ, दर्शनों की चर्चा होनी चाहिए। गृहपत्य नाम की अग्नि के पूजन का अभिप्रायः ये है। जैसे बेटा !माता अरुन्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, रात्रि काल में बेटा !देखो, चिन्तन करते रहते थे। और लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ते रहते थे। एक समय बेटा !माता अरुन्धती ने, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से ये कहा, क्या महाराज !ये पृथ्वी क्या है? उन्होंने कहा, ये पृथ्वी गुरुत्व है। और ये मानो देखो, संसार को अपने में धारण करने वाली है। वेद का ऋषि कहता है ''वसुन्धरम् ब्रह्मणाः कृतम्'' ये पृथ्वी वसुन्धरा है। जो अपने में मानो देखो, धारण कर रही है। मुनिवरों !माता अरुन्धती ने कहा, चलो भगवन् !ये भी वाक्य मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु ये लोक-लोकान्तरों की माला एक-दूसरे में पिरोया हुआ जगत है। जैसे ये मानो समाज, एक-दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे माता का पुत्र, माता में पिरोया हुआ है। और पुत्र में माता पिरोयी हुई है। इसी प्रकार मुनिवरों !जैसे पितरगण, देखो ब्रह्मचारी अपने में पिरो लेते हैं पुत्रवत् बन करके, इसी प्रकार मेरे पुत्रों !जैसे प्राणी, प्राणी में पिरोया हुआ है। ये पृथ्वी जैसे सूर्य में पिरोयी हुई है और सूर्य गन्धर्व में पिरोया हुआ है। और गन्धर्व, मानो देखो, जैसे धुरव में पिरोया हुआ है। और धुरव, मुनिवरों !देखो पुष्प नक्षत्र में पिरोया हुआ है। और पुष्प, मुनिवरों !देखो, रोहिणीकेतु मण्डल में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार, मुनिवरों !देखो, ये जगत एक-दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे आचार्य में ब्रह्मचारी पिरोया जाता है और ब्रह्मचारी मेरे पुत्रों !देखो, ''आचार्य सुवप्रव्हे, देखो ब्रह्मवर्णाम् ब्रव्हे कृतम'' देखो आचार्य ब्रह्मचारी में और ब्रह्मचारी आचार्य में, एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा बेटा !ये जगत दृष्टिपात आता रहता है। मुनिवरों !देखो, एक-दूसरे में चेतनाबद्ध रहने वाला ये जगत अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपात करता रहता है।

मेरे पुत्रों !देखो, ऋषि ने ये कहा कि गार्हपत्य नाम की अग्नि का अभिप्रायः

ये है, क्या गृहपत्य नाम की अग्नि में प्रवेश हो जाए। और गृहपत्य नाम की अग्नि क्या है। जब माता-पिता अपने गृह में ऊँचे विचार बनाते हैं। और वह अपने में परस्पर दर्शनों की चर्चाएँ परमात्मा की विवेचना में रत्त रहते हैं। और वो ब्रह्म याग करते हैं तो उनके यहाँ देखो बसने वाले ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी, पुत्र-पुत्रियाँ, मुनिवरों !देखो, सर्वत्र पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !देखो, अपने में ही वो दृष्टिपात होने लगते है। विचार आता रहता है, मैं विशेषता में, तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार तो बेटा !बड़े ऊर्ध्वा में गमन करते रहते हैं। माता अरुन्धती ने ये कहा, वशिष्ठ से क्या हे ब्रह्मणेः मानो देखो, ये अपने में मात्रएँ क्या हैं? उन्होंने कहा, मात्रएँ अपने में ही अपने मानो लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा में जो मात्रएँ कटिबद्ध रहती हैं। जिससे मुनिवरों !देखो, उनका जीवन पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। आओ मेरे पुत्रों !देखो, विचार आता रहता है, ''अभ्यम् ब्रह्मणाः अभ्यम् लोकाः अभ्यम् रुद्राः''। मेरे पुत्रों !देखो, वेद के ऋषि ने कहा है, हे देवी ! अमृता को प्राप्त करने वाला ही महान् है। तो मुनिवरों !यहाँ आचार्य ने कहा, हे नचिकेता !देखो जब मैं वशिष्ठ मुनि महाराज के आश्रम की विचारधाराएँ या उनके दोनों ऋषित्व की चर्चा करते हुए जब मैं तुम्हारे समीप आता रहता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय पवित्रता की आभा में रत्त हो जाता है। इसीलिए मैं ये कहा करता हूँ, क्या गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन होना चाहिए। अग्नि का अभिप्रायः ये है, विचार है, यही अग्नि, मुनिवरों !देखो, भयङ्कर बन करके रहती है। यही अग्नि जब गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन, जब विद्यालयों में प्रवेश होता है तो आचार्य तपों में जब निष्ठ हो जाता है। तो मुनिवरो !ब्रह्मचारी उसके तप की प्रशन्सा करते हैं और उसके चरणों की वन्दना करके अपने को महान् बनाते हैं। यही अग्नि, मुनिवरों !देखो, जब आचार्य कुल में प्रवेश, देखो जब ये अग्नि आर्युवेदाचार्यों के कुल में प्रवेश करती है। यही अग्नि बेटा !देखो, पचासी प्रकार की अग्नि बन करके रहती है।

वैज्ञानिकों के युग में प्रवेश करती है तो वैज्ञानिकजन इसका मन्थन करते हैं

तो बेटा !यह अग्नि अरबों-खरबों प्रकार की धाराओं में परणित हो जाती है। यही अग्नि बेटा !अणु और परमाणु में रत्त हो जाती है। यही अग्नि जब विज्ञानवेत्ता मुनिवरों !देखो एक-एक परमाणु का जब विभाजन करते हैं तो उसमें विभक्त हो के बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आने लगता है। तो विचार आता रहता है, जब मानव देखो अपने में अन्वेषण करता है, अपने में जब अनुसन्धान करता है तो देखो अपने में ही इस अग्नि का पूजन करता है। यही अग्नि बेटा !देखो, ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। यही अग्नि पाण्डित्व की आभा में रत्त हो करके मुनिवरों !देखो सत्य में रमण करने वाली है। तो जब हम मुनिवरों !देखो इन अग्नियों का पूजन करने लगते हैं तो बेटा !ये अग्नि महानता में परणित हो जाती है।

तप का स्वरूप तप का स्वरूप वेद का ऋषि कहता है, ''तपम् हिरण्यम् तपः प्रव्हाः''। ये सर्वत्र मानो देखो, जगत एक तपोमयी दृष्टिपात आता रहता है। इसीलिए मानव को तपस्वी होना चाहिए। ब्रह्मचारी जब अपने विद्यालय में तपता है और वह अपने जीवन को क्रियात्मक बना लेता है तो बेटा !राष्ट्र ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है। जैसे विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के समीप देखो आचार्यजन तपे हुए होने चाहिए। ऐसे राष्ट्र का संचालन करने के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा में रत्त रह करके राष्ट्र को तपस्वी होना चाहिए। और तप किसे कहते हैं बेटा !जब अपने मानवीय राष्ट्र को जो ऊँचा बना लेता है। अपने शरीररूपी जो हमारा राष्ट्र है, उसको जब वो प्राण के माध्यम से विचार के और मन को एकाग्र करता हुआ, जब ऊँचा बना लेता है तो बेटा !राष्ट्र पवित्र बन करके रहता है।

आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि मानव को तपस्वी बनना चाहिए। ''तपम् गतम् ब्रह्माः तपो हिरण्यम् रथ ''तपम् गतम् ब्रह्माः तपो हिरण्यम् रथ ''तपम् गतम् ब्रह्माः तपो हिरण्यम् रथ प्रव्हाः वाचन्नमम् बव्हे तपाः''। प ्रव्हाः वाचन्नमम ् बव्ह े तपाः''। वेद का ऋ प्रव्हाः वाचन्नमम् बव्हे तपाः''। षि कहता है जो मानव मन, वचन, कर्म से जो तपस्वी होता है।

मन, वचन, कर्म से जो बेटा !ऊर्ध्वा में गमन करता है। अरे !वही तो वशिष्ठ कहलाता है। वही अपने राष्ट्र को, समाज को ऊँचा बनाता है।

आओ मेरे पुत्रों !देखो, विचार क्या, जो गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करता है वो गृह में प्रदीप्त रहने वाली अग्नि है। अरे !विचारों की अग्नि गृहों में प्रदीप्त रहती है। यही अग्नि मुनिवरों !देखो, वह विद्यालय गृह है, उसमें भी ये प्रदीप्त रहती है। तो इसीलिए हमें विचारना है कि हम अपने में तपस्वी बन करके गमन करने वाले बने। और माता वसुन्धरा के प्रति हमारी देखो निष्ठा होनी चाहिए। वसुन्धरा उसे कहते हैं जिसके गर्भ में बेटा !देखो, हम सदैव वशीभूत रहते हैं। माता का नाम वसुन्धरा है। देखो परमात्मा का नाम भी वसुन्धरा है। इस पृथ्वी का नाम भी वसुन्धरा है। और मानो देखो, जिस विद्या का हम अध्ययन करते हैं। जिस विद्या से हमारे जीवन का विकास होता है। जिस विद्या से हम ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हैं। जिस विद्या के द्वारा देखो हम आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान, दोनों में प्रविष्ठ हो जाते हैं। मेरे पुत्रों !वही तो विज्ञान विशिष्ट कहलाया गया है। उसी विज्ञान में जब हम रत्त हो जाते हैं तो बेटा ! हमारा मानवीय जीवन पवित्रता को धारण करने लगता है। तो मुनिवरों !देखो वसुन्धरा का अभिप्रायः क्या। क्या जिसके गर्भ में हम वशीभूत रहते हैं। जैसे मुनिवरों !परमपिता परमात्मा का ये ब्रह्माण्ड है ये लोक-लोकान्तरों वाला है। एक-दूसरे में माला को प्रविष्ट करने वाला ये जगत है। ये परमात्मा का गर्भाशय कहलाता है। और जब इससे पृथक् होते हैं तो माता के गर्भ में, जननी के गर्भ में प्रविष्ट हो जाते हैं। माता अपने में धारण करने वाली है। वह धारयामि कहलाती है। वसुन्धरा कहलाती है। वही वसुन्धरा बेटा !देखो, जब माता के गर्भ से ये मानव पृथक् होता है तो मुनिवरों !देखो, इस पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। हे माँ !तू कैसी वसुन्धरा है। तू नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों को हमें प्रदान करती रहती है। हम तेरे में उही विज्ञान को दृष्टिपात करते हैं। वहीं प्रभु की महानता को दृष्टिपात करते रहते हैं। क्योंकि तू नाना प्रकार का खाद्य और खनिज

पदार्थ जब प्रदान करती है, जब वैज्ञानिक बन करके तेरे गृह में प्रवेश करते हैं, तो मानो नाना प्रकार के खनिजों को प्रदान करने वाली है। और उसी खनिज के द्वारा देखो हमारा जीवन उद्बुद्ध होने लगता है। राष्ट्र और समाज सब पवित्र बन जाता है। हमारा विद्यालय भी पवित्र उसी के द्वारा बनता है। जब तक मुनिवरों देखो, विद्यालयों में ब्रह्मचारी, मुनिवरों !देखो यान के द्वारा रमण करके अन्तरिक्ष की यात्र नहीं कर पाते, विद्यालय कदापि सफलता को प्राप्त नहीं होता।

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है। वसुन्धरा की विवेचना करने वाले बेटा !तत्व मुनि महाराज, एक समय बेटा !ब्रह्मचारियों को अध्ययन करा रहे थे। हे ब्रह्मचारियों !तुम्हें मानो देखो, अपनी आभा में परणित हो जाना है। और तुम्हारे यहाँ, जहाँ ये परमाणु विद्या है, इस परमाणु विद्या के ऊपर अध्ययन करो। जहाँ तुम्हारी आध्यात्मिक विद्या है इसका भी अध्ययन करो। परन्तु आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय हो करके, मेरे पुत्रों !देखो, ब्रह्मचारी जब विद्यालयों में अपने यन्त्रों के द्वारा मुनिवरों !लोक-लोकान्तरों की यात्र करने वाले हों बेटा !राष्ट्र और समाज उसी काल में ऊँचा बनता है। और कर्त्तव्यवाद में निश्चित होने चाहिए। ये है बेटा !देखो विचार, जो वेद का ऋषि अपने में विचार दे रहा है। क्या ये वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। बेटा !मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, जब ब्रह्मचारीजन बेटा !अपने में विद्यमान हो करके ये पृथ्वी के गर्भ में पहुँचे है तो पृथ्वी के गर्भ में बेटा !जो नाना प्रकार का खनिज है अथवा खाद्यान्न है इसके ऊपर अन्वेषण करने वाले ब्रह्मचारीजन, मानो देखो, अपने में, अपनी वृत्तियों को रत्त करके उसके गर्भ में प्रवेश हो जाते हैं। और इसके गर्भ में बेटा !देखो, मुझे स्मरण है, भारद्वाज मुनि के यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्रा विद्यमान थे, जो बेटा !पृथ्वी के दस-दस योजन के खनिजों को जानने वाले ब्रह्मचारी थे। बेटा !देखो, विज्ञान अपनी आभा में उड़ाने उड़ता रहा है। मैं तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह कि मुनिवरों !देखो गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन होना

चाहिए। और गृहपत्य नाम की अग्नि का जो पूजन करने वाला है वही मेरे प्यारे ! देखो, अपने में वशिष्ठ कहलाता है। वही ऊर्ध्वा में गमन करने वाला है। तो मेरे पुत्रों !देखो, विद्यालयों में जब ब्रह्मचारियों के समीप आचार्यजन विद्यमान हो करके उनकी जिज्ञासाएँ उनका आत्म देखो उसको आत्मा का बोध कराना, ब्रह्मचर्य व्रतों का पालन करते हुए ब्रह्मचरिष्यामि बनना और विज्ञान की अनुभूति कराना, बेटा !ये मानो देखो, तपस्वियों का कर्त्तव्य कहलाता है।

वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों ! वेद कहता है ''तपम् हिरण्यम् तपाः तपम् चरिष्यम ब्रह्माः ''तपम् हिरण्यम् तपाः तपम् चरिष्यम ब्रह्माः ''तपम् हिरण्यम् तपाः तपम् चरिष्यम ब्रह्माः तपोः'' तपा ेाः''। तपोः'' क्या हे ब्रह्मचारियों !तुम तपस्वी बनो। और तपस्वी कौन कहलाता है, जो आत्म ब्रह्मेः आत्मता आत्मा का चिन्तन करने वाला है। ब्रह्मचर्य व्रतों का पालन करने वाले ब्रह्मचरिष्यामि। क्योंकि परमपिता परमात्मा वो ब्रह्म है और चरि प्रकृति को कहते हैं। जो ब्रह्म और चरि के ऊपर, दोनों के ऊपर विचार-विनिमय करता है अथवा चरि को जानता है, ब्रह्म में उसको समेट लेता है और दोनों को मुनिवरों !देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके, वही तो महान् कहलाता है।

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि हमारे यहाँ बेटा !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में, ब्रह्मचारियों को जब इस प्रकार का विचार क्रियात्मक किया जाता है तो बेटा !वह विचार एक पवित्र महानता में गमन करने वाला है। आओ मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मचारिजन, जब आचार्यों के समीप विद्यमान हो करके, उनके चरणों की वन्दना करते हुए महानता में गमन करते हैं, मेरे पुत्रों !देखो, वही तो एक महान् क्रियाकलाप कहलाता है। तो विचार देते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है क्या ''ब्रह्मणाः ब्रहे ऋतम् वेदाम् भवितम् ब्रह्मेः''। वेद का ऋषि कहता है कि ब्रह्मचरिष्यामि बनो और मानो तुम्हारा कण्ठ विद्या से सजातीय हो। गृहपत्य नाम की, गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन किया जाए जिससे तुम्हारी मानवता, मानो

लोक-लोकान्तरों में गमन करने वाली हो। और तुम मानो देखो, ''शिक्षामम् ब्रहे व्रतम् देवाः'' बेटा !ये महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, प्रातःकालीन बेटा !यह शिक्षा देते रहे हैं। अपने में अपनेपन को विचारते रहे हैं और स्वयँ तप में जो परिणत हो जाता है बेटा !ये जगत अपने में तपस्वी बन करके और अपने ही कर्त्तव्य का पालन करके संसार सागर से पार हो जाता है।

ये है बेटा !आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का आज के वाक्य उच्चारण करने का आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः अभिप ्रायः ये कि हम अभिप्रायः परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें। और उसके ज्ञान और विज्ञान को विचारते रहें। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा विज्ञानवेत्ता है। वह विज्ञान में रत्त रहने वाला है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती आनन्दमयी धारा को विचारते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

ये है बेटा !हमारा वाक्। क्योंकि हमारे मन-मस्तिष्क में जब संसार हमारे मन-मस्तिष्क में जब संसार की प्रतिभा निहित रहती है वही तो महान् और क्रियात्मकता का की प्रतिभा निहित रहती है वही तो महान् और क्रियात्मकता का की प्रतिभा निहित रहती है वही तो महान् और क्रियात्मकता का जीवन मानो देखो, प्रियता को प्राप्त होता रहता है। जीवन माना े द ेखा े, पि ्रयता का े प ्राप्त हा ेता रहता ह ै। ये जीवन मानो देखो, प्रियता को प्राप्त होता रहता है। आज का विचार समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा, इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। वेद पाठ ....। दिनाँक :13 फरवरी, 1990 : स्थान :ग्राम कैथवाड़ी, मेरठ ।

१४ 22 03 1990 याज्ञिक

जीते रहो! देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके सर्वज्ञता की प्रतिभा का दर्शन होता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। और वह उसी में वास कर रहा है। क्योंकि ये जो परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये उस परमपिता परमात्मा की एक यज्ञशाला है। और यहाँ प्रत्येक प्राणीमात्र याज्ञिक बन करके आया है। और यह याग करना उसका मानवीयत्त्व कहलाता है।

हवि

आज का हमारा वेद का पठन-पाठन अथवा कहीं से मुझे, हमें ये प्रेरणा आ रही है कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार-विनिमय दिया जाए। वास्तव में बहुत से याग के सम्बन्ध में अपने विचार देते रहते हैं। क्योंकि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। और ये मानव का शरीर भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसीलिए प्रत्येक मानव हवि बन करके आया है और हवि देने के लिए आया है। विचार आता रहता है कि हवि बन करके इसीलिए आया है कि प्रत्येक मानव जैसे हवि में से सुगन्ध उत्पन्न होती है इसी प्रकार प्रत्येक मानव के जीवन में सुगन्ध होनी चाहिए। क्योंकि सुगन्ध का अभिप्रायः ये है कि उसके चरित्र की सुगन्ध और उसके मानवीयता और क्रियाकलाप इतने विचित्र होने चाहिए जिससे वो सुगन्धित बना रहे। तो जितना भी जैसे साकल्य में सुगन्ध होती है और उसे अग्नि विभक्त कर देती है अथवा उसका विभाजन कर देती है। इसी प्रकार जिस मानव, जो मानव स्वतः हवि बन करके आया है उसके मानवीय क्रियाकलापों में सुगन्ध होनी

चाहिए। जिससे उसकी सुगन्धी से ये मानवीय समाज सुगन्धित बना रहे। तो वह हवि कहलाती है। क्योंकि वह हवि बन करके आया है। और हवि देना उसका कर्त्तव्य है। मानो देखो, नाना प्रकार के साकल्यों के द्वारा वो याग करता है। और वह मानो देखो, हवि प्रदान कर रहा है। वह हवि जहाँ बनता है, वहाँ हवि प्रदान भी कर रहा है। तो वह जो हवि है वही मानव को पवित्र आभा में परणित करती चली जाती है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्रा ये कहता है "हव्याम् "हव्याम् "हव्याम् भूवर्णास्सुतम् ब्रह्मा:" भूवर्णास्सुतम् ब्रह्मा:" क्योंकि वह जो परमपिता परमात्मा है वो स्वतः ब्रह्मा है। और वह ब्रह्मा होने से मानो देखो, उसका याग चल रहा है और वह सुगन्ध के द्वारा मानो देखो, इस समाज को सुगन्धित बना रहा है। तो वह परमपिता परमपिता परमपिता परमात्मा ब्राह्मण हैं और वह हमारे हृदयों में विद्यमान रहते हैं। परमात्मा ब ्राह्मण ह ै ं आ ैर वह हमार े हृदया े ं म े ं विद्यमान रहत े ह ै ं। ता े परमात्मा ब्राह्मण हैं और वह हमारे हृदयों में विद्यमान रहते हैं। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर मानो सदैव गम्भीरता से मनन और चिन्तन करते रहें। तो मेरे प्यारे! आज का वेद मन्त्रा ये कह रहा है "हव्याम् भूतम्" "हव्याम ् भ ूतम ्"। "हव्याम् भूतम्"

परमपिता परमात्मा का याग परमपिता परमात्मा का याग

मेरे पुत्रों! देखो, ये परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, याग उसका आयतन है। आयतन कहते हैं जहाँ वो वास कर रहा है। मानो उसका गृह है। ये ब्रह्माण्ड उस परमपिता परमात्मा का गृह है और उसमें वो वास कर रहा है। तो विचार आता रहता है कि वह परमपिता परमात्मा एक महान् है और पवित्रतम् कहलाता है। मैंने तुम्हें कई कालों में याग के ऊपर बेटा! बहुत से विचार दिए। और इन यागों में मानो देखो, वेद के मन्त्रों को जब चिन्तन करने से ये हमें प्रतीत होता है, क्या वेद का मानो देखो, आधा भाग क्या, सर्वत्र भाग एक ही प्रकार की यज्ञशाला के रूप में और याग के और हवियों के रूप में मानो देखो,

उसमें प्रतिष्ठित होता रहा है। इसीलिए हमें प्रत्येक वेद मन्त्रों के द्वारा मुनिवरों! देखो याग के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, ये प्रत्येक मानव का जितना भी क्रियाकलाप है, वह जो भी क्रिया कर रहा हैद्दचाहे वो वैज्ञानिक बन करके, चाहे वह माता अपने बाल्यों का पालन करने वाली हो, चाहे मानो वो राष्ट्रवेत्ता हो। कोई भी मानव मानो देखो, सर्वत्र एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। तो विचार आता रहता है यह सर्वत्र परमपिता परमात्मा का एक याग प्रारम्भ हो रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें कुछ ऋषि-मुनियों के समीप ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि अपने में बेटा! देखो, याग के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं। मैंने बेटा! इससे पूर्व काल में तुम्हें दक्षिणायण और उत्तरायण की कुछ चर्चाएँ कीं। मानो शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की कुछ चर्चाएँ कीं। मानो देखो, वह चर्चाएँ ही अपने में बड़ी विशिष्ट मानी गयी हैं।

महारानी द्रोपदी का याग महारानी द्रोपदी का याग

मुझे स्मरण आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, जब पितामह भीष्म मृत्यु की शय्या पर विद्यमान थे तो उस समय मुनिवरों! देखो उनका आत्मज्ञान चलता रहता था। वे अपने विचारों की हवि प्रदान कर रहे थे। तो मुनिवरों! देखो उस समय महारानी द्रोपदी उनके समीप मानो विद्यमान हो महान् याग कर रही थी। याग कैसे? मानो देखो जब अन्न का पान कराती तो गायत्र जपन करती हुई, गायत्र का अध्ययन करती। मानो देखो, अन्नाद को प्रदान करती रहती थी। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहते हैं, आचार्यजन कहते हैं कि जो माता अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहती है, वह मानो जिस समय जो माता अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहती है, वह मानो जिस समय अन्नाद को अपने में देखो निर्माण करती है, तो उस समय वह गायत्र अन्नाद को अपने में देखो निर्माण करती है, तो उस समय वह गायत्र अन्नाद को अपने में देखो निर्माण करती है, तो उस समय वह गायत्र मन्त्रों का पठन-पाठन करती रहे। जिससे देखो उसके हृदय से जो तरगें

मन्त्रों का पठन-पाठन करती रहे। जिससे देखो उसके हृदय से जो तरगें मन्त्रों का पठन-पाठन करती रहे। जिससे देखो उसके हृदय से जो तरगें उत्पन्न हो रही हैं, उन तरúोें में मानो वो तरगें उस अन्न में विद्यमान उत्पन्न हो रही हैं, उन तरúोें में मानो वो तरगें उस अन्न में विद्यमान हो जाएँ। हो जाएँ। क्योंकि इसीलिए अन्न का हमारे यहाँ पवित्र होना बहुत अनिवार्य है। कोई भी मानव मुनिवरों! देखो अन्नाद की उत्पत्ति जब करता है अथवा निर्माण करता है तो उसका विचार सुसज्ज्ति होना चाहिए। और विचारों में एक महानता होनी चाहिए। क्योंकि वो आत्मा की हवि है। वो शरीर की हवि कहलाती है जो मन तक उसकी तरगें जाती हैं और प्राण की वृत्तियों में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो आत्मा उन्नत होता रहता है।

पितामह भीष्म द्वारा याग की विवेचना पितामह भीष्म द्वारा याग की विवेचना पितामह भीष्म द्वारा याग की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, स्मरण आता रहता है। ये देखो द्वापर के काल में मेरे प्यारे! मृतक शय्या पर विद्यमान होने वाला ''त्रोताम् भूवर्णा वर्णो देवत्वाम्''। मेरे प्यारे! देखो, चरणों में विद्यमान हो करके और पितामह से अपनी आत्म उत्थान के लिए वो चर्चाओं को श्रवण कराती रहती थी। उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूँ कि याग किसे कहते है? जहाँ आप आत्मा का याग करना जानते है और देखो आत्मतत्त्व की वार्त्ता को प्रकट करते रहते हैं। मैं आत्म देखो याग को जानना चाहती हूँ। तो उस समय पितामह भीष्म ने कहा, हे देवी! हे दिव्या! देखो संसार में ये जो याग हो रहा है। परमपिता परमात्मा का जो अनूठा याग हो रहा है। जिस यज्ञशाला में सर्वत्र देवता विद्यमान रहते हैं और सर्वत्र देवताओं के द्वारा जो हवि हो रही है, वही तो मानव को प्रदान की जाती है। हे देवी! एक समय मानो देखो, मुझे स्मरण है। एक समय मानो देखो, मेरे पूज्यपाद परशुराम जी, जब मुझे अस्त्रो-शस्त्रों की विद्या प्रदान करते थे। तो एक समय भ्रमण करते हुए मानो देखो, महर्षि सुनीति मुनि के द्वार पर पहुँचे। और महात्मा

सुनीति ने हमारा देखो पूज्यपाद गुरुदेव का स्वागत किया। और उन्होंने ये कहा था, पूजयपाद ने सुनीति से, हे भगवन्! देखो तुम याग कर रहे हो प्रातःकाल में। ये याग क्या है? उन्होंने कहा कि याग क्या नहीं है। तो पूज्यपाद गुरुदेव देखो इस सम्बन्ध में मौन हो गए। परन्तु सुनीति मुनि ने कहा था, क्या ये जो ब्रह्माण्ड है एक प्रकार की यज्ञशाला है और उसमें हवि देना। देखो, जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया तो ये मानो देखो, याग ही है जो संसार को सुगन्धित बनाता है। और प्रत्येक शब्द जो वेद मन्त्रों से, देखो वेद मन्त्रों की आभा में निहित रह करके गमन करता रहता है। और वो द्यौ में प्रवेश करता रहता है। वही तरगें बन करके मानव के समीप आती रहती हैं। तो इसीलिए सुनीति मुनि ने कहा, ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान रहता है।

याग करने की प्रेरणा याग करने की प्रेरणा याग करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, ''शब्दम् गमनम् ब्रह्म। शब्दम् द्रव्य ब्रव्हा द्यौ लोकाम् हिरण्यम् वृथाः।'' यही शब्द है जो मानो देखो, गृहों का निर्माण करता है। जिस गृह में वेद मन्त्रों के द्वारा याग होता है, वो गृह पवित्र होता है और उस गृह में मानो देखो, देवता वास करते हैं। और जिस राजा के राष्ट्र में देखो याग होता है। और राजा के राष्ट्र याज्ञिक बने। तो प्रत्येक गृह में जब याग की और साकल्य की अग्नि के माध्यम से जब सुगन्धी मानो जब ''चरन प्रवणम् ब्रहे'' वह देखो ओत-प्रोत हो जाती है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। और समाज में एक महानता की स्थापना आ जाती है। तो इसीलिए वैदिक ऋषि ने कहा, क्या वेद तो याग के लिए पुकार रहा है। इसीलिए प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए।

भिन्न-भिन्न प्रकार के याग भिन्न-भिन्न प्रकार के याग

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता था। जैसे हमारे यहाँ अश्वमेध याग है। अजामेध याग है, रुद्र याग है, विष्णु याग है, ब्रह्म याग है। मानो देखो, और भी नाना जैसे देवी याग, कन्या याग, मुनिवरों! देखो और भी नाना प्रकार के जैसे अश्वमेध और देखो

अजा ब्रह्मेः मुनिवरों! देखो वाजपेयी और अग्निष्टोम यागों का वर्णन होता रहता है। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। मेरी प्यारी माता! जो अपने गर्भस्थल में शिशु की पालना करती है। और वह पालना के मूल में मानो वेदों का मन्त्रों का अध्ययन करती रहती है। और उसके गर्भ में प्रवेश होती रहती है। माता अपने गर्भस्थल में देखो बालक का निर्माण कर देती है। देखो, हम जैसे शिशु जब माता के गर्भस्थल में विद्यमान होते हैं तो माता वेद के मύलम् ब्रम्हे कृतम् देती हुई, मानो वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाती हुई अपने में याग हो रहा है। ये स ंसार एक प्रकार की यज्ञशाला हैं। जिस यज्ञशाला में हम सब विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, हवि प्रदान करते हैं। और यज्ञशाला में मुनिवरों! देखो, यजमान अपने में हुत कर रहा है। जैसे महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, जो भी अतिथिगण जाताद्दउसके यहाँ का एक नियम था क्या, उनके यहाँ का एक नियम था क्या उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी। वो याग करते रहते थे। और जब हुत करते रहते तो मेरे पुत्रों! देखो, उनके चित्रों का उन्हें दर्शन होता रहता था। तो इसीलिए क्योंकि द्यौ में ब्रह्मणाः वे द्यौ में ही प्रवेश करने वाले चित्र कहलाते थे।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा इस सम्बन्ध में प्रगट नहीं करूँगा। केवल ये, क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। क्योंकि ये ब्रह्माण्ड एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक बनने के लिए आया है। ये पृथ्वी नाभि कहलाती है, ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है। परन्तु नाभि के, यदि ये प्रश्न किया जाए कि पृथ्वी की नाभि क्या है। तो आचार्यों ने कहा कि ये जो यज्ञशाला है, यही नाभि कहलाती है। जैसा मुनिवरों! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी ये प्रश्न करते रहते, क्या महाराज याग कैसे करें। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या याग तुम्हें करना है तो मानो नाना प्रकार की समिधाएँ होनी चाहिए, साकल्य होना चाहिए। और साकल्य के द्वारा हमें याग करना चाहिए। यज्ञशाला का निर्माण जैसे देखो पृथ्वी की ये नाभि

कहलाती है। नाभ्याम् भूतम् ब्रह्माः, इसमें तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! पुनः ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु! हम याग करना चाहते है परन्तु याग कैसे करें? उन्होंने कहा, अमृतम् ब्रह्मेः देखो याग करते रहो, तुम अग्नि के द्वारा। अग्नि के माध्यम से याग करते रहो। उन्होंने कहा, प्रभु! समिधा भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा, यत्रतम्। उन्होंने कहा कि समिधा किसे अमृतम्। मानो कहीं ये सुविधा न हो तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा, यदि समिधा हों तो अग्नि को प्रदीप्त करके, मानो देखो, साकल्य न हो तो उसमे ं समिधा को प्रदीप्त करके अग्नि के द्वारा, देखो समिधा के द्वारा याग करना चाहिए। उन्होंने कहा, महाराज यदि कहीं समिधा भी न हो तो अग्नि भी न हो तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा, तुम मानो देखो, अमृतम्, जल के द्वारा, प्रोक्षण के द्वारा याग कर सकते हो। क्योंकि ये भी याग का एक अú माना गया है। तो मुनिवरों! उन्होंने कहा, प्रभु कहीं जल भी न हो। तो उन्होंने कहा, पृथ्वी की रज से तुम स्वाहा उच्चारण करो। ''अग्नेय प्राणम् ऋतम् स्वाहा'' ऐसा उद्गीत गाते हुए तुम याग करो। उन्होंने कहा, प्रभु कहीं मानो साकल्य भी न प्राप्त हो। उन्होंने कहा, ''अब्रव्हे व्रतम्'' और कहीं मानो देखो, जल भी प्राप्त न हो तो कैसे याग करें? उन्होंने कहा, मन के द्वारा तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। और मन के द्वारा मानो देखो, मन से वेद मन्त्रों का उद्गीत गाओ। और यह कहते रहो, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा। नन्द्रम् ब्रव्हे ऋतम् देवत्वाम् स्वाहा। ऐसा उद्गीत गाते हुए तुम याज्ञिक बनते रहें।

मेरे पुत्रों! ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया, तो ब्रह्मचारीजन अपने में मौन हो गए। तो विचार आता रहता है। वेद का मन्त्रा कहता है कि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ याज्ञिक बनो और याग करने वाले बनो। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार मैं ये विशेषता में नहीं। आज का विचार केवल ये कि हम याज्ञिक बनने वाले बने। अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

"ओ३म् दिव्याम् रथम् मनाः वरूणाश्वमम् यज्ञो रेव सञ्जना वायुगताः"

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, याग के सम्बन्ध में अपना विचार दे रहे थे। और याग अपने में एक व्यापिक शब्द है और व्यापिक क्रियाकलाप है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो बिखरे हुए याग के विचारों को परणित कर रहे थे। क्योंकि याग अपने में बिखरा हुआ नहीं है। याग अपने में मानो एक धारा है और जो पृथ्वी से ले करके द्यौ तक इसकी धारा गमन करती रहती है। वह बड़ा अनूठा है। परन्तु यह हमारी जो वाणी है, ये पृथ्वी मण्डल पर, मृत मण्डल में जा रही है। और वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा देखो यजमान के सहित रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरी सदैव ये कामना रहती है।

ऋषि की कामना ऋषि की कामना ऋषि की कामना

देखो, ऐसा ये जो काल है, ये वाममार्ग का काल चल रहा है। इस समय राजा भी वाममार्गी है और प्रजा भी वाममार्गी बनी हुई है। परन्तु ऐसे काल में याग होना, हवि देवताओं को प्रदान करना ये मैं ये जानता हूँ कि ये देखो यजमान का सौभाग्य है। और ऐसे काल में, जो देखो ये वाममार्ग का काल है, क्योंकि राष्ट्रवेत्ता भी देखो अपने में, विचारों में विपरीत हो गए हैं। और समाज में भी वाममार्ग उसे कहते है जो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा है। यथार्थ मार्ग में नहीं विचार रहा है। सुरा और सुन्दरी और द्रव्य में जो लगा हुआ प्राणी मात्र है ये वो अमृतम्, वह वाममार्ग काल कहलाता है। क्योंकि संसार में, जो मानो देखो, ऐसा काल आ जाता है, जिस काल में राजा भी द्रव्यपति बनना चाहता है। समाज भी द्रव्यपति बनना चाहता है। प्रत्येक मानव द्वारा जहाँ द्रव्य की पुकार हो रही है तो ऐसे काल को देखो हमारे यहाँ वाममार्ग काल कहा जाता है। द्रव्य मानव के लिए, उपचार के लिए होता है। द्रव्य राष्ट्र की उन्नति और देखो राष्ट्र को

गमन कराने के लिए होता है। राजाओं को चाहिए कि अपने द्रव्य को एकत्रित न करें। और वे वाममार्ग प्रवृत्ति को त्याग करके राष्ट्र को उन्नत बनाते रहें। ऐसी मेरी कामना रहती है। हे यजमान! तेरे जीवन में सदैव देखो, गृह में और जीवन में द्रव्य को सतोपयोग होना बहुत अनिवार्य है। जहाँ द्रव्य का सतोपयोग होता है वहीं मानो देखो, द्रव्य क्रियाकलापों में परणित हो करके, पवित्र हो करके गमन करता रहता है।

राजा का कर्त्तव्य राजा का कर्त्तव्य

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वर्णन कराने के लिए आया हूँ। क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रगट करते हुए कहा था, क्या आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है अथवा राष्ट्र है वह अवनति के मार्ग पर गमन कर रहा है। जहाँ उसे उन्नत होना चाहिए, जहाँ उसे मानो राष्ट्र में शान्ति की स्थापना होनी चाहिए, वहाँ अशान्ति का मानो देखो, अपने में नृत हो रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा करता हूँ, क्या इस प्रकार का नृत नहीं होना चाहिए। मúलम् ब्रह्मेः, देखो यहाँ रूढ़िवाद को नष्ट करना चाहिए। यह जो रूढ़िवाद है, जो मानो देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियों में राष्ट्र अपने में गमन कर रहा है। मैं यह कहा करता हूँ कि राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र में रूढ़ि न रहने दें। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई हैं। जैसे कोई मोहम्मद के मानने वाला, कोई ईशु के मानने वाला, कोई नानक के मानने वाला और भी नाना प्रकार की मान्यताओं वाली रूढियाँ विद्यमान हैं। अरे राजन्! तेरा कर्त्तव्य है कि इन रूढ़ियों को समाप्त करने वाला बन। यदि तेरे राष्ट्र से ये रूढ़ि नहीं जाएगीं तो मानो देखो, राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्ति आती रहेगीं और मानव, मानव का भक्षक बना रहेगा। तो ये विचार आता रहता है बेटा! देखो, वर्णम् ब्रह्मेः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ऐसे कई काल में ये कहा है, क्या हे पुत्र! हे ब्रह्म! वर्णम् ब्रव्हे ऋतम् देवत्वाम् लोकाहम्’’। मानो उन्होंने रक्तभरी क्रान्ति के लिए बहुत समय कहा था। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! तो महान् हैं। परन्तु इनकी विचित्रता मुझे स्मरण आती

रहती है। मैं उस काल में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल ये उच्चारण करने के लिए आया हूँ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय देने के लिए, क्या यहाँ जो नाना प्रकार की ये रूढ़ियाँ पनप रही हैं अथवा रूढ़ियाँ उन्नत हो रही हैं। रूढ़ियों का अभिप्रायः ये है, क्या एक मानो देखो, राष्ट्र को नष्ट करना चाहती है। उसमें रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म हो रहा है। राष्ट्र को चाहिए और समाज को चाहिए कि वह देखो अपने यहाँ रूढ़ि न पनपने दें। मानो देखो, रूढ़ि कैसे समाप्त होती है।

मुझे स्मरण आता रहता है, राजा रावण के काल में भी एक समय रूढ़ियों का, रूढ़ियाँ पनपी थी। मानो देखो, वह भी रूढ़ियों का वर्चस्व कहलाया जाता था। जहाँ नाना प्रकार के मत-मतान्तरों में मानव रत्त हो जाता है। अरे! ये रूढ़ियाँ समाप्त होना बहुत अनिवार्य है। ये रूढ़ि कैसे समाप्त होंगी। मेरे प्यारे! देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा। क्या राजा को चाहिए, क्या राजा प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करता हुआ और उन रूढ़ियों में देखो आचार्यों से शास्त्रार्थ होना चाहिए। राजा ब्रह्मवेत्ता हो। राजा देखो वेद के मर्म को जानने वाला हो। ज्ञानवान हो और तपस्वी हो तो वह राजा मानो मध्य में विद्यमान हो करके और प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों से विचार-विनिमय होना चाहिए। और रूढ़ियों का शास्त्रार्थ होना चाहिए। विचार-विनिमय होना चाहिए। जो रूढ़ि ज्ञान और विवेक और देखो प्रकाश में रत्त हो जाए और विज्ञान में मानो देखो, उसकी स्थिति हो जाए। वही रूढ़ि श्रेष्ठ कहलाती है। वही धर्म कहलाता है। अरे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम जो नाना प्रकार के धर्म उच्चारण करते हो, धर्म एक कहलाता है। नाना धर्म नहीं कहलाते। धर्मम् नम ब्रव्हे, देखो धर्म एक है। रूढ़ियाँ अनेक कहलाती हैं। अनेक रूढ़ियों को समाप्त करके मानव को धर्म के मर्म को जानना चाहिए।

धर्म

आओ देखो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे धर्म के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न

प्रकार के विचार दिए। और उन्होंने कहा, धर्म वह कहलाता है जो इन्द्रियों में समाहित रहता है। नेत्रों का धर्म देखो दृष्टिपात करना है, श्रोत्रों का धर्म शब्दों का ग्रहण करना है, त्वचा का धर्म प्रीति करना है और देखो घ्राण का धर्म मन्द सुगन्ध को ग्रहण करना है। और इसी प्रकार देखो वाणी का जो धर्म है वह रसों को स्वादन करना है। और इन्हीं में सर्वत्र धर्म मानो देखो, समाहित रहता है। ये उसका धर्म है। इसी धर्म को ले करके जब मानव अग्रणीय बनता है तो विचार करता हुआ दूरी चला जाता है। और धर्म को एकत्रित करता हुआ जब इन्द्रियों के विषय को समेट करके और वह हृदयरूपी यज्ञशाला में हवि करता रहता है उसी मानव के अन्तर्हृदय में विवेक की स्थापना हो जाती है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने कई काल में मुझे ये वर्णन करवाते हुए कहा था कि ये संसार एक भव्यों में उदय होता रहता है। आज का विज्ञान भी देखो मानव को त्रस दे रहा है। वैज्ञानिक सदैव ये आभा में रत्त हो रहा है। अध्युम् भूतम् ब्रह्माः याज्ञाः, देखो अपने में याग बना हुआ है। याज्ञिक बन करके जो मानव देखो हवि देता है वह पवित्र कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे धर्म के सम्बन्ध में और देखो इन विचारों को देते हुए मैंने ये कहा, हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है, पवित्र बनाना चाहता है, शान्ति की स्थापना करना चाहता है तो तुझे देखो रूढ़ियों के ऊपर विचार-विनिमय करना होगा। और रूढ़ियों को समाप्त करना होगा। इसलिए देखो रूढ़ि जहाँ नहीं रहती, वही धर्म पनपता रहता है। वही क्रियाकलापों में महानता की और मानो विद्यमान रहती है।

यजमान और द्रव्य यजमान और द्रव्य

आओ मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था ''सम्भूति ब्रह्माः''। मानो देखो, ये ब्रह्म की आभा में सदैव मानव को रत्त रहना चाहिए। और मेरा तो अन्तर्हृदय मानो यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। द्रव्य का दुरुपयोग मानव की मृत्यु

है और द्रव्य का सदुपयोग करना ही देखो मानव का जीवन है, प्रकाश है। वही द्रव्य मानव को प्रकाश के मार्ग पर ले जाता है। इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये श्रवण किया द्रव्यों का सदुपयोग होना चाहिए। इसीलिए मैं कहता रहता हूँ हे यजमान! तेरे गृह में सदैव महानता का गमन होना चाहिए और द्रव्य का सदुपयोग हो। मानो देवताओं को हवि सदैव प्रदान की जाए। ऐसा देखो मेरा सदैव विचार रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ऐसी मेरी कामना रहती है। आज का ये विचार हमारा सम्पन्न होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गाते हुए, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर अभी-अभी महानन्द जी ने अपने बड़े भव्य विचार दिए। मानो इनके विचारों में कितनी सुगठिता है। क्या देखो धर्म होना बहुत अनिवार्य है। और धर्म की रक्षा होना, ये मानवीयता का कर्त्तव्य कहलाता है। और राष्ट्र का भी कर्त्तव्य है। राजा अपने धर्म और मानवीयता को अपनाता चला जाए। क्योंकि धर्म एकोकी वचन कहलाता है। जैसा महानन्द जी ने अभी-अभी कहा, क्या रूढ़ियों का नाम धर्म नहीं होता। धर्म वो होता है जो मानव के अन्तर्हृदय में समाहित रहता है। मानो उसी धर्म को अपनाना हमारा कर्त्तव्य है। तो ये आज का विचार क्या कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बने और विचार-विनिमय करते चले जाएँ। परमपिता परमात्मा की महती को सदैव विचारते हुए इस सागर से पार हो जाएँ।

आज का विचार ये आज का विचार य े कि हम आज का विचार ये अपने देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, द्रव्य का सतोपयोग करते हुए, मातृशक्ति का पूजन करते हुए और देखो वह राष्ट्रवाद में प्रतिभा का जन्म और द्रव्य का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। ऐसा देखो मुझे महानन्द जी ने वर्णन कराया। आज

का विचार अब ये समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाहा आभ्याम् रथहम् मनाः वाचन्नम् देवाः आपा गतम् मन्थाः वाचाः। ओ३म् गर्न्धवाहम् मनुः वाचन्नम् ग्रहणाहम् त्वाहा।। ओ३म् दधि ब्रह्म गायन्तवा यजन्नम् भद्रा वायाः।। दिनाँक : 22 मार्च, 1990 : स्थान : ग्राम मकनपुर, : गाजियाबाद।

१५ 25 03 1990 आत्मतत्त्व

जीते रहो! देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि चेतनामयी जगत और जड़वत् में ही मानो वे परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही प्रायः अन्वेषण करता रहा है और मानव उसके ऊपर विचार-विनिमय करता हुआ मानो उसके अनुभव ''ब्रह्मणाम् ब्रव्हा ऋतम देवां।'' बहुत परम्परागतों से ही बेटा! ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और वे परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहे हें। क्योंकि हमारे यहाँ ये माना गया है कि जितना भी विज्ञान है इस संसार में, उस विज्ञान के मूल में परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। क्योंकि ये संसार अपने में परिवर्तनता में परणित होता रहा है। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वस्तु का परिवर्तन होना है और होता रहता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते रहते हैं।

तपस्या का स्वरूप तपस्या का स्वरूप

हमारे यहाँ दो प्रकार के जगत के ऊपर ऋषि-मुनि बेटा! अपने में तपस्वी

बने। और तपस्या उसे कहते हैं जो मानव की इन्द्रियों का जो विषय है उस विषयों को अपने में धारण करने लगते हैं। और जब तक इन्द्रियों के विषयों को हम तपस्या और क्रियात्मकता में नहीं ला पाएँगे हम प्रायः तपस्वी नहीं कहलाते। तो इसीलिए आचार्यों ने कहा है कि तपस्या बहुत अनिवार्य है। एक मानव वेद के पठन-पाठन करने वाला है। वेद के मन्त्रों की वो झरी लगा रहा है, एक मानो माला बना लेता है। और उसकी माला बनाता हुआ अपने में ही मानो देखो, अपने में ही माला ग्राही बन जाती है। परन्तु यदि उस माला को हम धारण नहीं कर पाते हैं और माला का तारतम्य यदि ऊर्ध्वा को गमन नहीं करता है, तो मुनिवरों! देखो वह मानव का जो पठन-पाठन का कर्म है अथवा वेदज्ञ बनना है, वह उसका एक समय आता है कि वो व्यर्थ हो जाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव को बेटा! देखो, उस आभा में परणित होना चाहिए।

मुझे स्मरण आता रहता है। एक समय बेटा! चाक्राणी गार्गी, जो अपने आचार्य के यहाँ से वेदों का उद्घोष करने लगी। और वेदों के मन्त्रों की मानो देखो, माला पाठ में जब गान गाती रहती, तो वेद का जो मन्त्र है, मानो वो प्रत्येक वेद का मन्त्र बेटा! अहिंसक है। उसमें मानो हिंसा नहीं है। वो अहिंसक कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी जब गान गाती रही, जब गान में उसकी प्रतिभा निहित रही। तो मेरे प्यारे! देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान है, और वो गान गा रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, सर्पराज भी गान को श्रवण कर रहा है, मृगराज भी गान को श्रवण कर रहा है। वह जो स्वरों में ध्वनियाँ हो रही हैं उस ध्वनि को पान करने वाला बेटा! प्रत्येक प्राणी मात्र उस ध्वनि में ध्वनित हो जाता है। और वह अपने में ध्वनित होता हुआ अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करने लगता है। तो मेरे प्यारे! जब चाक्राणी गार्गी, जब जटापाठ में गान गा रही थी। वेद मन्त्रों का उद्घोष हो रहा था। तो मुनिवरों! देखो, अमृताम् ब्रह्मणाः जब मृगराज मुनिवरों! अपने में ही गान को श्रवण कर रहा था, और सर्पराज भी श्रवण कर रहा है। ये हिंसक प्राणी कहलाते हैं। परन्तु वेद नाम

प्रकाश का व ेद नाम प ्रकाश का है। वेद नाम प्रकाश का जब प्रकाश में वो रत्त होने लगते हैं तो अन्धकार की आभा को त्याग करके वो भी प्रकाश की आभा में रत्त हो जाते हैं।

आध्यात्मिक विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान

आओ मेरे प्यारे! देखो, वेद के एक मन्त्रा की विचारधारा तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ। वेद मन्त्रा कहता है ''अहिंसमभवा प्रणाम् व्रतम् देवत्वाम् लोकम् ''अहिंसमभवा प्रणाम् व्रतम् देवत्वाम् लोकम् ''अहिंसमभवा प्रणाम् व्रतम् देवत्वाम् लोकम् हिरणयम् वृथा।'' हिरणयम ् व ृथा।'' जब हिरणयम् वृथा।'' मानव के उद्गार इस प्रकार के अहिंसक बन जाते हैं तो वेद मन्त्रों की जब ध्वनियाँ होने लगती हैं तो बेटा! उस ध्वनि को श्रवण करने वाले ऋषि-मुनि ही नहीं, मानो देखो, हिंसक प्राणी भी अपनी हिंसा को त्याग करके वह अहिंसक बन जाते हैं। और वह अहिंसक बन करके बेटा! देखो, उसमें अपने में ध्वनित होने लगते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! जब चाक्राणी गार्गी गान गा रही थी तो महर्षि सुमेता ऋषि महाराज, एक समय भ्रमण करते हुए बेटा! उस स्थली पर जा पहुँचे। और मुनिवरों! देखो वह क्या दृष्टिपात कर रहे हैं क्या सर्पराज है, मृगराज है और वह वेदों की ध्वनियों में ध्वनित हो रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो ऋषि भी उनके मध्य में विद्यमान हो करके वह भी ध्वनि को श्रवण करने लगे। जो वेद की पवित्र ध्वनि होती है, उसका हृदय में समन्वय रहता है। क्योंकि जब हृदयग्राही बन जाते हैं तो हृदय का हृदय से समन्वय हो जाता है। और वही हृदय मेरे प्यारे! देखो, ''हृदयम् ब्रह्मः'' वही परमात्मा के हृदय से हृदयग्राही बन करके व अपने में अहिंसा की प्रवृत्ति में रत्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। सुमेता ऋषि ने जब सायँकाल को उनकी वेदों की ध्वनि समाप्त हुई तो वह उनके चरणों की वन्दना करके बोले कि हे दिव्या! ये क्या है जो तुम इस प्रकार का गान गा रही हो। मानो तुम्हारे शब्दों की ध्वनि को मानो देखो, वह पक्षीगण क्या, सिंहराज क्या, सर्पराज क्या, ये सर्वत्र आपकी ध्वनि को श्रवण कर रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो

चाक्राणी गार्गी ने ये कहा, हे प्रभु! जब मानव का हृदय, परमात्मा के हृदय से समन्वय हो जाता है और वह तपश्चर बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि ये हिंसक जो प्राणी है ये भी अपनी हिंसा को त्याग करके और मुनिवरों! देखो अहिंसक बन जाते हैं। और अहिंसक बन करके मानव के हृदय में जो उद्गार हैं, वह जो वेदज्ञ ध्वनि है, जो परमात्मा की अनुपम वाणी है, अनुपम जो मानो देखो, कृतिका है उसे वो अपने में धारण करने लगते हैं। तो मेरे प्यारें देखो वेद मन्त्रा कहता है कि मानव को अहिंसक बनना चाहिए। को अहिंसक बनना चाहिए। मानो देखो, हिंसा ही मानव का उपचार नहीं कहलाता। मानव की जो अहिंसा है वह मानवता का निर्माण करती है। और वही मुनिवरों! देखो विज्ञान की प्रतिभा में सदैव निहित रहती है। हमारे यहाँ विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय हो रहा था। वेद मन्त्रा कह रहा था, ''विज्ञानाम् भूतम् ब्रह्मणोः व्रतम्'' ''विज्ञानाम् भूतम् ब्रह्मणोः व्रतम्'' मानो देखो, विज्ञान की चर्चा हो रही थी। हमारे यहाँ विज्ञान दो प्रकार का माना है। एक विज्ञान वह कहलाता है जिसको मैं बेटा! अभी-अभी तुम्हें वर्णन करा रहा था। आध्यात्मिक जो विज्ञान है ये मानव को मानवीयता में परणित करा देता है। इसीलिए आध्यात्मिक विज्ञान, हमारे यहाँ वह अहिंसा की प्रतिभा में मानव को प्रतिष्ठित कर देता है। और जो मानो देखो, भौतिक विज्ञान कहलाता है। और भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों बड़े विशिष्ट माने गए हैं।

हिंसा और अहिंसा हिंसा और अहिंसा हिंसा और अहिंसा

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है। यहाँ जब मुनिवरों! देखो ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके अपने में बेटा! जानने लगते हैं कि आध्यात्मिकवाद कितना विशिष्ट माना गया है। तो सुमेता ऋषि ने ये कहा कि हे दिव्या! मैं मानो देखो, उस अहिंसा वाले, उस अहिंसक को जानना चाहता हूँ। अहिंसा क्या है और हिंसा क्या है। उन्होंने कहा, हे भगवन्! जब मानव के हृदय में इस प्रकृति का आवेश आ जाता है और प्रकृति के आवेश में वो इतना रत्त हो

जाता है, तो मानो देखो, उससे ऊब जाता है तो हिंसा करने लगता है। क्योंकि आत्मा की वाणी, आत्मा से जो उद्गारों का जन्म होता है उन उद्गारों को अपने में स्वीकार न करना ही हिंसा कहलाती है। वास्तव में जब ऋषि-मुनि, बेटा! देखो, हिंसा और अहिंसा की परिभाषा करने लगते हैं अथवा उसमें रत्त होने लगते हैं तो वो कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, हिंसा और अहिंसा किसे कहते हैं। मुनिवरों! देखो हिंसा कहते हैं जो मानो अपनी अन्तरात्मा की वाणी, अन्तरात्मा की पुकार को अथवा उसके जो उद्गार हैं उन्हें वो जब दमन कर देता है संसार के आवेशों में, तो मुनिवरों! देखो उसे हिंसा कहते हैं। और जब आत्मतत्त्व के अनुसार, मानव अपने क्रियाकलापों को मानो वर्णित करता रहता है और उसी में रत्त हो जाता है। तो आत्मा के उद्गारों को ले करके मुनिवरों! जो संसार में गमन करता है वो अहिंसक कहलाता है। वहाँ हिंसा नहीं होती क्योंकि हिंसा का कारण आत्मा के उद्गारों को शान्त करना है। और देखो अहिंसक बनना, अहिंसक बनना, अहिंसक बनना, ये आत्मा के उद्गारों को ऊर्ध्वा में गमन कराना है। ये आत्मा के उद्गारों को ऊर्ध्वा में गमन कराना है। तो दो प्रकार से हम अपने में मानो देखो, हिंसक और अहिंसक बना करते हैं।

आओ मुनिवरों! देखो वेद का मन्त्रा, एक-एक वेद का मन्त्रा हमें बहुत ऊर्ध्वे उड़ान के लिए पुकारता रहता है। और ये कहता रहता है ''उद्गम् ''उद्गम् ''उद्गम् ब्रह्मणेः उद्गम् भवितम् ब्रह्मणाः उद्गाहा।'' ब ्रह्मण ेः उद ्गम ् भवितम ् ब ्रह्मणाः उद ्गाहा।'' हे ब्रह्मणेः उद्गम् भवितम् ब्रह्मणाः उद्गाहा।'' मेरे प्यारे! ऋषिवर ये जो उद्गार हैं उद्गमता के, मानो देखो, ऊर्ध्वा के, ये मानो ज्ञान और ज्ञान के द्वारा विवेक और विवेक की मुनिवरों! देखो जब आत्मतत्त्व की प्रतिभा बन करके रहती है वही मानव को ऊर्ध्वागति वाला बना देता है। और विचित्र बना देता है।

महर्षि सुमेता और चाक्राणी गार्गी का महर्षि काग्भुषण्ड जी के आश्रम महर्षि सुमेता और चाक्राणी गार्गी का महर्षि काग्भुषण्ड जी के आश्रम में प्रवेश में प्रवेश

में प्रवेश

आओ मुनिवरों! देखो इस सम्बन्ध में विशेष नहीं, मुनिवरों! देखो चाक्राणी गार्गी और सुमेता ऋषि अपने में विचार-विनिमय करते हुए वह बोले कि हे दिव्या! मैं उसका निर्णय किस महापुरुष के द्वारा और जानना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, क्या चाक्राणी गार्गी और महर्षि सुमेता ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से गमन करते हैं। और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो जहाँ महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने अनुष्ठान में लगे हुए थे। उन्होंने बेटा! बारह वर्ष का एक अनुष्ठान किया था, क्या मैं मानो याग करूँगा। और उस याग के द्वारा मैं देखो इस याग के साकल्य को उसको जो हुत कर रहा हूँ, वह जो हुत हो रहा है उसे मैं मानो देखो, अन्तरिक्ष में जाता हुआ दृष्टिपात करूँगा। क्या उसमें कितनी महत्ता मानी जाती है। क्योंकि वेद का एक-एक मन्त्र कहता है "हुताम् भवितम् "हुताम् भवितम् "हुताम् भवितम् ब्रह्मणेः ऋतम् द्यौ वर्णास्सुतम देवा ब्रह्मणेः विश्वस्ताम् ब्रह्माः।" ब ्रह्मणा ेः ऋतम ् द्या ै वणा स्र्स ्ुतम द ेवा ब ्रह्मणा ेः विश्वस्ताम ् ब ्रह्माः।" ब्रह्मणेः ऋतम् द्यौ वर्णास्सुतम देवा ब्रह्मणेः विश्वस्ताम् ब्रह्माः।" वेद का मन्त्र ये कहता है क्या जब मानो देखो, अनुष्ठान करने वाला याग करता है तो याग में मानो याग वो देखो द्यौ में प्रवेश हो जाता है। और द्यौ में उसकी स्थिति बन जाती है। वो स्थिर हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी आभा में महर्षि काग्भुषण्ड जी लगे हुए थे। वे लोमश मुनि की आज्ञा पा करके मानो अपने में अनुष्ठान में लगे हुए थे। जिनके जीवन की प्रतिभा बेटा! बड़ी विचित्र मानी गयी है। महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने में बड़े विचित्र आत्मा के आत्मतत्त्व को जानने वाले और उसके विश्वसनीय थे। मेरे प्यारे! देखो, माता के प्रिय पुत्र, माता ने ही बाल्यकाल में इस बाल्य का नामोकरण भी मुनिवरों! देखो कागा भूषण्डम् ब्रव्हे, देखो काग्भुषण्ड के नाम से वर्णन किया करती। माता क्यों कर रही थी। क्योंकि माता ये जानती थी कि ये बड़ा महान् इसका व्यक्तित्व है। और ये मेरे गर्भ से इसने जन्म लिया है। मानो

देखो, ये मेरा महान् गर्भाशय बड़ा पवित्र रहा है। उस काल में तो माता ही क्योंकि निर्माण करने वाली है। माता ही मुनिवरों! देखो, गर्भस्थल से उसे हिंसा और अहिंसा की आभा में देखो उसको परणित कर देती है। तो मुनिवरों! देखो ये माता का नामोकरण किया हुआ देखो काग्भुषण्ड जी अपने में अनुष्ठान कर रहे थे। जब अनुष्ठान कर रहे थे तो बेटा! देखो, महर्षि सुमेता और मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी भी भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो उनके आश्रम में जा पहुँचे।

महर्षि काग्भुषण्ड जी का अनुष्ठान महर्षि काग्भुषण्ड जी का अनुष्ठान वे प्रातःकालीन मानो हुत कर रहे थे। भयङ्कर वनों से साकल्य लाना और साकल्य के द्वारा मुनिवरों! देखो वह हुत करना, अग्नि में देखो अग्नम् ब्रह्माः ऋतम् व अपने हृदय की अग्नि और मुनिवरों! देखो बाह्य अग्नि दोनों का समन्वय करते रहते थे। व दोनों प्रकार की अग्नियों का जब समन्वय होता है तो बेटा! याग अपने में बड़ा सम्पन्नता को प्राप्त होता है। क्योंकि मानव का बाह्य जो अग्नि है और आन्तरिक जो अग्नि है, बेटा! देखो जो हृदय की अग्नि है। और जो बाह्य जो साकल्य मानो काष्ठ में वास करने वाली जो अग्नि है बेटा! वह भी बड़ी विचित्र है। जो अग्नि मेरे प्यारे! देखो, काष्ठ में रमण कर रही है। जो अग्नि साकल्य के रूप में रमण कर रही है। और जो अग्नि मुनिवरों! देखो मानव के हृदय की जो अग्नि है जिस अग्नि में बेटा! देखो ज्ञान का साकल्य बना करता है। जहाँ बेटा! देखो जहाँ इस ब्रह्माण्ड में जो ज्ञान प्रदीप्त हो रहा है, उसका साकल्य बना करके और वह जो उसमें हुत हो रहा है वही मुनिवरों! देखो, आन्तरिक अग्नि आन्तरिक अग्नि कहलाती है। और बाह्य अग्नि का और आन्तरिक अग्नि का जब समन्वय हो जाता है तो बेटा! याग अपने में सम्पन्नता को प्राप्त हो जाता है। ऐसा महर्षि, मुनिवरों! देखो महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने में वर्णन करते रहते थे।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने वर्णन किया। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! वो याग कर रहे थे। परन्तु दोनों अपने में जिज्ञासु बन करके इस यज्ञशाला में विद्यमान थे। अगला जो दिवस हुआ। उस दिवस में मुनिवरों! देखो, एक वृत्तिका

मुनि महाराज, मेरे प्यारे! अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को दण्डित करके और वह वृत्तिका मुनि, मुनिवरों! देखो भ्रमण करते हुए, वे काग्भुषण्ड जी जैसे याग कर रहे थे, तो उन्होंने बिना आज्ञा के मेरे पुत्रों! देखो, याग में साकल्य देना प्रारम्भ कर दिया। अग्नि के समीप विद्यमान हो गए। और वह जो स्वाहा उच्चारण करने लगे तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि काग्भुषण्ड जी ने जब दृष्टिपात किया अपने योगाभ्यास के द्वारा अपने आत्मतत्त्व के द्वारा, तो आत्मा ने स्वीकार नहीं किया। उसी के अनुसार बेटा! वह विचार-विनिमय करने लगे। जब विचार-विनिमय करने लगे तो मेरे प्या उन्होंने कहा, हे ऋषिवर! आप जो हुत कर रहे हैं वह आहुति मानो तमोगुण से सनी हुई आहुति है जो अन्तरिक्ष में गमन कर रही है। और मेरा याग तुमने मानो देखो मध्य में शान्त कर दिया है। मेरा अनुष्ठान पूर्णता को प्राप्त नहीं हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि ने कहा प्रभु! वास्तव में मेरा हृदय तमोगुणी में परणित हो रहा है। क्योंकि मैं अपने विद्यालय से पधार रहा हूँ। और मैंने ब्रह्मचारियों को मानो दण्डित किया है। और ''ब्रह्मचरिष्यामम् ब्रह्मः लोकम् वर्णम् ब्रह्मेः क्रतम्'' हे प्रभु! मैं वास्तव में देखो मैं उन्हें तमोगुणी की प्रतिभा और मैं दण्डित करके मैं आपके आश्रम में पधारा हूँ। हे प्रभु! मैं याग करने लगा हूँ। मेरे अन्तर्हृदय की जो भावना है, अन्तर्हृदय की जो तरगें हैं, वह तरगें मानो देखो अन्तरिक्ष में प्रवेश कर रही हैं। वह द्यौ में प्रवेश कर रही हैं और वो द्यौ वाला जो अप्रतम कहलाता है, वो एक महान् और विचित्रता में रमण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। तो काग्भुषण्ड जी की कितनी ऊर्ध्वा में साधना थी। वह साधना में साधन् ब्रह्मेः व्रतम् वह साधना करते-करते बेटा! कितने ऊर्ध्वा गमन कर गए हैं। क्या वह मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में जो स्वाहा जा रहा है, द्यौ में प्रवेश हो रहा है। अपनी आत्मा के साथ मुनिवरों! देखो, मनस्तत्त्व और प्राण दोनों का समन्वय करते हुए आत्म देखो जो विचार आता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण के माध्यम से उनके चित्र, उनकी प्रतिभा उनके अन्तर्हृदयों में बेटा! देखो दृष्टिपात होने लगते हैं। तो मेरे प्यारे!

देखो, ये अनुष्ठान अपने में कितने विचित्रत्व में माने गए हैं।

विचार आता रहता है बेटा! काग्भुषराड जी ने ये कहा कि हे भगवन्! मैं अब याग नहीं करूँगा। हे प्रभु! मेरा याग देखो सतोगुरा को प्राप्त होना था। और मैं सतोगुरा भी नहीं चाहता। मैं इस अनुष्ठान को अपने मोक्ष के लिए, अपने आनन्द के लिए मानो देखो मैं अपने में आनन्दित होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि वृत्तिका मुनि ने कहा, प्रभु! आप शान्त कर दीजिए। मेरे प्यारे! देखो वो अपने में योगाभ्यास में लग गए और वह गायत्र माँ की गोद में जा पहुँचे। और गायत्र छन्दों का जब पठन-पाठन करने लगे, वेद का अध्ययन करने लगे। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने बारह दिवस तक उन्होंने वेद का अध्ययन किया। और अपने में तपस्वी बन, अन्न का पान नहीं किया। जब अन्न का पान नहीं किया, वो जल का सेवन करते रहे। तो बेटा! देखो जो उसके पश्चात् व उसका देखो अनुष्ठान पूर्णता को प्राप्त हुआ।

आज मैं बेटा! तुम्हें ऋषि-मुनियों के ऐसे क्षेत्र में ले जा रहा हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि बेटा! देखो, अपने अनुसन्धान में लगे रहते थे। अपनी विचारधारा उनकी कितनी विचित्रता में गमन करती रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, काग्भुषराड जी अपने में महान् तपस्वी और महान् कहलाते थे। जिनके जीवन में बेटा! कोई त्रटि नहीं थी। जिनके जीवन में केवल एक साधना का ही प्रसú बना रहता था। और वह वायुमराडल में गमन करते रहते थे। आत्मा के अनुसार अपने जीवन को बरतते रहते थे।

महर्षि सुमेता काग्भुषराड जी के प्रश्नोत्तर महर्षि सुमेता काग्भुषराड जी के प्रश्नोत्तर

मुनिवरों! देखो, जब ऋषि विचारधारा को और वृत्तियों को, मेरे प्यारे! देखो, माता चाक्रारागी गार्गी ने और महर्षि सुमेता ऋषि ने इसको दृष्टिपात किया। और उनके विचारों को श्रवरा किया। तो महर्षि सुमेता ऋषि महाराज ने इसको दृष्टिपात किया। और उनके विचारों को श्रवरा किया। तो महर्षि सुमेता ऋषि

महाराज, बेटा! अपने में आश्चर्यचकित हो गए। और उन्होंने कहा, हे दिव्या! ये ऋषि तो बड़ा विचित्र है। मानो इसके क्रियाकलाप भी बड़े विचित्र माने गए हैं।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद

मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से उन्होंने ये दृष्टिपात करते हुए ऋषि से एक प्रश्न किया। क्या हे भगवन्, हमें आपके आश्रम में देखो पन्द्रह दिवस हो गए हैं। और पन्द्रह सिवस से आपके क्रियाकालपों का हम अपने में चयन कर रहे हैं प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद किसे कहते हैं? मेरे पुत्रों! देखो, काग्भुषण्ड जी ने कहा, क्या देखो आध्यात्मिक और भौतिकवाद को तुम जानना चाहते हो तो तुम अपनी अन्तरात्मा से ही प्रश्न करो। तुम्हारा अन्तरात्मा ही तुम्हें उत्तर दे सकेगा। उन्होंने कहा, प्रभु! हम आपसे, अन्तर्हृदय से ही जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा तो मेरे विचार में तो ये है, क्या आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जो मानो अपने मन, वचन और कर्म को मानो एकोकीकरण में लगा देता है। और वह आत्मा की जो पुकार है, आत्मतत्त्व की जो ध्वनि है, वो जब आती रहती है और उसी के अनुसार हम बरतने लगते हैं, क्रियाकलापों में रत्त हो जाते हैं तो मानो देखो उसी को हमारे यहाँ आध्यात्मिकवाद कहा जाता है। और भौतिकवाद उसे कहते हैं जहाँ भौतिकवाद में मानव प्रकृति के समक्ष चला जाता है। और प्रकृति के द्वारा जो मनस्तत्त्व की प्रतिभा है और प्राणों की प्रतिभा है। जब दोनों का विभाजन हो जाता है और दोनों को एक सूत्र में लाने का भी प्रयास करता है। परन्तु उसके पश्चात् भी वो आत्मा की वाणी और ध्वनि को अपने में स्वीकार नहीं कर रहा है। तो उसका नाम भौतिक विज्ञान कहलाता है। वह भौतिकवाद कहलाता है। और भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद का दोनों का समन्वय होना ही मानो देखो उसे आध्यात्मिक आत्मा का एक महान् विषय माना गया है। वो आत्मा का विषय है उसे हमें जानना चाहिए।

हृदय मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन कराया तो ऋषि ने अमृताम् ब्रह्मणेः, मेरे प्यारे! देखो काग्भुषण्ड जी से एक वाक्य उन्होंने कहा। एक

प्रश्न किया कि महाराज, हृदय क्या है? हम हृदय को जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा, हृदय दो प्रकार का देखो दो हृदय माने गए दो हृदय माने गए हैं। एक हृदय मानव के समीप रहता है, जिसको हम देखो विशेष हृदय विशेष हृदय कहते हैं। और एक विश्वभान हृदय विश्वभान हृदय होता है। विश्वभान हृदय उसे कहा जाता है जो परमात्मा का ये जो जगत है और जगत में जो तरङ्गवाद है और ये जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। ये परमात्मा के सन्निधान मात्र से गमन कर रहा है। और परमात्मा का हृदय, ये ब्रह्माण्ड माना गया है। परमात्मा का हृदय, ये ब्रह्माण्ड माना गया है। और जब दोनों हृदयों का समन्वय हो जाता है तो वह हृदय मानो देखो हृदय से हृदय में समन्वय हो करके वह हृदय मानो देखो मोक्ष की पगडण्डी कहा जाता है।

विद्या का òोत विद्या का òोत

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया, संक्षिप्त में उन्होंने देखो इसका उत्तर दिया। तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। सुमेता ने कहा, धन्य है प्रभु! आपको जैसा हम दृष्टिपात, श्रवण करते रहे हैं, प्रायः आपका हृदय उसी प्रकार का है। हम भगवन् एक और जानना चाहते हैं, क्या ये विद्या तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई है? तुम जो इस प्रकार के अनुष्ठान करते रहते हो और वह वैज्ञानिकता में परणित हो रहे हैं। तुम चित्रों को दृष्टिपात करते हो, ये तुम्हें कहाँ से प्राप्त हो रहा है? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि काग्भुषण्ड जी ने कहा, क्या ये मेरे संस्कार बने हुए हैं। मेरी जो माता थी मानो उसका नाम शकुन्तला शकुन्तला शकुन्तला था। और वह मेरी प्यारी माता ने मुझे अपने गर्भस्थल में मेरा निर्माण किया। लोरियों का पान कराती रहती। परन्तु देखो उसी ने मुझे तपस्या के संस्कार दिए। और उसी की आभा में सदैव रमण करता रहता हूँ। जहाँ मैं माता के गर्भ से मैं पृथक् हो गया हूँ। मानो देखो इसी प्रकार मैं परमपिता परमात्मा के गर्भस्थल में विद्यमान हो करके भी मैं उसी प्रकार के विचारों का मैं श्रवण करता रहता हूँ। और वह जो तरगें उनके श्वास में जो तरङ्गवाद उत्पन्न होता रहता है मैं उन तरङ्गों

को अपने में देखो ध्वनि बना करके उसे श्रवण करता रहता हूँ। शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके जैसा वेद का मन्त्रा कहता है। और वैदिक मन्त्रा के आधार पर मैं उसके ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, काग्भुषण्ड जी ने जब ऐसा कहा तो उनका हृदय गद्गद् हो गया। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी भी देखो उसी धारा के जानने वाली थी। और सुमेता भी उसी धारा में लगे हुए थे कि मैं इसी प्रकार मुझे आत्मतत्त्व का ज्ञान हो जाए। और आत्मतत्त्व तभी हम प्राप्त कर सकते हैं जब हम बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में और आन्तरिक जगत को बाह्य जगत में जब देखो परिणत हो जाते हैं। एकोकीकरण कर देते हैं। तो मानो देखो हमारा आत्मतत्त्व ''आत्मम् ब्रव्हे'' आत्मभाव हमें उत्पन्न हो जाते हैं।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में अन्तर्द्वन्द आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में अन्तर्द्वन्द

मेरे प्यारे! देखो उनका दोनों का विचार-विनिमय होता रहा। आध्यात्मिकवाद अपने में बड़ा विशिष्ट है। वेद का ऋषि कहता है, क्या भगवन्! देखो, आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में दोनों में अन्तर्द्वन्द्व क्या है? तो मुनिवरों! देखो, काग्भुषण्ड जी ने कहा कि हे प्रभु! एक समय मैं जब विद्यालय में अध्ययन करता था तो मैं मेरे आचार्य और हम दोनों भ्रमण करते हुए एक समय मगध राष्ट्र में जा पहुँचे। और मगध राष्ट्र में एक कात्यायन के गृह में हमारा, हमारा वास हुआ। और कात्यायन की पत्नी ने ये मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के लिए प्रश्न किया था। क्या हे भगवन्! आध्यात्मिक और भौतिकवाद में क्या अन्तर्द्वन्द्व है। मानो देखो उसका उत्तर जब आचार्य ने दिया। तो उन्होंने ये प्रश्न किया कि महाराज! आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय कैसे हो सकता है? तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ये कहा कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद में, क्या दोनों में अन्तर्द्वन्द्व क्या है, तो और वो क्या चाहता है। भौतिक विज्ञानवेत्ता के हृदय में क्या है और आध्यात्मिकवेत्ता क्या चाहता है। तो कात्यायन की पत्नी ने जब ये प्रश्न किया तो

उस समय मेरे आचार्य ने ये कहा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ये कहा कि एक तो मृत्यु को चाहता है और एक मृत्यु से उपरामता को चाहता है। क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता तो ये चाहता है, क्या मैं मृत्यु से दूरी हो जाऊँ। जैसे वेद का एक-एक मन्त्रा प्रकाश से परिपूर्ण है, उसी प्रकाश को मैं चाहता रहता हूँ। और उस प्रकाश के लिए मानो मैं सदैव रत्त रहता हूँ। उसी से मैं आत्मा के भाव को अपने में स्वीकार करता रहता हूँ। आत्मा की आज्ञा का पालन करता हूँ। मानो देखो उसे हम आध्यात्मिकवाद कहते हैं। और वो ज्ञान लेता है आत्मा के भावों से, क्या ये जो परमाणुवाद है। जिस परमाणुवाद से मेरे शरीर का निर्माण हुआ है। वह मानो देखो ''शरीराम् भवतम् ब्रह्मणाः परिवर्त सुताः'' वेद का वाक्य कहता है, क्या एक समय इसका परिवर्तन होना है। और ये मानो देखो, मृत्यु कोई वस्तु नहीं है संसार में, आध्यात्मिकवेत्ता ये निर्णय कर लेता है, क्या मृत्यु कुछ वस्तु नहीं है। मानो देखो इसका रूपान्तर हो जाना है, परिवर्तित हो जाना है। और ये परिवर्तित क्या है, मानो देखो जब ''ब्रह्माः ऋतम्'' ये परमाणुओं का समूह कहलाता है। और जब परमाणुओं का परिवर्तित हो जाता है तो मानो देखो मृत्यु उसके समीप नहीं रहती है। इसी प्रकार अब भौतिक विज्ञानवेत्ता क्या चाहता है। मेरे प्यारे! वो प्रत्येक स्थली में इस वाक्य पर लगा हुआ है, इस क्रियाकलाप को चाहता है कि मैं अमुक स्थान पर जाऊँगा तो मेरी मृत्यु हो जाएगी। मानो मैं परमाणु का जब मिलान करूँगा तो मेरी मृत्यु न हो जाए। ऐसे परमाणुवाद में रत्त हो जाता है। वह मानो देखो अन्तरिक्ष में उड़ानें उड़ने लगता है। कही प्रकृति के आवेशों से नाना प्रकार के परमाणुओं का विभाजन करता रहता है, इसमें ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है। और वो ये चाहता है कि मेरा नामोकरण ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाए।

मेरे पुत्रों! देखो, जितना वो ऊर्ध्वा में नामोकरण चाहता है। मानो द्रव्यों को एकत्रित करने वाला, द्रव्यपति बनना चाहता है। और वह अपने नाना कर्म को देखो ऊर्ध्वा में ले जाना चाहता है। मुझे द्रव्यपति की एक उपाधि प्राप्त हो जाए।

मेरे प्यारे! परमाणुवाद को जानने वाला परमाणुवाद में अपनी उपाधि चाहता है। इसी प्रकार देखो वो भौतिक विज्ञानवेत्ता भौतिक तपस्वी बनता हुआ राजा बन जाए। वह भी अपने राष्ट्र के लिए मुनिवरों! देखो अपने में कल्पना कर रहा है।

विचार आता रहता है वो पृथ्वी के गर्भ में चला जाता है। पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का खनिज है अथवा खाद्यान्न है, उस विज्ञान में रत्त हो जाता है। तो वो भी ये चाहता है मेरा नामोकरण हो। मेरे प्यारे! देखो एक ऋषि, एक देखो विज्ञानवेत्ता ऋषि के समीप जाता है। और वो ऋषि से मुनिवरों! देखो, अपने यन्त्रों का निर्माण करता हुआ और वह लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है, तो बेटा! वो भी नामोकरण चाहता है। और जितना वो नामोकरण चाहता है उतना ही बेटा! उसे अभिमान आता है। और अभिमान के गृह में मृत्यु विद्यमान रहती है। अज्ञान विद्यमान रहता है। और जितना आध्यात्मिकवेत्ता होता है वो नम्रता के क्षेत्र में चला जाता है। वो नम्र बन जाता है। और वो अपने हृदय में ये विचारता है कि परमात्मा का हृदय तो बड़ा विशाल है। और मेरे हृदय का मिलान यदि परमपिता परमात्मा से हो जाए तो मानो देखो मैं आत्मवेत्ता बन जाऊँ। मेरे में अभिमान न आ जाए। वही मेरी मृत्यु का कारण बनेगी। इसीलिए प्रत्येक परमाणु मेरे प्यारे! देखो अपने-अपने रूप में परिवर्तित होता रहता है। तो वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है क्या मुनिवरों! देखो वह तो यह चाहता है, प्रकाश में रत्त होना चाहता है। और वो अपने नामोकरण के पश्चात् वो अपने को मुनिवरों! देखो मृत्यु के समीप जाना चाह रहा है। वो अभिमान में परणित हो रहा है। और वो नम्रता में, वह परमात्मा क्योंकि नम्र है, परमात्मा अकाय, मानो काया नहीं है तो अकाय है। इसीलिए अकाय की वो कल्पना कर रहा है।

मेरे प्यारे! देखों जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो ऋषि मेरे प्यारे! देखो अपने में शान्त हो गए। और उन्होंने कहा कि ये हमारा कितना सौभाग्य है। तो मुनिवरों! देखो महर्षि कात्यायनम् देखो काग्भुषण्ड जी ने कहा, मेरे जो आचार्य हैं, आचार्य ने मुझे ये दोनों उत्तर देखो कात्यायन के गृह में उनकी पत्नी

को दिए। तो कात्यायन की पत्नी ने उनके चरणों की वन्दना की। और उन्होंने कहा, धन्य है।

मुनिवरों! देखो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता मृत्यु से पार हो जाता है। और भौतिक विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो एक परमाणु को जानता है, दूसरे परमाणु में रत्त हो जाता है। एक तरङ्ग के जाने पर दूसरे तरङ्ग में तरंगित हो गया है। मेरे प्यारे! देखो उस तरङ्ग को, उन तरङ्गों के विज्ञान को वो जान नहीं पाता। इतने में शरीर का विच्छेद हो जाता है। मेरे प्यारे! पुनः वही आ जाता है। पुनः विचारता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो वो नामोकरण में लगा हुआ है। और वो मुनिवरों! देखो अपने में शान्त करता हुआ, शान्त जगत में चला जाता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो जगत है, वो शान्त है। और शान्त जगत में जो अपनी सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है बेटा! वो महान् बन जाता है।

आओ मेरे प्यारे! देखो मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल संक्षिप्त परिचय दूँगा। मेरे प्यारे! देखो ये परिचय देना ही है। साधना में जाना नहीं है। मानो देखो ये परिचय क्या है मेरे पुत्रों! कि ऋषि-मुनियों की अपनी बड़ी विचित्र धारा रही है। चिन्तन और मनन करने का बड़ा उनका एक मानो नृत बना रहा है। जिसके ऊपर वो अपने में ध्यानावस्थित हो करके बेटा! अपनी उपरामता को प्राप्त होते रहे हैं। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या, ये गम्भीर विषय हैं। इन गम्भीरताओं में बेटा! देखो अपने को ले जाना, ये हमारा कर्त्तव्य है। आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए और परमपिता परमात्मा के जड़ और चेतन्य जगत को जानते हुए बेटा! इस संसार सागर से हमें पार हो जाना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे! देखो आज का हमारा वेद मन्त्रा, हमें क्या कह रहा है। बेटा! देखो, मानव को अहिंसक बनना चाहिए। मानव को अपनी आत्मा की मानो पुकार को स्वीकार करते हुए अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करना चाहिए। मेरे

पुत्रों! देखो, वेद का एक-एक मन्त्रा हमें बहुत ऊर्ध्वा के लिए गमन करा रहा है। हमें वेद मन्त्रों के ऊपर अपने जीवन हमें वेद मन्त्रों के ऊपर अपने जीवन को ले जाना चाहिए। को ले जाना चाहिए। जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता में परणित होता हुआ और इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। महर्षि कागभुषण्ड जी ने अपना मन्तव्य देखो ऋषि को प्रगट कराया। तो सुमेता ऋषि महाराज और चाक्राणी गार्गी को बेटा! अपना जो आन्तरिक मन्तव्य है, उसको देते हुए अपने में शान्त हो गए। और वे दोनों शान्त हो करके चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का आज के वाक्य उच्चारण करने का आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः अभिप ्रायः ये कि हम अभिप्रायः परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हमें बेटा! इस संसार सागर से पार होना चाहिए। क्योंकि हम संसार में, हमारे आने का मन्तव्य ये है कि अपने संसार में, हमारे आने का मन्तव्य ये है कि अपने संसार में, हमारे आने का मन्तव्य ये है कि अपने को शान्त आत्मा में प्रवेश हो जाएँ। को शान्त आत्मा में प्रवेश हो जाएँ। और मुनिवरों! देखो, संसार के नाना प्रकार के क्रियाकलापों को करते हुए अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाए। ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य अब ये सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वाचन्नमः। ओ३म् भद्राणीताः माम् रथप् प्राणः वायाः। ओ३म् रथश्चन्नमः रेवम् गताः वायाः। दिनाँक : 25 मार्च, 1990 : स्थान : मोदीनगर, गाजियाबाद :।

१६ 28 03 1990 जीवन की प्रतिभा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागान गाया जाता है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के गुणों का गुणवादन करता रहता है जिस भी वेदमन्त्र को तुम उद्गीत गाने लगोगे उसी वेदमन्त्र में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की महिमा का वर्णन आता रहा है ,क्योंकि परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान बड़ा अनूठा और अनुपम है ,क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं , परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं , और वह सीमा में आने वाले नही हैं ,इसीलिए हमारे यहां जितना भी क्रियाकलाप है ,चाहे वह ज्ञान विज्ञान हो ,चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो ,चाहे वह राष्ट्रवाद ही क्यों न हो ,परन्तु वह सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का एक प्रतीक माना गया है। क्योंकि प्रत्येक मानव उसी में रत्त रहा है ,और गान गाता रहा है। तो उस परमपिता परमात्मा का जो विज्ञान है ,वह बड़ा अनूठा है ,अथवा विचित्र है ,मानव तू अपने में विचार विनिमय कर रहा है। और अपने हृदय की तरंगें परमात्मा के हृदय से समन्वय करने का वह प्रयास करता रहा है। और उन तरंगों को जानता जानता वह भौतिक विज्ञानवेत्ता बन जाता है। परन्तु वही आत्मा का जो अनुपम विषय है ,वह उस आत्म तत्त्व में भी रमण करने लगता है। और जहां आत्म विज्ञान का प्रारम्भ होता है ,वहां मुनिवरों !देखो,

भौतिक विज्ञान का समापन हो जाता है। तो विचार आना चाहिए हमारे यहां विचारवेत्ता कहते है। कि हम परमपिता परमात्मा का जो अनूठा ज्ञान और विज्ञान है ,माता के गर्भ से ले करके और पृथ्वी के गर्भ तक मुनिवरों !देखो, यह संसार अपनी आभा में सदैव रत्त होता रहा है। तो आओ मुनिवरों !देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान एक प्रेरक है ,और वह प्रेरणा देता रहता है। और मानव अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती और उसके आनन्दमयी जो स्रोत है। उसको हम पान करते रहें। जैसे एक मानव औषध विज्ञान में रमण करता है। और औषधियों का अनुपात बनाना प्रारम्भ करता है। तो मुनिवरों !देखो, वह रूग्णों को समाप्त करने वाला एक सोम बन जाता है इसी प्रकार परमपिता परमात्मा का जो आनन्द है अथवा उसमें जो रत्त रहना वह एक सोम कहलाता है। हमारे यहां ऋषि मुनि इस प्रकार के औषध विज्ञान को सदैव अपने में पान करते रहे हैं जिससे उनके अन्तर्हृदयों में मानो किसी भी प्रकार विकारात्मक प्रवृत्ति हो तो वह मुनिवरों ! देखो, उस आहार से वह शमन हो जाती है और वह अपने में शमन करता हुआ और देखो, उसको एक प्रेरणा आती रहती है और वह मानव शुद्ध पवित्र तरंगों का जन्म होता रहता है और उन्हीं तरंगों का मिलान करता हुआ मानव परमपिता परमात्मा का जो तरंगमयी जगत है इसमें वह रत्त हो जाता है तो अपने में सोम को प्राप्त करने लगता है। तो आओ मुनिवरों !देखो, इस सम्बन्ध में यहां सोम की मैं चर्चा नही कर रहा हूँ ,क्योंकि सोम की चर्चा करते हुए बहुत पुरातन काल हो गया है ,जब सोम के ऊपर अपनी विचारधारा ऋषि मुनि प्रगट करते रहे हैं। आज मैं उस सन्दर्भ में जाना नही चाहता हूँ ,केवल यह क्या हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है ,वेदमन्त्र नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है ,और वेदमन्त्र कहता है सम्भव ब्रव्हा मेरे प्यारे !देखो, हम अपने में राष्ट्र ब्रव्हे कृतं क्योंकि प्रत्येक मानव राष्ट्र की चर्चा कर रहा है। राष्ट्रवाद को मानव देखो, महान बनाना चाहता है। मैंने

बहुत पुरातन काल में मेरे प्यारे महानन्द जी ने इससे पूर्व जो अपना विचार दिया वह राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में था परन्तु राष्ट्रवाद को कैसे उन्नत बनाया जाएं ,इसके ऊपर हमारे यहां वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की विचारधारा आती रही है। वास्तव में तो यह रहा है क्या जब तक एक दूसरे में मानो अनुशासन की प्रवृत्ति से वह अपने में देखो, अनुशासन कर रहा है तो वह अनुशासन मानो देखो, एक समय वह रक्तभरी क्रान्ति बन करके रहेगा। परन्तु देखो, वह राष्ट्रवाद इसीलिए है भगवान मनु और कालेत्वर ऋषि की चर्चा हमने कई काल में तुम्हें प्रगट की हैं। महर्षि कालेत्वर ऋषि महाराज मनु जी के गुरु आचार्य थे मुनिवरों !देखो, समाज में अकर्तव्यवाद आया ,अकर्तव्यवाद आने के पश्चात यह निर्णय किया गया वेदमन्त्रों के माध्यम से क्या यह जो मानव अपने कर्तव्य से विहिन हो रहा है। इसीलिए मानव को कर्तव्यवादी बनाना चाहिए। और कर्तव्यवादी जब बनता है जबकि राष्ट्रवेत्ता अपने में ब्रह्मवेत्ता हो और वह कर्तव्य परायण हो और इन्द्रियों पर अनुशासन करने वाला हो ,जब तक इन्द्रियों पर अनुशासन नही किया जाता , तो राष्ट्रवाद भी कदापि ऊँचा नही बनता ,वह मानव का उसके ऊपर अधिपथ्य रहा करता है। क्योंकि वह समाज बहुत समय तक स्थिर रहता है। विचार आता रहता है ,मुझे बहुत सा काल स्मरण है ,कालेत्वर ऋषि महाराज ने जो निर्माण की प्रणाली का निर्वाचन किया तो उन्होंने देखो, यह कहा है कि सबसे प्रथम निर्वाचन देखो, विद्यालयों में होना चाहिए जो हमारे विद्यालय पवित्र बन जाते हैं। और विद्यालयो में एक महानता का प्रदर्शन होने लगता है। आचार्य इतने अनुशासित होने चाहिए जिनसे उनके विचार उनकी प्रतिभा और उनकी महानता मानो देखो, ब्रह्मचारियों छात्र और छात्रिकाओं के हृदय में वह प्रविष्ट हो जाएं और वह अपने में मानो देखो, अनुवासन का पठन पाठन करने लगे जिससे उनका अन्तर्हृदय पवित्र बन जाएं। तो मानो देखो, निर्वाचन की प्रणाली कहां उत्पन्न होती है ,विद्यालयों में आचार्यों के समीप और आचार्यों को आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने मानो पुत्र के सम्मुख हो

करके यह कहा था क्या संसार में जब भी कल्याण होता है ,समाज का अथवा समाज को उन्नत बनाया जाता है। तो निर्वाचन प्रणाली देखो, विद्यालयों में और विद्यालयों में आचार्य जन कैसे होने चाहिएं जो वह सुसज्जित हों और उनका हृदय पवित्रता से मानो देखो, विद्या और वे परमपिता परमात्मा के वाक्यों का हम गुणगान गाने वाले हों। और प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुशासित हो करके मन और प्राण और विचार को ले करके जब वह अपने में तत्पर होते हैं। देखो, उनकी जो साधना है ,अथवा उनकी जो प्रवृत्तियां हैं ,वह सदैव मानं ब्रव्हे कृतं वह सदैव मुनिवरों !देखो, ब्रह्मचारियों के हित में होती हैं। और वह ब्रह्मचारी देखो, राष्ट्र का निर्माण करते रहते हैं ,तो जहां ब्राह्मणो का निर्वाचन है ,जहां क्षत्रिय का निर्वाचन है ,जहां वैश्य का निर्वाचन होता हो ,और निर्वाचन करने वाले देखो, विद्यालयों में आचार्य जन होते हैं ,विद्या के ऊपर मुनिवरों !देखो, जिसका अधिपथ्य हो उसी आधार को ले करके जो अपनी प्रवृत्तियों को निर्वाचित करता रहता है। प्रवृत्तियों को मुनिवरों !देखो, ऊर्ध्वा में गमन कराता रहता है। तो देखो, राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनता है ,पवित्रतम को प्राप्त होता है ,परन्तु देखो, धर्म की प्रणाली को अपनाना ही हमारा कर्तव्य है। मेरे पुत्र ने मुझे एक बहुत ऊर्ध्वा में एक वाक् प्रगट किया कि हमारे यहां देखो, धर्म एक ही होता है ,धर्म एकोकी वचन कहलाता है। तो नाना धर्मों में मानो देखो, धर्म नही होता वह रूढ़ियां होती है ,देखो, यह रूढ़ियां राजा रावण के काल में भी रही हैं। यह रूढ़ियां में मानो देखो, विष्णु राष्ट्र में भी रही हैं। परन्तु देखो, वहां राजाओं का जब निर्वाचन होता रहा ,बुद्धिमानों के द्वारा मानो देखो, अपठित समाज के द्वारा राष्ट्र का निर्वाचन भी होता है ,जब ही संसार में रक्तभरी क्रान्ति के अवाशेषों का जन्म होता रहा है , क्योंकि मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहा है ,तो यहां अमृतं देखो, राजा रावण के काल में भी एक शैव मत का चलन हुआ था ,मानो देखो, वह निर्वाचन ब्रह्मे मानो देखो, जब वह शैव मत बना सम्प्रदाय बना तो उस सम्प्रदाय को मानो देखो, नष्ट करने के लिए रावण ने सबसे प्रथम जब राष्ट्र स्थली पर वह विद्यमान

हुए ,तो उन्होंने देखो, मत मतान्तरों की प्रतिभा का नष्ट की ,और उन्होंने देखो, अपने में देखो, अश्वमेध याग किया और अश्वमेध याग देखो, वह राजा करता है , जो प्रजा को महान बनाना चाहता है। अश्व नाम देखो, प्रजा का है ,और अश्व नाम देखो, प्रजा का और राजा का नाम अश्व है। और मेध नाम प्रजा का है , जब प्रजा और देखो, दोनों मिल करके संसार को ऊँचा बनाते हैं। समाज को धर्म की प्रणाली को ऊर्ध्वा में गमन कराते हैं। तो वह महानता में गमन करने लगता है। तो आओ देखो, मैं आज तुम्हें विशेष विचार देना नही चाहता हूँ जैसे मेरे प्यारे महानन्द जी ने इससे पूर्व काल में अपना विचार दिया है ,कि विचारों के तारतम्य में अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ ,और वह विचार क्या है कि हम अपने में आध्यात्मिकवेत्ता बनें। क्योंकि राजा के राष्ट्र में आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता होने चाहिएं। जिससे देखो, राष्ट्र और समाज और यौगिकता से देखो, यह समाज ऊँचा बनता है। क्योंकि यौगिकता बहुत अनिवार्य है ,योग किसे कहते हैं ?हमारे यहां योग के ऊपर नाना प्रकार की विचारधाराएं आती रहती हैं। योग कहते हैं। जहां मन और प्राण का दोनों का समन्वय होता है। और विचार उसके पश्चात तरंगों का जन्म होता है। और वह तरंगों में तरंगित होने वाले अन्तरात्मवेत्ता मेरे प्यारे !देखो, प्रभु से मिलान करते हैं। क्योंकि जब तब इन्द्रियों का विषय मुनिवरों !देखो, वह मनस्तव ब्रह्मणा मन को प्राप्त नही होता और मन का विषय देखो, प्राण में समाहित नही होता। और प्राण का विषय विचार में समाहित नही होता तो तब तक मानव की ब्रह्मचर्य की गति ऊर्ध्वा नही बनती। और जब ब्रह्मचर्य की गति ऊर्ध्वा नही बनती तो मुनिवरों !देखो, वह ध्रुवा बनी रहेगी और जब ऊर्ध्वा बन जाती है तो ऊर्ध्ववेत्ता का नाम ही मुनिवरों !देखो, ऋषि और मुनि कहा जाता है जब तक हम ऊर्ध्ववेत्ता नही बनेंगें, ऊर्ध्ववेत्ता कौन बनता है ,जो ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। ब्रह्मचरिष्यामि का नाम ऊर्ध्ववेत्ता है , ब्रह्म कहते हैं ,परमपिता परमात्मा को और प्रकृति कहते हैं चरी को और जब चरी और वह ब्रह्म का दोनों का समन्वय होता है। तो यह संसार की रचना होती

है। इसी प्रकार मानव के जीवन में जो रचना का एक व्यवसाय बना हुआ है। वह उसी काल में होता है ,जब की देखो, वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। ब्रह्मं ब्रह्मे कृतं देवाः प्रत्येक श्वास की गति को जब वह ब्रह्म में परणित कर देता है, तो मुनिवरों !देखो, प्रत्येक श्वास में ब्रह्म का ही दर्शन करता है ,वह योगेश्वर कहलाता है ,और उसकी प्रवृत्ति ब्रह्म को परमात्मा के जगत को जानते जानते इतनी मानो सौम्य बन जाती है। जैसे बाल्य प्रवृत्ति होती है। वह ज्ञान और बाल्य प्रवृत्ति होती है। और बाल्य प्रवृत्ति देखो, ज्ञानिक प्रवृत्ति होती है। परन्तु देखो, बाल्य जैसी उसकी धारणा हो ,और मुनिवरों !ज्ञान में वह पारायण हो ऐसे महापुरूष को हमारे यहां मुनि कहा जाता है। वह ऋषि और मुनि कहलाते हैं। ऋषि कहते हैं जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर इतना उनका अधिपथ्य हो इतना मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान उनकी आभा में रत्त रहने वाला हो जिससे मुनिवरों !देखो, प्रत्येक परमाणु को जानने वाले बनें और परमाणुवाद में रत्त होता हुआ मानो देखो, उसकी प्रवृति को मानो देखो, अपने में धारयामि बनाने वाले हो वह मुनिवरों !देखो, ऋषि कहा जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा !देखो, एक ऋषि समुद्र के तट पर विद्यामान थे जिनको देखो, श्वेत ब्रह्मचारी कहा जाता था वह विद्यालय से जब अध्ययन करने के पश्चात वह मुनिवरों !देखो, समुद्रों के तटों पर जा करके कुछ चिन्तन और मनन करने लगा परमात्मा की सृष्टि को जब निहारने लगा जब निहारते निहारते वह विज्ञान में भौतिक विज्ञान में रत्त हो गएं ,और भौतिक विज्ञान में जा करके उन्होंने एक परमाणु को जब विभक्त किया ,तो परमाणु को भी यह दृष्टिपात करने लगे जैसे मैं परमात्मा के जगत को दृष्टिपात कर रहा हूँ ,इसी प्रकार मैं एक परमाणु में ही ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करना चाहता हूँ ,मेरे पुत्रों !उन्होंन एक परमाणु का विभाजन किया और परमाणु को जब विभक्त किया तो वह मुनिवरों !देखो, उसमें जब उन्होंने अपने योगाभ्यास और मन को एकाग्र करते हुए प्राण को और समर्पित करते हुए जब मुनिवरों !देखो, उसमें दृष्टिपात किया तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक ही

मानो देखो, परमाणु में दृष्टिपात आ रहा है। तो विचार आता रहता है एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड है एक एक परमाणु में मुनिवरों !देखो, मानव के जीवन की सर्वत्र रचना है। जब मुझे स्मरण आता रहता है माता के गर्भस्थल में एक मानव देखो, शिशु के रूप में एक ही मानो प्रवेश होता है ,तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की मानो देखो, सम्पदा उसे प्राप्त हो जाती है। वह सूर्य देवता प्रगट हो जाते हैं, मेरे प्यारे ! माता को यह प्रतीत होता नही हैं ,क्या कौन मानो देखो, कैसे अमृतां भूतं ब्रह्मा वह अमृतव चला गया है। तो मेरे प्यारे !देखो, माता के गर्भ में जैसे शिशु का प्रवेश होता है ,उसी प्रकार मुनिवरों !देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड के जो महान तत्त्व हैं , वह उसके समीप चले जाते हैं ,जैसे अपना अपना क्रियाकलाप करने के लिए , जैसे मानो देखो, चन्द्रमा अमृत का प्रतीक कहलाता है ,वह चन्द्रमा मानो देखो, अमृत देना प्रारम्भ कर देता है ,जो अमृत मुनिवरों !देखो, माता के गर्भ में भी , वही धारा है ,मुनिवरों !पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का वनस्पति विज्ञान है , वह भी उसी आभा में ,उसी अमृत में पनप रहा है ,उसका समन्वय बेटा !समुद्रों से होता है ,समुद्रों से जलों का उत्थान होता है ,और वह अपने में धारण करता है ,उसे अमृत बना करके ,मुनिवरों !देखो, उसमें प्रवेश करा देता है। माता के गर्भस्थल में ,जैसे मानो देखो, हम जैसे शिशु को ,बाल्य को प्राप्त होता है तो बेटा !परमात्मा की जो रचना है, वह कितनी सौम्य है वह कितनी विलक्षण है। मेरे प्यारे !माता की रसना के निचले विभाग में एक मानो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है चन्द्रमा देखो, जैसे ही अमृत देना प्रारम्भ करता है उस नाड़ी में प्रवेश कर देता है और उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय पञ्चम नाम की नाड़ी से होता है और पञ्चम नाड़ियों से होता है और पञ्चम नाड़ियों का समन्वय बेटा !देखो, माता की लोरियों से होता है और लोरियों से जब वह पञ्चम नाड़ी गमन करती हुई माता की नाभि से उसका समन्वय हो जाता है ,तो माता की नाभि का और बाल्य की जो गर्भ में विद्यमान हम जैसे शिशु हैं ,बेटा !नाभि से नाभि का समन्वय हो रहा

है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है ,मानो देखो, जब हम इस विज्ञान के ऊपर अपनी विचारधारा प्रारम्भ करने लगते हैं ,तो बेटा !एक नवीन ब्रह्माण्ड हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे !देखो, उसके पश्चात सम्भवे ब्रव्हे कृतं सम्भवे लोकां हिरण्यम् रथा व्रत्यं देवाः मेरे प्यारे !देखो, चन्द्रमा अमृत दे रहा है ,और वह किस प्रकार दे रहा है। यह मैंने तुम्हें वर्णन कराया ,मेरे प्यारे ! देखो, वह सूर्य प्रकाश दे रहा है। प्रकाश आ रहा है ,और प्रकाश मुनिवरों !देखो, माता के गर्भस्थल में देखो, नाभि के द्वारा ही वह प्रकाश मानो प्रकाशित हो रहा है। वही तो प्रकाश है ,बेटा !जो सूर्यों से आता है ,सूर्य का समन्वय बेटा !द्यौ से होता है ,और द्यौ का समन्वय मेरे पुत्रों !देखो, अमृतां देखो, सूर्य गन्धर्व से प्रकाश लेता है। और प्रकाश को ले करके बेटा !देखो, मानव को प्रकाशित कर देता है। बाह्य जगत को भी प्रकाशित कर देता है। वाह रे मेरे प्रभु !तू कितना विज्ञानवेत्ता है ,कैसा महान है ,तो मुनिवरों !देखो, उसके पश्चात अप्रते मेरे प्यारे ! देखो, अग्नि उष्णा बनाना प्रारम्भ कर देती है। अग्नि उतना ही ताप देती है ,जितनी मानो देखो, उसमें सत्ता है ,जितनी वह अपने में देखो, धारणा कर सकता हो। वह अमृतां भूतं ब्रह्मा अग्ने हे अग्ने !तू कितना प्रकाश का द्यौतक बन करके तू हमारे समीप आ रहा है ,मेरे पुत्रों !देखो, वही अग्नि अपने में प्रकाश दे रहा है ,वह उष्णा बना रहा है ,वह उष्णा बना करके मुनिवरों !देखो, अपने में प्रतिभा को रत्त करा रहा है। उसके पश्चात मेरे पुत्रों !देखो, यह जल आपोमयी ज्योति बन रहा है ,जब माता के गर्भस्थल में कौन आसन दे रहा है ,अरे, कैसे पनप रहा है। मेरे प्यारे !देखो, प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी है ,देखो, बाल्य का जो ओढ़न है ,वह भी आपोमयी जल है ,और पांशे भी आपोमयी जल बने हुए हैं। मेरे प्यारे ! देखो, ओढ़न भी उसका आपोमयी जल बना हुआ है ,और वह उसी में पनप रहा है ,उसी में ताप प्राप्त हो रहा है। उसी में अमृत प्राप्त हो रहा है। उसी में प्रकाश प्राप्त हो रहा है। उसी में बेटा !देखो, सर्वत्र जो प्रभु का अनुपम ब्रह्माण्ड है। अरे, प्रत्येक देवता उसमें मानो उसी में वास कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, कैसा वह

महान है ,वह देव जब मैं यह विचार करने लगता हूँ ,तो मेरा अन्तर्हृदय गद् गद हो जाता है। और मैं यह कहता रहता हूँ ,कि परमपिता परमात्मा कितना विज्ञानवेत्ता है ,भौतिक विज्ञानवेत्ता जहां अनुसन्धान कर रहा है। विज्ञानवेत्ता समुद्र में अन्वेषण कर रहा है ,बेटा !उसमें परमपिता परमात्मा विद्यमान है ,मेरे प्यारे ! देखो, यह प्राण बाह्य प्राण दे रहा है ,प्राण देखो, प्राण भी बेटा !ब्रह्माण्ड की एक सम्पदा है उसे प्राप्त कर रहा एक ही प्राण है उसके मुनिवरों !देखो, दस भाग है मुनिवरों !देखो, दस भागों में वह प्रविष्ट कर रहा है ,मेरे प्यारे !देखो, वही प्राण है ,वही अपान है ,वही व्यान है ,वही समान है ,वही व्यान है। मेरे पुत्रों !देखो, कैसा अनुपम ये जगत है इसी में बेटा !सर्वत्र ब्रह्माण्ड गति करता रहता है। मेरे प्यारे !देखो, करोड़ों ,अरबों ,खरबों परमाणुओं को बाह्य जगत से मानो देखो, आन्तरिक जगत प्राण से लाता है, और आन्तरिक जगत से अरबों खरबों परमाणुओं को बाह्य जगत में प्रवेश कराता है। जितना भी गमन करने वाला यह प्राण है। मेरे प्यारे !देखो, वही तो प्राणं ब्रह्म वही तो प्राण कहलाता है। चाहे ऊर्ध्वा गति में ,चाहे पृथ्वी में चाहे अन्तरिक्ष में है ,चाहे वह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में क्यों न हो ?परन्तु वही अपान देखो, अपना क्रियाकलाप कर रहा है ,अपान के माध्यम से मुनिवरों !देखो, सर्वत्र गतियां हो रही हैं ,पृथ्वी के गर्भ से परमाणु ऊर्ध्वा को गमन कर रहा है ,अन्तरिक्ष में भ्रमण कर रहा है और प्राण सत्ता उसी में प्रवेश हो रही है। मेरे पुत्रों !देखो, अपनी आभा में वह परणित हो रहा है।

आओ मेरे प्यारे !देखो, विज्ञानवेत्ता क्या कह रहा है ,वेद का मन्त्र भी यही कहता है ,मेरे पुत्रों !देखो, प्राणं ब्रह्मे देखो, वह जो दस प्राण है ,बाह्य परमाणुओं का समूह बना हुआ है ,इसी प्रकार है वह जो उदान प्राण है वह वृत्त कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, व्यान प्राण अपने में निरीक्षण कर रहा है ,समान प्राण सबको प्रदान कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, वही तो उदान प्राण है ,जो जीवात्मा देखो, चित्त के मण्डल को ले करके मन के समीप आता है ,चित्त के मण्डल को

ले करके प्राण के साथ में बेटा !गमन करता है ,तो यह मानो देखो, शरीर को त्याग देता है। मेरे पुत्रों !देखो, वही तो प्राण लीला कहलाती है ,वही तो प्राण गमन करना है ,और उसी के ऊपर हमे विचार विनिमय करना है। मेरे प्यारे ! देखो, उसके पश्चात व्यान है ,प्राण है ,सर्वत्र प्राणों को उसी को मेरे प्यारे !देखो, नाग प्राण है ,ये नाग प्राण भी बेटा !देखो, विष को त्याग देता है अमृत को निगल करके उसका विष बना देता है ,इसीलिए मानव को वेदमन्त्र कहता है कि हे मानव !हे प्राणी !तू क्रोध न कर ,क्योंकि जब तू क्रोध करता है ,तो उस समय वह जो वह प्राण नाग प्राण कहते हैं वह उसका मुख ऊर्ध्व हो जाता है तो मेरे अन्तर्हृदय में अमृत है उसको वह विष बना देता है और वह किसी न किसी रूप में उसका उदधृत होता रहता है। इसीलिए हे मानव !तू क्रोध मत कर। क्योंकि क्रोधाग्नि का देखो, वह नाग प्राण कहलाता है। जैसे नाग विष उगलता है ,उसी प्रकार ये नाग प्राण विष उगलने लगता है। तो इसीलिए हमें विचारना है ,कि हम मानो देखो, अपने में क्रोध न करें ,मुनिवरों !देखो, नाग ,देवदत ,धनंजय ये प्राण हैं अपनी आभा में गमन करते रहते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा !परमपिता परमात्मा का यह कैसा अनूठा विज्ञान है, जैसा हमारे विज्ञान है बेटा !देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से इसकी रचना होती है। और वही रचना मुनिवरों !देखो, मानव के शरीर की होती है ,उसी रचना के आश्रित हो करके मानव अपने में गमन करता रहता है। माता के गर्भस्थल में ,मैं गर्भस्थल की चर्चा कर रहा था। यहां हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं ,मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्मणे कृतं देवत्वां ब्रह्मा वेद का आचार्य कहता है वेद का मन्त्र भी यही कहता है ,मेरे पुत्रों !देखो, हमें अपनेपन को विचारना चाहिए ,मुनिवरों !देखो, माता के गर्भस्थल में ,ये सर्व अपनी सत्ता प्रदान कर देते हैं ,यही मुनिवरों !देखो, यह अन्तरिक्ष अपने में गमन कर रहा है। अरे, अन्तरिक्ष में ही तो मानव भ्रमण कर रहा है ,गमन कर रहा है ,और अपने में अपनेपन को विचार रहा है ,यह देखो, अन्तरिक्ष कहलाता है। मेरे प्यारे !देखो, अन्तरिक्ष वाला ये जो ब्रह्माण्ड है मुनिवरों !देखो, इसको विचारना चाहिए ,हम

परमपिता परमात्मा के ज्ञान श्रौर विज्ञान के ऊपर कितनी विवेचना कर सकते हैं , इसका हमारे द्वारा वृत नही है ....शब्द ध्वनि की गुणवता ठीक नही हैं ,दिनांक 1990 03 28।

१७ 29 03 1990 मालाओं की माला

... मेरे प्यारे !यह प्राण है ,क्या और अपने को प्राण ,अपान में समन्वय कराते हुए उन्होंने मुनिवरों !देखो, अग्नि को दृष्टिपात किया अग्नि को साक्षात्कार लाने के लिए ,उन्होंने देवतव की कल्पना की है और उस अग्नि के गर्भ में मानो एक तरंगे है। उस तरंग को हमारे यहां गान करने वाले उसे महान उद्गीत रूप में गाते रहे हैं।

तो आओ मुनिवरों !आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि मुनि मानो गम्भीर मुद्रा में मुद्रित रहे हैं ,और वह एक एक वाक् को बेटा !अपने में अन्वेषण करते हैं मुझे बेटा !वह काल स्मरण आता रहता है जहां ऋषि मुनि बेटा !एक एक वेदमन्त्र और ऋचा को मानो वह माला के रूप में दृष्टिपात करते रहे हैं। उनकी माला बनाना और माला को अपने में धारण करना यह बड़ी विशिष्ठता मानी गई है। तो आचार्यों ने बेटा !अपना मन्तव्य देते हुए यह कहा है क्या हमारे जीवन की माला बन जाएं। क्योंकि जैसे माला एक सूत्र में पिरोई जाती है। इसी प्रकार हमारा देखो, सूत्र है क्योंकि सूत्र में हम पिरोए हुए हैं एक मानव बेटा !अपने में यह कल्पना करता रहता है ,क्या मैं माला को कैसे बनाऊं, माला कैसे बन सकती है। मेरे प्यारे !देखो, वह अपने में समाधिष्ट होते हैं ,और वह समाधिष्ट हो करके वह मुनिवरों !देखो, वह सबसे प्रथम लोक लोकान्तरों की माला को दृष्टिपात करने लगे ,एक लोक नही, दो लोक नहीं , नाना प्रकार के लोकों में एक दूसरे में पिरोया हुआ ,लोक दृष्टिपात आ रहा है। कैसा विचित्र मानो देखो, यह लोकं ब्रह्मा मानसुतं यह कैसी विचित्र माला बन सकती है। तो इस माला के लिए परम्परागतों से मानव अन्वेषण करता रहा है , और विचार विनिमय करता रहा है ,कि मैं माला को कैसे बनाऊं। माला को किस प्रकार मैं धारण करूं ?तो बेटा !देखो, वह लोक लोकान्तरों में प्रभु के ब्रह्माण्ड में चला गया और ब्रह्माण्ड में जाने के पश्चात उसमें एक मण्डलों की माला को दृष्टिपात किया बेटा !सबसे प्रथम एक ऋचा है ,एक वेद का मन्त्र है ,

उसमें प्रत्येक शब्द एक शब्द से गुथा हुआ शब्द दृष्टिपात आता है ,बेटा !एक दूसरा शब्द एक दूसरें में प्रतिष्ठित हो करके मेरे प्यारे !देखो, उस माला के रूप में उसे दृष्टिपात करते हैं। तो वह माला कैसी विचित्र है ,आज मैं तुम्हें उस माला को पिरोना चाहता हूँ ,क्योंकि वह माला कई काल में मैंने तुम्हें उस माला के सम्बन्ध में विचार निनिमय भी दिया है। परन्तु देखो, जहां विज्ञानवेत्ता और आध्यात्मिक विज्ञान में रत्त होने वाले मानो देखो, माला को धारणा करते हैं ,तो वह माला ऐसी विचित्र बन जाती है ,मानो यह ब्रह्माण्ड एक दूसरे में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात आने लगता है। माता बेटा !पुत्र में पिरोई हुई है ,और पुत्र माता में पिरोया हुआ है। मानो देखो, यह पृथ्वी सूर्य में पिरोई हुई इसी प्रकार एक दूसरा प्राणी बेटा !प्राणी में पिरोया हुआ दृष्टिपात आने लगता है मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड में जब तुम गमन करोगे तो ब्रह्माण्ड में मुनिवरों !देखो, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की माला बनानी होती है। क्योंकि लोक लोकान्तरों की जब तक माला नही बनाओगे ,जब तक तुम्हारा हृदय व्यापकवाद में परणित नही हो सकेगा ,तो यह मानव यही चाहता है। कि मेरा जीवन मानो व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश हो जाएं। क्योंकि व्यष्टि कहते हैं ,सूक्ष्मता को और समष्टि कहते हैं व्यापकवाद को, जैसे मुनिवरों !देखो, यह सूर्य अपना प्रकाश दे रहा है। और यह प्रकाश मानो प्रातःकाल से सांयकाल तक व्यष्टि रूप में रमण करता रहता है ,तो बेटा !देखो, वह समष्टि में प्रवेश हो जाता है ,और समष्टि में ऊर्ज्वा और प्रकाश दे करके बेटा !एक दूसरे में पिरोया हुआ यह जगत दृष्टिपात आने लगता है।

तो विचार आने लगता है कि व्यष्टि और समष्टि में प्रवेश करना चाहिए , क्योंकि प्रत्येक मानव को जब तक व्यष्टि से समष्टि में नही जाता जब तक मुनिवरों !देखो, वह माला का उसे अधिकार उसे प्राप्त नही होता ,वह माला को धारणा करना चाहता है ,परन्तु माला बड़ी विचित्रता में रमण कर रही है। मेरे प्यारे !देखो, वह माला के सम्बन्ध में आज मैं तुम्हें कुछ ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ ,जहां बेटा !देखो, मानव ज्ञान और विज्ञान की माला बना

लेता है। जहां एक एक शब्द की माला बना लेता है ,जहां मानो देखो, अणु और परमाणुओं की माला बन जाती है। यह बड़ी विचित्र माला है ,जिसको बेटा !हम धारण करते रहे हैं ,तो आओ मुनिवरों !देखो, विचार विनिमय क्या है हम मालाओं में प्रवेश करना चाहते हैं। मुझे बेटा !वह काल स्मरण आता रहता है , इस माला के सम्बन्ध में महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां नाना ऋषि मुनि विद्यमान थे मेरे पुत्रों !देखो, वह महर्षि पणपेतु मुनि महाराज भी कन्या ने मानो शबरी ने उनसे प्रश्न किया ब्रह्मचारी सुकेता से क्या हे ब्रह्मचारी !यह जो माला है ,यह क्या है ?इन माला को हम जानना चाहते हैं ,तो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा क्या वेदमन्त्रों में तो कई प्रकार की मालाओं का वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, यहां जो माला है ,जितना यह ब्रह्माण्ड हमे दृष्टिपात आ रहा है यह उस परमपिता परमात्मा की एक माला कहलाती है। यह संसार माला के सदृश्य है ,जब हम लोक लोकान्तरों की माला बना लेते हैं ,इन पृथ्वियों की माला बनाई जाती है , और पृथ्वियों की जब माला बन गई। तो वही माला सूर्य के अन्तर्गत वह सूर्य में प्रवेश हो जाती है। तो मानो देखो, इस माला को धारण करने वाला भी तो मानो सूर्यवत कहलाया जाता है। मेरे पुत्रों !देखो, इस वाक् को ले करके ऋषि ने अपने विचार देते हुए और ब्रह्मचारिणी शबरी ने यह कहा कि प्रभु !हमें हे ब्रह्मचारी !बहुत समय हो गएं हैं ,विद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। परन्तु माला का प्रसंग आता रहता है ,माला को हम स्पर्श नही कर पाते। इसीलिए माला को स्पर्श करना बहुत अनिवार्य है। आज हम माला को सबसे प्रथम आत्म तत्त्वों में दृष्टिपात करना चाहते हैं ,तो मेरे प्यारे !देखो, वह ब्रह्मचारी कवन्धि ,ब्रह्मचारी सुकेता यह मानो देखो, यह ब्रह्मचारिणी शबरी विचार विनिमय करने लगे तो माला को मानो देखो, एक दूसरें में पिरोई जाती है। तो मानो देखो, राष्ट्रवेत्ता बन जाता है ,विचार आने लगे तो उन विचारों में वेदमन्त्रों की प्रतिभा अपने समीप आने लगी। उन्होंने कहा एक राजा है ,और वह राष्ट्रवेत्ता मानो देखो, माला को धारण करने के पश्चात ही राष्ट्रीयवत में प्रवेश हो जाता है। जैसे एक ब्रह्मवेत्ता है ,

और वह ब्रह्मवेत्ता मुनिवरों !देखो, एक ब्रह्म का चिन्तन कर रहा है ,वह व्यष्टि से समष्टि में चला गया है। और ब्रह्मवेत्ता कहता है कि राष्ट्र का निर्वाचन होना चाहिए तो मानो देखो, पञ्च जाया वह पञ्च महापुरूष विद्यमान हो करके विवेकी और ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ विद्यमान हो करके वह कहते हैं। कि हे राजन !तू राजा क्यों बनना चाहता है ?वह कहता है कि मैं इसीलिए बनना चाहता हूँ कि यह जो समाज है ,इस समाज में अराजकता आ गई है ,इस समाज में मानो देखो, अन्तर्द्वन्द्व आ गया है ,इस अन्तर्द्वन्द्व को मैं समाप्त करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों ! देखो, उन्होंने कहा कि प्रियतम है। मेरे प्यारे !वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है ,परन्तु निर्वाचन कैसे होना चाहिए ?उन्होंने कहा जो ब्रह्मवेत्ता उसका निर्वाचन किया जाएं। तो मानो देखो, उन्होंने कहा हे राजन !तुम ब्रह्मवेत्ता हो उन्होंने कहा प्रभु ! मैं ब्रह्मवेत्ता तो नही हूँ ,परन्तु देखो, मैं ब्रह्मवेत्ता न होने से अप्रतां मैंने हृदय में पिपासा लगी हुई है ,कि मैं अपने में मानो अपनेपन को चाह करके ही देखो, राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकता हूँ। उन्होंने कहा क्या तुम अपने को जानते हो ऋषियों ने यह कहा उन्होंने कहा कि प्रभु मैं मानो देखो, मैं इतना अपने को नही जान पाते हैं ,परन्तु देखो, अन्तरात्मा की जो पुकार है ,उसको मानो देखो, उस पुकार के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि तुम आत्मा की पुकार को क्रियात्मकता में लाने वाले हो ? मुनिवरों !देखो, जो राजा राष्ट्रवेत्ता बनना चाहता है ,उसे जब यह प्रश्न होता है , तो वह मौन हो जाता है ,और मौन हो करके यह कहता है प्रभु !मैं मानो देखो, मेरा हृदय यह है कि मैं स्वतः अपने में क्रियाकलाप इतना विचित्र करता चला जाऊं ,कि उस माला को मैं धारण करता रहूँ। जिस माला को धारण करने के पश्चात मानो देखो, समाज मेरे अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करने लगे ,मेरे प्यारे !देखो, यह ब्रह्मवेत्ताओं ने यह वाक् स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उन्होंने उसको पुनः यह प्रश्न किया कि तुम माला को जानते हो उस माला को जानते हो ?जिस माला से तुम मानो देखो, स्वर्ग में जा सको जिस माला को

धारण करने के पश्चात तुम्हारे जीवन में प्रकाश आ जाएं ,क्या उस माला को जानते हो ?उन्होंने कहा प्रभु !मैं प्रयास कर रहा हूँ। वह माला तो केवल एक ही माला है ,क्या हमारे जीवन के जो मानो देखो, प्रतिभाषित होता रहता है। विचार आते रहते हैं कि उन विचारों को क्रियात्मकता का स्वरूप देना तुम्हारे लिए वह माला कहलाती है। मेरे पुत्रों !देखो, उसमें भी वह शान्त हो गएं ,परन्तु जिज्ञासुओं ने यह प्रश्न किया कि भगवन !तुम माला को जानते हो ,जिस माला को धारण करने के पश्चात तुम्हारा जीवन प्रकाश हो जाएं ,उन्होंने कहा प्रभु !उस माला को मैं धारण तो कर रहा हूँ। परन्तु देखो, मैं इतना क्रियात्मकता में परणित नही हुआ हूँ ,मेरे प्यारे !देखो, उन्होंने कहा ब्रह्मवेत्ताओं से यह प्रश्न किया हम माला को याग के द्वारा जानना चाहते हैं। तो ब्रह्मवेत्ताओं ने यह कहा कि वह जो माला है , उस माला को तुम धारण करने लगोगे तो तुम योग और राष्ट्र दोनों को उन्नत बना सकोगे। मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने कहा प्रभु !वह कौन सी माला है ?उन्होंने कहा कि वह माला है जो तुम्हारे मानो नासिका के द्वारा मानो जो एक श्वास चल रहा है ,वह गतिवान हो रहा है ,और वह गति होता हुआ मानो देखो, प्रत्येक श्वास को तुम मनका बना करके ओर ब्रह्म सूत्र में जब तुम पिरोने में तत्पर हो जाओगे ,तो तुम्हारी माला सिद्ध हो जाएगी। मेरे प्यारे !देखो, उस माला को धारण करने वाला वह सिद्ध महापुरूष कहलाता है। तो विचार आता रहता है बेटा !इसी माला के सन्दर्भ में मुनिवरों !देखो, चाक्राणी गार्गी ने यह प्रश्न किया यह प्रश्न मानो देखो, राजा जनक की सभा में भी हुआ आज मैं तुम्हें दूरी नही ले जाऊंगा यही प्रश्न मुनिवरों !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां इस माला को धारण करने से मानो आभा उत्पन्न हुई ,तो मानो ब्रह्मचारी सुकेता ने भारद्वाज मुनि से रात्रि के काल में कहा कि हे प्रभु !हम सब जिज्ञासु बन करके आए हैं। हम उस माला को धारण करना चाहते हैं। जो देखो, माला बन करके हमारे अन्तःकरण को पवित्र बना सके ,तो उन्होंने कहा प्रियतम। विराजमान हो जाओ। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा क्या वह माला है ?जो तुम्हारे

मानो देखो, श्वास की गतियां चल रही हैं। उन श्वासों की गति में नाना प्रकार का परमाणुवाद गमन कर रहा है ,और मानो देखो, वही इतने आकार वाला है कि श्वास जाता है ,जितने आकार में तुम्हारा मानव का शरीर कहलाता है। उतने आकार वाला एक श्वास के साथ में परमाणु का आकार चला जाता है ,और यह आकार देखो, एक माला के रूप में दृष्टिपात आता है। प्रत्येक शब्द में देखो, जो गमन करने वाला परमाणुवाद है ,वह इससे मानो देखो, गतिवान है ,इसकी विचारधारा में परणित हो जाता है। जिन विचारधाराओं मुनिवरों !देखो, जिन तरंगों की धाराओं से माता के गर्भस्थल में एक शिशु का निर्माण हो जाता है। एक एक श्वास में देखो, इतना एक एक शब्द में इतना परमाणुवाद गमन करने लगता है ,तो उस परमाणुवाद को देखो, एक सूत्र में पिरोना प्रारम्भ करो ,वही तो ब्रह्म सूत्र कहलाया जाएगा और ब्रह्म सूत्र में पिरोने के पश्चात मेरे प्यारे !देखो, वह ब्रह्म से दूरी नही हो सकता। मेरे पुत्रों !देखो, आज मैं तुम्हें बड़ी विचित्र एक वार्त्ता वेदमन्त्र की उद्गीत गाने के लिए आया हूँ ,आगे उद्गीत क्या है ?मुनिवरों ! देखो, जितना भी संसार का विज्ञान है ,यह विज्ञान इसी आभा में निहित रहता है ,और इसी विचारधारा में वह विज्ञान अपने में गमन करता रहा है। मानो देखो, उन्होंने ये कहा सम्भव ब्रहे सम्भव लोकां सम्भव ब्रव्हे ,मेरे प्यारे !देखो, इतने आकार वाला परमाणुवाद गमन करता रहता है ,जितने परमाणुओं से ,माता के गर्भ स्थल में हम जैसे शिशुओं का निर्माण हो जाता है। मेरे प्यारे !देखो, ये वाक् उन्होंने कहा तो उनकी माला बनाओ ,और उनकी माला बना करके मानो तुम लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे !देखो, यह वाक् उन ऋषि ब्रह्मचारियों के हृदय में समाहित हो गया।

तो विचार आता रहता है बेटा !देखो, यह विचित्र माला है इस माला को जो धारण करने लगता है ,जो इस माला को मुनिवरों !देखो, अपने में पिरोना जानता है ,वही तो महापुरूष कहलाता है। वह जिज्ञासु और ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। तो मेरे प्यारे !देखो, हमारे आचार्यों ने बड़ी विचित्र वाक् तुम्हें प्रगट करते हुए

कहा ,कि जितना भी विज्ञान है वह विज्ञान भी सर्वत्र मानो देखो, एक माला के सदृश्य है ,एक दूसरे में पिरोया हुआ दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे !देखो, एक समय महर्षि प्रवाहण से यह प्रश्न किया गया ,क्या महाराज !ये जो प्रकृति है इसकी कितनी गतियां हैं ?ये गतियां में विज्ञान बन करके मानो देखो, मानव के समीप आता रहा है। तो मुनिवरों !देखो, वह मौन थे ,उस समय उन्होंने कहा सबसे प्रथम प्रसारण है ,उसके पश्चात गति है और ध्रुवा और ऊर्ध्वा आंकुचन ये पांच गतियां हैं जिनके ऊपर विज्ञान अपनी आभा में नृत्त कर रहा है। जो माला बनती रहती है, उससे मानो देखो, एक प्रकार की अद्भुत माला है ,देखो, जिसको धारण करने के पश्चात ही विज्ञानवेत्ता बनते हैं और विज्ञान अपनी आभा में रत्त होता रहा है तो मेरे प्यारे !देखो, जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये अपना यह निर्णय दिया ,और उन्होंने कहा कि तुम माला को जानना चाहते हो तो मेरे एक माला नही है दो माला नही है माला पर मालाओं का दर्शन होता रहता है। यदि ब्रह्माण्ड को जानना चाहते हो तो माला ही माला तुम्हें दृष्टिपात आती रहेंगी। मानो देखो, वह कैसी मालाओं को वह दृष्टिपात कराना चाहते हैं ,माता के गर्भस्थल में नाना प्रकार की मालाओं से शिशु का निर्माण होता है ,मानो देखो, गृह का निर्माण होता है मेरे पुत्रों !देखो, माता तो जानती ही नही ,इस वाक् को , परन्तु वह जो देखो, निर्माणवेत्ता है जिसकी चर्चा इससे पूर्व काल में हो रही थी वह नाना प्रकार की मालाओं को ले करके बेटा !शिशु का निर्माण होता है और वह निर्माणवेत्ता जब माता ये जान लेती है कि मानो देखो, यह मालाएं हैं और यह परमाणुओं की माला आ रही है ,और परमाणुओं की मालाओं में मानो देखो, एक एक परमाणु में ,ब्रह्माण्ड की प्रतिभा आ रही है ,तो बेटा !देखो, माता यह जान लेती है कि मैं तपस्या में प्रवीण हो गई हूँ और मैं मानो देखो, तपस्या के सुयोग्य बन गई है माता का तपस्या में जाना बहुत अनिवार्य है।

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा !महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने में ब्रह्मचारियों को यह वर्णन कराया कि मेरी जो प्यारी मां थी ,उसका नाम

शकुंतका था ,और वह शकुंतका मानो देखो, जब हम गर्भस्थल में विद्यमान थे , तो माता मल्दालसा गति करती रहती थी ,माता यदि यह चाहती है कि मेरा पुत्र मानो देखो, विज्ञानवेत्ता बन जाएं ,आत्मा को जानने वाला बन जाएं तो माता को आध्यात्मिकवेत्ता बनना होगा ,क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञान ही महानता में गमन करता रहा है। क्योंकि माता ये जानती रहती है कि मैं मानो देखो, इतनी तपस्वी बन जाऊं ,कि जो भी देवता मेरे समीप आए ,उसी देवताओं के गुण मानो देखो, पुत्र पुत्रियों में प्रवेश हो जाएं। मेरी सन्तान में प्रवेश हो जाएं ,जिससे मानो देखो, मेरा जीवन स्वर्ग में चला जाएं ,मैं अपने में सौभाग्यशालिनी बन जाऊं। तो ये विचार मुनिवरों !देखो, मानो देखो, उसके हृदय में आता रहता है मुझे स्मरण आता रहता है ,देखो, माता मल्दालसा का जीवन और भी नाना प्रकार की देखो, इस प्रकार की माताएं जैसे कौशल्या का जीवन है ,जो मुझे दृष्टिपात आता रहा है। मैं अपने विचारों में दूरी नही जाना चाहता हूँ ,विचार केवल यह मुनिवरों ! देखो, ये माला है विचारों की माला बन जाती है तो जो भी इससे अपना समन्वय कर लेती है ,अपना समन्वय कर लेती है ओर वही मानो देखो, मानो देखो, वायु के गर्भ में प्रवेश हो करके ,प्राणसता को जानने लगती है। हे मां !तू कितनी पवित्र बन सकती है। तू तो अपने में अन्वेषण करना प्रारम्भ करने लगती है ,तो मानो देखो, तेरी ऐसी विचित्र तेरे जीवन की माला बन करके मानो तुझे सौभाग्यशालिनी बना देती है।

तो मेरे प्यारे !देखो, आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष तुम्हें विचार देने के लिए नही आया हूँ। वेद का मन्त्र ये कहता है वह बड़ा विचित्रता में देखो, वह बड़ा विचित्र आभा को प्रगट कर रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, मैं भारद्वाज मुनि के आश्रम की चर्चा कर रहे थे महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ,अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा ,कि देखो, हम विज्ञानवेत्ता बनें ,हम मालाओं को धारण करने वालें बनें , हम मानो सबसे प्रथम हम यह बनाते रहें कि हमारा जो शब्द है ,वह जो ध्वनि उत्पन्न हो रही है उस ध्वनि की माला द्यौ में प्रवेश हो जाएं। और वह द्यौ में जब

प्रवेश होती है तो वही माला बन करके अन्तःकरण का निर्माण कर देती है अन्तःकरण भी उसी की आभा कहलाती है। मेरे पुत्रों !देखो, जब हम विचारते रहते हैं ,कि हमारा जीवन जन्म जन्मान्तरों की प्रतिभा में निहित रहा है ,और जन्म जन्मान्तरों से हमारे अन्तःकरण में नाना जन्मों की माला विद्यमान हैं ,अरे, उन मालाओं को जानने के पश्चात मानो उनको अक्षय करने के पश्चात हमारा अन्तःकरण पवित्र होना चाहिए। मेरे प्यारे !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों !देखो, राजा रावण के समीप एक समय भारद्वाज मुनि का गमन हुआ तो उस समय मुनिवरों !देखो, रावण से उन्होंने कुछ चर्चाएं की ,मालाओं के सम्बन्ध में वह अपने में मौन हो गएं थे। परन्तु उन्होंने कहा कि भगवन ,महर्षि कुक्कुट मुनि के समीप चले जाओ। तो महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचे। तो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने उनको प्रसन्नता ब्रव्हे वह ऋषियों को प्रसन्नचित्त दृष्टिपात करके वह बड़े प्रसन्न हुए ,और चरणों की वन्दना करने लगे , उन्होंने कहा कहो भगवन !कैसे आगमन हुआ है ?उन्होंने कहा हे प्रभु !हम ये जानना चाहते हैं हमारे अन्तःकरण में जो माला विद्यमान है ,उन मालाओं को जागरूकता में लाना चाहते हैं ,उसका कोई वर्णन कराईए ,क्या जिन महापुरूषों को इस माला को जानने का प्रयास किया तो महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज ने अपने मानो देखो, अपने देखो, लगभग देखो, सौवें महापिता का उन्होंने वर्णन किया ,सुनीता मुनि महाराज का उन्होने वर्णन किया ,कि कहा कि जो मेरे महापिता रहे हैं सुनीता ऋषि महाराज। वह अपने में एक समय उनके हृदय में यह विचारधारा आई ,क्या ब्रह्मणा व्रतं ब्रव्हे व्रतं देवाः उन्होंने कहा कि मेरे जो महापिता है ,उन्होंने एक समय वह तपस्या की माला बनाई ,और वह माला मानो देखो, उनको जानने लगे, वह मौन हो गएं ओर मौन हो करके वह चिन्तन उनके विचारधारा में वह परणित हो गया वह मौन हो गएं उन्होंने बारह वर्ष तक तो वायु तत्त्व में से वायु को ही उन्होंने सेवन करने के पश्चात अपने में तृप्त हो गएं और बारह वर्ष का इस प्रकार देखो, एक अन्नाद को पान करने लगे ,कहीं

जल का सेवन किया ,तो वह मानो देखो, अपने अन्तःकरण में जो पिच्चासी किरणों कि मानो धाराएं थी अथवा उसमें जो संस्कार विद्यमान थे ,वह चित्त के मण्डल में उन्होंने मानो देखो, उस माला को दृष्टिपात किया। मेरे प्यारे !देखो, अन्त में वह मौन हो गएं ,और पिच्चासी वर्षों तक इस प्रकार का भयंकर तप किया। तो मेरे प्यारे !देखो, विचार आता रहता है ,संसार में मानो जब ये विचारने लगता है कि मैं इसकी धाराओं में प्रवेश हो जाऊं ,तो बेटा !वह धारा इतनी विचित्र बन करके रहती है ,कि मानव अपने में मौन हो जाता है। तो मेरे प्यारे !देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने ,इन वाक्यों को श्रवण करने के पश्चात , बड़े प्रसन्नचित हो गएं ,और उन्होंने कहा प्रभु !आपको धन्य है। मेरे प्यारे !देखो, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज और मुनिवरों !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज बेटा !देखो, भ्रमण करते हुए बेटा !वह उद्दालक गोत्रों में प्रवेश हो गएं और उद्दालक गोत्र में जब पंहुचे ,तो उन्होंने कहा कि शब्दों को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे !देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक जब यहां पंहुचे तो उद्दालक मुनि ने उनका स्वागत किया ,कहो भगवन !कैसे आगमन हुआ है। उन्होंने कहा हे प्रभु !हम ये जानना चाहते हैं ,हम अपने में ही अपने को दृष्टिपात करना चाहते हैं। हे प्रभु !हम उस माला को अपने ज्ञान में विज्ञान में वैज्ञानिक हो करके विज्ञान की वृत्तियों में रत्त हो करके ,मेरे पुत्रों !देखो, उस माला को महर्षि शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने कहा ,प्रभु !आईए विराजमान हो गए तो मेरे पुत्रों !देखो, उन्होंने नाना प्रकार के विज्ञान को दृष्टिपात कराया , और भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनों का उन्होंने समन्वय किया और समन्वय करते हुए मुनिवरों !देखो, यन्त्रों के माध्यम से ,उन्होंने मेरे प्यारे !जो अग्नि की धाराओं पर ,प्रत्येक शब्द गमन कर रहा है ,प्रत्येक शब्द मेरे प्यारे !वह नम्र ब्रहे कृतं देवत्वां ब्रह्म वह जो प्रत्येक शब्द है ,वह शब्द द्यौ लोक में जा रहा है ,वह द्यौ में प्रवेश कर रहा है ,और वह माला के सदृश्य है ,एक दूसरी ध्वनि में ध्वनित हो रहा है और उनमें चित्रों की भी ध्वनि दृष्टिपात आ रही है। तो मेरे

पुत्रों !देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा ,ये यन्त्र है ,और यन्त्रों में यह दृष्टिपात करो ,कि ध्वनियां आ रही हैं ,और यह ध्वनि आ करके मानो देखो, मेरे पिता , महापिताओं के चित्रों के मानो देखो, चित्र माला बनी हुई है ,और उनके जो शब्द है ,जो द्यौ लोक में हैं वह उन शब्दों की माला बनी हुई है ,और ये मानो उनका क्रियाकलाप है, उनके क्रियाकलापों की एक माला बनी हुई है ,इस माला को तुम जानते हो ?मेरे प्यारे !भारद्वाज मुनि ने कहा प्रभु !हम नही जानते। मेरे पुत्रों ! देखो, उन्होने कहा क्या हम इस विज्ञान में पंहुच गएं हैं ,हम विज्ञान धारा को जानने लगे हैं ,क्या देखो, एक पक्षीय विज्ञान ,हमारे समीप आता रहा है ,उस विज्ञान में रत्त हो करके ,हम विज्ञान की धाराओं में रमण कर गए हैं। तो विचार आता रहता है बेटा !उन्होनें मानो नाना प्रकार के यन्त्र दृष्टिपात कराए ,उन्होंने एक एक शब्दों की मानो देखो, मालाएं ,पिता, महापिता, पड़पिता मेरे पुत्रों !देखो, वह लगभग मानो देखो, वह सौवें महापिता तक का दर्शन हो रहा है ,और वही दर्शन मुनिवरों !देखो, विज्ञान में दृष्टिपात आ रहा है ,वही मुनिवरों !देखो, ऋषि के आध्यात्मिकवाद की प्रतिभा का जन्म होता रहा है ,तो मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज अपने में बड़े प्रसन्न हुए ,और ब्रह्मचारियों के सहित बड़े प्रसन्न हुए ,और वह भ्रमण करते हुए मुनिवरों !देखो, अपने आश्रम में प्रवेश हो गएं। तो विचार आता रहता है ,कि वेद के आशय को जानना ,अथवा उसमें जो माला का प्रसंग आता है ,वह बड़ा विचित्र माना गया है ,इसी माला को धारण करने वाले ,हमारे आचार्य जनों में अपने में बेटा !भव्यता का दर्शन किया है। तो विचार आता रहता है कि ऋषि मुनि परम्परागतों से बेटा !अपने में अन्वेषण और चिन्तन और मनन और उसको क्रियात्मकता में लाने का वह प्रयास करते रहते थे। तो आओ मेरे प्यारे !मैं विशेष चर्चा आज तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ ,मैं तो केवल तुम्हें एक परिचय देने चला आता हूँ ,और वह परिचय क्या है एक दूसरें में ये ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है ,एक दूसरे में बेटा !शब्दों की ध्वनियां गमन कर रही है ,ध्वनित हो रही हैं ,इसी प्रकार बेटा !देखो, ये परमात्मा का जो अनुपम जगत है ,इस

परमात्मा के जगत को जानने के लिए ,मानव को बेटा !देखो, तपस्या की आवश्यकता रहती है। हे मालां ब्रह्मणे कृतं इस माला को धारण करने वाला ही , बेटा !वशिष्ठ कहलाता है। वही तो ब्रह्मवेत्ता बन करके ,अपने में बेटा !देखो, अपने में अपनेपन का निर्वाचन करता रहता है। जब स्वतः अपने का निर्वाचन हो जाता है ,तो मानव का जीवन बेटा !पवित्रता की आभा में रमण करने लगता है।

आओ मेरे प्यारे !देखो, महर्षि भारद्वाज और ब्रह्मचारियों सहित वह अपने में महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज के सहित ,महर्षि शिकामकेतु उद्दालक गोत्र से वार्त्ता प्रगट करते हुए वहां से उन्होंने गमन किया ,और भ्रमण करते हुए ,अपनी प्रतिभाओं में विद्यमान हो गएं ,जहां उनकी नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं थीं। तो मुनिवरों !देखो, उस समय उन्होंने ये कहा कि ब्रह्मचारिणी शबरी और देखो, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि ने ये कहा कि अब तक हम बड़े अधूरेपन में हैं , इस माला को धारण करने वाला ,आध्यात्मिकवेत्ता ही होगा अन्तःकरणीय होगा और देखो, शब्दों की माला को जानने वाला विज्ञानवेत्ता कहलाता है। मेरे प्यारे ! देखो, विज्ञान की धाराएं ,उन्होंने प्रगट कराई ,जिससे मानव को ये ज्ञान हुआ कि हम परमपिता परमात्मा के जगत में विद्यमान हैं ,परन्तु ये जगत एक ऐसा जगत है ,जिस जगत में मुनिवरों !देखो, मानव भिन्न भिन्न प्रकार की कल्पनाएं करता रहता है ,और वह अपने में देखो, महान बनने के लिए तत्पर रहता है। मुनिवरों ! देखो, उसी आभा को हमें विचारना है ,उसी धारणा को बनाते हुए ,अपने अन्तःकरण को जान करके ,बेटा !अन्तरात्मा को जानना है ,क्योंकि अन्तरात्मा का जो विषय है ,यह बड़ा एक अनूठा है ,और अन्तरात्मा का जो विषय है यही तो मानव को महान बनाता है। मेरे प्यारे !देखो, यही योगेश्वर बनाता है। यही जिज्ञासु बनाता है। यही ब्रह्मवेत्ता बनाता है। तो बेटा !देखो, एक दूसरे में एक दूसरे को पिरोने के लिए हमारी प्रवृत्ति होनी चाहिए। हम एक दूसरे में एक दूसरे का मानवीय दर्शन करते रहें। जिन दर्शनों से मुनिवरों !देखो, विज्ञान और मानवीयता और समाज को उन्नत बनाया जा सकता है। और राष्ट्रवाद को

पवित्रता की वेदी पर लाया जा सकता है। तो मेरे प्यारे !देखो, आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है ,हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मेरे प्यारे !देखो, हम महान से महान क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहें। और मानवीय दर्शन अपने में ही मानवीय दर्शन करना चाहिए। क्योंकि मानव जो अपने में स्वतः मानवीय दर्शन में गमन कर जाता है ,और वह स्वतः अपना दर्शन करने लगता है। बेटा !वही तो आध्यात्मिकवेत्ता बन करके जिज्ञासु और वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है।

तो आओ मेरे प्यारे !मैं तुम्हें विशेष चर्चा तो प्रगट करने नही आया हूँ , आज तो केवल यह विचारने के लिए आया हूँ ,क्या हम मुनिवरों !देखो, माला को धारण करते चले जाएं जैसे बेटा !लोक लोकान्तरों की माला बनती है ,मैंने तुम्हें कई काल में माला की चर्चाएं की बेटा !जैसे हमारे ऋषि मुनियों ने इस माला को बेटा !देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में यह जानी गई। उन्होंने यह कहा क्या हमने अपनी विज्ञानशाला में मेरे प्यारे !देखो, तीस लाख पृथ्वियों को अब तक जाना है ,मुनिवरों !देखो, तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी और वह माला प्रणव सूत्र में मुनिवरों !देखो, वह माला पिरोई गई। जिसको हम प्राण सूत्र भी कह सकते हैं। मेरे प्यारे !देखो, वही माला है उन माला कोई धारण करने वाला भी तो चाहिए। तो बेटा !वेद का ऋषि कहता है सूर्य ब्रव्हा कृतं देवत्वाः वेद के आचार्यों ने कहा कि इस माला को धारण करने वाल सूर्य कहलाता है। मेरे प्यारे !देखो, सूर्य में यह इतनी पृथ्वियां हैं ,जो सूर्य के प्रकाश से उसकी आभा में रत्त हो जाती हैं। और उनकी माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे !देखो, एक सहस्त्र सूर्य हैं ,जिनकी माला बनने के लिए तत्पर हैं ,वह माला बनी और उस मालाओं को धारण करने वाला बेटा ! बृहस्पति कहलाता है। वह माला को धारण कर रहा है। बेटा !पृथ्वियों की माला को सूर्य धारण कर रहा है ,और सूर्य मण्डलों की माला को बेटा !देखो, बृहस्पति अपने में धारण कर रहा है। अरे, कैसा अनूठा यह प्रभु का जगत है। यह माला

का कैसा विचित्र जगत है। बेटा !मेरे प्यारे !देखो, जब बृहस्पति मण्डलों की एक सहस्त्र मण्डलों को ऋषि मुनियों ने समाधि में जानने का प्रयास किया तो उसको जाना एक सहस्त्र बृहस्पतियों की माला बन करके उस माला को धारण करने वाला एक आरुणि मण्डल कहलाता है। मेरे प्यारे !देखो, आरुणि में वह समाहित हो जाता है। और वह माला तब तक मेरे प्यारे !देखो, विचित्रता की धारा को धारण करने लगता है। मेरे प्यारे !देखो, ब्रह्माण्ड एक अनूठा दृष्टिपात आने लगता है ,ऋषि मुनियों ने बेटा !जब समाधि में दृष्टिपात किया तो मानो देखो, ब्रह्मणे व्रतं देखो, आरुणि मण्डलों की एक सहस्त्र आरुणि मण्डलों की माला को ध्रुव मण्डल ने अपने में धारण किया। मेरे प्यारे !ध्रुव मण्डल कितना विशाल मण्डल है, आज जब उसकी कल्पना की जाती है अथवा उसको देखो, मस्तिष्क में अपने धारयामि बना करके ब्रह्माण्ड रूपी मस्तिष्क में दृष्टिपात करता है। तरंगेवाद की आभा में वह रत्त हो जाता है ,तो बेटा !एक अनूठा ही जगत दृष्टिपात आने लगता है ,मेरे प्यारे !देखो, एक सहस्त्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी जिसको मुनिवरों !देखो, मूल नक्षत्र ने अपने में धारण किया ,एक सहस्त्र मूल नक्षत्रों की माला बनी मेरे प्यारे !देखो, उसको पुष्प नक्षत्र ने धारण किया ,एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनी ,उसको स्वाति नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी तो बेटा !अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। मैं कहां चला गया हूँ ,बेटा !मालाओं के क्षेत्र में ये एक दूसरे की माला बन करके ,एक दूसरा अपने में पिरो रहा है। इस ब्रह्माण्ड की रचना हो रही है। यह ब्रह्माण्ड एक अनूठे रूप में दृष्टिपात आ रहा है। मेरे पुत्रों !देखो, अचंग मण्डल ने जब यह धारण किया ,तो एक सहस्त्र अचंग मण्डलों की माला बनी ,जिसको बेटा !देखो, गन्धर्व ने अपने में धारण कर लिया। मेरे प्यारे !देखो, इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन गया ,एक सौर मण्डल बन गया ,बेटा ! जिसको दृष्टिपात करते हुए ,मानव का हृदय शान्त हो जाता है ,अन्तरात्मा में विचारता विचारता ,मुनिवरों !देखो, विचार शक्ति समाप्त हो जाती है। मेरे प्यारे !

देखो, आगे वेद के ऋषियों ने ,इसके निकट चर्चाओं में पंहुच गएं ,विचारने लगे , बेटा !देखो, अपने में अन्वेषण करने लगे ,विचारने लगे ,मेरे प्यारे !वह समाधिष्ट हो करके जो अपने अन्तःकरण की माला को विचार रहा है ,वही ब्रह्माण्ड को विचार रहा है यह परमपिता परमात्मा का चित्त मण्डल है ,इसके मुनिवरों !देखो, परमात्मा की प्रतिभा निहित रहती है ,उसका जगत निहित रहता है तो मुनिवरों ! देखो, इतने सौर मण्डलों की एक माला बनी तो इतने सौर मण्डलों की माला बन करके ,बेटा !ऐसा प्रतीत होता है बेटा !एक अरब सतानवें करोड़, उन्नतीस लाख, उन्नचसवीं हजार पांच सौ इक्कसठ मेरे प्यारे !देखो, इतने सौर मण्डलों की मानो एक आकाश गंगा का निर्माण हो गया ,मानो देखो, इतने सौर मण्डलों की एक माला बनी ,और इतनी मालाओं को धारण करके ,मेरे प्यारे !देखो, एक आकाश गंगा का निर्माण हो गया। मेरे प्यारे !देखो, पौने दो अरब के लगभग मुनिवरों !देखो, इस आकाश गंगा की माला बनी ,तो वह अवन्तिका बन गई , और पौने दो अरब के लगभग ,मुनिवरों !देखो, इतनी अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन गई। मेरे प्यारे !देखो, ऋषि अपने में मौन हो गया ,और यह विचारने लगा ,इस माला कोई मानो देखो, हम इसकी देखो, अन्तिम कड़ी को जान सकें ,तो उसको जान नही पाएगें।

तो मेरे पुत्रों !विचार आता रहता है हम मालाओं को अपने में धारण करते हुए , चिन्तन और मनन करने की उस आभा में परणित हो जाएं ,जहां हमारा जीवन , एक महानता में परणित हो जाता है। और परमात्मा के सौर मण्डल को जानने लगते हैं। हम मानो देखो, अन्तःकरण को जानें ,अन्तःकरण को जानने वाला ही मुनिवरों !देखो, इन मालाओं को ,अपने में दृष्टिपात कर सकता है। ये महर्षि भारद्वाज मुनि और शिकामकेतु उद्दालक मुनि के विद्यालय में बेटा !इस प्रकार के विज्ञान की चर्चाएं और आज मैं इनका बेटा !मुझे समय प्राप्त होता रहेगा मेरे माला की चर्चा करने लगूंगा। तो बेटा !बड़ा समय चाहिए विचार यह है कि आज

बेटा !मैंने तुम्हें संक्षिप्त परिचय दिया है ,और परिचय यह है कि इस माला को अपने में धारण करते हुए तुम परमात्मा के जगत को जानते रहो ,और परमात्मा के जगत को जान करके मानो तुम संसार के लिए क्रियाकलाप करते रहो। परन्तु देखो, उसमें हमें त्रुटि नही आनी चाहिए। उसमें सदैव हम एक अन्वेषण करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। जिस अन्वेषण की प्रवृत्ति में बेटा !जाते हैं ,परमात्मा का एक महान निर्माण कर सकते हैं और विज्ञान की धाराओं को जान सकते हैं ,और विज्ञानवेत्ता बेटा !बन करके बेटा !देखो, हम विज्ञान का दुरूपयोग भी नही होने देंगें। मानो विज्ञान अपनी आभा में सदैव निहित रहता है ,ये है बेटा !आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा ,तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा , आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः बेटा !बहुत दूरी चला गया ,इतने में मालाओं को एकत्रित करने में ही लगा रहा विचार आता रहता है कि उस माला को अपने में धारण करना है मन और प्राण और विचार को ले करके मुनिवरों ! देखो, इस परमात्मा की आभा को जान सकते हैं। यह है बेटा !आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या मुनिवरों !देखो, ऋषि के आश्रम में जब यह प्रश्न उत्पन्न होता रहा है ,कि माला को जानना चाहिए। तो देखो, ऋषि मुनि सदैव अपने में अन्वेषण करते रहे हैं ,विचार विनिमय करते रहे हैं वेदमन्त्रों की बेटा !मानो शब्दों की माला बनाते रहे हैं। और अपने में ध्वनि में ध्वनित होते रहे हैं ,इससे मुनिवरों !देखो, निकृष्टता हमारे समीन न आ सके यह है, बेटा !आज का वाक् अब समय मिलेगा। मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां

रथं मानाः वाचन्नमाः रथं आ पाहाम्। ओ३म् यशश्चां रथाः। अच्छा भगवन् !।

दिनांक 2019 03 29।

१८ 30 03 1990 याग का क्रम

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का वर्णन करते रहते हैं। और उसका गुणवादन करना, हमारा कर्त्तव्य माना गया है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है।

याग का स्वरूप

हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, नाना प्रकार की विवेचनाएँ होती रहती है। और प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा का गुणवादन करता रहता है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र "यज्ञम् भवितम् व्रत्ता ब्रह्माः व्रत्ता दवाः" वेद का मन्त्र ये कहता है, हे मानव! तू याज्ञिक बन। क्योंकि हमारे यहाँ याग होना एक महानतम् क्रियाकलाप कहा जाता है। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने इस याग के ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है और अनुसन्धान किया है। क्योंकि हमारे यहाँ अनुसन्धान की जो प्रवृत्ति है वह सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानवीय हृदयों में सदैव नृत करती रही है। और मनों में ये भावना रही है कि हमारा जीवन यागमय हो। और याग कहते किसे हैं?

हमारे यहाँ जितने भी शुभ क्रियाकलाप हैं, आत्मीयता जितने भी क्रियाकलाप हैं उन सर्वत्र का नाम याग माना गया है। जिससे मानव की अन्तरात्मा को भोजन प्राप्त होता हो वही तो याग कहा गया है। हमारे यहाँ जितने

भी महान् से महान्, मानो प्राण और मन को एकाग्र करने वाली जितनी भी साधनाएँ हैं और जितने भी मानो क्रियाकलाप हैं वो सर्वत्र याग के रूप में परिणित रहे हैं।

मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। जिस कालों में बेटा! ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों में विद्यमान हो करके अपने में ऊँची-ऊंची उड़ाने उड़ते रहे हैं। मानो देखो, एक माला की मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें चर्चाएँ की थीं और वह अपने में बड़े भव्यतव्य में परणित रही है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। जैसे हमारे यहाँ अश्वमेध याग है, अजामेध याग है, अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, कन्या बाग है, देव याग है, ब्रह्म याग है, रूद्र याग है और विष्णु याग है।

और भी नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। जैसे हमारे यहाँ मानो ब्रह्मणे देखो अस्सुतम्, हमारे यहाँ एक धनुर्याग कहलाता है। जिस धनुर्याग की चर्चाएँ मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट की हैं परन्तु आज मैं उस क्षेत्र में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल ये कि हमारे यहाँ भिन्न प्रकार के यागों का चयन वैदिक साहित्य में होता रहा है।

कन्या याग

हमारे यहाँ एक कन्या याग माना गया है। हमारे यहाँ वेद मन्त्र आता है "कन्याम् भवितम् लोकम् वर्णाम् ब्रह्मणेः ऋतम् देवाः"। वेद का मन्त्र कहता है, क्या कन्या याग के सम्बन्ध में कहता है। क्या "कन्या देवत्वाम् लोकाम् वसीद्ध ब्रहे" कन्या मानो देवलोक में रहती है। और देवलोक से मानो देखो, जो उपराम हो जाते हैं तो पितर लोक में गमन करती हैं। और पितरलोक से जब उपराम होती है तो "पति द्यौः ब्रह्मणाम् लोकाहम्" वह मुनिवरो! देखो, वह अपने पति को प्राप्त हो जाती है। तो वो सर्वत्र एक याग की प्रतिभा में परिणित माना गया है। और वहाँ उसे याग करने का अधिकार प्राप्त होता है। तो हमारे यहां वैदिक साहित्य में ये आया । वेद मन्त्र कहता है कि सन्तान पैदा "उत्पन्नम बहे" सन्तान को उत्पन्न

करने का नाम और उसे अपने ही गर्भस्थली में शिक्षा देना. ये मानो याग माना गया है। तो हमारे यहां जितने भी क्रियाकलाप हैं परम्परा से, कालों में बेटा ! सर्व याग के रूप में परिणित रहे हैं। मेरी प्यारी! माता अपने गर्भस्थल में ही बाल्य का निर्माण कर रही है। मानो उसे शिक्षा दे रही है और देवताओं की उपासना करने के लिए वो तत्पर है। बेटा! उसी की तरंगे, उसी के विचार, जब मुनिवरो! देखो, उसके हृदय में समाहित हो जाते हैं। वह जो माता के गर्भाशय में एक बाल्य पनप रहा है या लोरियों में पनप रहा है मुनिवरो! देखो, वहीं तो एक महानता में गमन करने वाला याग कहा जाता है। उसका नाम भी याग माना गया है। परन्तु यहाँ भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन है। जैसे वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है और विष्णु याग है। तो यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में, मैं तुम्हें ले जाना तो नहीं

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

केवल विचार ये कि हमारा ये सदैव देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, इन यागों के ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है। और उन्होंने याग के सम्बन्ध में ये कहा है हे मानव! तू याज्ञिक बन । मेरे पुत्रों! आज में तुम्हें ,आज महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ विद्यालय में भिन्न प्रकार की याग के सम्बन्ध में चर्चाएं होती रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, उसी सन्दर्भ में, मैं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ कि उन्होंने इस ब्रह्माण्ड और पिण्ड को किस प्रकार याग से कटिबद्ध किया। मेरे पुत्रो! देखो, एक समय प्रातःकालीन, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में याग कर रहे थे। नाना ब्रह्मचारी उनके समीप विद्यमान हैं। वे ब्रह्मचारी अपने में मानो अपने की आभा में रत्त हो रहे हैं। मेरे पुत्रो। उन्होंने याग के सम्बन्ध में कहा है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले- हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो। परन्तु ब्रह्मचारियों में से एक ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। और उन्हे, यज्ञदत्त नाम का ब्रह्मचारी कहता है-हे प्रभु! हम याग कैसे करें,? उन्होंने कहा, याग मानो देखो, तुम अग्ना, नाना प्रकार का

साकल्य होना चाहिए। और साकल्य के साथ मानो देखो, यज्ञशाला का निर्माण हो. उसमें मेखला हो और उसमें मानो देखो, ऊर्ध्वा में गमन करने वाली, सप्त जिव्हा वाली, यह अग्नि अपने में देखो "अग्नाध्यानम् ब्रह्वे मानो देखो, उससे उसको प्रदीप्त करो, उसे समिधा के द्वारा और तुम याग करो। उन्होंने कहा, हे प्रभ! कहीं ऐसा समय हमें प्राप्त हो जाए, क्या ये सुविधा हमें कहीं न प्राप्त हों, तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा, तुम अग्नि के द्वारा समिधा को एकत्रित करके देखो, उसमें, अग्नये स्वाहा, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, इस प्रकार तुम याग करो। मेरे पुत्रो! ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! कहीं ऐसा भी हो कि कहीं समिधा और अग्नि भी न प्राप्त हों, तो हम याग कैसे कर पाएंगे? तो उन्होंने कहा, जल को लो और जल से तुम प्रोक्षण करो। अग्नये स्वाहा, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा और वृतियों में मानो देखो, इस प्रकार की तुम आहुति दो। मेरे प्यारे ! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा-हे प्रभु! कहीं ऐसा भी हो, कि ये जल भी प्राप्त न हो। तो उन्होंने कहा कि तुम मनन करो और अपनी हृदयरूपी जो यज्ञशाला है, उसमें मानो देखो, मौन हो करके और ये बोलो 'ब्रह्मणे: आत्माः ब्रह्मणे: रूदो भागम स्वाहा वर्णास्सति वर्णा स्वाहा । इस प्रकार से मानो देखो,, तुम याग करो। मेरे प्यारे! अपने अन्तर्हृदय में, अन्तर्हृदय में जो याग करता है बेटा! वो योगेश्वर कहलाता है। मेरे प्यारे । देखो, ऋषि न कहा, घन्य है प्रभु!

मुनिवरो! देखो, इतने में दो ब्रह्मचारी उपस्थित हुए, हमारे यहाँ एक रूपक बनाया जाता है विद्यालयों में, जब भी ब्रह्मचारी उपस्थित होते हैं, तो एक रूपक बनाते हैं। और आलंकारिक भाषा, आलंकारिक वार्ताओं को ले करके वह अपने रूपक को प्रारम्भ कर देते हैं। उन्होंने कहा, हे प्रभु! एक ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु। ये यजमान उपस्थित है। ये यजमान याग करना जाता है इसमें कितनी आहुतियों के द्वारा व कितने होताओं के द्वारा याग करे| तो मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले, क्या चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा हे प्रभु! ये यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? उस

समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले इसमें मानो सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा. हे प्रभु! ये यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा, ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा कि 'ब्रह्मणे: वृत्तम देवा-" ब्रह्मचारियों ने पुनः ऋषि से ये प्रश्न किया कि हे भगवन्! ये यजमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? उन्होंने कहा, नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः ये प्रश्न किया कि यजमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? तो उन्होंने कहा, बाग करना चाहते हो तो मानो देखो, सप्त झोता होने चाहिए। सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराज ! यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा कि पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रो! पुनः जब उन्होंने ये प्रश्न किया कि महाराज! यजमान याग करना चाहता है, कितने होता हों? उन्होंने कहा, अमृते ब्राह्मणाः त्रिचष्टाः ये तीन होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराज! यजमान याग करना चाहता है, कितने होता हो। उन्होंने कहा, दो होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे। देखो, जब पुनः प्रश्न किया तो एक होता रह गया ।

चौबीस होता

मेरे पुत्रों ! देखों, , विचार आता रहता है कि ऋषि-मुनि ने एक, मेरे प्यारे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक माला बनायी, विचारों की और माला बना करके, मेरे पुत्रो। देखो. ब्रह्मचारियों ने ये प्रश्न किया महाराज! वे चौबीस होता कौन-से हैं? जिनके द्वारा याग करता है? तो यहाँ मुनिवरो! देखो. ऋषि-मुनियों ने, वेद की भाषा में, वेद की प्रतिष्ठा में परिणित होकर के बेटा! देखो, इस ब्रह्माण्ड का पिण्ड से, उन्होंने समन्वय और पिण्ड और ब्रह्माण्ड का, दोनों का समन्वय होना ही. यही मानो देखो, अद्वितीय ज्ञान माना गया है।

विचार आता है, जब उन्होंने ये कहा, क्या महाराज! चौबीस होता कौन-से हों? तो उन्होंने कहा, मुनिवरो! देखो, ये कहा कि दस प्राण और दस इन्द्रिया

और मुनिवरो! देखो, चौबीस होता कहलाते है जिनके द्वारा ये याग चल रहा है। उन्होंने बेटा! ब्रह्माण्ड को कटिबद्ध किया। ये जो ब्रह्माण्ड गतिवान हो रहा है, ये भी मानो देखो, चौबीस होताओं के द्वारा हूत हो रहा है। मेरे पत्रो! देखो, प्राण अपनी आभा में गमन कर रहा है और इन्द्रियों अपनी आभा में गमन कर रही हैं। मेरे पुत्रो! देखो, यही बाह्य जगत में विद्यमान हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार, ये देखो, चतुष का नाम अन्तःकरण कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें परिचय दूगा, व्याख्या नहीं करूंगा। केवल परिचय ये है क्या उन्होंने कहा कि चौबीस होताओं के द्वारा यजमान याग करता है, वह हूत कर रहा है, वह आहुति दे रहा है। वह अपने हृदयरूपी यज्ञशाला में याग कर रहा है जिससे देखो, उसकी महानता, पवित्रता में परिणत हो रही है। और वो ज्ञान और विज्ञान में रत हो रहा है।

सत्रह होता

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं। मानो देखो, ये चौबीस अमृतम् आपने वर्णन किए। हे प्रभु! सत्रह होता कौन से होते हैं? उन्होंने कहा, दस प्राण और देखो ये प्रकृति की पञ्च तन्मात्राएँ कहलाती हैं। पञ्च महाभूतों की तन्मात्राएँ हैं और दस प्राण है, मन और बुद्धि कहलाता है। इनके द्वारा यजमान याग करता है। और वो याग करता है तो उसका याग मानो सफलता को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब मानव इस शरीर को त्याग देता है, स्थूल को । तो ये सूक्ष्म शरीर रह जाता है और सूक्ष्म शरीर में दस प्राण होते हैं, पञ्च तन्माताएं होती है, और मन और बुद्धि कहलाते हैं, जो चित्त का मण्डल कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, उसी को हमारे यहाँ सूक्ष्म शरीर कहते हैं। वह अन्तरिक्ष में गमन कर जाता है, देवत्व के लोका में गमन करने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो,जो योगेश्वर बन करके याग करना चाहता है, कि मैं मानो सूक्ष्म शरीर को जानूँ। और ये सूक्ष्म तन्मात्राओं को जान करके मैं इस परमात्मा के अनन्तमयी जगत में

प्रवेश होना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, इसका नाम आध्यात्मिकवाद कहलाता है। आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जहां मानवीयता के विचार जिससे आत्मतत्त्व से इसका समन्वय होता है और ये सूक्ष्म शरीर जो मुनिवरो! देखो, प्रकृति का सूक्ष्म मण्डल कहलाता है। मेरे प्यारे! इसी मण्डल में जब योगेश्वर प्रवेश करता है तो अपनी अन्तरात्मा में, अंतर्हृदय में बेटा! हूत करने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने ये संक्षिप्त परिचय दिया। आज बेटा! मैं भी तुम्हें विशेष या इसकी विवेचना नहीं करूंगा|

ग्यारह होता

विचार केवल ये है कि ऋषि ने ये प्रश्न किया, ब्रह्मचारी ने कि हे भगवन् ! हे ऋषिवर! हे पूज्यपाद! हम ये जानना चाहते हैं, कि ये "अमृताम् ब्रह्मणेः लोकप्रहा" भगवन! यजमान मानो देखो, ग्यारह होताओं के द्वारा याग करना चाहता है, तो वो कैसे करेगा? उन्होंने कहा कि ग्यारह होता कौन-से हैं? ये तुम जानना चाहते हो। मानो देखो, दस इन्द्रियों हैं और ग्यारहवाँ मन कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ये एकादश इन्द्रियां कहलाती हैं, जिसका रथ बन करके मुनिवरो! देखो, वो गमन करता रहता है। वह आत्मा, देखो, वह मनस्तत्त्व एक रथी कहलाता है और इन्द्रिया उसमें मानों देखो, वाहन बन करके, वाहन में गमन कर रहे हैं। बेटा! शरीररूपी आभा में रत्त होने वाली एक आभा रत्त होती रहती है।

मानव दर्शन

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा क्या पाँच ज्ञानेन्द्रियों हैं,और पांच कर्मेन्द्रियां कहलाती है। ये पांच मानो अश्व कहलाते है। और इसका सारथी बन करके बेटा! वो आत्मा विद्यमान है। मानो देखो आत्मा उसमें विद्यमान है और सारथी मुनिवरो! देखो, मन कहलाता है। ये मन गमन करा रहा है। बेटा! उद्गीत गाया जा रहा है। मेरे पुत्रों!देखो,इन्द्रियों का, इन्द्रियों का साकल्य एकत्रित हो

जाता है। अरे! इन्द्रियों का साकल्य क्या है? चरू क्या है? उसका व्रत क्या है? जिसके ऊपर वो अध्ययन करना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो, वह जो चरू है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है। जैसे पाँच ज्ञानेन्द्रिया कहलाती हैं, पाँच ज्ञानेन्द्रियों में बेटा! देखो, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श और मुनिवरो! देखो, रसम ब्रह्माः कृतम ये मुनिवरो देखो, पाँच इन्द्रियों का रस है, जिसमें मुनिवरो! देखो, रूप का विषय, देखो, नेत्रों का विषय रूप है, श्रोत्रों का विषय शब्द है और घ्राण का विषय सुगन्ध है और रसना का विषय रस है और त्वचा का विषय मुनिवरो! देखो, वह स्पर्श कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ये जब पाँचों इन्द्रियों के विषयों को एकाग्र करके बेटा! देखो, साधक जब साधना करने लगता है, इनका साकल्य बनाता है तो साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में याग होना प्रारम्भ हो जाता है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा है। विचार केवल यह कि ऋषि ने ये उत्तर दिया, कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और मुनिवरो! देखो, ग्यारहवा मन ये एकादशों कहलाते हैं। इनको एकाग्र करके जो यजमान याग करता हैं बेटा! वह याज्ञिक कहलाता है, वह इन्द्रियों का हूत कर रहा है, वह विषयों का हुत कर रहा है और वो मुनिवरो! देखो, हृदयरूपी यज्ञशाला में याग करता हुआ, अपने हृदय को परमात्मा के हृदय से समन्वय करना चाहता है। मेरे प्यारे! उसकी एक ही मनोनीत इच्छा होती है, क्या मैं, परमात्मा का जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, अनन्तमयी हृदय है, उस हृदय से मेरे हृदय का मिलान हो जाए। तो मानो मेरा, देखो, अंतर्हृदय पवित्रता को प्राप्त होता रहता है।

नौ होता

आओ, मेरे पुत्रो ! ऋषि ने जब इस प्रकार ब्रह्मचारियों को उत्तर दिया, जब अपने में बड़े प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा, प्रभुः नौ होता कौन-से होते हैं? तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा कि सृष्टि के पिता ने, परमपिता परमात्मा ने जो इस मानव शरीर का निर्माण किया, तो मानो देखो, उसमें दस द्वारों का निर्माण

किया। मेरे प्यारे! देखो, दो अमृतम् ये ग्यारह इंद्रिया हमारे शरीर में ग्यारह द्वार कहलाते हैं। उनके ग्यारह देवता, मानो देखो. माह ही देवता होते हैं। परन्तु देखो, दो देवता अचित हो करके मुनिवरों! देखो, वह केवल नौ रह जाते हैं। और नौ देवता मानो देखो. जो द्वारों पर विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे । देखो, जब ये मन और प्राण अपने में रत्त हो करके और मुनिवरो! देखो, विचार उत्पन्न होते हैं, तो नौ द्वारों के देवता उसके समीप आ जाते हैं। और वह देवता, मुनिवरो! देखो, देवत्व को प्राप्त हो करके, अरे! नौ द्वारों पर संयम करने वाला ही बेटा! महापुरुष कहलाता है, विचारवान् कहलाता है । वही सृष्टि के अव्ययों को जानने वाला है। सृष्टि की आभा को अपने में धारण करता रहता है।

मेरे प्यारे। देखो, जब उन्होंने ये कहा, देखो नौ द्वारों वाली ये अयोध्यापुरी है। मुनिवरो! देखो, ऐसी अयोध्यापुरी का निर्माण, मेरे प्यारे! प्रभु ने किया है। सृष्टि के पिता ने किया है। तो विचार आता रहता है बेटा ! ऋषि ने वर्णन करते हए कहा, क्या ये नौ अमृती कहलाते हैं। नौ ही द्वार हैं, नौ ही गणाना है। मुनिवरो! देखो, गणाना भी नौ तक ही कहलायी जाती है। और नौ प्रकार की आभा, मेरे प्यारे! देखो, इसमें निहित रहती है। मुनिवरो। देखो, ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! तुम नौ द्वारों को एकाग्र करते हुए नौ द्वारों पे संयम करते हुए. उनके ऋषियों को जानते हुए तुम ऋषित्व को प्राप्त हो जाओ।

सप्त होता

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, प्रभु! हम भी ये व्याख्या नहीं चाहते। क्योंकि आचार्यजनों ने हमें बहुत-सा उपदेश दिया है। हम ये जानना चाहते है कि सप्त होता कौन-से हैं जिनके द्वारा हमें याग करना है। वे सप्त ऋषि कहलाते हैं। सप्त, मुनिवरो! देखा, दो नेत्राणाम् ब्रव्हे, दो श्रोत्राम ब्रव्हे मेरे पुत्रो! देखो, दो घ्राणाय ब्रव्हे, मुनिवरो! देखो, मुखारबिन्दाम ब्रव्हे मुनिवरो ! देखो, त्वचार आवृतम् विषय । इन विषयों को एकाग्र करने वाला, मेरे प्यारे ! देखो, इन देवताओं को, देवत्व ऋषियों को एकाग्र करता हुआ जो याग करता है, सप्त होताओं को जागरूक

करता हुआ, वही मुनिवरो!देखो, संसार में व्यानम् ब्रव्हे कृतम्, वहीं परमपिता परमात्मा की महती में सदैव रमण करता रहता है और परमात्मा के राष्ट्र में जागरुक रहता है। इसलिए जागने वाला ही इन्द्रियों को, अपने में धारण करने वाला है। तो मुनिवरो! ये सप्त होता कहलाते हैं।

पञ्च होता

उन्होंने कहा, प्रभु! ये व्याख्या तो मेरी प्यारी माता भी हमें स्मरण करती रही है। हम ये जानना चाहते हैं भगवन्! पञ्च होता कौन से हैं? उन्होंने, पञ्च होता, हमारे यहाँ पृथ्वी, जल, अग्नि और मुनिवरो ! देखो, वायु और अन्तरिक्ष ये पञ्च होता कहलाते हैं। इनके द्वारा जब यजमान याग करता है, तो बेटा! उसके याग की जो आहुति है वो द्यौ में प्रवेश हो जाती है। वह मानो द्यौ में प्रवेश हो करके, वो अपने में एक-दूसरे में रत हो जाती हैं। तो विचारवेत्ता याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन करते हुए कहा । उन्होंने अपना विचार देते कहा, हे ब्रह्मचारियों! ये पञ्च होता, जितना भी विज्ञान हैं. इन मानो देखो, पञ्च होताओं में निहित रहता है। देखो, तीन प्रकार के परमाणु है। जैसे गुरुतव, तरलत्व और तेजोमयो ये तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन परमाणुओं को "स्थानम् ब्रहोः व्रतम्" वायु गमन कराती है और जहाँ वो गमन करते हैं उनको अन्तरिक्ष कहते हैं।

मुनिवरो! देखो, तीन प्रकार के परमाणुओं में, ये जगत निहित हो रहा है। ये तरलत्व, तेजोमयी और गुरुत्व मुनिवरो! यही तो परमाणु कहलाते हैं।

इन तीन प्रकार के परमाणुओं से सर्वत्र विज्ञान अपनी आभा में गमन कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह वायु उस परमाणु को गमन कराती रहती है और अन्तरिक्ष में वो गमन करता रहता है। ये पञ्च महाभूत कहलाते हैं। पञ्च होता कहलाते हैं। जिनके द्वारा मुनिवरो। देखो, याग करने वाला याज्ञिक बन जाता है और वो महानता को प्राप्त हो जाता है। अन्तर्हृदय में जो अन्तरात्मा विद्यमान है उसको वो साक्षात्कार कर लेता है। मेरे प्यारे । देखो. ऋषि ने कहा कि जितना

भी विज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ से गमन कर रहा है, वह पञ्च महाभूतों में निहित है। और मानो देखो, इनमें पञ्च जो परमाणु है. वह अपने में अपनेपन की आभा को रमण करा रहा है, जिससे मानवीयत्व अपने में पवित्रता को धारण करता रहता है।

तीन होता

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ब्रह्मचारी से, ब्रह्मचारी बोले, हे भगवन्! हे ऋषिवर! हम जानना चाहते हैं क्या ये मानो तीन होता कोन-से हैं? जिनके द्वारा याज्ञिक याग करता है। उन्होंने कहा, ये तीन होता है रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण कहलाते हैं। मानो देखो, रजोगुण, वही रजोगुण है, वही सतोगुण है और वहीं तमोगुण है। मुनिवरो! देखो, वो तीन मानो देखो, एक सूत्र के मनके कहलाते हैं। एक सूत्र में पिरोये हुए रहते हैं व उसी में रत्त रहता है। उसी में अभ्युदय होता रहता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है, हे ब्रह्मचारियों! तुम मानी देखो, रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण । मेरे प्यारी! माता को, हमारे यहाँ जितने रूप में वर्णित किया गया है। माता मुनिवरो! देखो, वही तमोगुण में रत्त रहने वाली है। वह सतोगुण में रहते हुए रजोगुण में रहती है। मेरे पुत्रो! देखो, पालना में मेरी प्यारी! माता देखों, तमोवृत्तियों में, मानो उत्पत्ति में अमृतम् देखो, तमो है। और मुनिवरो! देखो, वह शासन करने में, अनुशासन में लाने के लिए रजोगुण है। और साधना करने में मुनिवरो! देखो, सतोगुण कहलाता है।

तो मुनिवरो। ये तीनों प्रकार का जो यह नृत हो रहा है, अभ्युदय हो रहा है। मुनिवरो! देखो, हम रजोगुणी बने, सतोगुणी बने, परन्तु अपनी सीमा में निहित रहें। जिससे हमें तीनोंके द्वारा ये तीन होता है और तीन होताओं को एकाग्र करते हुए, मुनिवरो। देखो हम याज्ञिक बने । मानो देखो, तमोगुण में भी सतोगुण है और सतोगुण भी तमोगुण है। और तमोगुण और रजोगुण देखो, उनमें भी रजोगण विद्यमान रहता है। तीनों एक-दूसरे में पिरोये हुए हैं। एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। जिससे मेरे प्यारे ! देखो, रजोगुण, तमोगुण एक होता के रूप

में हूत करते रहते हैं।

विचार आता रहता है, मेरे प्यारे! ये सर्वत्र जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है इसमें मुनिवरो! देखो, सतोगुण भी है और रजोगुण भी और तमोगुण भी कहलाता है। परन्तु देखो, वह अपनी-अपनी आभा में नृत्त होता रहता है। विचार होता रहता है, मेरे प्यारे। यदि रजोगुण नहीं होगा, तो तमोगुण भी नहीं होगा और तमोगुण नहीं होगा, रजोगण नहीं होगा, तो सतोगुण भी नहीं होगा। तो इसलिए बेटा! ये तीन होता कहलाते हैं। जो सष्टि में उत्पत्ति के मूल में और शासन के मूल में और पालन के मूल में मुनिवरो! देखो, तीनों विद्यमान रहते हैं।

दो होता

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो मेरे प्यारे । देखो, ब्रह्मचारी उपस्थित हो करके बोले कि प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, हे प्रभु! ये मानो दो होता कौन-से हैं? उन्होंने कहा, एक ब्रहा है तो एक प्रकृति है। मानो देखो, प्रकृति और ब्रह्म के, दोनों के सन्निधान मात्र से ये ब्रह्माण्ड गमन कर रहा है और गतिवान हो रहा है। तो मुनिवरो! देखो, यही दो होता है, जो इस ब्रह्माण्ड को गतिवान बना रहे हैं। मुनिवरो! देखो, प्रकृति को चरि कहते हैं और परमपिता परमात्मा को ब्रह्म कहते हैं। इन दोनों के मिलन से बेटा! एक ब्रह्म-चरि बन जाती है। और ब्रह्म-चरि को कौन जागरुकता में वर्णित करने वाला है। बेटा! वह मानो ब्रह्मचारी है और वो ब्रहाचारी मुनिवरो! जब कहलाता है, जब ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है और ब्रह्मचरिष्यामि कौन कहलाता है? जो ब्रह्म को जानने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, अपने "श्वामम ब्रहो ऋतम्" अपने को मानो देखो, एक-एक श्वास को, ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है, तो मेरे प्यारे! देखो,वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। विचार आता रहता है कि ब्रह्मणाम् ब्रहे तम्' हे ब्रह्मचरिष्यामि। तू ब्रह्मचारी है, मृत्यु को विजय करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म और चरि को जानते ही ब्रह्मचारी मृत्यु से पार हो जाता है। वह मेरे प्यारे! देखो, याज्ञिक पुरुष कहलाता है। वहीं तो ब्रह्मचारी याग करता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष तम्हें विवेचना देने नहीं आया। मैं कोई व्याख्याता नहीं है, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ। और परिचय क्या है? बेटा! ये इतनी मानो देखो, मनकों की माला है, ये विचित्रता में धारण करते रहे हैं, ऋषि-मुनि। तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! मानो देखो, ये जो तुम्हारा प्रसन्नम् बहे, तुम्हारा ये रूपक समाप्त हो गया है। तुम्हारी जो क्रमिणा है वो समाप्त हो गयी है। और मैंने मानो देखो, एक याग करने का क्रम तुम्हें व्यक्त किया है। क्या मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। बेटा ! देखो, वह यागाम् ब्रह्मणे देखो ब्रह्मचरिष्यामि और ब्रह्मचरिष्यामि के निचरले भाग में मानो देखो, पञ्च होता, पञ्च तत्त्व हैं। और पांचों के देखो, निचरले भाग में सप्त होता है। और सप्त होताओं के निचरले भाग में नौ द्वार हैं। और नौ दारों के निचरले भाग में ग्यारह होता हैं। मेरे प्यारे ! ग्यारह होताओं के निचरले भाग में मुनिवरो! देखो, सत्रह होता हैं। और सत्रह होताओं के निचरले भाग में बेटा! देखो, चौबीस होता कहलाते हैं। जिससे ये ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्ड से पिण्ड मानो दोनों एक-दूसरे में गमन करते रहते हैं।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। वेद का मन्त्र आ रहा था "यज्ञम भवितम ब्रह्मणेः कृतम" हे मानव! तू याज्ञिक बन और अपने जीवन को जानने का प्रयास कर। मानो सबसे प्रथम देखो, ये चौबीस होता कहलाते हैं। जहाँ मन और बुद्धि, चित्त अहंकार है उसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो ब्रह्माण्ड का ज्ञान-विज्ञान निहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, ये प्राण, ये मुनिवरो! देखो, ये नौ खम्बों वाला ये जगत कहलाता है। ये जो प्राण है, ये दस खम्बों वाला है और नौ अमृतम मेरे प्यारे! देखो, पञ्चम ब्रहे कृतम् देवाः, पञ्च इन्द्रियों वाला जगत है|

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना तो देने नहीं आया है। इन्हीं वाक्यों को यदि मैं व्याख्या करने लगूंगा, तो बहुत समय की आवश्यकता है। परन्तु आज तो मैं तुम्हें एक परिचय देने के लिए चला आया है, और वह परिचय

क्या है। मेरे प्यारे! देखो, अपने में याज्ञिक बनो। याग का, ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है। बड़ा अनुसन्धान किया है, और अनुसन्धान में सदैव तत्पर रहे हैं। तो आओ मेरे पुत्रो! आज का विचार हमारा क्या हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में आए हैं और परमात्मा याज्ञिक है। क्योंकि परमात्मा ने इस मानों देखो, ब्रह्माण्ड की जब रचना की तो ये मानो देखो, एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में निहित हुए। तो वेद का मन्त्र कह रहा था कि वह परमपिता परमात्मा मानो उसी में निहित रहते हैं। ब्रह्म का वो ही आयतन है, वो ही गृह है और वो उसी में वास कर रहा है पुत्रो!, तो मेरे प्यारे। ये जो परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत है, अनूठा जो ब्रह्माण्ड है, इसी में मुनिवरो। देखो, मानव सदैव तत्पर रहता है। इसी की आभा में रत रहता है।

आनन्द परमानन्द

आओ मेरे पुत्रो!, आज का विचार क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी आनन्दमयी धारा को जानते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। क्योंकि प्रत्येक मानव ये जो अनुष्ठान कर रहा है, विचार-विनिमय कर रहा है, ब्रह्माण्ड को माप रहा है, यज्ञशाला में विद्यमान है। वह किसलिए माप रहा है कि मेरा, मुझे आनन्दत्व को मैं प्राप्त हो जाऊँ, आनन्द की उसे अभिलाषा रहती है। मेरे प्यारे! आनन्द्र कहाँ प्राप्त होता है, जब मुनिवरो। देखो, मन, जब मन और प्राण और विचार को

अन्तरात्मा के समीप ले जाओगे। अन्तरात्मा में बेटा! देखो, आनन्द की अनुभूति होगी। और वह आत्मा का समन्वय उस परमपिता परमात्मा, जो ब्रह्माण्ड को स्थिर किए हुए है, उसमें उसका समन्वय हो जाता है| तो बेटा! परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है। ये है मुनिवरो! देखो, आज का हमारा विचार । अब मेरे प्यारे! महानन्द जी, दो विचार, दो वाक्य प्रगट करेंगे अपने, क्योंकि इनके हृदय में ये आकांक्षा रहती है कि मैं अपने विचार व्यक्त करूँ।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म यमा रथम आभ्याम् रुद्रो वाचन्नमः सर्वश्वमाः"।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा भद्र ऋषि मण्डल! भद्र समाज! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने याग का उद्गीत गाते हुए, इस ब्रह्माण्ड को मापा और पिण्ड को उसमें समावेश कर दिया। ये विचार तो बहुत ही भव्यता में सदैव रमण करते रहे हैं। जब हम पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा इन वाक्यों पर अन्वेषण करते रहे और प्रश्न करते रहे, तो कई-कई माह हो जाते थे, इन वाक्यों को उद्गीत गाते । परन्तु आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने गागर में सागर की कल्पना की है। परन्तु ये ज्ञान हमारे हृदयों में सदैव निहित होना चाहिए। आज हमारी ये आकाशवाणी जहाँ जा रही है, वहाँ एक याग का आयोजन हुआ। और इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गरुदेव को ये प्रेरणा देता रहता हूँ क्या, याग के ऊपर इनका बड़ा अध्ययन रहा है। क्योंकि वेद के मन्त्रों में स्थली-स्थली पर यागों का वर्णन आता रहा है। याग के ऊपर महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने बड़े भव्य विचार दिए हैं। परन्तु उनकी विचारधारा एक यागमयी रही है। उन्होंने एक वाक्य ये कहा है कि "अन्नाम् भूत प्रवाहणाम्" देखो, मानव का अन्न जब पवित्र हो जाता है तो वो भी एक याग है। जब मानव देखो, अपने गायत्री छन्दों से खण्डित होता हुआ, अपनी आभा में निहित हो जाता है, तो वो भी एक याग है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन किया। आज मैं इस सन्दर्भ में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल ये क्या, आज जहाँ ये याग हुआ है, मेरा

अंतर्हृदय यजमान के साथ रहता है ।हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि तेरे मनोनीत हृदयों में ये भावना बनी रहे।

आधुनिक जगत

आधुनिक जो काल है, ये वर्तमान का, जो पूज्यपाद काल चल रहा है, इसे में वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। क्योंकि वाममार्ग उसे कहते है जो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा है। भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार नहीं हो रहा है। और जिसमें देखो, सुरा-सुन्दरी और द्रव्य में मानव लगा हुआ है। उसी को हमारे यहाँ देखो "ब्रह्मम् बहे'' उसे वाममार्ग काल कहते हैं। मैं यह कहता रहता है, कि वाममार्ग

जो असुर के मार्ग पर गमन कर रहा है। यथार्थ मार्ग को वो जान नहीं रहा है। अन्तरात्मा की वाणी, अन्तरात्मा की प्रेरणा को वो शान्त कर देता है। और अन्तरात्मा की प्रेरणा को शान्त करता हुआ, वह वाममार्ग की प्रवृत्ति अपनी बना लेता है। तो इसीलिए मैं इस सन्दर्भ में विशेषता में नहीं जाऊँगा। केवल पूज्यपाद गुरुदेव वाक्य तो बहुत कुछ उच्चारण करने के हैं, परन्तु केवल यही है कि आधुनिक काल, आधुनिक जो जगत है। मानो देखो, राजा और राजम ब्रह्मः" देखो राजा याग करता था तो प्रजा भी करती है और वह वेद के उदगीत गाता है जो प्रजा भी गाती है। और जब प्रजा, राजा सुरापान, सुन्दरियों में लगा रहता है तो प्रजा भी उसी के क्रियाकलाप करने लग जाती है। विचार आता रहता है कि ये जो प्रवृत्ति है, ये जो धारणा है ये मानो देखो, मानव को अधोगति में पहुंचा रही है।

और विज्ञान का जो दुरुपयोग है वह मानव के लिए देखो, मानव की रक्तभरी क्रान्ति में ले जा रहा है। तो विचार मैं विशेष नहीं दूंगा।

यजमान को आशीर्वाद व प्रेरणा

केवल हे पूज्यपाद! मेरा जो अंतर्हृदय है, वो यजमान के साथ रहता है,हे यजमान! मेरा अन्तरात्मा कहता है कि अमृतम् तुम्हारे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। जिस द्रव्य को देखो, अग्नि विभाजित करने वाला नही, अग्नि, मानो वही द्रव्य, तेरा श्रेष्ठ मार्ग में जा रहा है और तुम्हारे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। और द्रव्य का सदुपयोग होना ही द्रव्य की पूजा है। और द्रव्य का दुरुपयोग होना ही द्रव्य का अपमान है, वहीं देखो, मानव को अन्धकार में पहुँचा देता है। तो इसीलिए ये आज का विचार । अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। क्या, हे भगवन् ! ब्रह्मणः कृतम देवाः, हे यजमान ! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे वहां सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। ये आज का विचार । अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने

अपने विचार दिए। इससे पूर्व काल में तो उन्होंने राष्ट्र के ऊपर अपना विचार दिया। परन्तु आज उनका जो विचार है, वह यजमान के लिए है, क्या, उनका अन्तर्हदय ये सदैव पुकारता रहता है कि द्रव्य का सदपयोग होना चाहिए। और द्रव्य का सदुपयोग वह कहलाता है, जिस द्रव्य को अग्नि विभक्त करके देखो, देवत्व को प्राप्त करा देती है। तो आज का ये विचार, अब सम्पन्न होने जा रहा है। आज का विचार अब समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायु गतम् ब्रह्माः वायाः । ओ३म् यश्चाहम् भद्राणी ऋषीः सर्वाहम् मनुः भद्राहम् आपाः । ओ३म् देवम् भव सर्वाः आप्याम लोकाः वायाः । अच्छा भगवन् ! आनन्दित रहो। दिनांक : 30 मार्च, 1990, स्थान : मोदीनगर, मेरठ।

२० 31 03 1990 पवित्र गृह निर्माण

जीते रहो! देखो, मुनिवरों !आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और वह महान और पवित्र कहलाते हैं और वे विज्ञानवेत्ता हैं और विज्ञान में प्रायः अपनी आभा में रत्त रहते हैं। वह गृह स्वामी है क्योंकि इस संसार रूपी गृह का जिसने निर्माण किया है और वह संसार में पवित्र रूप में दृष्टिपात आता रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र हमें प्रेरित कर रहा है। और यह प्रेरणा दे रहा है कि परमपिता परमात्मा की महिमा और महती और उसका जो गृह है मानों उसमें सदैव रत्त रहें। क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड है। यह परमपिता परमात्मा का गृह है। सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी मात्र अपने में अपने गृह में वास करते रहते हैं और वे परमपिता परमात्मा के गर्भस्थल में अथवा उसकी आभा में सदैव रत्त रहते हैं इसीलिए हमारा वेदमन्त्र हमें यह प्रेरित कर रहा है, हमें यह उद्गीत गा रहा है उद्गीत गाने के लिए बाध्य कर रहा है कि हम मानो अपने गृहों के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते रहें। क्योंकि हमारा यह जो मानवीय गृह है जिसमें यह अन्तरात्मा विद्यमान रहता है।

बेटा !यह आत्मा का गृह है एक समय बेटा !महात्मा जालवी ने प्रश्न किया कि यह आत्मा का लोका क्या है? तो महर्षि जालवी ने यह कहा कि हमारा आत्मा का जो लोक है वह पञ्च महाभूत माना गया है। यह पञ्च महाभूतों का गृह कहलाता है जिसमें देखो, दस प्राण है मानो एक ही गति के दस भाग दस रूपों में परिणित होते रहते हैं। और देखो, अमृतां ब्रह्ममयी वह ही पञ्च महा वृत्तियां कहलाती है जिन्हें हम ज्ञानेन्द्रियां कहते हैं और पांच कर्मेन्द्रियां कहलाती है मन,

बुद्धि, चित्त ओर अहंकार ये प्रकृति के सूक्ष्म स्वरूप माने गएं हैं तो यह आतम का गृह माना गया है जिस गृह में आत्मा वास करता है और वह पञ्च महाभूतों में रक्त रहने वाला है तो विचार आता रहता है कि वेद का मन्त्र क्या कहता है, वेद का मन्त्र कहता है गृहताम ग्रहेवर्णाम ब्रह्मात्मा कि हे आत्मा !यह तेरा गृह है। ओर जिस गृह में तू वास कर रहा है तू इसको जानने का प्रयास कर। देखो, पञ्च महा भौतिक रूपों में रमण करने वाला यह आत्मा का लोक कहलाता है। जैसे कन्या का लोक है देव लोक है, पितर लोक है ओर देखो, पति लोक कहलाता है। इसी प्रकार हमारा जो यह आत्मा का लोक है वह पञ्च महाभूतों भौतिक शरीर कहलाता है। तो देखो, इसके ऊपर हम विचार विनिमय करते चले जाएं। जैसे उस परमपिता परमात्मा ने हमारे मानव शरीरों का निर्माण किया है ओर मानो उस आत्मा के गृह का निर्माण किया ओर वह माता के गर्भस्थल में माता के गृहतां में मानो इसका निर्माण होता रहता है इसी प्रकार इस बाह्य जगत में जब यह आत्मा इस पञ्च लोक पञ्च महाभूतों वाले गृह में प्रवेश करता हुआ जब यह बाह्य जगत में जाता है तो शरीर की रक्षा के लिए देखो, इस पञ्चमहाभूतों की इसका विशाल रूप ले करके, स्थूल रूप ले करके बेटा !इसके गृह का एक ओर निर्माण करता है वह गृह स्वामी है अथवा गृहस्वामिनी ाहै ओर वह यह चाहता है कि हमारा जो गृह है यह मानो एक अन्तन्धनम् ब्रह्मे जिसमें हम पञ्चमहाभूतों में रमण कर रहे हैं ओर हम देखो, तमोगुण रूप में रक्त हो करे हम उत्पति के मूल में पंहुच जाएं। ऐसी उकनी मनोकामना रहती है, ऐसी भावना के साथ ही मानव एक निर्माण करता है। मेरे प्यारे !देखो, यह गृह वर्णनं ब्रह्मा वर्णनं सम्भवे देवत्वां लोकां वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे गृह स्वामी ! कि हे गृहस्वामिनी तू अपने गृह में जैसे तू निर्माण करता है वह भी परमपिता परमात्मा का दिया हुआ स्थूल जगत है जैसे सूक्ष्म जगत मानो प्राण ओर इन्द्रियों से आत्मा के शरीर का निर्माण होता है इसी प्रकार बाह्य जगत में जो पञ्च महाभूतों का स्थूल रूप है जैसे मानो जल रूप है जैसे गुरूतव रूप है ओर जिस

प्रकार अग्नि का वृत कहलाया जाता है और उसी में गति है जो देखो, अन्तरिक्ष में ऊर्ध्वा गति को गृह गमन कराते रहते हैं। हे गृह स्वामी !तू परमात्मा के अमूल्य जगत में मानो माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान हो करके तू इन ऊर्ध्वा गृहों का निर्माण करता है। और निर्माण में तरी भावना यह रहती है कि मैं संसार में शरीर की आत्मा के शरीर की रक्षा कर सकूं। आत्मा का शरीर यह मानव का शरीर कहलाता है वह भी इस अन्तःस्थली में विद्यमान हो करके याग में याज्ञिक मानव अपने में प्रवेश करता रहता है तो आओ मेरे पयरे मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें अधिक नही ले जाना चाहता हूँ।

बेटा !सतोयुग के काल में ले जाना चाहता हूँ। जिस काल में महर्षि भृंगी पैदा हुए है और वह भृंगि ऋषि बड़े उद्गीत गाने वाले वेदों के मन्त्रों का उद्घोष गाने वाले और सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर के आत्मा के शरीरों को जानने वाले थे अथवा उन गृहों को जानने वाले थे देखो, वेदमन्त्रों में अध्ययन करते रहते रहे कि एक पुत्र याग भी होता है। और मैं पुत्र याग में रमण करना चाहता हूँ। देखो, जहां ऋषि नाना प्रकार के वेद मन्त्रों में अध्ययन में नाना प्रकार के यागों की चर्चा करता रहा जैसे अग्निष्टोम याग जैसे वाजपेयी याग, रुद्र याग और विष्णु याग इसकी चर्चाएं हम इसके पूर्वकाल में ले करके आए हैं तो महर्षि भृंगि ऋषि वेद मन्त्रों में इस प्रकार का अध्ययन करते रहते थे जब अध्ययन करते रहे तो एक समय ऋषि के हृदय में यह आकांक्षा जागरूक हुई कि हमें पुत्र याग करना चाहिए। देखो, पुत्र याग के लिए उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया तपस्वी ने और वेद के मर्म को जानने वाला ऋषि बेटा !वहां से प्रस्थान करता है। देखो, व्रेतू नाम का एक राजा अयोध्या में राज कर रहा था ऋषि भ्रमण करते हुए राजा के समीप पंहुचें। राजा ने अपने आसन को त्याग दिया और कहा आईए भगवन ! पधारिए वह उस स्थली पर विराजमान हो गए। जब राजस्थली पर विराजमान हो गए तो राजा ने कहा कहो भगवन !आज कैसे आगमन हुआ है कि मैं वेदों का अध्ययन कर रहा था और अध्ययन करते करते उमसें पुत्र याग का वर्णन आया

ओर मुझे पुत्र याग करना है क्योंकि नाना प्रकार के जहां यागों का वर्णन आता रहता है वहां पुत्र यागों का भी वर्णन आता रहता है। मेरे प्यारे !उन्होंने कहा कि हे भगवन !अमृतां ब्रह्मणे तो मुझे अपनी कन्या को प्रदान करो। जिससे मैं पुत्र याग कर सकूं। देखो, राजा ने कहा भगवन !बहुत प्रियतम।

बेटा !उन्होंने गृह में प्रवेश करते हुए अपनी पत्नी को ओर पुत्री को एकाग्र करते हुए कहा हे पुत्री देखो, ऋषि भृंगि पधारे हैं। ओर भृंगि ऋषि वेद, की तपस्या की आभा में रत्त रहते हैं वेद के मर्म को जानते हैं ओर जो सदैव प्रकाश में रहते हैं। मेरा राष्ट्र ऐसे महापुरूषों से सुशोभित हो रहा है। हे पुत्री वह याग करने के लिए तुम्हें अपना साथी बनाना चाहते हैं तो उस समय देखो, उनकी देवकन्या ने कहा कि हे प्रभु !जैसी भी पितर आपकी आज्ञा हो वैसा कीजिए। यह तो मेरा सौभाग्य है कि जो मैं एक महापुरूष तपस्वी के साथ अपने जीवन को व्यतीत करूं। देखो, उन्होंने यह स्वीकार कर लिया ओर राजा ने राजस्थली में आकर के ऋषि से कहा कि ब्रह्मर्षि मेरी कन्या आपको स्वकार कर रही है। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम बेटा !दोनों ने वहां से गमन किया ओर वह राजकन्या मानो वह देवी उन्हें प्रदान कर दी गयी।

मेरे पुत्रों !वह भयंकर वनों में जा करके निर्जन देखो, जहां परमपिता परमात्मा का नामोकरण का उद्घोष होता रहता था, जहां कोई प्राणी नही, पक्षीगण अपने में चयन कर रहे थे ऋषि ओर वह कन्या तपस्या करने लगे ओर तपस्या में देखो, वेद के मन्त्रों की विवेचना में ओर तपस्या में इतने तल्लीन हो गऐ कि एक दूसरे के लिए उन्हें भान ही नहीं रहा कि दो हैं याग एक बारह वर्ष हो गएं उन्हें इसी प्रकार व्यतीत हो गए। बारह वर्ष के पश्चात महर्षि को पुनः पुत्रेष्टि याग का स्वरूप याग का प्रसंग पुत्र का प्रसंग उनके समीप वेद मन्त्रों में पुनः आया। वह देवी के समीप पंहुचें ओर देवी से कहा हे देवी !हम पुत्र याग करना चाहते हैं उन्होंने कहा प्रभु !आप तो वेद के मर्म को जानने वाले हैं मैं तो आपको शरण में रहती हूँ प्रभु मैं भी तपस्या के कुछ अर्थों को जान गई हूं। बारह वर्ष हो

गए हैं तपस्या अपने जीवन को व्यतीत कर रही हूँ। यह जीवन मुझे बहुत प्रिय लग रहा है यदि आपकी इच्छा है कि पुत्रेष्टि याग करना है, पुत्र याग करना है तो प्रभु !यह तो मानो वायुमण्डल है और वायुमण्डल में पक्षीगण भी भ्रमण कर रहे हैं यदि वह निर्जन हो करके हमें दृष्टिपात करेंगें तो प्रभु !वह सुशोभनीय नही हैं हे प्रभु !इसके लिए कोई आड़ चाहिए, और गृह चाहिए। और गृह में सब सुविधा होनी चाहिए। देखो, भृंगि ऋषि ने कहा हे देवी !मैं ऐसा ही करता हूँ।

बेटा !ऋषि ने अपने आसन को त्याग करके और भयंकर वन में गमन करते हुए राजा के समीप पंहुचें और राजा ने नतमस्तिष्क होते हुए चरणों की वन्दना की और कहा कहो, भगवन !आज कैसे आगमन हुआ हे? ऋषि ने कहा हे राजन !मैं इसीलिए आया हूँ कि देखो, मैं पुत्र याग करना चाहता हूँ मेरे लिए गृह चाहिए, एक भव्य भवन चाहिए। और उसमें सुविधा चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। उन्होंने देखो, एक तालाब के तट पर उनके लिए एक गृह का निर्माण और गृह का निर्माण करके उसमें सब सुविधाएं प्रदान की और प्रदान करके देखो, उन्होंने उसको ऋषि को समर्पित कर दिया। ऋषि भ्रमण करते हुए भयंकर वन में पंहुचें और भयंकर वन में जा करके देवी से कहा हे देवी !देखो, हमारे गृह का निर्माण हो गया है। अब हमें पुत्र याग करना है देवी ने कहा बहुत प्रियतम !मेरे प्यारे !वह भव्य भवन में चले गए जहां सब सुविधा विद्यमान हैं और वे उसमें वास करने लगे। मुनिवरों !देखो, कुछ समय के पश्चात दिव्या के एक सन्तान का एक पुत्र का जन्म हुआ। और पुत्र का जन्म होते ही जब वह देखो, कुछ बाल्य आवृत्तियों में रत्त हो गया तो उन्होंने कहा देवी !हमारी इच्छा पूर्ण हो गई है। क्योंकि हम मानो पुत्र यागी बन गए हैं। हे भगवन !देखो, आपं ब्रह्मे हे देवी !जब हमें इस गृह को त्याग देना चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम बेटा ! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है कि वह भयंकर वन में पुनः तपस्या में तल्लीन हो गए। और वह तपस्या करने लगे। बाल्य को दोनों तपस्या की युक्तियों का वर्णन कराते रहे और वेद का अध्ययन कराती रही माता।

क्योंकि माता तो दिव्य है बेटा !जो गृह का निर्माण होते हैं इनमें एक ही विशेषता होती है कि माता इस अन्तःस्थली में विद्यमान हो करके अपने पुत्र पुत्रियों को वह देखो, वेदज्ञ बनाने के लिए त्तपर हो जाए। और तपस्या में बाल्यों को परणित कराती रहे जिससे गृह स्वर्ग बन जाए। गृह के निर्माण का अभिप्रायः यह है कि यह गृह स्वर्ग होना चाहिए। गृह स्वर्ग उस काल में बनता है जब एक दूसरे की सम्मति से ये प्राणी उसमें वास करता है मानो पति ने कहा, पत्नी ने कहा दोनों की देखो, सम्मति हो गई पुत्र से कहा पुत्रियों से कहा तो वह एक सम्मति हो गई है और उस सम्मति के पश्चात देखो, उसमें तरंगें उत्पन्न होती हैं उसका नाम स्वर्ग कहा जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि हे गृहस्वामिनी, हे गृह स्वामी !तुमने अपने गृह को स्वर्ग बनाना है तो स्वर्ग उस काल में बनेगा जब मानव एक दूसरा एक दूसरे की सम्मति में रहेगा। देखो, ऋषि भृंगि में अपनी सन्तान को ब्रह्मवेत्ता बनाया क्योंकि वह भी ब्रह्मवेत्ता थे और उनकी दिव्या भी ब्रह्मवेत्ता बन गई उनके सम्पर्क में तो मेरे प्यारे !देखो, विचार केवल यह है कि यह हमारा जो गृह है आत्मा का जो गृह है यह तो शरीर है पञ्च महाभूतों वाला शरीर है और मुनिवरों !देखो, वह जो बाह्य जगत में शरीर की रक्षा करने वाला जो गृह है वह भी परमपिता परमात्मा ने स्थूल जगत को ले करके उसका निर्माण किया है क्योंकि उसमें देखो, जल है, पृथ्वी के परमाणु हैं। पृथ्वी की स्थूलता है जल की स्थूलता है और देखो, अग्नि की स्थूलता प्रवेश हो करके देखो, गृह का निर्माण होता है उसी गृह में वायु गमन कर रहा है। उसी गृह में आकाश तत्त्व का निर्माण किया। जिससे हम उसमें भ्रमण कर सकें। तो देखो, यह स्थूल जगत कहलाता है हे मानव !तू स्थूल जगत में वास करता हुआ अपने गृह को स्वर्गाश्रम बना। जिससे मानो स्वर्ग में तेरे हृदय की तरंगें ओत प्रोत हो जाएं।

मेरे प्यारे !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है कि महर्षि भृंगी ऋषि और उनकी दिव्या जब तपस्या करते थे तो बाल्य बालिका और उनकी दिव्या जब

तपस्या करते थे तो बाल्य बालिका भी तपस्या में तल्लीन रहते। एक समय भृंगी ऋषि महाराज ने देवी से कहा हे देवी !तुम्हें इतना समय हो गया है तो देखो, मेरे प्रश्नों का तुम उत्तर दो उन्होंने कहा भगवन !आप मेरे से प्रश्न करना चाहते हैं आप तो महान तपस्वी हे और मैं आपकी शरण में रहती हूँ। उन्होंने कहा यह सूक्ष्म सा विचार है उन्होंने कहा तो उद्गीत गाईए। उन्होंने कहा देव तपस्या किसे कहते हैं? देवी ने कहा प्रभु !आपके मुखारबिन्दु से और आपको दृष्टिपात करके और पूज्य पिता जी के गृह में मैंने यह पाया है आचार्यों से भी पाया है कि स्वर्ग उसे कहते हैं जहां मानव की तरंगें मानो सत्य में परणित होने वाली हों, यह गृह को ऊँचा बना देती है। उन्होंने कहा सत्य है ऋषि ने पुनः कहा हे दिव्या मैं जानना चाहता हूँ कि यह तपस्या क्या है उन्होंने कहा इन्द्रियों के विषयों को जान करके और वह जो वेदों का तरंग बन करके उसका साकल्य बना देता है और उसका साकल्य जब हृदय रूपी यज्ञशाला में उसे प्रवेश करा देता है तो ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है, अन्धकार नष्ट हो जाता है अज्ञान नष्ट हो जाता है तो ज्ञान का नाम प्रकाश कहा गया है और उसी का नाम मानो तपस्या कहा है मेरे पुत्रों ! ऋषि बड़े प्रसन्न हुए भृंगि ऋषि बोले कि देवी हे दिव्या मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह तप क्या है? ऋषि देवी ने कहा हे प्रभु !मेरे विचार में तो यह आता है कि मानव अग्नि के समीप रहता हुआ जब अग्नि के स्पर्श न कर पाए मानो वही तपस्या है देखो, पञ्चमहाभूतों की अग्नियां वे अग्नियां उनकी दिव्या में प्रवेश हो रही हैं और उसमें वे स्पर्श न कर पाएं तो इसी का नाम तपस्या हैं उन्होंने कहा दिव्या इसका स्पष्टीकरण करो। उन्होंने कहा हे प्रभु !विचार आता रहता है कि उनमें ब्रह्मणे वृतं वह जो विषय है उन विषयों को जो बरतने वाला है और उन विषयों को जो वरत करके मानो प्रकाश में परणित हो जाता है वही देखो, तपस्या कही जाती है उन्होंने कहा यथार्थतम जब फिर उन्होंने यह वाक् कहा कि यह तपस्या क्या है उन्होंने कहा कि हे दिव्या, यह तपस्या क्या है उन्होंने कहा कि तपस्या उसे कहते हैं जो हम इस संसार में रहते हुए और संसार में मानो पिरक्त हो

जाएं और संसार में हम मानो देखो, आस्था में देखो, हम मोह ममता में न रह करके हम अपने कर्तव्य का पालन करते जाएं तो मानो वही तपस्या कहलाती है उन्होंने कहा हे दिव्या मैं जानना चाहता हूँ यह कर्तव्य क्या है जिस कर्तव्य की तुमने वार्त्ता प्रगट की है वह उन्होंने कहा हे प्रभु !जो भी क्रियाकलाप इस संसार में हो रहा है चाहे वह गृह में हो रहा है, चाहे वह बाह्य जगत में हो रहा है चाहे वह गृह में हो रहा है, चाहे वह बाह्य जगत में हो रहा है चाहे वह अपने मनोनीत हृदय में हो रहा है देखो, जो भी इस प्रकार से भावना से क्रियाकलाप करता है कि यह मेरा कर्तव्य है इसीलिए मेरा जन्म हुआ है और वह कर्तव्य की वेदी पर निहित हो जाता है तो उसी का नाम कर्तव्यवाद है। उन्होंने कहा हे देवी !मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह कर्तव्यवाद क्या है? उन्होंने कहा भगवन !कर्तव्यवाद उसे कहते हैं जो आत्मा में जिन तरंगों का प्रादुर्भाव होता है आत्मा में जिसका परमाणु वृत उत्पन्न होता है तो मानो आत्माम् भूतं ब्रह्मणा आत्माम् ब्रहे कृतं हे देवी !अमृतां हे दिव्या पितर गृहे हे ऋषिवर देखो, वही कर्तव्यवाद है जो आत्मा की प्रेरणा को स्वीकार करता हुआ अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है उसका नाम कर्तव्यवाद है जैसे मेरी प्यारी माता अपने पुत्र का पालन कर रही है मानो अति मोह करती है। तो यह जान लगती है कि वह मोह कर रही है वह पुत्र को अपने से दूरी कर रही है पुत्री को दूरी कर रही है। और देखो, यह कहती है कि बाल्य तू ब्रह्मवेत्ता बने, हे बाल्य !तू महान बन करके तू विचरण कर, हे बाल्य !तू मानो मेरे गर्भस्थल को देखो, दूषित मत कर देना क्योंकि मैं तेरी ममता में रत्त हूँ। माता जब इस प्रकार की शिक्षा देती है तो वह कर्तव्यपारायणता कहलाती है। वह कर्तव्यवाद में निहित हो जाती है जैसा मैंनें तुम्हें कई काल में प्रगट कराया कि बेटा !महर्षि विश्वामित्र ने अपने धनुर्याग को पूर्ण करने के लिए राजासे कहा कि राजन मुझे यह राम और लक्ष्मण चाहिए मैं अपने याग को सम्पन्न करना चाहता हूँ। तो राजा ने ऋषि से कहा प्रभु !आपके याग को मैं पूर्ण कराऊंगा। उन्होंने कहा नही मुझे शिशु चाहिए। मुझे युवा चाहिए

मुझे आप नही चाहिए। इतनें में कौशल्या जी ओर सर्वत्र राज लक्ष्मियां ने उनके चरणों की वन्दना की। उन्होंने कहा कहो भगवन !कैसे आगमन हुआ है। उन्होंने कौशल्या से कहा हे मां अमृतां ब्रह्मे हम देखो, राम ओर लक्ष्मण और ब्रह्मचारियों से याग कराना चाहते हैं मेरा धनुर्याग चल रहा है उन्होंने कहा राजा से कहा राजन आप प्रदान कीजिए। यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य एक ऋषि की आज्ञा का पालन नही कर सकता, एक ऋषि के वाक् को पूर्ण नही कर सकता तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा। कौशल्या ने जब यह शब्द कहा तो राजा निरुतर हो गए। ओर राजकुमारों को प्रदान कर दिया तो यह कर्तव्यवाद कहलाता है। देखो, यह कर्तव्यवाद की आभा में महर्षि भृंगि ने कहा रजन्नम ब्रह्मे हे देवी !मेरे विचार में यह आ गया है परन्तु वेदामृत को पान करने वाला कर्तव्य क्या है उन्होंने कहा आत्मा का प्रकाश में रत्त रहता है और उस प्रकाश को जानना इसका कर्तव्य है ओर प्रकाश ही मानो देखो, वेद रूपी प्रकाश में यदि आत्मा रत्त रहता है तो वह उस मानव का कर्तव्यवाद है। वह उस ऋषि का कर्तव्यवाद है कि वेद की प्रतिभा के अनुकूल अपने जीवन को जो व्यतीत कर रहा है ओर गृह में वास कर रहा है ओर गृह में देखो, वेदमन्त्रों की ध्वनियां आती रहती है। उससे राष्ट्र ओर समाज ऊँचे बनते रहते हैं।

मेरे प्यारे !देखो, मुझे स्मरण आता रहता है कि मनु वंश ने ही अयोध्या का निर्माण किया था जो अष्ट चक्र नौ द्वारों वाली पुरी कहलाती थी जब राष्ट्र का निर्माण किया तो राजा के यहां देखो, यह नियमावली बन गयी, राजा ने यह घोषणा कर दी कि राष्ट्र में मानो प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में वेद ध्वनि होनी चाहिए जिससे वह गृह ओर ऊँचा बन जाएं। देखो, भगवान अद्धवा मनु ने भी ऐसा कहा वृत्तिका मनु ने भी ऐसा ही कहा देखो, जो स्वायंभु मनु ने इस प्रकार के नियम बनाए। ओर इसी प्रकार के नियम आगे बनते रहे। तो विचार विनिमय क्या कि प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। ओर सुगन्धि वो विचारों की सुगन्धि हो। देखो, गृह जब ऊँचे बनते हैं जब गृह में गृहस्वामी ओर

गृहस्वामिनी वेद का पठन पाठन करते हैं और मानवीय दर्शन को अपने समीप लाते हैं गृह स्वामी और गृहस्वामिनी जब इस प्रकार के क्रियाकलाप को करते हैं तो देखो, उनके गृह में जितना भी जन समूह है चाहे वह पुत्र के रूप हैं चाहे वह पुत्री के रूप में हो उनके विचारों के अनुसार अपने गृह को व्यतीत करते रहते हैं। मेर प्यारे मैं विशेषता में नही ले जारहा हूँ वेद का मन्त्र क्या कहता है कि वेदमन्त्र यही कहते हैं कि परमपिता परमात्मा ने हमारे मानवी शरीर का निर्माण किया है। इसी प्रकार गृह स्वामी और गृहस्वामिनी देखो, पञ्च महाभूतों के एक शरीर का गृह का निर्माण और करते हैं। जिससे हम वास कर सकें और हम तमोगुण ला करके उग्र क्रिया ला करके सन्तान का उपार्जन कर सकें। और उसे पुनः सतोगुणी बना सकें। इस लिए गृह गृहों का निर्माण होता रहता है गृह में प्रातः कालीन सुगन्धि होनी चाहिए और सुगन्धि क्या है देखो, वह वेदों का उद्घोष है वेदों की ध्वनियां और विचारों की ध्वनियों में जो गृह परणित रहते हैं बेटा !वह गृह पवित्र कहलाते है।

आओ मेरे पुत्रों !मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जाऊंगा। विचार केवल यह कि हमें गृह में प्रवेश करना है हमें गृह में वास करना है जैसे आतम इस शरीर को त्यागता है तो पुनः उसे किसी माता के गर्भस्थल में उसकी स्थली प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार यह जो गृह के अव्यक्त निर्माण होते हैं इसी प्रकार होते हैं यह शरीर आत्मा का गृह है और यह जो बाह्य जगत है बाह्य जो गृह है यह आत्मा के शरीर का गृह कहलाता है वह भी पञ्च महाभूतों का समूह है। तो विचार आता रहता है कि दोनों में परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं जितना संसार जड़वत में है चैतन्य में है सर्वत्रता में प्रभु गमन करते रहते हैं इसीलिए हमें अपने गृह को ऊँचा बनाना है, कर्तव्यवाद में निहित रहना है यौगिकवाद में ले जाना है। जिससे हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता में गमन करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। हम परमात्मा के स्वरूप को जानते हुए मानो जो गृहों में भी निहित है जड़ में भी है चैतन्यवत में भी निहित है वही तो महान कहलाता है।

अपना जीवन व्यतीत करें।

आओ मेरे प्यारे !मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल विचार िनिमय देने के लिए चला आता हूँ और विचार यह है कि हम अपने को ऊँचा बनाएं। जहां आत्मा की प्रेरणा के अनुसार मानव कर्तव्यवाद में रत्त हो जाता है, आत्मा की प्रेरणा के साथ जो क्रियाकलाप करता है, आत्मा की प्रेरणा के साथ जो मानव जन समूह में रमण करने वाला है वह महापुरूष कहलाता है ओर वह गृहस्वामी कहलाता है वह उस गृह को अपनी सम्पदा नही वह परमात्मा की सम्पदा स्वीकार करता है क्योंकि द्रव्य भी परमात्मा की सम्पदा है ओर देखो, जिस साकल्य से गृह का निर्माण हुआ वह भी परमपिता परमात्मा की सम्पदा है। तो देखो, गृह में अभिमान नही होना चाहिए। अरे, अभिमान किससे कर पाएंगें। जब यह परमात्मा की पवित्रता है परमात्मा की देन है, परमात्मा का जगत है, परमात्मा का सभी निर्माणित किया हुआ है माता के गर्भस्थल में बेटा !हमारा निर्माण होता है परन्तु माता को प्रतीत नहीं हृदय कहां रहता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा निर्माण करने वाला है वह निर्माणवेत्ता है वैज्ञानिक है ओर वह इतना विज्ञानवेत्ता है कि उसके विज्ञान की कोई सीमा नही हैं वह सीमा से रहित है वह मानो अपने में अपनेपन को ही विचारता रहता है।

आओ मेरे प्यारे !आज मैं तुम्हें विशेष विचार देने नहीं आया हूँ केवल अपना विचार यह प्रगट करने के लिए आया हूँ कि गृह हमारा पवित्र हो, हमारा कर्तव्यवाद मानवीयता को स्पर्श करता रहें। अरे, अपनी आभा में परणित होता हुआ प्रभु को प्राप्त हो जाए। बेटा !देखो, यही हमारे गृहों के निर्माण का अभिप्रायः कहलाता है। मुझे कहीं से यह प्रेरणा प्राप्त हुई कि गृह के सम्बन्ध में उद्गीत गाया जाए। तो मानो इस प्रेरणा के साथ मैंने अपने विचारों को व्यक्त किया है। ओर विचार यह है कि हम देवतव को अपने में प्राप्त करते रहें। देखो, मैंने अपने महर्षि भृंगि की तपस्या में परणित कराया और वही देखो, ब्रह्मे अमृतां भूतं ब्रह्मणे कृतं

वही बाल्य जिस गृह में अमृता में वह देखो, ऋषि भृंगि के पुत्र का नाम देखो, उन्हीं अमृतां भूतं ब्रह्मणे लोकां देखो, उन्हीं का पुत्र अगस्तय मुनि बन करके रहा। वह अगस्तय कहलाया। बेटा !भृंगी के पुत्र का नाम अगस्तय था और वह अगस्तय मुनि कैसे विचित्र थे। वह इस संसार रूपी समुद्र को पान करके उसे खारी बना करके त्याग देते थे। यह जो संसार रूपी समुद्र है जिसमें कोई मान कर रहा है, कोई किसी का अपमान कर रहा े कोई किसी का पूजन कर रहा है कोई किसी का तिरस्कार कर रहा है ऐसे संसार को जिसमें देखो, कहीं उष्णता है कहीं नम्रता है कहीं मलीनता है कहीं उज्ज्वलता है अरे, ऐसे संसार को महर्षि अगस्तय मुनि महाराज खारी बना करके त्याग देते थे। खारी का अभिप्रायः कि उससे उदासीन होना कि यह संसार तो इसी प्रकार गतिमान होता है मुझे तो अपने कर्तव्य में रहना है। मुझे आत्मा की प्रेरणा को स्वीकार करना है और आत्मतत्व जान करके इस सागर से पार होना है, इस सागर को त्यागना है वह भृंगि ऋषि के पुत्र कितने महान और पवित्र जिसका तप बड़ा महान रहता था वह अनुष्ठान करते रहते थे। केवल इसीलिए समुद्र से पार हो जाएं। तो बेटा !आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता को जानते हुए अथवा उसके गृह और मानवीय गृह को ऊँचा बना करके इस सागर से पार हो जाएं। वेद का मन्त्र यह कहता है कि ये जो संसार रूपी गृह है इसका स्वामी परमपिता परमात्मा है और मानव शरीर का स्वामी आत्मा कहलाता है मुनिवरों !देखो, स्थूल रूप ले करके यह आत्मा मानव शरीर के लिए गृह का निर्माण करता रहता है यह है बेटा !आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा